यशपाल प्रकाशन
२६, नया कटरा, दिलकुशा पार्क,
इलाहाबाद के लिए
शारदा द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण
१९६९ ई०

●

भार्गव प्रेस
बाई का बाग, इलाहाबाद
द्वारा मुद्रित

आवरण-शिल्पी
शिवगोविन्द पाण्डेय

मूल्य : १०.००

कमल त्रिवेदी की स्मृति को
आँगन का यह हिन्दी रूपान्तर
समर्पित है

● आजादी के २१ वर्ष बाद होली के अवसर पर इलाहाबाद मे फिर साम्प्रदायिक दगे का ज्वालामुखी फूट पड़ा और आदमी की जान की कीमत बहुत घट गयी। 'आँगन' मे 'बड़े चचा' के माध्यम से जिस विडम्बना की ओर सकेत किया गया है, उसी के शिकार श्री कमल त्रिवेदी भी हुए।

—अनुवादक

एक | सर्दियो की रात कितनी जल्दी सुनसान हो जाती है। आज भी शाम से बादल छा गए थे। ठंडक बढ रही थी। खिडकी के पास लगे हुए बिजली के खम्भे का बल्व खामोशी से जल रहा था। गली के उस पार स्कूल की अधबनी इमारत के करीब दरख्तों के झुंड से उल्लू के बोलने की आवाज़ आ रही थी। उसकी आवाज की मनहूसी रात को और भी सुनसान किए जा रही थी। पास के बडे कमरे में अब बिलकुल खामोशी थी। छम्मो के करवटें बदलने की आहट भी महसूस न होती थी।

सो रही है बडे मजे मे—आलिया ने बडी हसरत से सोचा। उसे नीद न आ रही थी। रात को नीद न आना कितना तकलीफ़देह एहसास होता है। यह एहसास उस वक्त तो और भी गहरा हो जाता है जब बिल्कुल नई जगह हो। शायद नई जगहो की पहली रात इसी तरह बेख्वाबी से गुजरती होगी। उसने एक बार फिर सो जाने की कोशिश की। खिडकी के पट भेड़ने से नन्हें से कमरे में बिल्कुल अँधेरा छा गया और वह लिहाफ में मुँह छिपाकर इस तरह लेट गई जैसे वाकई सो रही हो।

देर तक बेसुध पडे रहने के बाद उसे एहसास हुआ कि सारी जद्दो-जेहद बेकार हो गई। नीद का तो कोसो पता न था। अतीत की यादें बगूले की तरह दिमाग़ में लोटें लगा रही थी। वह बडी बेबसी से अपने बिस्तर पर पलथी मारकर बैठ गई। खिडकी के पट खोल कर बाहर देखने लगी। गली के उस पार, स्कूल की इमारत, आम और पीपल के घने दरख्त, सब अँधेरे मे डूबे हुए थे। शाम को यह सब कितना साफ और खूबसूरत नजर आ रहा था। खिडकी में बैठ कर उसने यह सब कुछ जरा दिलचस्पी से देखा था। मगर इस वक्त अँधेरे में दरख्त स्याह पहाडो की तरह महसूस हो रहे थे और जब हवा का तेज झोंका चलता तो ये दरख्त बचपन मे सुनी हुई कहानियो के भूतो की तरह खौफनाक मालूम होते थे।

इस तरह तो नीद आने से रही—उसने सोचा और खिडकी के पट भींचकर बंद कर दिए। लेटते हुए उसे अपना जिस्म टूटता हुआ महसूस हुआ। सारे दिन की बेचैनी ने कहीं का न रखा था।

हाय भई !—वह कराही—अब नीद नही आती । जब तक दिमाग की दुनिया वीरान न की जाए नीद का कहाँ से गुज़र हो । अतीत की यादें हर तरफ से दर्राती चली आ रही हैं । लोग कहते हैं कि अतीत को भूल जाओ । पीछे मुड कर देखने में क्या रखा है । आगे बढे जाओ । पर उसे तो विरासत में सिर्फ अपना अतीत ही मिला था । अतीत, जिससे उसने क्या कुछ नही सीखा । अब वह उससे किस तरह दामन बचाए ? जिन परिस्थितियो में वह यहाँ आई थी उनकी वजह से तो और भी यादो ने सिर उठा रखा था ।

जाने अम्मा भी सोई होगी या नही । घर में कैसी खामोशी छायी थी । गली में कोई राहगीर ठिठुरी आवाज़ में गाता गुज़र गया :

मुफ़्त हुए बदनाम संवरिया तेरे लिए

यह रात किस तरह गुज़रे ? अब्बा जेल में तुम्हारी रातें किस तरह गुज़र रही होगी !—उसने जैसे बिलबिला कर घुटने पेट में अड़ा लिए । दूर कही से घड़ियाल के ग्यारह बजाने की आवाज़ आ रही थी ।

हल्की-हल्की बारिश शुरू हो गई थी । हवा के झोको मे आती हुई बौछार खिडकी के पटो पर मद्धिम लय मे गुन-गुना रही थी ।

अब यह जिन्दगी कैसी होगी ।—उसने जैसे डर कर सोचा । कमरे में इतना अँधेरा था । उसे अपने सवाल पर इसी तरह अँधेरा छाया हुआ महसूस हुआ । उसने घबराकर आँखें बन्द कर ली । नीद तो अब भी कोसो दूर थी पर अतीत की यादें उसकी रात कटवाने के लिए पास आ बैठी थी ।

वह एक उजाड ज़िला था । सुर्ख़-सुर्ख़ ईंटो के मकान इस तरह बने हुए थे कि किसी तरतीब का ख्याल ही न आता था । बस ऐसा महसूस होता था कि किसी ने उठा कर बिखेर दिए हैं । वहाँ उस छोटी सी जगह मे कितने बहुत से मन्दिर थे । उनके सुनहरे कलस सिर उठाए जैसे भगवान को प्रार्थना करते रहते । मन्दिरो में सुबह व शाम घण्टे बजते । पुजारियो के भजन गाने की मद्धिम-मद्धिम आवाज़ घर तक आती ।

वहाँ दरख्त किस कदर थे । धूल से अटी हुई कच्ची सडको पर दोनो तरफ आम, जामुन और पीपल के घने दरख्त थे । इन दरख्तो के साये में राहगीर अगौछे बिछाए, गठरियाँ सिर के नीचे रखे मज़े से सोया करते । उन दिनो बसन्त का मौसम था । आमो मे बौर आ चुका था । कोयल हर वक्त कूका करती । उन्ही दिनो तो वह वहाँ आई थी ।

जब इस नई जगह पर अब्बा का तबादला हुआ तो उसने महसूस किया कि

वह बिल्कुल अकेली और उदास है। वहीं उसका शऊर जागा था और कुछ सोचने-समझने की अकल ने जन्म लिया था।

उस दिन जब सब लोग नये घर में उतरे थे तो सामान के बडे-बडे बण्डल आँगन में हर तरफ रखे हुए थे, जिन्हें अब्बा मुहकमे की तरफ से मिले हुए चपरासी की मदद से खुलवा रहे थे। अम्मा घर और सामान की तरफ से बिल्कुल बेताल्लुक सी मालूम हो रही थी। फिर भी उन्होंने कई बार घूम-फिर कर ऊँचे-ऊँचे महराबदार बरामदों, कमरों और गुस्लखाने वगैरह को देखा था। तहमीना आपा नज़रें झुकाए छोटा-मोटा सामान उठा-उठाकर कमरों में ले जा रही थी। अम्मा सख्त बेज़ारी से आरामि-कुर्सी पर अधलेटी थी। सफदर भाई अपने कमज़ोर कंधे झुकाए बरामदे की मेहराब मे उकडूँ बैठे थे।

"तुम भी अपने मामूँ की मदद करो।" अम्मा ने बड़ी हिकारत से सफदर भाई की तरफ देखा था।

"रहने दो, कमज़ोर हो गया है बुखार से, फिर सफ़र में थक गया है।" अब्बा ने आहिस्ता से कहा।

"यह तो हमेशा हीं थका रहता है।" अम्मा बड़बडाईं और फिर जैसे जलकर अब्बा के साथ सामान खुलवाने लगी। तहमीना आपा ने घबराकर सफदर भाई को देखा और नजरें झुका ली। वह कुछ डर सी गई।

उसी दिन तो उसे एहसास हुआ कि घर का माहौल खिंचा-खिंचा है। वह सबके बिगडे तेवर देखकर और भी रंजीदा हो गई। उसे तो अपनी वही पुरानी जगह याद आ रही थी।

वहाँ तो लाइन से सारे अफसरों के पीले-पीले बँगले बने हुए थे। बँगलों से जरा दूर आमों का बाग था। पास छोटा सा तालाब और उस तालाब में बच्चे और भैंसें साथ-साथ नहाया करतीं। वहाँ उसकी हम-उम्र बहुत सी लडकियाँ और लडके थे। सारा दिन मजे-मज़े के खेल खेले जाते और कुछ नहीं तो पानी में बैठी हुई भैंसों को ढेले ही खींच-खींचकर मारे जाते। बाग में घुसकर कैरियों की चोरी की जाती तो बाग का रखवाला उन्हें कुछ भी न कहता बल्कि ज़मीन पर टपकी कच्ची कैरियाँ खुद ही चुनकर उन्हें दे देता।

"अपने बाबू हुरों के बच्चे हैं।" वह बडे प्यार से उनके सिरों पर हाथ फेरता। कमला और उषा उसे मुँह चिढातीं। उसके बडे दाँतो का मज़ाक उड़ातीं। मगर वह न बिगड़ता।

रात को खानसामन बुआ उसकी ज़िद पर कहानियाँ सुनाती। शाहज़ादे और शाहज़ादी की कहानियाँ, जो एक ही बिस्तर पर बीच में तलवार रखकर सो जाते थे।

वह इस कहानी से सख्त फिक्रमन्द हो जाती । अगर किसी ने जरा सा भी करवट ली तो कही शाहज़ादे या शाहज़ादी का जिस्म भी न कट न जाए। खानसामन बुआ मतलब समझाती कि भई कहानियो के जिस्म नही कटा करते । फिर भी उसकी फिक्र कम न होती । सोते में भी वह खौफ से करवट न बदलती । जाने वह तलवार उसके बस्तर पर कहाँ से आ जाती ।

खानसामन बुआ और भी कैसे मज़े की कहानियाँ सुनाती थी । राजा भोज और गगू तेली की कहानी, कठपुतली की कहानी, जो राजा के महल की हर चीज़ खा गई थी । कठपुतली की कहानी भी कितनी अच्छी थी । कठपुतली की बुरी हरकतो की खबर जब राजा को दी जाती तो बडे मीठे अन्दाज़ से गाया जाता ·

काठ की कठपुतली रे राजा गई सब घोड़े खाय जी

"खानसामन बुआ, जब राजा को गाकर बताते थे तो वह नाराज़ नही होता था ?" वह हैरत से पूछती थी ।

"नही, बेटा, राजा लोग बडे नाजुक मिजाज़ होते हैं । उनके सामने हर बात अच्छी तरह कहनी पडती है, नही तो वह बाल-बच्चो समेत कोल्हू में न पेलवा देते ।" उसे डर सा महसूस होता तो खानसामन बुआ उसे अपने पसीने से चिपचिपाते हुए सीने से लगाती ।

अम्मा से तो उसका इतना ही ताल्लुक था कि वह खेलते खेलते बाहर से आती तो उनसे लिपट जाती । वह उसे प्यार करके फिर से खेलने की हिदायत करती । अब्बा तो उसे सिर्फ दूर ही दूर से नज़र आते । सुबह दफ्तर चले जाते और शाम को बैठक दोस्तो से भर जाती । वह सब ज़ोर-ज़ोर से बातें करते, कहकहे लगाते और खानसामन बुआ उनके लिये चाय बनाती रहती ।

इसके बाद वह स्कूल मे दाखिल कर दी गई । अब तो उसकी दुनिया और भी बडी हो गई थी । उसकी कई साथी लडकियाँ स्कूल में आ गई थी । और दूसरी नई-नई लडकियो से दोस्तियाँ बढ रही थी । जब वह पढकर आती तो सफदर भाई अपने पास बुलाते । पढने के सिलसिले में सवाल करते । उसके हर जवाब पर ज़ोर ज़ोर से हँसते—"वाह ! तुमको तो कुछ नही आता ।" वह उसे सख्त बुरे लगते और वह जल्दी से भागने की कोशिश करती ।

जब वह पाँचवें क्लास में पढती थी तो उसने खानसामन बुआ की सलाह से सलीके वाले खेल खेलना शुरू कर दिए थे । सहन के एक कोने में गुडियो का एक बडा सा घरोंदा बनाया गया । उस घरोंदे में गुडियो की शादी होती, धूम से बारात निकलती, गुडियो के बच्चे पैदा होते, आपा से वसूल की हुई कतरनो से कपडे सिये

जाते, खानसामन बुआ शादियों और पैदाइशों में खजूरें बनाकर देती। कभी-कभी ज़र्दा भी पकता। उस दिन कमला, उषा और राधा छूत न मानतीं। वह सब खुले-खजाने ज़र्दा खातीं।

मगर यहाँ तो कुछ भी न था। उसने बाहर निकल कर हर तरफ नज़र दौड़ाई। चरवाहे बकरियाँ हाँकने के लिए जा रहे थे। दो-चार नंग-धड़ंग बच्चे बैठे मिट्टी से खेल रहे थे। दूर छोटे-छोटे कच्चे मकान दिखाई दे रहे थे। उसके घर के पास तो सिर्फ एक ही दो-मंजिला मकान था या फिर चपरासी का मकान, जो पीली मिट्टी से बना हुआ था। वह बड़ी देर तक ऊँचे दो-मंजिला मकान को देखती रही मगर वहाँ से कोई लड़की न उतरी जिसे वह अपना दोस्त बना सकती। एक मर्द सफेद बुर्राक धोती का पल्लू थामे तेज़ी से नीचे उतरा और चला गया। इसके बाद घर के ऊपरी मंज़िल से हारमोनियम पर गाने की आवाज़ आने लगी। उसने गीत के बोल दोहराए मगर उसे वह बोल कितने नीरस लगे थे।

दरख्तों पर परिन्दे ज़ोर-ज़ोरसे चहचहा रहे थे। वह बड़ी बेज़ारी से बैठक की दहलीज़ पर बैठी रही। उसका जी चाह रहा था कि खूब चीख-चीख कर रोये, अपने कपड़े फाड़ डाले और यहाँ से भाग जाए।

"बेटा हमारे पास आ जाओ।" चपरासी की बीवी सहन की कच्ची, नीची दीवार पर उचक-उचक कर उसे बुला रही थी।

'हुँह।' वह अन्दर आ गई।

बहुत सा सामान ठिकाने लग चुका था। आँगन में आराम-कुर्सियाँ बिछ चुकी थी और चपरासी चाय बना चुका था। आपा, सफदर भाई, अब्बा और अम्मा सब थके से चुपचाप बैठ थे। उससे किसी ने बात भी न की। बीच आँगन में मेहंदी का छोटा-सा पौदा लगा था, जिसकी पत्तियाँ खूब हरी हो रही थी। उसने लोटे में पानी लेकर पौदे डालना शुरू कर दिया।

"चाय पियो बिट्टो।" सफदर भाई ने उस दिन पहली बार कुछ ऐसे प्यार से बात की कि वह उनके पास चली गई और उनके क़रीब वाली कुर्सी पर बैठ गई।

"घबरा रही हो बिट्टो। नई जगह है। कोई साथ खेलने वाला नहीं।" सफ़दर भाई ने उसके सिर पर हाथ फेरा तो वह फूट-फूट कर रोने लगी। एक सफदर भाई थे जो इस बात को समझ सके थे। वह अपनी कुर्सी पर बैठी-बैठी झुक गई। अम्मा ने बड़ी सख्त नज़रों से उसकी तरफ देखा तो उसने आँखें बन्द करके जैसे उन नज़रों से अपने-आपको महफूज़ कर लिया। अम्मा बड़े करख्त लहजे में चपरासी को समझाने लगी, "तुम्हारे जिम्मे बाहर के काम हैं। तुम घर के काम नहीं कर सकते। फौरन

एक नौकरानी का इन्तजाम करो, मगर यह ख्याल रखना जवान न हो। ऐसी औरतें दो कौडी का काम नही करती।"

"बस कल तक आपकी मर्जी का इन्तजाम हो जाएगा, सरकार।"

शाम हो रही थी। अब्बा अपनी पतली सी छडी उठाकर घूमने चले गए। अम्मा ने एक बार कनखियो से सफदर भाई को घूरा। "जाओ अब खेलो।" अम्मा ने उसका हाथ पकडकर उठाया और जैसे रटा हुआ जुमला इस्तेमाल किया। वह फिर बाहर दहलीज पर जाकर खडी हुई। दो-मंजिले मकान की पूरी मजिल से घूँआ उठ रहा था। मन्दिरो से घण्टो की तेज आवाजें आ रही थी।

'हुँह! खेलो, किससे खेलो। यहाँ इस जगल में कौन है।' उसका जी भर रहा था।

'घर के अन्दर रहो या फिर इस दहलीज पर बैठो और खेलो, खेलो यहे जाओ।' वह बडबडा रही थी, 'उस पर सब लोग मुँह बनाकर बैठे हैं।' वह घुट-घुट कर रोने लगी।

"आओ बेटी, रोटी खाओ।" चपरासी की बीवी दीवार पर उचक रही थी। उसने जल्दी से आँसू पोछकर मुँह फेर लिया।

"अलिया बिट्टो!" आपा बडी-बडी आँखें झुका उसके पीछे आ खडी हुई, "चलो अन्दर। अब अँधेरा हो रहा है। हाय कितनी खूबसूरत जगह है यह भी।" उन्होने भी ठण्डी साँस भर कर दूर-दूर देखा और फिर उसे अपनी कमर से लिपटाए अन्दर आ गई। वह बैठक वाले छोटे कमरे से गुजर रही थीं तो एक पल को ठिठक कर खडी हो गई। सफदर भाई मेज पर रखी हुई लालटेन के पास झुके कोई किताब पढ रहे थे।

आँगन में कतार से पलंग बिछे हुए थे। आपा का पलंग मेंहदी के पौदे के पास बिछा हुआ था। उनके पास उसका पलँग था। वह अपने बिस्तर पर खामोशी से लेट गई। चाँद उभर रहा था। आसमान साफ था मगर आपा का चेहरा आँगन के हल्के से अँधेरे में आसमान से भी कही ज्यादा साफ नजर आ रहा था। उसे तो उस दिन एहसास हुआ कि आपा हर वक्त गुम रहती हैं। उस वक्त भी वह अपने बिस्तर पर बैठी बढे खोये अन्दाज से मेंहदी की पत्तियाँ नोच-नोच कर बिखेर रही थी।

दालान की मेहराब के बीच में रखी हुई लालटेन की लौ बहुत नीची थी। चपरासी बावरचीखाने में खाना पका रहा था। अम्मा दूसरी लालटेन हाथ में उठाए कमरो में जाने क्या करती फिरती थी।

"जब तम स्कूल में दाखिल होगी तो फिर बहुत-सी लडकियाँ दोस्त बन

जायेंगी।" आपा ने उसकी तरफ़ करवट लेकर उसका हाथ थाम लिया और हौले-हौले सहलाने लगी। मगर दुख के गहरे एहसास ने आपा की मुहब्बत का ज़रा भी असर न लिया। हाथ छुडा कर उसने मुँह फेर लिया। फिर आसमान पर उड़ते हुए परिन्दों को देखने लगी और उसे पता भी न चला कि कब नींद के झोंके आ गए।

"अरे बिट्टो, बगैर खाना खाए सो रही हो!" उसने चौंक कर आँखें खोल दीं। सफ़दर भाई उस पर झुके हुए थे।

"क्या ज़रूरत थी अभी से जगाने की?" अम्मा उस लहज़े में बोली जैसे वह चपरासी को हिदायत दे रही थीं। सफ़दर भाई उसके पास से हटने वाले थे कि उसने उनका हाथ पकड़ लिया और फिर लेटे-लेटे उनकी टाँगों से लिपट गई। सफ़दर भाई ने दो-एक बार अम्मा को नीची-नीची नज़रों से देखा और फिर उसका सिर गोद में रख कर बैठ गए।

"कहानी सुनाइये, सफ़दर भाई। यहाँ तो खानसामन बुआ भी नहीं।" उसने भर्राई आवाज़ में कहा।

"कौन-सी कहानी बिट्टो?'

"उसी शहज़ादी की, जिसके अब्बा ने उसे डोले में बिठवा कर जंगल में छुड़वा दिया था।" उसने अम्मा की परवाह किए बगैर कहानी की फ़रमाइश कर डाला। आपा जैसे आदर के लिए अपने बिस्तर से उठकर बैठ गई थी।

"मैं तुमको दूसरी कहानी सुनाता हूँ। एक गरीब लड़के की, जो शहज़ादी से मुहब्बत करता था। हाँ, तो सुनो एक था लड़का....।"

आपा घबरा कर इधर-उधर देख रही थीं।

दो | बारिश अब तेज़ हो गई थी। हवा जैसे दरवाज़ों पर दस्तक दे रही थी। अम्मी सोते में जाने क्या-क्या बड़बड़ा रही थीं। उसने लिहाफ़ में मुँह छुपा लिया। उसे कितनी तफ़सील से ज़रा-ज़रा सी बातें याद आ रही थीं।

सफ़दर भाई कितने भव्य मगर कैसी निरीह सूरत के थे। उनकी निरीहता की वजह अम्मा की भरपूर नफ़रत थी। अब्बा उनसे इस क़दर मुहब्बत करते थे। उनकी ज़रा-ज़रा सी ज़रूरतों का ख्याल रखते। आपा सफ़दर भाई से बात तो न करती मगर चोरी-छिपे उनका ख्याल ज़रूर रखती। अम्मा को किस क़दर दुख था कि सफ़दर भाई उनके शौहर के पैसे से पढ़-पढ़कर एफ़० ए० पास कहलाते हैं और रोज़गार की परवाह

किए-वगैर ठाठ से,अल्लम-गल्लम किताबें पढ़ा करते हैं। अम्मा सारा दिन जल-जल कर कहा करतीं कि ये किताबें किसी की रोज़ी या सामान बन सकती हैं। यह निकम्मा मुझे खा कर घर से निकलेगा।

वहीं उसने एक नया नाम सुना था, नजमा फूफी। यह अब्बा की सबसे छोटी बहन थी जो अलीगढ़ कालेज में पढ़ती थी और वहीं होस्टल में रहती थी। छुट्टियों में वह अपने सबसे बड़े भाई के घर चली जाती थी, अम्मा की सूरत से बेज़ार थी। मगर अम्मा जब उन्हें याद करती तो नफरत का साँप हर तरफ फुफकारने लगता। खैर वह नज़रों से दूर थी मगर सफदर भाई तो हर वक्त आँखों के सामने थे और अम्मा को उनसे पीछा छुटाना नामुमकिन नज़र आता था।

अम्मा अपने दुखों में मगन रहती और अब्बा अपनी दुनिया में मगन। दफतर से आने के बाद वह घण्टा-आध-घण्टा घर में गुज़ारते। अम्मा किसी-न-किसी बात पर लड़ती तो अब्बा बाहर की राह लेते। किस्म किस्म के दोस्त आ जाते जिनसे घण्टों जोश व खरोश से बातें होतीं।

एक बार उसने अब्बा की बातें सुनने की कोशिश की थी मगर आज़ादी, गाँधी और आज़ाद वगैरह के नामों के सिवा उसके पल्ले कुछ भी न पड़ा था। वह उकता कर दरवाज़े के पास से हट गई थी। हाँ सफदर भाई को इन बातों से कुछ ऐसी दिलचस्पी थी कि घण्टों सिर झुकाये बैठे रहते। दरवाज़े की ओट से खड़े होकर वह इशारों से उन्हें उठाना चाहती मगर सफदर भाई पर कोई असर न होता। वह सफदर भाई से रूठ जाती। उन दिनों तो सफदर भाई उसकी खुशियों के सहारा थे।

सफदर भाई से कैसी आम सी कहानी जुड़ी थी। यह कहानी सुनाते हुए अम्मा कितनी मगरूर मालूम होतीं। उस दिन भी जब वह और आपा अम्मा के पास बैठी थी तो अम्मा ने सफदर भाई की कहानी छेड़ दी थी।

"इस सफदर बदज़ात का बाप एक गरीब किसान का बेटा था। इसके दादा और बाप तुम्हारे दादा मरहूम की ज़मीनों पर काम करते थे। इसके अलावा घर के कामों को भी नौकरों की तरह अन्जाम देते। जाने कैसे यह बदबख्त तुम्हारी दादी के सिर चढ़ गए थे जो घर में कोई इनसे पर्दा भी न करता। वैसे तुम्हारी दादी की तबियत तो गाँव भर में मशहूर थी। उनकी सख्ती का यह आलम था कि जब किसी नौकर-चाकर से नाराज़ होतीं तो बटी हुई रस्सी लेकर उसकी खाल उधेड़ देतीं। हाय क्या गुरूर था, क्या रोब था। जिधर से गुज़रतीं लोगों की रूह फना हो जाती। मगर सफदर के बाप-दादा से हमेशा इनायत से बोला करतीं। तुम्हारी दादी का तो यह हाल था कि कभी अपने शौहर से सीधे मुँह बात न की और अल्लाह मरहूम को बख्शे उन्होंने तुम्हारी दादी को दुख भी बहुत दिये थे। उनकी दो-दो रखैलियाँ थीं, जिनके

तीन लड़के थे। दादा ने अपनी रखेलियों के लिए अलग-अलग मकान बनवा रखे थे। उन्हें तुम्हारी दादी की हवेली में आने की इजाजत नहीं थी। हाँ, उनके बच्चे हवेली में आ जाते, जिन्हें तुम्हारी दादी नामों के साथ हरामी कह कर पुकारा करती। वैसे उन दिनों रखेलियाँ रखना इतनी बुरी बात न समझी जाती थी। इसलिए तुम्हारी दादी यह सब कुछ बर्दाश्त कर लेती। जायज बीवी की शान तो उसी तरह ऊँची रहती। जमीन्दारी का सारा काम तुम्हारी दादी के सुपुर्द था। दोनों रखेलियों के खाने-पीने का सामान अपने सामने तुलवाकर भिजवा दिया करती।

"शादी का मामला भी खुद तुम्हारी दादी तय करती। उन्होंने तुम्हारे बाप और चचाओं की शादी अपनी मर्जी से की थी। बहुओं को बहुत दबाकर रखती थीं, मगर उन्होंने मुझसे कभी ज्यादती न की। मैं उनकी तरह बड़े घर की बेटी थी। मेरा भाई इंग्लैंड में पढ़ता था। मुझमें तुम्हारी दादी जैसा ही रोब था। तुम्हारी बड़ी और मँझली चची उनके सामने हूँ न कर पाती। तुम्हारी दादी अगर किसी के सामने झुकती तो वह तुम्हारे सबसे छोटे चचा थे। जब खिलाफत का आन्दोलन चला तो वह तुर्की चले गए। फिर उनका पता न चला कि कहाँ चले गए। फिर भी तुम्हारी दादी ने किसी के सामने एक आँसू न बहाया। बेटे की याद करके एक आह न भरी कि कहीं उन रोब व दाब की नजरें नीची न हो जाएँ। मगर अल्लाह को कुछ और ही मंजूर था। तुम्हारी सलमा फूफी ने चौदह साल की उम्र में उनका मुँह काला कर दिया। तुम्हारी दादी ने एक दिन अपनी आँखों से देख लिया कि वह सफदर के बाप का हाथ पकड़े खुसुर फुसुर कर रही है। उस दिन दादी ने सलमा फूफी को कमरे में बन्द कर के इतना मारा कि सारा जिस्म नीला हो गया। जब मैं उनके जिस्म पर हल्दी चूना लगाने गई तो काँप कर रह गई। मगर फिर भी यह सजा तुम्हारी सलमा फूफी के लिए कितनी कम थी। उन्हें तो जिन्दा दफना देना चाहिए था।

'दूसरे दिन उन्होंने सफदर के बाप दादा को जमीनों से निकाल दिया और दो चमारों को बुलाकर हुक्म दिया कि उन्हें गाँव वालों के सामने जूते मार कर गाँव से निकाल दें। उसी दिन शाम को नाइन ने आकर बताया कि जान सफदर के बाप-दादा से क्या कुसूर हुआ कि गाँव के सामने जूते से मारे गए। वह दोनों गाँव से चले गए। इस खबर को सुनकर दादी ऐसे बेफिक्र हो रोब से उठकर चलीं कि सब काँप गए, मगर तुम्हारी सलमा फूफी जीते जी मर गई। इन किस्सों के बाद उन्होंने न तो ढंग के कपड़े पहने और न बालों में कंघी की। तुम्हारी दादी उन्हें हर वक्त नजरों में रखती।

एक दिन मैंने उनको बड़ी अजीब हालत में देख लिया। सर्दियों के दिन थे। तुम्हारी सलमा फूफी धूप खाने छत पर गई हुई थीं। उधर पड़ोस की छत पर जंगली कबूतर का जोड़ा गुटुर गूँ कर रहा था और सलमा उनसे कह रही थी, 'ए कबूतर, तू

शहजादियों के पैगाम ले जाता है। मेरे हाल पर रहम कर। एक पैगाम मेरा भी ले जा। उनसे कहियो कि सलमा तेरे बिरह में तड़पती है।'

"कबूतर तो खैर यूँ ही फुर से उड़ गया मगर मैंने तुम्हारी दादी को यह बेशर्मी की बातें कह सुनाईं। उन्होंने बड़े दुलार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा कि दूसरी बहुओं को यह बातें मालूम न हो। फिर भी यह बात तो सबको मालूम होकर रही, अल्लाह जाने वह कबूतर था कि जिन।

"उस दिन तुम्हारे दादा कहीं बाहर गए थे और कह गए थे कि रात मेहमानखाने में रहेंगे। दादी ने उस दिन सोने से पहले घर में ताला लगाकर चाभियाँ अपने सिरहाने रख ली थी। मगर जब सुबह उनकी आँख खुली तो चाभियों का गुच्छा और तुम्हारी सलमा फूफी दोनों गायब थे। तुम्हारी दादी तो सन बैठी थीं। उन्होंने सबको ऐसी नजरों से देखा जैसे कह रही हों कि अगर मुँह से उफ की ज़िन्दा गाड़ दूँगी, कुत्तों से नुचवा दूँगी। दूसरे दिन शाम को दादा वापस आए तो दादी ने बन्द कमरे में देर तक बातें कीं। जब वह बाहर निकले तो उनका चेहरा शर्म और गुस्से से लाल हो रहा था।"

इतना किस्सा कह कर अम्मा ने बड़ी हसरत से कहा था कि काश ! सलमा मेरी बेटी होती तो पहले ही दिन उसे अपने हाथों से जहर खिला देती।

"तुम्हारे दादा जाने क्या करते मगर उसी दिन तुम्हारे अब्बा कुछ दिन की छुट्टी लेकर आ गए और बड़ी बेशर्मी से सलमा की तरफदारी में अपने अब्बा से लड़ते रहे। मेरा शर्म से बुरा हाल था। काश तुम्हारे बाप से मेरी शादी न हुई होती। तुम्हारी दादी गुस्से से टहलती रहीं मगर तुम्हारे अब्बा की मूँछों की लाज रखते हुए मुँह से कुछ न बोलीं। मगर तुम्हारे दादा को जाने क्या हुआ कि उसी वक्त अपनी रखेलियों को घरों से निकाल दिया और गाँव से चले जाने का हुक्म भिजवा दिया। दादी को जब यह बात मालूम हुई तो उन्होंने हुक्म दिया कि सिर्फ रखेलियाँ जाएँगी, मगर उनके बच्चे नहीं जाएँगे। इसलिए कि वह उनके शौहर का खून थे।

"तीनों लड़के घर आ गए। तोबा। उनकी सूरतें देखकर घिन आती थी। दोनों छोटे लड़के सारा दिन पिल्लों की तरह रोते। बड़ा लड़का दौड़-दौड़कर घर के काम करता दोनों छोटे लड़के ऐसे बेशर्म थे कि बरसात के दिनों में मक्खियों की भिनकी हुई जूठी गुठलियाँ चूस-चूसकर हैजे में मर गए। वरना क्या पता तुम्हारे अब्बा उन्हें भी आज कलेजे से लगा कर किसी कालेज में पढ़वा रहे होते।

"सलमा ने भागकर निकाह कर लिया। तुम्हारे अब्बा की धमकियों से डर कर तुम्हारे दादा ने जाहिरा तौर पर कुछ न किया मगर जहाँ कहीं सलमा के मियाँ नौकरी करते उसे छुड़वा देते। सलमा और वह दोनों भूखों मरते। सच्ची बात तो

यह है कि उन्हें कुत्तो की तरह भूखो मरना चाहिए था। मगर तुम्हारे अब्बा ने उन्हें इन्सानो की तरह मर जाने दिया। सफदर की पैदाइश पर सलमा को तपेदिक हो गई और कुछ दिन बाद एड़ियाँ रगड़-रगड कर मर गई।

"जब दादी को सलमा फूफी की मौत की खबर लगी तो जाने उनकी शर्म कहाँ गई। अपनी बेहया बेटी की मौत पर सीना कूट-कूटकर रोने लगी। मुझसे तो क़सम ले लो जो मेरी आँख से एक आँसू भी गिरा हो। हैरान होकर तुम्हारी दादी को देख रही थी जो नौकरो-चाकरो के बीच में लोट-लोट कर रो रही थी। उसी वक्त उन्होने अपने तीनो बेटो को तार करा दिया। तुम्हारे अब्बा और बडे चाचा उस कलमुँही की मौत पर भागे चले आए मगर तुम्हारे मँझले चचा ने सबकी इज्जत रख ली। उन्होने उस जनमजली के मरने पर आने से इन्कार कर दिया।

"तुम्हारी दादी रो धोकर चुप हो गई मगर मेरी नजरा मे उनकी जरा भी इज्जत न रह गई थी। बस मजबूर थी जो खामोश रही। तुम्हारे अब्बा और बडे चचा उस गाँव चले गए जहाँ सलमा रहती थी और जब तुम्हारे अब्बा वापस आए तो कलमुँहे सफदर को सीने से लगा लाए।

"सलमा को मरे चालीस दिन भी न हुए थे कि तुम्हारे दादा सज्दे के लिए झुकते हुए अल्लाह को प्यारे हो गए। देखते-देखते घर तबाह हो गया। तीनो बेटो ने उस गाँव में रहना पसन्द न किया और जागीर को खडे-खडे एक नवाब के हाथो बेचकर अपनी-अपनी नौकरियो पर वापस चले गए। अगर वह जायदाद होती तो आज मैं दादी की जगह मलका बनकर बैठती, मगर नसीब में तो यह लिखा था। अब तुम्हारी दादी अपने बडे बेटे के टुकडो पर पडी एड़ियाँ रगड रही है और उस फसाद की जड की औलाद मेरी छाती पर मूँग दल रही है, हाय!"

अम्मा जब भी आपा को किस्सा सुनाती तो बडे गौर से उसकी तरफ देखती और आपा जैसे घबराकर उनसे नजरें बचा लेती। अम्मा आपा से तो कुछ न कहतीं मगर उसे समझाने लगती, 'मेरी जान, तुम उस कलक के टीके के पास ज्यादा न उठा-बैठा करो। उसके बाप दादा ने मेरा राज-पाट छीन लिया।'

अम्मा की इस नसीहत का उस पर जरा भी असर न हुआ। उसे तो गुस्सा आता कि जब सफदर भाई इतने अच्छे हैं तो अम्मा उनसे क्यो नाराज रहती हैं।

एक दिन तो वह अम्मा की शिकायत भी करना चाहती थी मगर जब सफदर भाई के पास गई तो कुछ न कह सकी, "सफदर भाई, आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।" वह उनकी तारीफ करने लगी।

"मगर मैं बुरा किसे लगता हूँ?"

"किसी को भी नहीं।" और वह जल्दी से भाग आई।

जाने कौन निचली मंज़िल के दरवाज़े की ज़ंजीर खड़खड़ा रहा था। उसने लिहाफ से मुंह निकाल कर देखा। कमरे में घोर अँधेरा छाया हुआ था। चची जान की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"इन शायरों का बुरा हो। इतनी सर्दी में लोग अपने घरों से कब निकलते होंगे।" बादलों की गरज में वह और कुछ न सुन सकी।

'अल्लाह!' उसने बेचैनी से जैसे करवट बदली, 'अगर नींद आ जाए तो कैसा अच्छा हो।'

तीन

सहन में कनवेस की आराम-कुर्सियाँ बिछ गई थीं। छोटी मेज़ पर आपा के हाथ का कढ़ा हुआ मेज़पोश पड़ा था। नौकरानी मेज़ पर चाय के बर्तन लगा रही थी और अम्मा एकसा हिदायतें दिए जा रही थीं।

आपा मेंहदी के छोटे से पौदे पर पानी छिड़कने के बाद अम्मा के पास आ बैठीं। सफदर भाई अब्बा के पास वाली कुर्सी पर बैठे थे। वह अब्बा के पास खड़ी थी, मगर कोई भी तो उसकी तरफ ध्यान न दे रहा था। उसने कई बार अब्बा के हाथ पर हाथ रखा लेकिन वह सिर्फ मुस्करा कर रह गए। अम्मा सफदर भाई को घूर-घूर कर देख रही थीं।

आपा ने इस तरह जल्दी-जल्दी चाय पी जैसे किसी जरूरी काम से जा रही हों। मगर उसकी चाय पड़ी ठण्डी हो रही थी। उसने मारे गुस्से के प्याली को हाथ भी न लगाया। वह कितनी सख्त रंजीदा हो रही थी। भला यह कोई घर है, जहाँ सब लोग मुंह फुलाए बैठे हैं। कैसा अच्छा होता कि वह इस जगह न आई होती। यहीं आकर तो उसने सबके फूले हुए मुंह देखे थे। वह न जाने और क्या-क्या सोचकर सबसे नाराज हो गई थी और वहाँ से हटकर मेंहदी की पत्तियाँ नोचने लगी।

'तुम चाय नहीं पियोगी बेटी?" अब्बा ने पूछा, मगर वह चुप रह कर अपनी खफगी जाहिर कर रही थी। उसका जी चाह रहा था कि खूब ज़ोर से चीखे 'नहीं पीते, बला से ठण्डी हो जाए, किसी का इजारा है।'

"कूढ़ा क्यों कर रही हो?" अम्मा ने सख्ती से पूछा और वह उठकर आपा के पीछे हो ली, जो लम्बे-लम्बे कदम रखती अपने कमरे की तरफ जा रही थीं।

'सब मुंह बनाए बैठे रहते हैं आपा।" उसने बड़े दुख से फरियाद की, "यहाँ

तो लडकियाँ भी नही जिनके साथ खेलूं। कूदूँ तो जी बहल जाए।"

"अरे तुम इतनी बडी हो रही हो और और तुमको इतना भी नही मालूम कि जब घर मे लडाई हो तो सब चुप रहते हैं। दोपहर में अम्मा और अब्बा में खटपट हो गई।" उस दिन पहली बार आपा उसको बडा समझकर सजीदगी से बातें कर रही थीं।

"लडाई हुई ?"

"बस यही कि अम्मा को सफदर भाई से नफरत है। जब तक वह इस घर से नही जाते, ये लडाइयाँ भी नही खत्म होती।"

फिर कमरे के हल्के से अँधेरे में आपा उसे अपने पास बिठाकर खुसुर-फुसुर करने लगी, "जब तुम्हारे सफदर भाई चौथे दरजे मे पढते थे तो मैं बिल्कुल छोटी सी थी, पर मुझे सब याद है। एक बार अम्मा ने उनको बेहद मारा था। जब अब्बा को मालूम हुआ तो वह अम्मा से रूठकर ठाकुर साहब के घर चले गए थे। ठाकुर साहब ने बडी मुश्किल से अब्बा को राज़ी करके घर भेजा था। बस उस वक्त से अम्मा सफदर भाई से और भी नफरत करने लगी। कैसे बेशर्म हैं तुम्हारे ये सफदर भाई भी जो यहाँ से जाते नही। अब तो इस लायक भी हो चुके हैं कि कमा खाएँ। मुझे अच्छी तरह याद है कि अम्मा की हिदायत पर नौकरानी सफदर भाई को गर्मियों में दो वक्त का सडा हुआ खाना खिलाती थी। चुल्लू भर दूध में ढेरो पानी मिलाकर पीने को देती और गोश्त के छिछडे काट कर उनके लिए कीमा पका देती। मगर सफ्दर भाई ने कभी अब्बा से शिकायत न की। एक दिन खुद अब्बा को जाने क्या सूझी कि उनका खाना देखने बैठ गए। उसके बाद सफदर भाई को अपने साथ खाना खिलाने लगे। इसके बाद भी सफदर भाई की सेहत खराब ही रही।

"हय, छिछडे तो कुत्तों को खिलाते हैं। वह था न आपा हमारा छोटा सा कुत्ता टामी, उसे भी तो छिछडे उबाल कर दिये जाते थे।" उसने कहने को तो कह दिया मगर आपा एकदम सिसकने लगी और वह हैरान होकर रह गई।

"तुम सफदर भाई से ज्यादा न बोला करो।" आपा ने आँसू पोंछ कर जल्दी से कहा और फिर हँसने लगीं। वह आपा की हिदायत की परवाह किए बगैर बाहर आ गई। सब उसी तरह बेज़ार बैठे थे और कही बहुत दूर से अज़ान की आवाज़ आ रही थी।

"सफदर भाई बाहर घूमने चलें?" उसने अम्मा की तरफ जाकर देखे बगैर कहा, मगर सफदर भाई बिल्कुल खामोश रहे।

"अब इसे स्कूल में दाखिल करवा दो न, वरना यूँ ही मारी-मारी फिरेगी ?" अम्मा ने तेज लहजे में कहा।

"मालूम करूँगा। सुना है यहाँ बस एक ही मिशन हाई-स्कूल है और वहाँ

सिर्फ अंग्रेजी पढाई जाती है या फिर अपने धर्म का प्रचार होता है। मैं अंग्रेजों के इन स्कूलों के सख्त खिलाफ हूँ। यह हमारी गुलामी से हर तरह का फायदा उठाते हैं।"

"बात तो सारी यह है कि तुम अंग्रेजों के खिलाफ हो। उनकी नौकरी करोगे मगर बेटी को उनके स्कूल में नहीं पढाओगे। बस इस खानदान में तो तुम्हारी बहन और भाजा पढ़ेगा। तुम्हारी एक साहबजादी दस दर्जे पढ कर घर बैठ रहीं, उन्हें खैर से किस्से-कहानियों की वाहियात किताबें दे-दे कर तबाह किया, अब दूसरी को अंग्रेज-दुश्मनी के सुपुर्द कर दो।" अम्मा एकदम बफर गईं।

उसने घबरा कर सफदर भाई की तरफ देखा। वही तो आपा को किताबें देते थे। सफदर भाई जैसे बौखला कर अपने कमरे की तरफ भागे और अब्बा ने कुर्सी की पीठ से सिर लगा कर आँखें बन्द कर ली। वह उस वक्त कितने जख्मी नजर आ रहे थे।

वह लडाई के खौफ से बाहर आ गई। बैठक के सामने वाले चबूतरे पर दो आराम-कुर्सियाँ पडी थीं। वह वहाँ बैठ कर पाँव हिलाने लगी। दो-मंजिले मकान से हारमोनियम पर गाने की आवाज आ रही थी :

कौन गली गयो श्याम, बता दे कोई
काशी ढूँढ़ा बिन्दरा ढूँढ़ा
गोकुल मे हो गई शाम, बता दे कोई
कौन गली गयो श्याम, बता दे कोई ॥

वह चुपके-चुपके बोल दोहराने लगी। गाना-बजाना उसे कितना अच्छा लगता था, मगर अम्मा के डर से कभी गाने का नाम न लिया। वह तो अम्मा के मुँह से यही सुनती रहती थी कि शरीफों के घरों की लडकियाँ नहीं गातीं।

चबूतरे पर बैठे बैठे शाम का अँधेरा छाने लगा। मन्दिरों से घण्टों की आवाज आ रही थी और ढेरों चिडियाँ बसेरा लेने के लिए दरख्तों पर शोर मचा रही थीं। सामने कच्ची सडक पर बकरियों का रेवड धूल उडाता गुजर रहा था। वह उन्हें गिनने लगी, मगर जी न लगा। घर में लडाई देखकर वह कितनी रंजीदा हो गई थी।

"अन्दर चलो बिट्टो, रात हो रही है।" जब सफदर भाई ने उसे उठाया वो वह उनसे लिपटकर रोने लगी।

"जब तुम स्कूल में दाखिल हो जाओगी तो दिल बहल जायगा।" सफदर भाई ने किस तरह उसे सीने से लगाया, जैसे मारे ममता के वह तडप रहे हों।

नौकरानी लालटेन हाथ में लिए जाने इधर से उधर क्या करती फिरती थी। अब्बा और अम्मा उसी तरह बेजार बैठे थे।

"घूम आई ?" माँ ने सख्ती से सवाल किया और उसके जवाब का इन्तजार किए बगैर अब्बा से मुखातिब हो गई :

"मैं कहती हूँ कि फौरन इसे स्कूल में दाखिल कराओ। मुझे तो अपनी इसी लड़की पर अरमान पूरे करने हैं। तुम्हारे अरमान तो बहन और भाजे पर पूरे हो गए।'

"सफदर मियाँ, तुम अपने कमरे में जाओ।" अब्बा ने नर्मी से कहा और जब सफदर भाई अपने कमरे मे चले गए तो अब्बा एकदम सख्त हो गए, "मुझे मिशन स्कूल से नफरत है। मैं इसे नही पढाऊँगा। बेशक अनपढ रहेगी।"

"यह तो मैं देखूँगी कि अनपढ़ रहेगी कि पढेगी। तुमको तो अल्लाह वास्ते वैर है अंग्रेजो से। जिस थाली में खाओ उसी में छेद करो।' अम्मा की आवाज में इस बला का व्यग था कि अब्बा कुर्सी से उछल पडे।

"मैं तो सिर्फ यह कहना चाहता हूँ कि तुमने मेरी इजाजत के बगैर अपने भाई के पास मेरे रुपये क्यो रखाए ? मैं तो अपने बच्चो से मजबूर होकर नौकरी कर रहा हूँ। अगर तुमने वह रुपये गायब न किए होते तो मैं उनसे कोई व्यापार कर लेता।"

"कौन से रुपये ?" अम्मा जैसे बिलबिला उठी।

"वही जो जमीन बेचने के बाद मेरे हिस्से में आए थे।"

"खूब ! वह रुपये तो आलिया और तहमीना के लिए है। यहाँ क्यों रखती ? इसलिए न कि तुम्हारी बहन और भाजे के काम आ जाते। मैं अब ऐसी बुद्धू नही हूँ।' अम्मा हँसी।

"मैं तुम्हारे भाई पर दावा कर दूँगा।"

"जानते हो, मेरे भाई की बीवी अग्रेज है।" अम्मा ने बडे गुरूर से सिर ऊँचा कर लिया।

"वह तो मैं जानता हूँ। तुम्हारे भाई बेचारे यूँ ही फिरते थे। अग्रेज बीवी लाकर बडा ओहदा मिला है।" अब्बा इस तरह बात कर रहे थे जैसे गाली दे रहे हो।

"तुमको नौकरी करते बारह-पन्द्रह साल हो गए मगर बडा ओहदा न मिला। इसलिए अब जलोगे नही तो और क्या करोगे।" अम्मा ने हिकारत से जवाब दिया।

"ओफ्फोह।" अब्बा ने सख्त बेजारी से मुंह फेर लिया और फिर दालान के कोने में खड़ी हुई छड़ी उठाकर बाहर चले गए।

अम्मा दुपट्टे का पल्लू मुंह पर डालकर धीरे-धीरे रोने लगी। आपा आकर उन्हें समझाने लगी तो उन्होने आंसू पोछ लिए।

"मैंने वह रुपये तुम दोनो बहनो के लिए जमा करवाये हैं, वरना सफदर और

नजमा पर उड जाते।" अम्मा ने रुँधी हुई आवाज़ में कहा और लम्बी-लम्बी आहें भरने लगी।

इस वक्त उसे महसूस हो रहा था कि सफदर भाई भूत हैं, जो सब-कुछ खा जाएँगे। अम्मा के लिए उसका जी तड़प उठा था। यही चाहती थी कि जाकर अम्मा से लिपट जाए, मगर मारे घबराहट के अपने बिस्तर पर लेट गई।

पूरा चाँद उभर चुका था। हारमोनियम पर गाने की मद्धिम-मद्धिम आवाज़ आ रही थी :

जो मैं जानती बिछुड़त हो पिया,
घूँघट में आग लगा देती।

वह गीत सुनते-सुनते सो गई। सोने में एक बार उसने महसूस किया कि कोई उसे उठा रहा है मगर वह न उठी। जाने रात सबने खाना भी खाया था कि नही।

चार

वहाँ आए कुछ ही दिन गुजरे थे कि अब्बा की बैठक आबाद हो गई। कुसुम दीदी के पिताजी भी आने लगे थे। अम्मा हर वक्त गुस्से से बिफरी रहती, 'यह सब बेकार लोग हैं। इन्हें दुनिया का कोई काम नही। बेटी दिन-रात गाती है और बाप राजनीति बघारता है।'

कुसुम दीदी अम्मा को एक आँख न भाती थीं। नफरत की सबसे बडी वजह तो यही थी कि उनके पिताजी अंग्रेजी राज के खिलाफ थे। इस पर जुल्म यह कि हिन्दू थे और उनकी विधवा बेटी गाती-बजाती रहती थी।

अम्मा को कुसुम दीदी से जरा भी हमदर्दी न थी। हालाकि उन्होंने दूसरी ही मुलाकात पर अपनी सारी बिपता कह सुनाई थी, "मैं तो उस वक्त चौदह-पन्द्रह साल की थी। शादी के सिर्फ तीन महीने हुए थे। वह उन दिनो अमृतसर में बदली होकर गए थे। जिस दिन वह जलियानवाला बाग के जल्से मे शरीक होने गए तो सास-ससुर ने बहुतेरा रोका मगर वह उनकी बातो पर हँसते रहे। मैं अपने सास-ससुर की बातें सुन-सुनकर पागल हुई जा रही थी। मगर मारे लाज के कुछ न कह सकी। घूँघट के अन्दर से उनके उठते हुए पाँव देखती रही। वह तो कहते थे कि मुझे तुमसे बडी मुहब्बत है पर जाते समय मेरे दिल की मर्जी न पूछी। वह हँसते हुए चले गए और

कभी न मुड़े। मैं उनकी राह तक-तक कर थक गई। मुझे विधवा जानकर सब मेरे साये से बचते हैं। पर जाने क्या बात है कि मैं आज तक अपने को विधवा नहीं समझती। मैं विधवा हूँ मौसी?" कुसुम दीदी ने अम्मा की तरफ देखकर पूछा था और फिर जाने क्यों छत तकने लगी थी। अम्मा ने अपने सामने पानदान खींच लिया था और वह जाने क्यों उस वक्त कुसुम दीदी से लिपट गई थी।

"अगर उन्हें मुझसे मुहब्बत होती तो कभी न जाते। उन्हें तो सिर्फ अपने देश से मुहब्बत थी। अब मैं अपनी मुहब्बत को कहाँ ले जाऊँ। उन्होंने तो यह भी न सोचा कि मेरे सीने में भी दिल है।" कुसुम दीदी ने जैसे फरियाद की और फिर साड़ी के पल्लू में मुँह छिपा लिया। अम्मा ने शायद उनकी बेशर्मी से घबराकर मुँह फेर लिया।

कुसुम दीदी जब पहली बार उसके घर आई थी तो ऐसा महसूस हुआ था कि कहानियों की परी आ गई है। उस दिन वह घर से बेज़ार होकर बाहर चबूतरे पर बैठी थी। उसी दिन तो सख्त फसाद के बाद सफदर भाई उसे स्कूल में दाखिल कर आए थे। सफदर भाई ने शायद पहली बार अब्बा की मर्ज़ी के खिलाफ कोई हरकत की थी मगर अब्बा ने उन्हें एक लफ्ज़ न कहा था, सिर्फ अम्मा से बात न की। जब वह बोलती तो अब्बा मुँह फेर लेते।

कुसुम दीदी अपने दो-मंज़िले मकान से उतरकर उसके पास आ खड़ी हुई थी। नन्हे-नन्हे गोरे पाँव चाँद के दो टुकड़े मालूम हो रहे थे और उनकी लंबी, मोटी आँखों में कैसी सूजन सी थी। वह उसका हाथ थामकर कितने प्यार से मुस्कराई थी।

"मैं राय साहब की पुत्री हूँ। तुम्हारी अम्मा से मिलने को आई हूँ।" उन्होंने धीरे से कहा था और उसे कहानियों की वह शहज़ादी याद आ गई थी, जिसके मुँह से बात करते वक्त फूल झड़ते थे।

तहमीना आपा और कुसुम दीदी की ऐसी दोस्ती गठी कि दोनों घण्टों कमरे में जाने क्या-क्या बातें किया करतीं। अम्मा उतनी देर तक जली-जली फिरतीं और जब कुसुम दीदी अपने घर चली जातीं तो अम्मा को कोई न कोई बुरी सी बात याद आ जाती, "कम्बख्त काफिरों में क्या बुरा तरीका है कि दूसरा निकाह नहीं करते। कैसा पाप होता है—जवान-जहान औरत को बिठाए रखना। हमें पता है कि ये जवान-जहान बेवाएँ किस तरह हँडिया में गुड़ फोड़ती हैं।"

आपा सिर झुकाकर सब-कुछ सुन लेतीं मगर उसे ऐसी बातें बड़ी बुरी लगतीं। कुसुम दीदी तो चोरी-छिपे उसे हारमोनियम भी सिखाने लगी थीं।

"कुसुम दीदी तो गुड़ खाती ही नहीं जो फोड़ेंगी। उन्हें गुड़ से नफरत है।" वह गुस्से से चीख पड़ी थी और अम्मा खिलखिला कर हँस दीं। उस दिन उसने आपा से

भी बात न की थी। 'ऐसी खामोशी किस काम की कि अपनी सहेली की तरफ से बोलती तक नहीं। बड़ी आपा हैं कहीं की।' वह चुपके-चुपके बडबडाती रही।

पाँच

उस रोज़ शाम को ज़ोर से आँधी चली और बादल घिर कर आ गए। शायद जून के आखिरी दिन थे। सारी रात बादल छाए रहे और किसी-किसी वक्त हल्की सी बारिश हो जाती। अम्मा और अब्बा कमरे में सो रहे थे। वह आपा के साथ बरामदे में सो रही थी। किसी वक्त हवा तेज होती तो बौछार पाँयती तक आती और उसकी आँख खुल जाती। मगर एक बार जब उनकी आँख खुली तो आपा अपने बिस्तर पर न थी। बादल धीरे-धीरे घमक रहे थे। उसे डर लगा मगर आपा कुछ ही मिनट में आ गईं। पर वह अकेली न थी। सफदर भाई भी साथ थे। उसे सख्त हैरत हुई कि क्या आपा रातों को सफदर भाई से बात करती हैं। क्या वह अम्मा से इतना डरती हैं।

आपा बिल्लियों जैसी चाल से आईं और जब अपने बिस्तर पर लेटने लगीं तो सफदर भाई ने उन्हें लिपटा लिया, फिर उनके चेहरे पर झुके रहे। उसने मारे हैरत के सांस तक रोक ली थी। सलमा फूफी की कहानी उसे याद आ रही थी। उस वक्त उसको कितना अजीब लग रहा था।

सुबह जब आपा उसे स्कूल जाने के लिए तैयार कर रही थीं तो उसने धीरे से पूछा था, "आपा रात तुम कहाँ चली गई थीं?"

"एं!", मारे भय के आपा के होंठ नीले पड़ गये थे।

"मैं कोई अम्मा से थोड़े कहूँगी। मैं किसी से नहीं कहूँगी।" उसने पूरी औरतों की तरह आपा को तसल्ली दी तो उन्होंने उसे लिपटा लिया। उनका सारा जिस्म भय से काँप रहा था।

"अगर तुमने अम्मा से कह दिया तो वह जाने क्या करेंगी—सलमा फूफी के साथ भी जो कुछ न हुआ होगा। बिट्टो तुम्हारे सफदर भाई मुझे अच्छे लगते हैं। बस इतनी सी बात है।"

"वह खुद मुझे अच्छे लगते हैं। मैं भला अम्मा से कह सकती हूँ। कहीं अम्मा भी उन्हें चपरासी से जूते ...।"

आपा ने जल्दी से उसके मुँह पर हाथ रख दिया। उनका रंग हल्दी की तरह पीला हो रहा था, "मैं उनको यहाँ से भगा दूँगी।"

"यह बात ठीक है।"

दालान में सफदर भाई खड़े थे। वह उनके साथ स्कूल चली गई। मगर वहाँ भी उसका जी न लगा। सफदर भाई कहते थे कि स्कूल जाकर जी बहल जाएगा। मगर वह तो बड़ी होती जा रही थी। हर बात का उसके दिमाग़ पर असर होता। रात का क़िस्सा बार बार याद आता और वह अन्जाम के खौफ से एक लफ़्ज़ भी न पढ़ सकी थी।

छै

उस दिन स्कूल की सुपरिन्टेण्डेण्ट ने घर आने को कहा था। अम्मा और आपा सारा दिन घर सजाती रहीं : दीवारों में तने हुए मकड़ी के जाले तक साफ किए गए। सफदर भाई गेंदे और गुलमेंहदी के फूल ले आए जो नीले फूलदानों में सजा दिए गए। नौकरानी ने बाल्टियाँ भर-भर कर आंगन धो दिया और वहाँ मेंहदी के पौदे के पास आराम-कुर्सियाँ और मेज़ बिछा दी गई। मेज़ पर आपा के हाथों का कढ़ा हुआ सबसे ख़ूबसूरत मेज़पोश बिछाया गया। चाय के लिए नया जापानी सेट निकाला गया। वह सेट उसी वक़्त निकाला जाता जब खास क़िस्म के मेहमान आते। चाय के साथ खाने के लिए कई चीज़ें तली गईं। अम्मा उस दिन बेहद खुश और व्यस्त नज़र आ रही थीं। दोपहर में उन्होंने न खुद आराम किया न नौकरानी को कमर टिकाने दी।

"भई एक है, अंग्रेज़ होकर खुद हमारे घर आने को कहा।" अम्मा बार-बार आपा से कहतीं और खिली जातीं।

अम्मा की इस बात पर उसने कई बार महसूस किया था कि सफदर भाई अपनी मुस्कराहट रोकने के लिए होंठ भींच लेते हैं।

"मेरा ख्याल है कि ज़्यादा लोगों को चाय पर न शरीक होना चाहिए। वह अंग्रेज़ है, शायद इसे पसन्द न करे।" चार बजने में जब थोड़ी देर रह गई तो अम्मा ने त्योरी पर बल डालकर अपने हिसाब बड़ी आम सी बात की और सफदर भाई उसी वक़्त अपने कमरे में चले गए।

ठीक चार बजे मिसेज़ हारवुड आ गईं। अम्मा और आपा ने उनका स्वागत

किया। मिसेज़ हारवुड की नीली कांच की गोलियों जैसी आँखें घूम-घूमकर घर का जायज़ा ले रही थीं। कुर्सी पर बैठते ही जल्दी-जल्दी बोलने लगी :

"आप लोगों से मिलकर हमको बहुत खुश हुआ है। आपका घर बड़ा अच्छा है। बड़ा साफ है। दूसरा यहाँ के लोग तो बड़ा गन्दा घर रखता। हम फिर जरूर आएगा आप लोग के पास।"

"हाँ, इस मुल्क के लोग बड़े गन्दे होते हैं। हमारी भाभी यानी हमारे भाई की बीवी अंग्रेज़ है।" अम्मा ने बड़े गर्व से कहा।

"अच्छा!" नीली कांच की दोनों गोलियाँ मारे हैरत के टूटती नज़र आने लगी थीं।

मिसेज़ हारवुड की गहरी नीली आँखें उसे कितनी प्यारी लगी थीं। स्कूल में जब वह उनके कमरे में जाती तो चुपके-चुपके उनकी आँखों को देखती रहती।

"यहाँ की औरतें मुर्गियाँ पालती हैं और उनकी गन्दगी....।" अम्मा जाने और क्या कहती कि आपा बोल उठी :

"अब चाय पी जाए।"

जब से सफदर भाई अम्मा की बात पर अपने कमरे में चले गए थे उस वक्त से आपा बेज़ार हो रही थी। उनके चेहरे पर अचानक थकन के निशान उभर आये थे।

"हाँ-हाँ तहमीना बेटी, नौकरानी से कहो।" चाय के नाम पर अम्मा बौखला गई। उनका चेहरा फीका पड़ गया। जिस वक्त अब्बा दफ्तर जा रहे थे तो अम्मा ने उनसे कई बार कहा था कि चाय के वक्त पहुँच जाएँ ताकि मिसेज़ हारवुड से अंग्रेज़ी में बातें करके उसे खुश कर सकें।

"तुम हमारे पास बैठना मांगता है मालिया?" मिसेज़ हारवुड ने उसको प्यार से देखा और वह आपा के पास से सरक कर उनके करीब बैठ गई। मगर जैसे ही चाय प्यालियों में उँडेली गई तो वह जल्दी से एक प्याली उठाकर खड़ी हो गई। अम्मा ने घूरकर देखा मगर वह सफदर भाई के कमरे की ओर लपक गई।

सफदर भाई अपने कमरे में औंधे मुँह पड़े थे। वह जाने उस वक्त क्या सोच रहे थे। कमरों के अन्दर कितनी जल्दी शाम हो जाती है। उनके कमरे में अँधेरा फैला था। "सफदर भाई चाय।" उसने प्याली मेज़ पर रख दी।

"अरे वाह!" वह उठ कर बैठ गए। आलिया बिट्टो तुम भी मेरे साथ पियो।"

"नहीं, मिसेज़ हारवुड के साथ पिऊँगी!"

वह बाहर आ गई। मिसेज़ हारवुड मज़े ले-लेकर शामी कबाब खा रही थीं और मिर्चें आँसू बनकर टपक रही थीं।

"आपकी लड़की बड़ी होशियार है। खूब पढ़ती है।" मिसेज़ हारवुड ने उसकी तारीफ़ की तो वह शरमा गई।

"जी हाँ, हमारी लडकी बड़ी होशियार है। वैसे यहाँ की लड़कियाँ बड़ी कूढ़मग्ज़ होती हैं। पढ़ने के नाम से भागती हैं। हिन्दुस्तानी लोग अपनी लड़कियों को अनपढ़ रखकर खुश होते हैं।" अम्मा फिर तरंग में आ गई थी।

"करड़गज़ ?" मिसेज़ हारवुड ने समझना चाहा।

"बस होती हैं।"

"और आपकी इस लड़की ने कितना पढ़ा है ?" मिसेज़ हारवुड ने हँस कर पूछा।

"दस दर्जे। फिर बीमार हो गई।" अम्मा ने कहा।

आपा इस पूरे वक्त को खामोशी से गुज़ारती रही। उन्होंने मिसेज़ हारवुड से एक बात भी न की।

शाम सँवला चुकी थी। बसेरा लेने वाले परिन्दों की कतारें जाने किस ओर उड़ी जा रही थी। मिसेज़ हारवुड बौखला कर उठ गईं।

"आपका साहब नहीं आया। हमारे को उससे मिलने का बड़ा शौक था। कहीं चला गया होगा दफ़्तर के काम को।"

"जी हाँ, जी हाँ। आज उनके एक दोस्त मर गये थे। इसीलिए उनके घर गए होंगे।"

अम्मा इससे बडा बहाना और क्या कर सकती थी। एक अंग्रेज औरत के साथ चाय न पी सकने की कोई बड़ी वजह ही हो सकती थी।

मिसेज़ हारवुड के जाते ही अम्मा जैसे झन्ना उठीं, "देखा, चाय पर नहीं आए न! वह तो कहो मुझे अच्छा बहाना याद आ गया वरना क्या समझतीं मिसेज़ हारवुड! देख लेना ये अपनी नफ़रत के पीछे कुछ करके रहेंगे। भला कोई इनसे पूछे कि अंग्रेज़ से ज़्यादा अच्छा हुकूमत करने वाला कौन होगा। अपने लोग तो ऐसे हैं कि एक-दूसरे का गला.काटते रहते है। अरे कौन समझाए इस शख्स को ?"

"कोई काम लग गया होगा।" आपा ने अब्बा की सफ़ाई पेश की।

"काम ?" अम्मा बफर उठीं, "कोई काम नहीं होगा। अरे वह शख्स....।" अम्मा जाने और क्या कुछ कहतीं। वह जल्दी से सफ़दर भाई के पास चली गई। चाय की प्याली उसी तरह मेज़ पर रक्खे-रक्खे ठण्डी हो गई थी। सफ़दर भाई लालटेन की पीली-पीली रोशनी में अजब से लग रहे थे।

"सफ़दर भाई आपने चाय नही पी ?"

"अरे तो क्या मैंने नहीं पी!" वह प्याली उठा कर पानी की तरह पी गए।

"मैं नहीं बोलती आप से, अब पी है तो क्या!" वह कमरे से निकल रही थी तो सफदर भाई पुकार रहे थे मगर उसने जवाब तक न दिया।

जब काफी अंधेरा हो गया तो नौकरानी ने मेज़-कुर्सियाँ हटाकर पलँग बिछा दिए। नौकरानी थकन से चूर हो रही थी और अफ़ीम के नशे से आँखें बन्द हो रही थी। उसके हर मर्ज़ का इलाज सिर्फ अफ़ीम से होता था। नन्ही सी गोली निगलते ही वह सारे दिन की दुर-दुर, फिट-फिट भूल जाती थी, थकन गायब हो जाती और और वह मलका जैसी शान से सो जाती।

नौकरानी बिस्तर लगाकर बावर्चीख़ाने में गई तो अब्बा आगए। अम्मा उन्हें देखते ही बफर गईं, "अब आए हैं ख़ाँ साहब। क्या वह न समझती होगी कि आपको उसका आना बुरा लगा। हद है, वह अंग्रेज होकर हमारे घर आए और साहब बहादुर परवाह न करें। अगर वह रिपोर्ट कर दे कि जनाब ने उससे बदसलूकी की थी तो फिर होश ठीक हो जाएँगे।" अम्मा ने इतने जोर से पानदान बन्द किया कि नौकरानी घबराकर बावर्चीख़ाने से बाहर निकल आई।

"अब वह जमाने लद गए जब तुम्हारे अंग्रेज के नाम से थरथरी छूटती थी। बात यह है कि अगर मैं कुछ न कर सकूँ तो क्या नफरत भी नहीं कर सकता।" अब्बा ने सख़्ती से कहा, "ये बदनियत व्यापारी, ये हुक्मरान क्या, मुझे इनकी सारी कौम से नफरत है। अगर मेरा दिमाग बड़े भाई जैसा होता तो फिर देखता। मगर मैं तो बँधा हुआ हूँ। नौकरी करने पर मजबूर हूँ।"

"हूँ। वह तो मैं जानती हूँ कि तुम हर वक्त सबको भूखा मारने पर तुले हुए हो।"

"यही तो वजह है कि नौकरी कर रहा हूँ, वरना मैं तो बड़े भाई की तरह दुकान करके बैठ जाता। मगर तुम तो सब-कुछ अपने भाई के पास रख कर चली आईं। —वह बड़ा दानतदार आदमी है। उसकी बीवी अग्रज है।"

"मैंने दस दफा कहा कि मेरे भाई-भावज का नाम मत लिया करो।" अम्मा एकदम सिसकियाँ भर-भर कर रोने लगी।

आपा बड़ी ख़ामोशी से पलँग पर पाँव लटकाए बैठी थी। उनकी आँखों में आँसू थे। मलगजी चाँदनी में उनके आँसू कितने दर्दनाक लग रहे थे।

'सब रोओ, सब लड़ो, वह घर से भाग जाएगी।' उसने बड़े-बूढ़ों की तरह सोचा था। लड़ाई और आँसू उसकी आत्मा में काँप रहे थे।

वह अपने बिस्तर पर औंधी लेट गई और जोर-जोर से सिसकियाँ लेकर रोने लगी।

"देखो बेगम, इन बच्चों पर क्या असर पड़ रहा है। यह सब तबाह हो

जाएँगे।" अब्बा कपड़े बदलने के लिए अपने कमरे में चले गए। अम्मा ने आँसू पोंछ लिये।

"खाना ले आओ, आलिया सो न जाए।" अम्मा ने नौकरानी को आवाज़ दी।

"मैं नहीं खाऊँगी।" वह ज़ोर से चीख़ी और फिर रोने लगी।

खाना आया तो उसने अब्बा की नरम-नरम हथेलियों वाले हाथ अपने माथे पर महसूस किए, मगर वह सोती हुई बन गई। वह तो उस दिन अलानिया सबसे रूठ गई थी।

दिन गुज़रते जा रहे थे। घर का वातावरण धूप-छाँव की तरह बदलता रहा। अब्बा का शामें बैठक में गुज़रती। दोस्तों के जमघट में वह ज़ोर-ज़ोर से बातें करते। नौकरानी चाय बना-बनाकर बाहर ले जाते हुए चुपके-चुपके बड़बड़ाती रहती और अम्मा जैसे बड़ी बेचैनी के साथ इधर-उधर फिरती रहती या किसी के किये हुए काम को फिर से करने लगती। आपा बदस्तूर ख़ामोश रहती और किसी किताब के एक ही सफ़े को पढ़े चली जाती।

ख़ुदा जाने आपा इतना कम क्यों बोलती थी। क्या मुहब्बत लोगों को गूँगा बना देती है? क्या मुहब्बत का नाम शब्दों की मौत होता है? फिर लोग इतनी घटिया चीज़ के पीछे क्या भागते हैं? आपा तुम कितनी मासूम थीं?

घर के दर्दनाक माहौल से घबरा कर वह बैठक के दरवाज़े पर जा खड़ी होती। नेहरू, जिन्ना, गाँधी वगैरह के सुने हुए नामों के अलावा उसकी समझ में सिर्फ़ इतना आता था कि सब अंग्रेज़ों की बुराई कर रहे हैं। उसे कोई भी मज़े की बात सुनाई न देती। इस पर अब्बा उसे देखते ही अन्दर जाने का हुक्म देते। सफ़दर भाई उसके आँखों आँखों में किये हुए इशारे समझने से इन्कार कर देते। वह भी तो शाम के वक़्त बैठक से उठने का नाम न लेते थे।

वह रंजीदा होकर बाहर चबूतरे पर जा बैठती और उसे अपनी पहली जगह याद आने लगती। कितनी दूर रह गई थी वह जगह। वहाँ से आते हुए ट्रेन की खिड़की के पास बैठकर उसने इतने दरख़्त गिने थे कि सारे हिसाब ने दम तोड़ दिया था।

जेठ का महीना था। लू चलती रहती। आमों और पीपल के दरख़्तों में छिपे हुए परिन्दे सारे दिन शोर मचाते रहते। आँगन में लगा हुआ मेंहदी का छोटा-सा पौदा सूख चला था। नौकरानी लाख पानी डालती मगर उसकी पत्तियों पर रौनक़ न आती। चाँदनी रातों में ठाकुर साहब के घर से कुसुम दीदी के हारमोनियम पर गाने की आवाज़ आती तो आपा उठकर टहलने लगतीं। कुसुम दीदी उन दिनों एक ही गीत को रटे जाती।

अम्मा अब्बा के इन्तज़ार से थक कर आपा से बातें शुरू कर देतीं। वही सफदर के खानदान से दुश्मनी की दास्तानें, नजमा फूफी की खुदगर्ज़ी के किस्से, भाई और भावज के मुहब्बत भरे गीत। आपा पलकें झपका-झपका कर सब बातें सुनती मगर खुद कुछ न कहती। अब्बा की बैठक जब सूनी होती तो किसी दोस्त के घर चले जाते थे और दस-ग्यारह से पहले वापस न आते।

रात सोने से पहले वह सफदर भाई के पास चली जाती। बाहर चबूतरे पर उनका पलँग बिछा होता, जहाँ वह खामोश पड़े कुछ सोचा करते।

"सफदर भाई कहानी सुनाइये।" वह जाते ही फर्माइश करती और उनकी कमर से टेक लगाकर बैठ जाती। सफदर भाई अपने बचपन में सुनी हुई कहानियाँ याद करने लगते और जब कहानी याद आ जाती तो ज़ोर-ज़ोर से हँसते। वह हमेशा एक शहज़ादी और एक गरीब आदमी से कहानी शुरू करते थे और गरीब आदमी शहज़ादी को न पा सकने के गम में हमेशा मर जाता था।

"सफदर भाई, आप तो किसी शहज़ादी से शादी नहीं करेंगे ?" एक बार उसने बड़ी फ़िक्र से पूछा था।

"लाहौल विलाकूवत, मैं क्यों मरूँगा बिट्टो।" और वह इस तरह हँसे थे कि वह चिढ़कर रह गई थी।

गर्मियों की छुट्टियाँ गुज़रती जा रही थीं। वह खुश थी कि स्कूल खुलने के दिन करीब आ रहे थे। जितना वक्त स्कूल में गुज़रता वह खुश रहती। सारी दुनिया को भूल जाती।

उस दिन दोपहर में जब वह सो रही थी तो अम्मा के ज़ोर-ज़ोर से बातें करने की आवाज़ ने उसे जगा दिया था। अब्बा की आवाज़ मद्धिम मगर झल्लाई हुई थी। वह घबराकर दालान में आ गई, जहाँ आपा पहले से खड़ी थीं। उसकी समझ में न आया कि आखिर बात क्या है।

ज़रा देर बाद बाहर से रायसाहब की आवाज़ आई और अब्बा बाहर चले गये। आपा अब्बा के जाने से पहले ही अपने कमरे में चली गईं।

"इस घर में सफदर दूल्हा बनकर उसी वक्त आएगा जब मेरी लाश जायेगी।" अब्बा ने जाते-जाते अम्मा की बात एक पल को सुनी और फिर चले गये।

अब्बा जैसे ही बैठक में गये, अम्मा ने आकर आपा को लिपटा लिया।

"देख लेना, मैं ज़हर खा लूँगी। वह तुमको उस कमीने सफदर के साथ ब्याहने की सोच रहे हैं। इनका तो दिमाग खराब हो गया है। यह उस शख्स से अपनी बेटी की शादी करेंगे, जिसके बाप दादा ने खानदानी इज़्ज़त लूट ली, मेरा राज-पाट छीन

लिया।" अम्मा रोते-रोते पलँग पर बैठ गईं, "अब उस कमीने को बी० ए० करने के लिए अलीगढ़ भेज रहे हैं! मैं आज ही तुम्हारे मामूँ को खत लिखूँगी। फिर देखूँगी कि सब-कुछ कैसे होता है!"

वह डर गई कि मामूँ मियाँ जाने क्या करेंगे, मगर फिर यह सोचकर उसे तसल्ली हुई कि अम्मा तो हमेशा ही मामूँ मियाँ को खत लिखा करती हैं, मगर वह दो-तीन महीने बाद ही जवाब देते हैं।

"तुम्हारी दादी बेशर्म थी जो सफदर के बाप को दामाद बनाकर अब तक ज़िन्दा बैठी रहीं! मैं तो उसी वक्त ज़हर खा लूँगी।"

"आप क्यों परेशान होती हैं। कुछ भी न होगा।" आपा जैसे कुएँ की तह से बोली। उनका चेहरा सफेद हो रहा था।

"ऐ हमारे आसमानी बाप, तू हमारे घर से लड़ाइयाँ खत्म करादे।" सफदर भाई के कमरे में जाते हुए वह चुपके-चुपके दुआ कर रही थी। मिस मर्सी की याद कराई हुई यह दुआ उसे बहुत से दु:खों से छुटकारा दिला देती थी।

कमरे में जाकर देखा, तो वहाँ सफदर भाई भी रो रहे थे। कुछ नहीं करता यह आसमानी बाप भी। वह आसमानी बाप से भी रूठ गई थी और रोते हुए सफदर भाई से लिपट गई।

'सब रो रहे हैं, अल्लाह करे मैं मर जाऊँ।' वह बहुत गंभीर हो रही थी।

"अरे मैं तो अलीगढ जा रहा हूँ न इसलिए रो रहा हूँ। मुझे अपनी आलिया बिट्टो याद आएगी।" उन्होंने हँसते हुए आँसू पोछ लिए, "तुम दस-ग्यारह साल की होकर कितनी बड़ी हो गई!" उन्होंने कहकहा लगाया।

'मुझे मालुम है, सब झूठ बोल रहे हैं।'

सफदर भाई सिर्फ एक हफ्ता बाद अलीगढ जा रहे हैं।

एक हफ्ता, माघ-पूस के सूरज की तरह जल्दी-जल्दी डूबा जा रहा था और वह बीते हुए दिनों को उँगलियों पर गिनती रह जाती। वह कितनी रंजीदा रहने लगी थी। उसे यकीन था कि आपा के बाद सिर्फ सफदर भाई उसका ख्याल करते हैं। आपा खामोशी से मुहब्बत करती हैं। मगर सफदर भाई तो उसके साथी हैं, जिनसे वह खेलती है, कहानियाँ सुनती है। वह चले जाएँगे तो फिर वह क्या करेगी।

सफदर भाई ने ये दिन अपने कमरे में बन्द होकर गुज़ार दिये। उन दिनों आसमान में बादल छाने लगे थे। भीगी-भीगी हवाएँ चलती रहतीं।

अम्मा ने सफदर भाई की सूरत देखने से इन्कार कर दिया था। अब्बा ने अम्मा से बात करनी छोड़ दी थी। वह दस-ग्यारह बजे रात तक अंग्रेज़-दुश्मनी के ज़बानी इज़हार में व्यस्त रहते। आपा का अध्ययन बहुत तरक्की कर गया था। वह जो कुछ

पढती उसे मनन करने लगी थी। घण्टो गुजर जाते मगर सफा उलटने की नौबत न आती।

वह घर से घबराकर बाहर चबूतरे पर जा बैठती, जहाँ चपरासी बैठा गुडगुडी पिया करता।

वह चपरासी से बातें करने लगती

"तुम्हारी कितनी तनख्वाह है ?"

"पन्द्रह रुपये।"

'तुमने अपना घर ईटो से क्यो नहीं बनाया ?"

"हम गरीब जोन हैं बेटा। पक्का घर बना कर आप लोगन की बराबरी थोडे कर सक्ते हैं।"

उसे एकदम सफदर भाई के अब्बा याद आ जाते जो जीते जी किसी से इज्जत न करा सके। उसे वह सारी कहानी याद आने लगती जो अम्मा ने कितनी बार आपा को सुनाई थी। उसका कलेजा दुखता तो वह उठकर सफदर भाई के पास चली जाती मगर वह तो उन दिनो बात करना भल गये थे।

दूसरे दिन सुबह सफदर भाई अलीगढ जा रहे थे। उनका सामान बँधा रखा था। कमरा बिल्कुल उजाड मालूम हो रहा था। अम्मा उस दिन बडी बेताबी से सारे घर में टहलती रहीं, 'घर से निकालने के बजाय उसे पढने को भेजा जा रहा है। इस मरदूद को हमारी दौलत से पढा कर हमारे सिर पर बिठाना चाहते हैं। अल्लाह इसे वापसी नसीब न करे।'

शाम को अब्बा सफदर भाई के कमरे में गये और बडी देर बाद बाहर निकले। फिर बैठक में चले गये। उतनी देर अम्मा तिलमिलाई तिलमिलाई फिरती रही।

वह रात बडी अँधेरी थी। आंधी बारिश के आशार थे। उस रात दालान में बिस्तर लगाये गये थे। खाने के बाद सब लोग लेट गये। बडे ताक में रखी लालटेन की बत्ती नीची कर दी गई।

सोने से पहले उसने बडी श्रद्धा से दुआ की थी कि आसमानी बाप सफदर भाई को रोक ले और सुबह कभी न हो। इस दुआ के बाद वह सो गई थी।

सुबह के खौफ ने एक बार उसकी आँख खोल दी थी। उसने देखा कि आपा सफदर भाई के कमरे की तरफ से दबे कदमो आ रही हैं। फिर वह अपने बिस्तर पर लेट गई। उसने उनकी धीमी सी सिसकी की आवाज सुनी और फिर सो गई।

सफ़दर भाई सुबह ताँगे पर बैठकर चले गये। जाने से पहले वह अम्मा के पास आये थे। जरा देर खडे रहे मगर जब अम्मा ने उनकी तरफ देखा तक नही तो नौकरानी की दुआएँ लेने चले गये।

वह दरवाजे तक उनके साथ गई मगर जब तांगा कच्ची सड़क पर धूल उड़ाता चल दिया तो वह अब्बा की टांगों से लिपटकर रोने लगी। यह पहला मौका था कि वह अब्बा की टांगों से लिपट गई थी और वह सिर पर हाथ फेर रहे थे वरना अब्बा को फुर्सत ही कब मिलती जो किसी से मुहब्बत का इजहार करते।

दोपहर को कुसुम दीदी आ गईं जो चुपके-चुपके आपा से बातें करती रही। शाम को चाय के बाद अब्बा ने अम्मा से पूरे हफ्ते बाद बातें की थी।

"जब वह बी० ए० कर लेगा तो वह काम जरूर होगा समझ गईं।"

"हम भी देख लेंगे।" अम्मा की आवाज में चैलेंज था।

सात

दिन गुजरते गए। सफदर भाई की याद मद्धिम पड़ने लगी। स्कूल से आकर वह कुसुम दीदी के घर चली जाती और वहां हारमोनियम पर 'कौन गली गये श्याम' का अभ्यास करती रहती। वह उनके घर में कितनी खुश रहती। उसे अपने घर का माहौल रास न आता। अम्मा अब भी हर वक्त फिक्रमन्द और बफरी हुई नजर आती। आपा उस तरह या तो किताब के एक ही सफा पर नजरें गाड़े पड़ी रहती या फिर नजरें झुकाए किसी न किसी काम में अम्मा का हाथ बटाती रहती। उसने जी में फैसला कर लिया कि सफदर भाई के अलावा भी यहां कुछ गड़बड़ है।

सफदर भाई के कमरे में बड़ा सा तख्त डाल दिया गया, जिस पर सफेद चांदनी बिछी हुई थी। खाने के लिए उस पर दस्तरख्वान सज जाता। जब से सफदर भाई के कमरे में खाना शुरू हुआ था, आपा की खुराक बहुत कम हो गई।

सफदर भाई ने अलीगढ़ जाकर सिर्फ एक खत लिखा था। इसके बाद उन्होंने कोई खत न लिखा। अब्बा ने मनीआर्डर से रुपए भेजे तो वह भी वापस कर दिये थे। उस रोज अब्बा बहुत रंजीदा थे, मगर अम्मा बेहद खुश नजर आ रही थी। वह बड़े व्यंग से हँस रही थी और अब्बा नजरें चुरा रहे थे। "वह जानता है कि तुम इन्हीं रुपयों की वजह से उससे नफ़रत करती हो।" आखिर अब्बा को बोलना ही पड़ा।

अम्मा मारे गुस्से के बिफर गईं, "तो क्या मैं उस नीच किसान के बेटे को सीने से लगाये रखती। क्या हमारी औलाद नहीं जो उस पर दौलत खर्च की जाए। वह एहसान-फरामोश कमीना, उसने रुपये लौटाकर तुम्हारे मुंह पर मारे हैं। उसे अब

तुम्हारी ज़रूरत ही क्या है। बी० ए० करके या तो ऐश करेगा। सच कहा है किसी ने—असल से खता नहीं, कम असल से वफा नहीं।"

"मेरी बहन का बेटा कम-असल है और तुम्हारे भाई की बीवी पता नहीं किस भंगी की औलाद होगी। तुम्हारे भाई ने उससे शादी करके तुम्हारी कौम के मुँह पर थप्पड मारा है। खुदा की शान है अंग्रेज भंगी भी हमारे हाकिम हैं।"

"मेरे भाई-भावज को कुछ कहा तो अच्छा न होगा। वह तुमको जानती है न इसीलिए मुँह नहीं लगाती। मेरी वजह से चुप रहती है वरना कब का तुमको जेल भिजवा देती।" अम्मा की आवाज भर्रा रही थी।

"वह भंगिन मुझे जेल भिजवा देती?" अब्बा गुस्से से चीखे।

अम्मा जोर-जोर से रोने लगी। आपा का चेहरा सफेद हो रहा था और दिल ही दिल में बिलक रही थी। वह जितनी बडी होती जाती उतनी ही ज्यादा भावुक भी। उसे अब्बा से गहरी मुहब्बत होती जा रही थी और अम्मा की झगडालू तबीयत से बेजारी बढती जा रही थी। मगर अम्मा को रोते देखती तो उसका दिल तडप उठता। यही जी चाहता कि अम्मा को कलेजे में छिपा ले।

"अब आए वह तुम्हारा नीच भाजा। अगर भंगी से जूते न लगवाए तो मेरा नाम नहीं।" अम्मा ने रोते हुए चैलेंज किया।

"जरूर आएगा और यहीं उसकी बारात आएगी।" अब्बा जल्दी से बाहर चले गये।

अम्मा देर तक बडबडाती रही, "एक दिन इस घर का अंजाम बहुत बुरा होगा।"

वह कमरे में चली गई। आपा खुर्रे पलंग पर औंधी पडी थी, "आलिया बिट्टो मैं उन्हें खत लिखूंगी कि अब वह यहाँ कभी न आएँ।" आपा ने सिर उठाकर उसकी तरफ देखा। उनका चेहरा कितना पीला हो रहा था।

"मगर अब्बा जो कह रहे थे तुम्हारी शादी होगी सफदर भाई से!" उसने आपा पर झुककर कहा।

"ओफ्फोह! अम्मा यह शादी कभी नहीं होने देंगी और मुझे बदनामी से भी बहुत डर लगता है। इसलिए कुछ नहीं हो सकता।" आपा ने मुँह छिपा लिया। वह चुपचाप बैठी आपा का हाथ सहलाती रही। उस वक्त वह कैसी सच्ची-सच्ची बातें सोच रही थी—सफदर भाई तो मजे से पढते होंगे और उन्हें कोई याद भी न आता होगा। मगर यहाँ सब उन्हें याद करके लडते-मरते हैं। सब कितनी फिजूल बातें हैं। सफदर भाई ने उसे भी तो एक खत न लिखा। क्या वह आपा को याद करते होंगे।

'अम्मा से न कहना कि मैं रो रही थी।" आपा ने आँसुओं से भीगा हुआ चेहरा उठाकर कहा।

"मैंने कब कभी कुछ कहा है अम्मा से।" वह जल ही तो गई।

कुसुम दीदी कमरे में आ गईं तो वह उठकर दालान में चली गई। उसे मालूम था कि अब वह दोना किस किस्म की बातें करेंगी। फिर भी सब उससे हर बात छिपाते। सिर्फ़ इसलिए कि खासी बड़ी होने के बावजूद वह सबसे छोटी थी। कोई भी उसकी दिली हालत न जानता था। कोई भी तो यह न सोचता था कि उसके दिमाग़ की क्या हालत है। कोई उसे समझने की कोशिश न करता। कोई यह न जानता था कि वह तो अब स्कूल में हुआ करते हुए आसमानी बाप तक से अपने घर पर दया रखने की दुआएँ किया करती है।

आठ

कई पतझड़ और बसन्त आकर गुज़र गये पर उसके घर का पतझड़ बसन्त में न बदला। आँगन में लगे मेंहदी के पौदे को आपा कितना ही पानी देतीं मगर उसकी प्यास न बुझती। पतली-पतली सभी शाखें स्याह पड़ गई थीं। अब्बा घर से बिल्कुल बेताल्लुक से नज़र आते थे। दफ्तर से आने के बाद बैठक आबाद हो जाती और अंग्रेज़ शासकों से नफ़रत के इज़हार में अब्बा की आवाज़ अब सबसे ऊँची होती। अम्मा उस वक़्त बड़ी बेचैनी से टहलती रहती।

"हाय कौन सा मनहूस दिन था, जब मेरी शादी हुई थी। सब कुछ ख़त्म हो गया। जो हो रहा है यह भी ख़त्म हो जाएगा।" वह टहलते-टहलते रुककर आपा से कहती और जवाब न पाकर बड़बड़ाने लगतीं।

अब सफ़दर भाई की तरफ़ से उन्हें कुछ-कुछ इत्मीनान था। अलीगढ़ से बी० ए० करने के बाद वह न जाने कहाँ चले गये थे। अब्बा ने बहुत सिर मारा मगर उनका पता न मालूम हुआ। अम्मा बहुत जल्दी में थीं कि किसी तरह आपा की शादी कर दी जाए। उन्हें ख़तरा था कि सफ़दर भाई का भूत कहीं से न आ टपके।

नौकरानी जब खाना पका लेती तो अम्मा उससे शादी के बारे में बातें करती रहती। अब्बा को तो घर की किसी बात से दिलचस्पी रह ही न गई थी। रात जब बिस्तर पर आते तो कोई किताब उठा लेते। शादी की बात होती तो हूँ-हाँ करके टाल देते।

उस दिन जब अम्मा ने कुसुम दीदी से सुना कि अब्बा के दोस्त गिरफ्तार कर लिये गये तो अम्मा मारे दहशत के कांप गईं।

"तुम हम सबको भीख मँगवा दोगे। अगर दुश्मनो को किसी ने पकड लिया तो क्या होगा!" रात अम्मा बिलख-बिलख कर रोईं।

अब्बा कुछ बेचैन से होकर उठ बैठे, "मैं तो तुम लोगो की वजह से खुद ही कुछ न करता और मुझे तो कुछ करना भी नहीं था। बस यह नफरत है जो छिपाए नहीं छिपती।"

इसके बाद अम्मा देर तक रोती-बोलती और रही मगर अब्बा एक लफ्ज भी न बोले।

दोस्त की गिरफ्तारी के बाद अम्मा को आपा की शादी की फिक्र और बुरो तरह सताने लगी। एक भाई और भावज के सिवा उनका अपना तो कोई भी न था। हाँ, अब्बा के रिश्तेदारो मे ढेरो लडके थे। अम्मा ने उन दिनो अपने भाई को भी खत लिखा था कि आपा की शादी का ठिकाना कर दें। उनके भाई ने जवाब में लिखा था कि तम्हारी भाभी कहती हैं कि शादी लडकी की पसन्द से होनी चाहिए। इसलिए आप खानदान के लडको को तहमीना से मिलायें और वह जिसे पसन्द करे, शादी कर दें और वह कहती हैं कि हम तहमीना की शादी में जरूर आएँगे।

यह खत पढकर उसकी तो जान सूख गई थी मगर अम्मा सारा दिन मुस्कराती रहीं। वह बार-बार खुश होकर कहती थी, "लो भला बेचारी भाभीको क्या खबर कि यहाँ ऐसी रस्में नही होती।"

अम्मा यह खत पढकर खुद ही खुश होती रहीं। मगर अब्बा से जिक्र तक न किया। हाँ, अब्बा के पीछे पडी रहती कि तहमीना की शादी का इन्तजाम करो।

अब्बा या तो चुप रहते या फिर यह कह कर जान छुडाते कि जहाँ जी चाहे कर दो।

अम्मा यह जवाब सुनकर लडने बैठ जाती, "फिर तुम यह कह दो कि बाप नही हो तो मैं खुद ही बाहर निकलकर लडका ढूंढ लूंगी।"

अब्बा इन सब बातो से बचने के लिए आवाज देकर आपा को अपने पास बुला लेते तो अम्मा को मजबूरन खामोश होना पडता।

उन्ही दिनो बडी चची का खत आ गया। वह जमील भैया के लिए तहमीना आपा को माँग रही थीं। अम्मा को ऐसे वक़्त में यही पैगाम ग़नीमत लगा और अब्बा से पूछकर मंजूरी का खत लिख दिया।

उस दिन होली जली थी। दूसरे दिन कुसुम दीदी हमारे यहाँ बहुत सा पक-वान लेकर आईं और जब आपा से गले मिलने लगी तो उनके मुँह पर ढेर सा अबीर

मल दिया। फिर उसकी तरफ झपटी, मगर वह कुसुम दीदी के हत्थे न चढ़ी। आपा की रँगी हुई सूरत देखकर अम्मा को बरबस हँसी आ गई। शायद वह उस वक्त रंग खेलने को गुनाह समझना भूल गई थी।

"तुमने होली नहीं खेली कुसुम?" अम्मा ने पूछा।

"मैं विधवा जो हूँ मौसी।" कुसुम दीदी की हँसती हुई सूरत कुम्हला गई।

"हूँ।" अम्मा ने शायद पहली बार उन्हें हमदर्दी से देखा था।

"जी चाहता है कि खूब रंग खेलूँ मौसी। रंगीन साड़ी पहनूँ। मन को मारना कितना मुश्किल काम होता है, पर पति ने तो कुछ न सोचा था।" कुसुम दीदी फूट-फूट कर रोने लगीं।

"चुप रहो कुसुम, त्योहार के दिन रोना मनहूस होता है।" अम्मा ने उन्हें समझाना चाहा तो कुसुम दीदी ने जल्दी से आँसू पोंछ लिये और फिर आपा से बातें करने लगी।

दूसरे दिर दोपहर में नौकरानी ने आँखें फाड़-फाड़ कर अम्मा को बताया कि कुसुम दीदी भाग गईं। मारे हैरत के अम्मा की आँखें खुली की खुली रह गईं।

'अरे क्या सचमुच कुसुम दीदी भाग गईं!' वह खुद भी चौंककर अम्मा का मुँह ताकने लगी थी मगर आपा के चेहरे पर जरा भी हैरत के निशान न थे। वह मेंहदी में पानी दे रही थी, जिसकी पत्तियाँ अब हरी हो चुकी थीं।

"हय, रायसाहब की नाक कट गई। कैसे इज्जत वाले लोग थे।" नौकरानी माया पीट-पीट कर बातें किये जा रही थी।

"अब खूब होली खेलेगी। रंगीन साड़ियाँ पहनेगी। अम्मा-बाबा की नाक कट गई तो क्या हुआ। अरे मैं होती तो भागने वालों को जिन्दा दफना देती। सगी बहन निकली सलमा की। तौबा! और न करें दूसरी शादी। अपने करम को लेकर चाटें अब। बैठी हर वक्त गाती रहती थी। तब किसी को पता न चला।" अम्मा बातें करते हुए आपा को बड़े ग़ौर से देख रही थीं, "अरे अगर मुझे पता होता तो अपनी तहमीना के पास एक मिनट को न बैठने देती।"

'मेरे पास बैठने से क्या होता है अम्मा?' आपा ने शायद जिन्दगी में पहली बार तल्खी से जवाब दिया था।

'अल्लाह करे कुसुम दीदी अपने घर खुश रहें।' वह बराबर दुआएँ किये जा रही थी और उसे बार-बार सलमा फूफी याद आ रही थीं।

कुछ दिन तक रायसाहब अब्बा की बैठक में भी नहीं आये थे और जब आये तो सबसे यही कहते रहे कि कुसुम अपनी नानी के घर गई है। रूठकर गई है इसलिए मारे उदासी के कहीं नहीं आया-गया।

कुसुम दीदी की माता जी ने भी तो अम्मा से यही कहा था कि कुसुम रूठ कर अपनी नानी के घर हरिद्वार चली गई है। जब वह वापस आएगी तो फिर अफवाहें उडाने वालों से पूछूँगी।

पर जब उसने यही बात आपा से कही तो उनका चेहरा फक पड गया। "खुदा न करे वह वापस आए।" उन्होंने धीरे से कहा।

कुसुम दीदी के भागने के बाद अम्मा की फिक्रो म और भी बढती हो गयी। वह चाहती थी कि किसी तरह भी आपा को उनके घर का कर दिया जाए। अम्मा सारा दिन जमील भाई के हुस्न और लियाकत का जिक्र करती रहती। वह उन बातों को बडी दिलचस्पी से सुनती। मगर आपा को जाने क्या हो गया था कि एकदम घर के काम में जुट गई थी—सारे कमरो का सामान उलट कर फिर से सजाया गया।

"आपा तुमने जमील भैया को देखा था, वह कैसे हैं ?" उसे अपनी आपा के होने वाले शौहर से सख्त दिलचस्पी होती जा रही थी।

"पता नही।" आपा उसके सवाल पर हँस पडी। वह खामोश नजर आ रही थीं।

"आलिया अब तुमको सफदर भाई नही याद आते ?"

"कतई नही। सख्त बेमुरव्वत आदमी निकला। जो मुझे याद करे मैं उसे याद करती हूँ।" उसने बडे खरेपन से जवाब दिया, "मैं तो सिर्फ अपने जमील भैया को याद करती हूँ।" उसने शरारत से आपा को देखा तो वह बडे जोर से हँसने लगी।

"आपा अल्लाह करे मेरे इम्तहान के बाद आप की शादी हो। वरना सारा मजा किरकिरा हो जायगा।" उसने बडी फिक्र से कहा। नवी क्लास की पढ़ाई ने उसको किस कदर गभीर बना दिया था।

"मैं तुम्हारे इम्तहान से पहले शादी कर ही नही सकती। मुझे दुल्हन तो तुम्हीं बनाओगी।" आपा ने उसे ग़ौर से देखा और फिर कमरे से निकल गई।

नौ

उन दिनो मेंहदी की पत्तियो का रग कितना गहरा हरा हो सुबह व शाम लोटे भर-भर कर पानी डालती। नौकरानी उन्हे देख कर बड अनुग्रह से हँसती, "खूब सीचो बेटा। यह मेंहदी तुम्हारे हाथो में लगनी है।" आपा बडी ढिठाई से मुस्कराती। क्या मजाल थी, जो वह किसी की बात पर जरा सा शरमाती। अम्मा के सामने अपने जहेज की तैयारियो में मगन रहती। ऐसे

खूबसूरत मेज़पोश और तकिया के गिलाफ काढ रही थी कि हाथ चूम लेने को जी चाहता। उससे किसी काम को न कहा जाता, क्योंकि वह तो नवीं क्लास की तालीम के पहाड़ को सर कर रही थी।

उन दिनों घर के माहौल में चाँदनी की ठण्डक महसूस होती। अम्मा अब्बा के अस्तित्व को इस तरह भूल गईं कि लड़ने का नाम न लेतीं। दर्ज़ी और सुनार सारा दिन घर के चक्कर लगाते रहते। नमूनों की किताबों के पन्ने देख-देख कर अम्मा की आँखें न थकतीं और वह बड़ी शान्ति से अपनी किताबें पढ़ती रहती।

पर हाय यह शान्ति कितनी कम दिन की मेहमान थी। एक दिन सुबह-सुबह नौकरानी ने आकर बताया कि अपनी तहमीना बेटी की सहेली कुसुम वापस आ गई है।

"चल झूठी।" अम्मा मारे हैरत के चीख पड़ीं।

"अल्लाह कसम बीवी जी, वह वापस आ गई है। मेरी ननद ने खुद उसे देखा है। उसके साथ एक आदमी भी है। मकान ले रखा है किराए पर।"

"हय इतनी बेशर्मी। एक तो भागी और फिर माँ-बाप के सीने पर मूँग दलने यहीं आ गई। अरे उसे रहने को और कोई जगह न जुड़ी थी। अगर उसने मेरे घर का रुख किया तो टाँगें चीर कर फेंक दूँगी।" अम्मा ने आपा की तरफ देखकर कहा और आपा का चेहरा हल्दी की तरह पीला पड़ गया। वह मेज़पोश छोड़कर उठीं और जल्दी से अपने कमरे में चली गईं।

जब वह उनके पास गई तो आपा बड़ी बेचैनी से हाथ मल रही थीं।

"अरी आलिया, वह यहाँ क्यों आ गई। यहाँ तो सब उसे अपमानित करेंगे। वह बेवकूफ उसे यहाँ क्यों ले आया।"

"शायद वह अपने माँ-बाप से मिलने आई हो। छः महीने हो भी तो गए। शायद वह माफ़ी माँगना चाहती हो।"

"अरी बेवकूफ...।" आपा कुछ सोचने लगीं।

'जाने कुसुम दीदी किस घर में होंगी। कैसे मिलूँ उनसे जो अम्मा को भी पता न चले।' उसका जी चाह रहा था कि किसी तरह कुसुम दीदी से मिल ले।

"तुम उनसे न मिलना, अम्मा मार ही डालेंगी।" आपा ने हिदायत की मगर वह बराबर पड़ी सोच रही थी कि अगर मकान मालूम हो जाए तो स्कूल जाते हुए जरूर मिलेगी।

उस रात आपा सख्त बेचैन रहीं। राय साहब के घर में ऐसा सन्नाटा था कि किसी के बोलने की आवाज़ न आती थी। आपा शायद सारी रात न सोई थीं। सुबह उनकी आँखें लाल हो रही थीं।

नौकरानी काम करने आई तो उसने फिर बड़ी भारी खबर सुनाई कि वह

आदमी रातों-रात कुसुम दीदी को छोड़ कर चला गया। बाकी रात कुसुम दीदी रोती रही। आस-पास के सारे लोग जमा हो गए। माँ-बाप से मिलाने के बहाने और माफी दिलाने के लिये लाया था। राय साहब ने इन्कार कर दिया था, मगर उनकी बीवी आज सुबह मुँह अँधेरे कुसुम के घर गई थी।

"यही सज़ा होती है ऐसी बदचलनों की। बहुत अच्छा हुआ जो छोडकर चला गया।"

"लो भला, घर से भागकर बीवी बनने के सपने देख रही थी।"

"कर लिए मज़े, अब भुगतें।" अम्मा ज़हर में बुझी बातें कर रही थी और आपा सन्न-सी हो गयी थी।

"मैं अब्बा से कहूँगी कि रायसाहब को समझाएँ, वह कुसुम दीदी को घर लें आएँ। हाय वह अकेले क्या करेंगी।" उसने बड़े जोश से कहा था। उस मर्द की तरफ से उसे कैसी सख्त नफरत महसूस हो रही थी। यहाँ ला कर उसने कौन सा कारनामा कर दिखाया। वहीं कहीं परदेश में छोड़ कर भाग जाता ताकि वह सर पटक-पटक कर मर जातीं। यह अपनों की थुड़-थुड़ तो न मिलती।"

"क्या कहोगी तुम अपने अब्बा से, यही न कि भागी हुई बेटी को घर बिठा लें। शर्म नहीं आएगी तुमको ऐसी बातें करते?" अम्मा ने सख्त गुस्से से पूछा था।

"हाँ, यही कहूँगी!" वह अम्मा के सामने से हट गई।

शाम को जब अब्बा दफ्तर से आए तो वह उनके सामने जाकर खड़ी हो गई, "अब्बा कुसुम दीदी अकेली घर में रो रही हैं। राय साहब को समझाइये, वह उन्हें ले आएँ। कोई उन्हें छोडकर भाग गया।"

"मुझे सब मालूम है। मैं तुम्हारे कहने से पहले ही राय साहब को समझाता। बड़ी समझदार है मेरी बेटी!"

अब्बा ने उसके सिर पर हाथ फेरा और मुस्कराने लगे।

"इसे क्या जरूरत है कि ऐसी बेशर्मी की बातों में हिस्सा ले।" अम्मा गुस्से से बेताब हो रही थी।"

"क्यों न हिस्सा ले। मिशन स्कूल में पढाती हो और बोलने तक का हक नहीं देतीं।"

"साफ बात क्यों नहीं करते कि अंग्रेज बेशर्म होते हैं?" अम्मा लडने पर तुल गईं तो अब्बा जल्दी से बैठक में चले गये।

रात अब्बा ने चुपके से उसे बताया कि राय साहब ने बात मान ली है। वह कुसुम को घर ले आएँगे और शायद ले भी आए हों।

अब्बा के इस व्यवहार पर वह कितनी खुश हुई थी। उस दिन उसे अपने

बड़प्पन का अन्दाज़ा हुआ था। फिर भी वह बावजूद कोशिश के, कुसुम दीदी से मिलने न जा सकी।

वह रात कितनी लम्बी हो गई थी। उसे नींद न आ रही थी। कब सुबह हो और वह स्कूल जाते हुए कुसुम दीदी से मिले। आवारा कुत्तों ने भूंक-भूंक कर रात को और भी वीरान कर दिया था।

स्कूल जाने से पहले वह कुसुम दीदी के घर पहुँच गई। माँ जी रसोई में थीं। राय साहब आराम-कुर्सी पर आँखें बन्द किये लेटे थे। उन्होंने उँगली के इशारे से बताया कि कुसुम उधर है।

वह कमरे में गई, मगर कुसुम दीदी वहाँ न थीं। उसने कोठरी में झाँका। वहाँ खुर्रे पलँग पर गुड़ी-मुड़ी पड़ी हुई थी, उसे देखकर वह झिझक गई तो वह खुद ही आगे बढ़कर उनसे लिपट गई।

"बहुत याद आती थी कुसुम दीदी।" उसने गौर से उन्हें देखा। फसल कट चुकी थी। खेत वीरान पड़ा था। उसने हाथ पकड़ कर उन्हें उठाना चाहा, "यहाँ अँधेरी कोठरी में क्यों पड़ी हैं। बाहर चलकर बैठिए न।"

"वहाँ बैठूं तो सब लोग मुझे देखने आते हैं। माँ जी ने कहा है, छिपकर बैठो। फिर पिता जी मेरी सूरत देखकर दुखी होते हैं, मैं बदनाम हो गई हूँ ना। तहमीना कैसी है?"

"घर चल कर देख लो दीदी।"

"अब मैं नहीं जा सकती।" उनकी आँखों में वीरानियाँ रो रही थीं।

"मैं अपनी दीदी को खुद ले जाऊँगी।

स्कूल का वक्त करीब था, इसलिये वह शाम को आने का वायदा करके चली गई। रास्ते भर कुसुम दीदी के आशिक की कोसती रही।

जब घर आई तो आपा ने उसे पकड़ लिया और कुसुम दीदी के लिए इकट्ठा बहुत से सवाल कर डाले। मगर वह क्या बताती। कुसुम दीदी से तो कोई बात ही न हुई थी।

उस शाम उसने पहली बार महसूस किया कि उसकी अजीब सी हालत हो रही है। इश्क और आशिकी के उलझे-उलझे से ख्यालात उसे चकराए देते थे। यह इश्क व मुहब्बत क्या हैं, जिसके लिए इन्सान बड़े से बड़ा घाटा उठा लेता है, आखिर क्यों, किसलिए—उसकी समझ में कुछ भी न आ रहा था।

सोचते-सोचते वह थक गई थी। उसने सबसे पहले खाना खा लिया और अपने बिस्तर पर लेटकर कोर्स की किताबों से उलझने लगी। फिर उसे पता भी न चला कि किस वक्त सो गई।

सोते-सोते एक बार उसकी आंख खुल गई। बाहर से कुत्तों के भूंकने और रोने की आवाजें आ रही थी। रात सचमुच मनहूस हो रही थी। अचानक उसकी नज़र सामने उठ गई। चांदनी रात में रायसाहब की छत का कमरा साफ नज़र आ रहा था और उसमें दिये की रोशनी इधर से उधर फिर रही थी। फिर उसे कोई नज़र आया, जो सिर से पांव तक सफेद कपड़ों में लिपटा था। उसने मारे खौफ के आंखें बन्द कर ली। उस कमरे मे तो कोई न रहता था। खुद कुसुम दीदी ने उसे बताया था कि जब से दादा जी उस कमरे में मरे हैं तब से यह बन्द पड़ा हुआ है। वहां जाते हुए सब लोग डरते हैं।

उसने डर कर सोचा कि शायद कुसुम दीदी के दादा की रूह आ गई हो, मगर फिर उसे याद आया कि हिन्दुओं के घरों में भूत आते हैं। उसने डर कर आपा को पुकारा, लेकिन वह करवट लेकर फिर सो गईं।

ज़रा देर बाद रोशनी बुझ गई और वह साया गायब हो गया तो उसने इत्मीनान की सांस ली।

सुबह सब लोग चाय पी रहे थे कि राय साहब के घर से रोने-पीटने की आवाज़ आने लगी।

"मैं जानूं वह कुसुम फिर भाग गई।" नौकरानी बड़ी तेज़ी से बाहर भागी। अब्बा भी बाहर लपके।

"चलो फुर्सत हुई, कुसुम तालाब में जा डूबी। पता नही चला कि रात किस वक्त घर से निकल गई।" अब्बा कुछ मिनट बाद वापस आकर कुर्सी पर जैसे गिर पड़े, "सारा दिन लोग उसे देखने और जानकारी हासिल करने आते रहे। शायद वे देखना चाहते थे कि भागने वाली के सिर पर सींग तो नही निकल आए हैं। मेरे कपड़े लाना, मुझे राय साहब के घर जाना है।"

अम्मा बिल्कुल मौन थी। आपा रो रही थी। और वह अब्बा के कंधे पर सिर रखे सिर से पांव तक कांप रही थी। अब्बा उसका सिर सहला रहे थे, उसे थपक रहे थे, मगर उसे जाने क्या हो गया था कि रोया भी न जा रहा था।

कुसुम दीदी खाट पर डालकर घर लाई जा चुकी थी। औरतों की भीड़ को चीरकर जब उसने उनके खुले हुए चेहरे को देखा तो चौंक पड़ी। सूजा हुआ नीला चेहरा भावनाओं से खाली था। सब उनको देख रहे थे, मगर उन्होंने सबको देखने से इन्कार कर दिया था। उनके होंठ अजीब अंदाज़ से खुले हुए थे, जैसे 'कौन गली गयो श्याम' के बोल हमेशा के लिए लौट गए हों। खाट से लटकी हुई सफेद साड़ी के पल्लू से पानी की आखिरी बूंद भी टपक कर कच्चे आंगन में जज़्ब हो चुकी थी।

दस

अक्टूबर का महीना था। हल्की-हल्की सर्दी पड़नी शुरू हो गई थी। दुलाइयाँ ओढ़-ओढ़कर सब लोग अन्दर सोने लगे थे। सर्दियों में उसे कैसे मज़े की नींद आती। मगर आपा को जाने क्या हो गया कि रात का ज़्यादा हिस्सा जागकर गुज़ार देती। उनकी सेहत खराब हो रही थी। रंग मद्धिम पड़ गया था और चेहरे पर रुखाई दौड़ गई थी। अम्मा उनके खाने-पीने का खास तरीके से ख्याल रखती। सुबह चाय के बजाय बादामों का हरेरा पिलाया जाता।

आपा का जहेज़ सिल गया था और अम्मा बेचैन थी कि किसी तरह शादी की तारीख तय हो जाए। उधर बड़ी चची के खत पर खत आ रहे थे कि जल्दी से तारीख तय करा दीजिए। मगर अब्बा ढील देते रहे और अम्मा के कहने पर जवाब देते, 'तहमीना की सेहत ठीक होगी जब देखेंगे।"

एक बार बड़ी चची का खत आया तो उसमें जमील भैया की तस्वीर थी। वह तस्वीर लेकर आपा के पास गई तो उन्होंने मुंह फेर लिया।

'इन्सान सिर्फ एक ही बार किसी का बनता है।' उन्होंने खुद से कहा, फिर जैसे एकदम हँस दीं, "अब इकट्ठे ही देख लेंगे।" उनकी हँसी में कितनी बेबसी थी।

"क्या आपको सफदर भाई याद आते हैं?" उसने घबराकर पूछा था।

"तौबा! क्यों याद आने लगे।" आपा ने सिरहाने रखी हुई किताब उठा ली।

अब्बा दफ्तर से आए तो बहुत रंजीदा नज़र आ रहे थे। अम्मा ने मेज़ पर चाय का सामान लगा दिया, मगर अब्बा उसी तरह आराम-कुर्सी पर लेटे रहे।

"क्या आज चाय नहीं पियोगे। ठण्डी हो रही है। फिर आज तुम कोई अच्छा सा दिन देखकर शादी की तारीख भी तय कर दो। तुम्हारी भाभी के खत पर खत आ रहे हैं।" अम्मा ने अपनी कुर्सी अब्बा के करीब खिसका ली।

"तुम्हारी वजह से वह इस घर को छोड़ गया। वह गलत किस्म की पार्टी के साथ हो गया। इसलिए अपने-आपको तबाह कर लिया है। उसकी तबाही की ज़िम्मेदार तुम हो।"

आपा का चेहरा फक् पड़ गया। सब समझ गए कि अब्बा किसकी बात कर रहे हैं।

"किस कमबख्त को तबाह किया है मैंने ?" अम्मा बोली।

"सफदर की बात कर रहा हूँ। अब आया अक्ल मे।" अब्बा ने तड़ से जवाब दिया।

"हाय वह इस घर से जाकर भी नही गया। वह यहाँ से कभी नही जायगा।" अम्मा ने रोने का हरबा इस्तेमाल किया।

"तुम इत्मीनान रखो। अब वह यहाँ कभी न आएगा।" अब्बा ने आहिस्ता से कहा और चाय पिये बिना बैठक में चले गए।

जब वह अब्बा के लिए चाय ले कर बैठक में गई तो वह आँखें बन्द किए तखत पर लेटे थे।

उसे देखकर उठ गए और मुस्कराने लगे, "तुम्हारी माँ को मैं कैसे समझाऊँ। उन्होने तुम्हारे भाई को तबाह कर दिया है। कलकत्ते से उसका एक दोस्त आया है, उसने यह सब कुछ बताया है। तुम्हारा भाई तुमको बेहद पूछ रहा था।"

"अब्बा, वह कौन सी पार्टी है ?"

"बेटा वह नास्तिको की पार्टी है।" अब्बा ने ठण्डी साँस भरी, मैं तो उसी को अपना बेटा समझता था।"

'वह कब किसी को बाप समझते थे। जाके एक खत भी न लिखा। किसी की मुहब्बत की कदर न की। अब्बा ख्वाह-म-ख्वाह उनके पीछे दीवाने हो रहे हैं।' उसने दिल ही दिल में सोचा, मगर अब्बा से कुछ न कह सकी।

"तुम्हारी पढाई का क्या हाल है ?"

"ठीक है अब्बा।"

"तुम अंग्रेजो के मजहब के असर में तो नही हो ?"

"तौबा ! तौबा !"

"शाबाश, तुम बडी समझदार हो। मेरी सारी उम्मीदें तुमसे ही लगी हैं। तुमको पता है कि मुझे इन बेईमान बनियो से नफरत है। उन्होंने हमें गुलाम बना लिया है।"

"मुझे भी नफरत है। उन्होंने हमें गुलाम बना लिया है।"

अब्बा ने तिपाई पर प्याली रखते हुए उसकी तरफ देखा। उनकी आँखें खुशी

से चमक रही थी और वह सोच रही थी कि अब्बा आखिर सारे अंग्रेजों से क्यों नफरत करते हैं। खुद उसके स्कूल की सुपरिन्टेंडेन्ट कितनी अच्छी और प्यारी हैं। वह आखिर कब मुल्क पर हुकूमत कर रही हैं।

"इन्शा अल्लाह एक दिन यह सब अपने मुल्क वापस चले जाएँगे। मैं तुम लोगों के ख्याल से कुछ नहीं कर सकता, मगर इतना बडा मुल्क तो बडा है न ?"

"जी हाँ, बहुत बडा मुल्क है।" उसने किस कदर अहमकों की तरह कहा था कि अब्बा भी मुस्करा पडे। जाने किसने दरवाज़ा खटखटाया तो वह ट्रे उठाकर जल्दी से अन्दर आ गई।

"मुझे सब मालूम है कि वह अपने-आपको क्या तबाह कर रहा है।" रात को आपा ने फुसफुसा कर कहा था, मगर वह चुप रही। 'कुसुम दीदी डूब मरी, मगर फिर भी आपा को सफदर भाई याद आते हैं।' उसने बडी नफरत से सोचा।

अम्मा बरामदे में बैठी बडी चची के खत का जवाब लिख रही थी। अब्बा जब खाना खाने आए तो जैसे एलान किया, "मैंने तुम्हारी भावज को ईद की दस तारीख लिख दी है।" अब्बा चुप रहे। उन्होंने कोई जवाब न दिया। लालटेन की पीली पीली रोशनी में वह किस कदर दुखी नज़र आ रहे थे।

ग्यारह

शादी की तारीख करीब आती जा रही थी। अम्मा की व्यस्तता बढ गई थी। बारह-एक के करीब चपरासी की बीवी बुर्का ओढकर आ जाती और चावलों के धान साफ करने लगती। उधर सेरों सूखे मेवे काटने को पडे थे। अम्मा उससे काम लेते हुए किस कदर बेरहम नजर आती थीं। सारे दिन की थकी हुई चपरासी की बीवी, जब शाम को अपने घर जाने के लिए उठती तो लडखडा जाती।

जनवरी के आखिरी दिन थे। एक रोज पहले बारिश के साथ ओले पडे थे। रात इस कदर सर्द हो गई थी कि मालूम होता था कि बर्फ की सिल पर लेटे हैं। मन्दिरों से आती हुई घण्टा की आवाजें जैसे ठिठुर कर रह गई थीं।

बडी देर तक बातें करने के बाद आपा ने उसकी तरफ से करवट ले ली थी। वह सोने ही वाली थी कि आपा ने फिर बातें शुरू कर दीं। जाने उनकी नींद को क्या हो गया था।

"ऐसा लगता है कि मुसाफिर की तरह बैठी हूँ।" उन्होंने बडे खोए हुए अन्दाज में कहा।

"मुसाफिर तो है ही, कुछ दिन बाद दुल्हन बनकर चली जाएँगी। दुल्हन बनकर आप कितनी खूबसूरत लगेंगी।"

"और मेरे हाथ है न खूबसूरत ?" आपा ने अपने नन्हें-नन्हें हाथ लिहाफ से निकालकर लहराए।

"इनमें मेंहदी रचेगी। इसी दिन के लिए तो मैंने मेंहदी के ज़रा से पौदे को सींचा था। अब वह कितना बडा हो गया है। जी चाहता है कि उसके साये में पडकर सो रहूँ। यह मेंहदी भी कैसी अजीब होती है। इसमें सुहाग की महक होती है, मुहब्बत की ठण्डक महसूस होती है और यह बात भी है कि इसकी लाली से तमन्नाओं के खून का पता चलता है।"

"ऊँह, आप भी कैसी बातें करती हैं आपा।" उसने उलझकर आपा की तरफ देखा। उस वक्त उसे ख्याल आया था कि अम्मा ठीक ही कहती थीं कि सफदर भाई ने अल्लम-गल्लम किताबें दे-देकर आपा को तबाह कर दिया है।

"मैं कैसी बातें करती हूँ।" वह मुस्कराई, "बातें ही तो सब कुछ होती हैं। इन्ही बातों ने मुझे मुसाफिर बना दिया है, और यही बातें मेरे सफर को खत्म कर सकती हैं।"

"आपा आप को सफदर भाई याद आते हैं, सच बताइये ?"

"कौन सफदर भाई, अरी बेवकूफ, तेरे पास तो अकल नाम को नही है।" आपा ने हँसते हुए उसके हाथ पर हाथ मारा, "चलो अब सो जाएँ, इतनी रात हो गई।"

शादी में सिर्फ कुछ ही दिन रह गए थे। अम्मा बेहद व्यस्त थीं और खुश थीं किसी-किसी वक्त उन्हें यह फिक्र भी सताने लगती कि उनके भाई और भावज ने हफ्ते पहले पहुँचने को लिखा था मगर किसी वजह से न पहुँच सके। वह बराबर उनका ज़िक्र करती थी, "इस मुल्क की बदलती हुई ऋतुएँ भी तो भाभी की तबियत को रास नही आती। जरा में उन्हें जुकाम हो जाता है। मेदा अलग खराब रहता है। कही-न-कही दावत में उस गरीब को मिर्चें खानी पड जाती हैं। भला मिर्च भी खाने की चीज़ है ?" अम्मा आपा से जवाब चाहती, मगर वह खामोश रहती।

आपा ने अपने कमरे से निकलना छोड दिया था। अब्बा घर में आते तो अपने कमरे के दरवाज़े भेड लेती। अम्मा को उनकी शरमाने की अदा पर बडा प्यार आता। वह बडे फख्र से कहती कि शर्म हो तो ऐसी हो।

उसने आपा के चेहरे पर शर्म व हया तलाश करने की लाख कोशिश की पर

रत्ती भर न मिली। आपा को तो जब शर्म आती तो जापानी गुड़िया की तरह गुलाबी पड़ जाती। मगर वह तो बिल्कुल सफेद हो रही थी। उनकी आँखों में ऐसी गहराई थी, ऐसा अँधेरा था कि उनकी तरफ देखकर लगता कुएँ में झाँक रही हो।

बारात आने में जब सात दिन रह गए तो आपा को नहला-धुलाकर और पीले कपड़े पहनाकर माँझे बिठा दिया गया। रात मीरासिनें और डोमनियाँ ढोलक लेकर आ गईं और बरामदे में बिछी हुई दरी पर बैठ कर किस्म-किस्म की आवाज़ों में गाने लगीं। कितना अरमान, कितनी आरज़ुएँ थीं उन गानों में। जो कुछ कुँवारी ज़िन्दगी में नसीब न हुआ था, उसे पा लेने की तमन्ना में गीत का एक-एक बोल हाथ फैलाए हुए था।

गीत होते रहे और आपा पीले दुपट्टे की ओट से आँसू पोंछती रहीं। अब्बा के दोस्तों की बीवियाँ एक-एक गीत को दो-दो बार सुनाने की फर्माइश करतीं, मगर गाने वालियों के गले न थकते। दरी पर थोड़ी-थोड़ी देर बाद दो-दो चार-चार आने इनाम के तौर पर गिरते रहे।

रात देर तक जागने की वजह से अम्मा दोपहर में थक कर गहरी नींद में सो रही थीं। नौकरानी बहुत दिनों बाद दो घण्टे की छुट्टी लेकर अपने घर चली गई थी। आपा लेटी थीं। उन्हें नींद न आ रही थी। वह बार-बार करवटें बदलतीं। सामने आँगन की नीची सी दीवार पर कौवा बैठा एक-सा बोले जा रहा था। उसकी आवाज़ से दोपहर का सन्नाटा और भी गहरा हो गया था।

"मेहमान आने वाले हैं, इसलिए कौवा बोल रहा है।" उसने खुश होकर आपा से कहा।

"और मेहमान जाने वाले भी तो हैं।" आपा बड़ी मुद्दत के बाद खुश और आश्वस्त नज़र आ रही थीं, मगर फिर एकदम कुछ सोचकर उठ बैठीं, "आलिया तुमको क्या पता मेरी इतनी उम्र कछुए की तरह रेंगकर गुज़री है।" उनका चेहरा लाल पड़ गया, "तुम मुझसे अच्छी रहीं। मेरी हैसियत तो ऐसी रही जैसे कोठरी में कोई कबाड़ डालकर भूल जाएँ अम्मा।" उनके होंठ काँपने लगे।

"अम्मा मुझे भी तो डाँटती हैं, मगर मैं खुश रहती हूँ।"

"उन्होंने तो सब-कुछ सफदर भाई की दुश्मनी में किया। उन्हें मुझसे खतरा था न।"

"मगर अब तो आप आज़ाद हो जाएँगी। सफदर भाई अब आपकी ज़िन्दगी तल्ख करने न आएँगे। खुदा समझे उनसे भी।"

"अरे कोसो तो नहीं!" वह नंगे पाँव बाहर पानी पीने चली गईं।

जब वह पानी पीकर आईं तो उनकी पलकें भीगी हुई थी। उन्होंने लेटते हुए आँखें बन्द कर ली।

'हद है, आपा अब तक उस कमीने के लिए सोचती है। कुसुम दीदी का अंजाम सोचने के बाद भी अकल ठिकाने न आई।'

वह सोने की कोशिश कर रही थी कि चपरासी डाक लेकर आ गया। उसने खत उलट कर देखा। अम्मा के नाम था और एक कोने में सफदर का नाम लिखा हुआ था। आपा ने तडप कर खत खोल लिया और पढने के बाद उसकी तरफ बढा दिया। पढकर वह मारे भय के काँपने लगी थी।

"चची, तहमीना की शादी मुबारक हो। आप उसे किसी का भी बना दें, फिर भी वह मेरी रहेगी, वह सिर्फ मेरी है।"

आपा के चेहरे पर ऐसी शांति थी जैसे दुनिया-जहान की दौलत मिल गई हो। उसने जल्दी से खत फाड कर उसकी किरचियाँ चूल्हे में डाल दी। दूसरा खत मामूँ का था, जो उसने एतियात से सिरहाने रख लिया।

"भैया हम तो सोते हैं। सख्त नीद आ रही है।" आपा बडी चालाकी से सोती बन गईं। मगर वह सफ्दर भाई को दिल ही दिल में गालियाँ दे रही थी। अगर यह खत अम्मा को मिल जाता तो फिर क्या होता ?—इस ख्याल से उसका दिल डूबने लगता।

"आपा कितने कमीने हैं सफ्दर भाई।" उसने आपा को हिलाया।

"और नही तो क्या है। खुदा के लिए अम्मा से जिक्र न करना वरना न जाने क्या होगा।" उन्होने धीरे से कहा।

रात खाने-पीने के बाद दालान में दरी बिछा दी गई। नौकरानी ने ढोलक कस कर बीच में लुढका दी और माँगे का गैस का हण्डा दालान के बीचोबीच लटका दिया। जरा देर बाद मेहमान आने लगे।

रात ग्यारह बजे के बाद जब मीरासिनें गा-बजाकर चली गईं तो आपा हौले-हौले कमरे से निकलकर दालान में आ गईं। शिकनें पडी हुई दरी पर लुढकती हुई ढोलक बडी सूनी मालूम हो रही थी। नौकरानी कुर्सियाँ उठाकर कमरे में रख रही थी और साथ ही साथ जाने क्या तलाश किये जा रही थी।

"हाय जाने कहाँ गई, मिलती ही नही, नास जाए इस याद का।"

"आलिया बिट्टो, सुनो जब मैं चली जाऊँ और तुमको सफ्दर भाई मिलें तो मेरा एक पैग़ाम कह देना, कह दोगी ?" बिस्तर पर लेटते ही आपा ने बडी बेचारगी से कहा।

"क्या आप?" आपा की अजीब-सी हालत मे देखकर उसका दिल टूट गया था।

"यही कि मैं उनको कभी नहीं भूली और बस।"

"अब सो जाइये आपा।"

बाहर कुत्तों के भूँकने की आवाज़ आ रही थी। वह जाने किस वक्त सो गई।

बारह

सुबह जब उसकी आँख खुली तो आपा बेखबर सोई हुई थी। वह स्कूल जाने के लिए तैयार होती रही मगर आपा न उठी। जब सब लोग चाय पीने के लिए उठे तो अम्मा ने नौकरानी को भेजा कि आपा को जगा कर चाय दे दे।

नौकरानी की चीख की आवाज़ सुनकर अब्बा और अम्मा आपा के कमरे की तरफ भागे। नौकरानी सीने पर दोहत्थड़ मार-मार कर कह रही थी, "तहमीना बेटा नहीं रहीं।"

"कहाँ गईं। कहाँ चली गईं।" वह मारे खौफ के काँपने लगी। वह जाने कैसे कमरे तक गई, जहाँ अब्बा बेहोश अम्मा को थामे खड़े थे, मगर ऐसा महसूस हो रहा था कि वह गिर पड़ेंगे।

आपा सचमुच नहीं रही थी। उनके मेंहदी रचे हाथ बड़ी बेबसी से फैले हुए थे और होंठ इस तरह स्याह हो रहे थे जैसे किसी ने मिस्सी लगा दी हो।

अम्मा होश में आते ही पछाड़ें खा रही थीं। अब्बा बच्चों की तरह रो रहे थे। और वह आपा के ठण्डे जिस्म से लिपटी रो रही थी।

अब्बा ने जल्दी से आँसू पोंछ लिये और नौकरानी की ओर देखते हुए कहा, "हमेशा से दिल कमजोर था, इसलिए दिल की हरकत बन्द हो गई। तुम जाकर पानी गर्म करने का इन्तज़ाम करो। अल्लाह को यही मंजूर था।" अब्बा की आवाज़ काँप रही थी।

नौकरानी के बाहर जाते ही अब्बा ने अम्मा से फुसफुसा कर कहा, "तुम हिम्मत से काम लो। हम मुसीबत में फँस गये हैं। मैय्यत को जल्दी से उठाना है।" अम्मा को छोड़कर उन्होंने उसे लिपटा लिया और दूसरे कमरे में ले गये।

"तुम तो बड़ी समझदार हो। तुम यहीं बैठो।"

अब्बा उसे अकेले कमरे में छोड कर चले गये, मगर उस वक्त तो अब्बा का हुक्म मानना उसके वस में न था। वह जाकर दरवाज़े की ओट में खडी हो गई। अब्बा अम्मा को समझा रहे थे। उनके हाथ में कागज़ का एक पुर्जा था, जिसे उन्होंने माचिस से जला दिया और फिर अम्मा को थाम कर दालान में ले आये।

नौकरानी ने पतीले में पानी चढा कर उस वक्त सुबह ही सुबह दरी बिछा दी, पर ढोलक कस कर न डाली। अब्बा के दोस्तो की बीवियाँ आ रही थी पर कोई दरी पर पैसे न फेंक रहा था। सब रो रही थी और उनके बीच में बैठी हुई अम्मा को बार-बार गश आ रहा था।

आपा को जल्दी-जल्दी नहला-धुलाकर रुखसत कर दिया गया। अम्मा पागलो की तरह उनके पीछे भाग रही थी।

"अरे बिटिया, बडी बिटिया रुखसत हो गई। तुम गाओ न—काहे को ब्याही बिदेस, सखिया बाबुल मेरे।"

अम्मा की बात पर जैसे कुहराम मच गया। वह आपा के कमरे में भाग गई थी और जमीन पर बैठकर दिल की भड़ास निकाल रही थी। जले हुए कागज़ के टुकडे इधर-उधर उडते फिर रहे थे।

"हाय, कैसी अरमानो भरी चली गई।" नौकरानी बौलाई हुई कमरे में आई और इधर-उधर कुछ तलाश करने लगी, "कल से अफीम की डिबिया खोई तो फिर न मिली। एक जरा सी खा लेती तो दिल ठहर जाता।"

तेरह

बडे चचा और बडी चची और मामूँ आये, दो दिन रहे और रो-पीट कर चले गये। मामूँ की अंग्रेज बीवी न आ सकी थी, क्योंकि उन दिनो वह माँ बनने वाली थी और जमील भैया भी तो न आए थे, जरा अपनी होने वाली दुल्हन की समाधि ही देख लेते।

इस किस्से के बाद अम्मा जैसे चुप और घुटी-घुटी रहती। इसके बाद तो सिर्फ वही उनकी मुहब्बत का सहारा रह गई थी। हर वक्त नज़रो में रखती। ज़रा देर को पास से हटती तो अम्मा को धडकन के दौरे पडने लगते।

अब्बा अम्मा से कितने दूर हो गए थे। दफ्तर से आकर बैठक में ही हाथ-मुँह

पीते, चाय पीते और खाना खाकर रात के ग्यारह बजे तक दोस्तों के जमघट में बहस व मोबाहसा करते। रात जब सब सो जाते तो चुपके से आकर अपने बिस्तर में दुबक जाते। आपा के मरने के बाद सन्नाटा हर तरफ़ डराता फिरता और कोई भी नज़र न आता, जो उस सन्नाटे को तोड़ दे।

सफ़दर भाई की फिर खबर न लगी, उन्हें ज़मीन निगल गई या आसमान। उनके पते के लिए तरसती थी। वह उन्हें लिखना चाहती थी कि कब्र के पास काफ़ी जगह है। अगर मुहब्बत करते हो तो फिर आ जाओ।

उस दिन जब अब्बा बैठक में आए तो कोई साथ न था। वह जल्दी से उनके पास चली गई। कितनी मुद्दत हो गई थी कि वह अब्बा के पास न बैठ सकी थी। उनसे कोई बात न कर सकी थी।

"अब्बा आप घर में नहीं आते। किसी से नहीं बोलते।" उसने आते ही अब्बा से कहा था। उसकी आवाज भर्रा रही थी। अब्बा ने घबराकर उसका सिर सीने से लगा लिया था।

"तुम्हारी माँ ने मुझे घर से दूर कर दिया है। तुमको सब कुछ मालूम है।"

उसका कितना जी चाहा था कि अब्बा से कहे कि अम्मा ने किसी को घर से दूर नहीं किया। सफ़दर भाई ने सब को एक-दूसरे से जुदा कर दिया है। फिर आप तो अंग्रेज़ों की दुश्मनी में ऐसे व्यस्त हैं कि पीछे मुड़कर देखते ही नहीं। आप मुहब्बत को पहचानते ही नहीं। मगर वह यह सब कुछ न कह सकी। उसे खुद हैरत थी कि अब्बा की बेरुखी के बावजूद वह उन्हें सबसे ज्यादा क्यों चाहती थी। कैसी दुनिया आबाद थी अब्बा की मुहब्बत भरी आँखों में। वह अब्बा के खिलाफ़ कभी एक शब्द भी तो न कह सकी।

"तुम्हारी माँ ने मुझे कभी न समझा। उन्होंने मेरी किसी ख्वाहिश का साथ न दिया। अगर मुझमें भी तुम्हारे बड़े चचा जैसा साहस होता तो आज मैं इतना मजबूर न होता।" अब्बा जाने और क्या कहने वाले थे कि राय साहब आ गए।

आपा की मौत ने उसे अपनी उम्र से आगे बढ़ा दिया था। वह अम्मा की दिल-जोई करना चाहती थी। अब्बा को घर वापस लाने के लिए बेकरार थी। वह उन्हें राजनीति से हटाना चाहती थी।

उसकी शिकायत के बाद अब्बा थोड़ी देर के लिए घर में बैठने लगे, मगर ऐसा लगता कि अम्मा से कतरा रहे हैं और अम्मा जब उनसे बातें चार करतीं तो चेहरे पर बीते हुए दिनों की याद कँपकँपाने लगती और वह सफ़दर भाई के लिए सोचती रह जाती। किस कदर ठाठ से उस शख्स ने एक रात निकलकर आपा को मौत के मुँह में ढकेल दिया था।

आपा की मौत को कई महीने हो गए थे, मगर अम्मा ने उनकी किसी चीज को इधर से उधर न किया था। आपा का पलंग उसी तरह पड़ा था। उनकी किताबें उसी तरह रखी थी। वह जब उनके कमरे में जाती तो ऐसा महसूस होता कि दिल डूब जायगा। अम्मा ने उनके जहेज के बक्स को भी उसी कमरे में लगवा दिया था। उन्हें देखकर उसे अजीब सी बेबसी सी महसूस होती। कुछ दिन बाद आपा के जहेज के बक्स में झींगुर घुस कर सब कुछ चाट जाएंगे। बरसात में लचका-गोटा स्याह पड़ जाएगा—वह सोचा करती थी।

मैट्रिक का इम्तहान देने के बाद वह बिल्कुल बेकार हो गई थी। दिन काटे न कटते। उस दिन वह यूं ही आपा की किताबें उठा कर पढ़ने लगी। कितने इश्क व मुहब्बत से भरपूर किस्से थे। औरतें मुहब्बत में आत्महत्या करके प्रेम की एक मिसाल पेश कर जाती और मर्द किसी अंधेरी रात में कब्र पर शमा जला करके चले जाते हैं और बस।

किताबों को अलमारी मे पटक कर वह मारे झल्लाहट के रोती रही थी और आपा आंसुओं के पर्दों के उस पार खड़ी बड़े धिक्कार से उसे देखती रही थी।

चौदह

दो-तीन दिन से अब्बा बेहद व्यस्त थे। दफ्तर से भी बड़ी देर में आते थे। उनका अंग्रेज अफसर मुआयने के लिए आने वाला था। अब्बा हर चीज ठीक कराने के अलावा डाक-बंगले मे उसके रहने का इन्तजाम भी करा रहे थे। आपा के हाथों के कढ़े हुए मेजपोश और फूलदान भी चपरासी मांग ले गया था।

"खूब! अंग्रेजों को गालियां देते हैं, और अब वह आ रहा है तो मारे डर के सिट्टी गुम है हजरत की। जबानी जमा-खर्च करने में कितने तेज होते हैं लोग भी।" अम्मा बड़े फख्र और और व्यंग से हंसतीं तो उसके तन-बदन में आग लग जाती। काश वह एक जरा देर को अम्मा की अम्मा बन सकती तो फिर बताती कि छेड़खानी करने का क्या फायदा होता है। अब्बा घर से दूर होने जा रहे थे और अम्मा अपने हाल में मस्त थी।

रात अब्बा थके हारे वापस आए तो उससे कहा था, "बेटी तुम रात के खाने

का ज़रा अच्छा सा इन्तज़ाम करा देना। एक छ-सात आदमियों का खाना बस। सुबह वह मुआयने को आ रहा है। हमारे घर में दावत होगी।"

"भई हद है। खाली खूली नफरत करते हो और खुशामद में लगे हो उसकी। अरे मुझसे कहो, मैं खुद दावत का इन्तज़ाम कर दूँगी।" आखिर अम्मा अब्बा के सामने भी न चूकी।

"मैंने खुशामद न की तो तुम भीख जो माँगने लगोगी।" अब्बा जल्दी से बाहर चले गये और वह अम्मा से एक लफ्ज़ न कह सकी। उनकी उजाड़ सूरत देखकर रहम आने लगा।

दूसरे दिन अब्बा तारों की छाँव में उठकर स्टेशन चले गए। अम्मा अपनी पलँग पर पाँव लटकाये बैठी बड़े व्यंग से हँसती रही, मगर अब्बा ने उनकी तरफ न देखा।

दिन का एक बज गया, मगर अब्बा खाने पर भी न आए। वह अम्मा के साथ रात की दावत के इन्तज़ाम में लगी रही। उसने बैठक को बड़े नये तरीके से सजाया था और गैस के दो-दो हण्डे मँगवाकर अच्छी तरह साफ करा लिये थे।

अम्मा कई क़िस्म के कोफ्ते और कबाब तैयार करा रही थी और एकसाँ चीखे जा रही थी कि मसाला बगैर मिर्च के पीसा जाए। अम्मा ने इतनी लगन से कभी किसी के दावत का इन्तज़ाम न किया था।

खाना बस तैयार ही था कि चपरासी बौखलाया हुआ बगैर आवाज़ किये घर में घुस आया। ऐसा मालूम होता था कि बड़ी दूर से भागता हुआ आ रहा था।

"बेगम साहब, अपने बाबूजी को पुलिस पकड़ ले गई। मुआयने के वक्त अफसर से झगड़ा हो गया और अपने बाबूजी ने रूल से उसका सिर फाड़ दिया।"

अम्मा ने आँखें फाड़कर इस तरह देखा जैसे उनके चारों ओर अँधेरा छा गया हो। फिर उन्होंने चीखना चाहा तो बस मुँह खोलकर रह गईं। दावत के सामान पर मक्खियाँ भिनक रही थीं।

"कहाँ हैं अब्बा; मैं उनके पास जाऊँगी।" वह पागलों की तरह उठकर भागी थी। मगर चपरासी उसके सामने दीवार बन गया था, "आप कहाँ जाएँगी, बेटा बीबी ?"

"तू मेरे सिर पर चढ़ता है।" उसने चपरासी को मारने के लिए दोनों हाथ उठा दिये थे।

"मैं तो बेटा बीबी का गुलाम हूँ। आप कहाँ जाएँगी। बाबू जी तो थाने में हैं।" चपरासी ने साफे का पल्लू आँखों पर रख लिया, "डैमफूल कहता था अपने बाबू जी को हरामज़ादा।" चपरासी ने लाल-लाल आँखों से उसकी तरफ देखा, "मुझे

मिल जाए तो एक हज़ार एक अंग्रेज निछावर करके फेंकूँ अपने बाबू जी पर से। खून चढ गया है मेरी आँखो में, खून।"

ज़रा देर में राय साहब आ गये। अम्मा दरवाज़े की ओट में खडी होकर उनसे बातें कर रही थी। उन्होंने मामूँ का पता दिया था कि उन्हें तार कर दिया जाए, मगर उसने जल्दी से बडे चचा का पता भी दे दिया। वह तो बडे चचा को सिर्फ दो ही बार देखकर उनकी भक्त हो गई थी। अगर बडे चचा न होते तो क्या होता। मामूँ कितनी सफाई से कट गये थे कि कत्ल के इरादे से हमला बहुत बडा जुर्म है। ऐसे आदमी के बीवी-बच्चा की सरपरस्ती करने में उन्हें भी खतरा था।

अम्मा तो उससे यह बात साफ छिपा गई थी, मगर उसने बरामदे में खडे होकर खुद अपने कानो से सुना था। उसे मामूँ और अंग्रेज़ो से उस दिन इतनी नफरत हुई थी कि जी चाहता था सबकी बोटियाँ चबा जाये।

बडे चचा ने आकर सबके सिरो पर हाथ रख दिया। दो दिन के अन्दर-अन्दर सामान बँधवाकर ताँगो पर लदवा दिया। बडे चचा खुले-खजाने अंग्रेज़ो को गालियाँ दे रहे थे। अब्बा के अजाम से उनका जोश और बढ गया था।

जब बडे चचा अब्बा के दोस्तो से रुखसत हो रहे थे और उसका ताँगा आहिस्ता-आहिस्ता रेंगने लगा था तो उसने देखा कि उसके स्कूल की सुपरिन्टेण्डेंट बडी तेज़ी से चली आ रही है।

ताँगे के पास आकर उसने अपनी फूली हुई साँस दुरुस्त की और फिर प्यार से उसका हाथ थाम लिया, "तुम लोग खुश रहना। गम न करना। तुम्हारा फादर बहुत अच्छा आदमी था। तुम्हारा मुल्क जरूर आज़ाद होगा।" सुपरिन्टेण्डेण्ट रेंगते हुए ताँगे से अलग हो गई, "गुड-बाई, गुड-बाई।"

'अब्बा जेल की सलाखो के पीछे तुम्हारा क्या हाल होगा?' वह अपने बिस्तर पर उठकर बैठ गई। खिडकी के पट खोल दिये तो हवा का एक सर्द झोंका उसे छू कर गुजर गया। उसका सिर मारे दर्द के फटा जा रहा था। काश नींद आ जाए या फिर सुबह हो जाए। वह सोने के लिए लेट गयी।

पन्द्रह

सुबह हो गई बादल फट गए थे और इधर खुली खिड़की से सूरज की किरनें दाखिल हो रही थीं। रात सिर्फ एक घन्टा सोने की वजह से आंखों में खटक सी हो रही थी। ऐसा मालूम होता था। जैसे आंखों में पलक टूट कर गिर पड़ी हो।

"अरे वाह, आप अभी तक सो रही हैं?" शमीमा का रंग उस वक्त बड़ा निखरा हुआ लग रहा था। आलिया ने उसे बड़े गौर से देखा। ऐसी मासूम सूरत कि लगता फरिश्तों ने साया कर रखा है।

"मैं तो देर से जाग रही हूँ।" वह हमेशा की तरह उछल कर उठी। लेकिन एकदम से उसे याद आया कि वह नई जगह पर है। यह नई दुनिया है और अब्बा का स्नेह भरा ठण्डा साया उससे बहुत दूर है।

"मैंने अभी नाश्ता नहीं किया। आपका इन्तजार कर रही थी, और सब लोग तो खा-पी चुके।" शमीमा ने बड़े फख्र से कहा।

"भई तुमने भी नाश्ता कर लिया होता छम्मी।" वह जल्दी से उसके साथ हो ली।

"वाह, मैं क्यों नाश्ता करती आपके बगैर। यहाँ तो किसी को किसी का ख्याल नहीं। सबके सब खुदगर्ज हैं।" छम्मी ने बुरा सा मुँह बना लिया।

सीढ़ियाँ तय करके दोनों निचली मंजिल में आ गईं। बरामदे में पड़े हुए टाट के पर्दे के सूराखों से धुआँ निकल रहा था। अम्मा और बड़ी चची तख्त पर बैठी कलई छूटे पानदान से पान बना-बनाकर खा रही थीं। तख्त पर बिछी हुई मैली चादर पर कत्थे-चूने के पचासों धब्बे लगे हुए थे और करीमन बुआ चूल्हे के पास पीढ़ी पर धुंआंधार किस्म की बातों में व्यस्त थीं।

'उठ गईं आलिया! मैंने तुमको इसलिए जल्दी नहीं उठाया कि जाने नई जगह पर अच्छी नींद आई हो कि नहीं।" बड़ी चची ने उसे अपने पास बैठा लिया।

"मैं तो खूब सोई थी बड़ी चची।" उसने अपनी अम्मा की तरफ देखा। उनके चेहरे पर रात्रि-जागरण और फिक्रों की धूल उड़ रही थी।

"अल्लाहमारा पराठे रखे-रखे तो सूख गए। अब क्या स्वाद रह गया होगा।" करीमन बुआ ने तवा चढ़ा कर पराठा गरम होने के लिए डाल दिया, "घी में गुँधी हुई पूरियाँ हों तो दस दिन भी न सूखें। बस जमाने वाले की बात है।" करीमन बुआ ने ठण्डी साँस भरी।

"सारा सामान उसी तरह बँधा पड़ा है। नाश्ता कर चुको तो उसे खुलवाओ।" अम्मा ने आहिस्ता से कहा।

"लो भला, यह क्या खुलवाएगी। जमील और शकील आकर सब कर लेंगे।

आलिया तो ऊपर का कमरा पसंद करेगी। अकेले में मज़े से पढ़ेगी। पहले वहाँ जमील रहता था। मगर उसने रात ही कह दिया कि वह कमरा आलिया को दे दो। और दुल्हन तुम तो यहीं नीचे मेरे पास रहोगी न ।" बड़ी चची ने अम्मा से पूछा।

"हाँ, यहीं रहूँगी।" अम्मा एक पल तक कुछ सोचने के बाद बोलीं। शायद उन्हें वह ज़माना याद आ गया होगा जब वह बड़ी चची को मुंह लगाना पसंद न करती थीं। बेचारी बड़ी चची लुटे-पिटे घर की लड़की थीं। मँगनी हो गई थी इसलिए दादी ने मजबूर होकर ब्याह लिया था, क्योंकि बड़े चचा ज़िद कर रहे थे। वैसे दादी का तो पक्का इरादा था कि जब दौलत न रही तो मँगनी भी तोड़ दी जाए।

सूखी हुई घी चुपड़ी रोटी और थोड़े से दूध में औंटी हुई चाय पीते हुए आलिया को महसूस हुआ कि घर की आर्थिक हालत अच्छी नहीं है।

"कैसे मज़े का पराठा है वाह-वाह, बिल्कुल करीमन बुआ की खाल की तरह खुश्क। है न बजिया ?' आखिरी बात छम्मी ने इतने धीरे से कहा कि करीमन बुआ न सुन सकीं।

"मज़े का तो है छम्मी।" आलिया ने अपनी हँसी रोकी।

"अल्लाह ने चाहा तो आलिया और मज़हर की दुल्हन को यहाँ कोई तकलीफ न होगी। अच्छे दिन नहीं रहे मगर जमील पास हो गया तो फिर इस घर के दिन पलट जाएँगे और फिर अपना मज़हर भी तो छूट कर आ जाएगा।" बड़ी चची कुछ कहते-कहते चुप हो गईं।

"उन्हें अगर अपने बाल-बच्चों की फिक्र होती तो आज जेल में क्यों होते। अंग्रेज़ों ने इनका क्या बिगाड़ा था भला ?" अम्मा ने लम्बी साँस भरी और फिर सिर नीचा करके चुपके से आँसू पोंछ लिए। ज़रा देर के लिए सब चुप हो गए। जैसे कुछ सोचने लगे।

"अल्लाह तू इस घर को भी मुसीबत से बचाना।" करीमन बुआ आहिस्ता से बड़बड़ाईं।

"करीमन बुआ दुकान जाने को देर हो रही है, नाश्ता भिजवा दो।" बैठक से एक बड़ी धीमी-सी आवाज़ आई। करीमन बुआ ने झल्ला कर चिमटा पटका, फिर डलिया से एक रोटी खींच कर निकाल ली। मैली-कुचैली प्याली में चाय उँडेल कर कमर टेढ़ी किए-किए बरामदे से निकल गईं।

"खूब हैं यह इसरार मियाँ भी, हद है, बेशर्मी की, जब तक खाने को न मिल जाए मजाल है कि चैन ले लें। इन्हें तो बस करीमन बुआ ठीक करती है।" छम्मी ज़ोर से हँसी।

"अच्छा तो ये अब तक यहीं हैं। यह बड़े भाई का कारनामा होगा।"

"हाँ, वही हैं। कहाँ जाए यह बेचारा भी। फिर दूकान भी तो देखता है।' बड़ी चची ने मुजरिमो की तरह सिर झुकाकर अम्मा को नीची-नीची नजरों से देखा

"खूब।" अम्मा ने बड़े अर्थ भरे अदाज से कहा और छालिया काटने लगी। यहाँ पर वह किस कदर अलग-थलग और ऊँचे पर बैठी हुई नजर आ रही थी।

आलिया ने सब कुछ खामोशी से सुना और हमदर्दी की एक लहर उसके सीने के पार हो गई। हाय अगर बेचारे इसरार मियाँ के दूसरे भाई आमो की मक्खियाँ को भिनकी गुठलियाँ न चूसते तो शायद आज जिन्दा होते! इसरार मियाँ के साथी तो होते। अब ये बेचारे तन्हा इतने बहुत से जायज लोगों के बीच में कैसे जिन्दा होंगे।

"जरा ऊपर जाकर बैठो।" अम्मा ने उसे हुक्म दिया और वह जल्दी से जाने के लिए उठ खड़ी हुई। आपा की मौत और अब्बा की गिरफ्तारी ने उसे बड़ा आज्ञाकारी बना दिया था। शायद इस तरह अम्मा को खुशी महसूस हो।

शाम के वक्त दादी से कोई बात ही न हुई थी। एक तो सफर की थकान थी दूसरे दादी पर दमे ने हमला कर रक्खा था।

आलिया को देखते ही दादी ने अपने दोनो हाथ फैला दिये। फिर दुबले-दुबले मुर्झाए हुए हाथो की खाल लटकी हुई थी मगर इन्तहाई कमजोरी के बावजूद उनके चेहरे से रोबोदाब बरस रहा था। आलिया ने बड़ी श्रद्धा से उनके फैले हुए हाथ थाम लिए और अपना सिर होले से उनके सीने पर टिका दिया! छम्मी अपने उल्टे-पल्टे बिस्तर को ठीक कर रही थी। ताक पर रखी लालटेन को किसी ने अब तक न बुझाया था।

"मजहर तो फिर कभी न आया। मेरी आँखें उसे देखने को तरस रही हैं। दादी ने ठण्डी साँस भरी। आलिया ने होठ नीचे भीच लिये। दादी से तो सबने छिपाया था कि उनका बेटा जेल में है और वह भी कत्ल की कोशिश के सिलसिले में।

"छुट्टी नही मिलती दादी। अब उनका काम बहुत बढ गया है। इसीलिए तो उन्होने हम सबको यहाँ रहने के लिए भेज दिया है।" वह दादी की नजरो से बचने के लिए इधर-उधर देखने लगी।

"शुक्र है कि फिर सब इकट्ठे हो रहे हैं। क्या पता कि तुम्हारा छोटा चचा भी आ जाए।" दादी की आँखो में हल्की सी चमक आ गई।

छम्मी ने लालटेन की चिमनी ऊँची करके फूंक मार दी। लम्बे से कमरे में दो ऊँची-ऊँची स्याह रग की मसहरियो और दो कुर्सियो के सिवा कुछ भी न था। दीवार पर मौलाना मोहम्मद अली जौहर की एक तस्वीर लगी थी, जिसके फ्रेम पर जाने, कितनी आँधियो का गुबार जमा था।

"मजहर बेटे का कोई खत आया?"

"नहीं दादी वह बहुत व्यस्त रहते हैं।" अब्बा की याद से उसका दिल कट रहा था।

"ठीक है, मर्दों की यही शान है, कि काम करें। तुम्हारा छोटा चचा...." दादी तकिये के सहारे ज़रा-सी ऊँची हो गईं, "तुमको पता है न कि वह ख़िलाफ़्त के ज़माने में चला गया फिर नहीं आया। उस वक्त ख़िलाफ़त का बड़ा ज़ोर था। मुझे ऐसी बातें पसन्द नहीं मगर दूसरे घरों में औरतें टोपियाँ काढ़-काढ़ कर चन्दे देती थीं। उन्होंने गाने बना रखे थे। क्या था वह भला सा गाना," दादी त्योरियों पर बल डाल कर सोचने लगीं, "हाँ वह याद आया—

बूढ़ी अम्मा का कुछ ग़म न करना
जान बेटा ख़िलाफ़त पे दे दो।

यह सब फ़िज़ूल बातें हैं। इस तरह तुम्हारे बड़े चचा बेवकूफ़ी में फँस गये हैं। मगर अब मेरी बात सुनता कौन है। ख़ैर, कभी तो अक्ल आएगी और....।"

"यह कितना गन्दा कमरा हो रहा है। इस पर से दादी की थूक और पेशाब की बू। मगर मैं अपनी दादी को किसी और के कमरे में थोड़ी रहने दूँगी। यह तो मेरा अपना कमरा है। बड़ी चची कहती हैं कि मैं इसी कमरे में पैदा हुई थी।" छम्मी जल्दी से कमरे में चली गई और फिर झाड़ लिये हुए वापस आ गई। आज उसे सफ़ाई का बहुत ख़याल आ रहा था। गन्दे कमरे की वजह से शर्मा-शर्मा कर आलिया की तरफ़ देख रही थी। वह सोच में गुम थी कि अब्बा कहाँ होंगे, किस जेल में होंगे, उनका ख़त कब आएगा।

इतनी सी बातें करने से दादी की साँस फूलने लगी। मगर जब छम्मो ने झाड़ू दे-देकर धूल उड़ानी शुरू की तो उन्हें ज़ोर का दौरा पड़ गया। मारे खाँसी के उनसे साँस तक न ली जाती। आलिया घबराकर उनका सीना सहला रही थी मगर छम्मो बड़े इत्मीनान से झाड़ू दे रही थी।

दादी के चेहरे से पसीना बह रहा था और मारे बेचैनी के आँखें उबली पड़ रही थीं। आलिया घबराकर खड़ी हो गई। करीमन बुआ झपट कर अन्दर आईं, दादी के पास बैठ गईं। उनके दोनों हाथ आटे से भरे हुए थे।

"मालकिन, मालकिन।" करीमन बुआ अजीब-सी बेताबी के साथ दादी को सहला रही थीं और एक हाथ अपने सीने पर रखे जैसे अपने डूबते हुए दिल को रोक रही थीं।

"अरे छम्मी, बड़ी चची से कहो जल्दी से डाक्टर को बुलाएँ।" आलिया पहली दफ़ा दमे का इतना तेज़ हमला देख रही थी।

"हद कर दी बजिया, भला इतनी सी बातों पर डाक्टर आया करते हैं। दादी

को तो इसी तरह दौरा पड़ता है। सिरहाने खमीरे की डिबिया रखी है। जरा सा चटा दीजिए। इतने पैसे कहाँ कि हर वक्त डाक्टर को बुलाया जाए। ग्राप तो ख्वामख्वाह घबरा गईं।" छम्मी दुपट्टे में मुँह छिपाकर ग्रपनी हँसी रोकने लगी।

ग्रालिया ने हैरान होकर छम्मी की ग्रोर देखा। वह दहलीज से बाहर कूड़ा फेंक रही थी। क्या वह भी यहाँ बीमार पड़ेगी? उसने डर कर सोचा। ग्रब्बा तो जरा सी छींक पर डाक्टर को बुला लेते थे। लेकिन यहाँ तो छम्मी डाक्टर के नाम पर हँसती है। खाँसी की ग्रावाज सारे घर में गूँज रही है, मगर यह ग्रावाज सिर्फ करीमन बुग्रा को सुनाई देती है। सब ग्रपने कामों में लगे हैं। कोई इधर नहीं ग्राता।

जरा देर बाद दादी की साँस ठीक हो गई ग्रौर वह जैसे थक कर लेट गईं। करीमन बुग्रा उनके चेहरे से पसीना पोंछ रही थी। "ग्रब क्या हाल है मालकिन?" कैसी तड़प थी करीमन बुग्रा की ग्राँखों में। दादी ने 'हूँ' करके ग्राँखें बन्द कर ली तो फिर करीमन बुग्रा को ग्राटा गूंधना याद ग्रा गया।

"छम्मी को बुलाग्रो।" दादी ने ग्राहिस्ता से कहा तो वह कमरे की दहलीज पर खड़ी होकर छम्मी को ग्रावाज देने लगी।

"कहिए जब मुँह धो लूँगी तो ग्राऊँगी। हर वक़्त बुलाती रहती हैं।" ग्राँगन में बिछी हुई चौकी पर छम्मी बैठी मुँह-हाथ धो रही थी। जाने वह क्या बड़बड़ाती रही। दादी के रोब की सारी कहानियाँ उसके सामने ग्रड़डधम्म सी हो गईं।

"जल्दी चलो ग्रालिया, सामान ठीक करा लो।" बरामदे से ग्रम्मा की ग्रावाज ग्राई तो चुपके से दादी के पास से सरक ग्राई। वह उस वक्त ग्राँखें बन्द किए चैन से सो रही थी।

सोलह

जमील भैया को उस वक़्त उसने बड़े गौर से देखा। वह ग्रच्छे-ख़ासे थे मगर उनकी ग्राँखें छोटी ग्रौर ग्रन्दर को धँसी हुई थीं। फिर उनकी ग्राँखों में ऐसी गहराई थी कि गौर से देखते हुए [illegible] महसूस होती। उस वक़्त वह सब सामान ठिकाने लगाने के बाद जैसे थक कर दालान की मेहराब के बीचोबीच उकड़ूँ बैठे थे। ग्रम्मा बहुत बेजार नजर ग्रा रही थीं। बस कुछ ऐसी हालत थी जैसे किसी लम्बे सफर से दो-चार हो गई हों ग्रौर मंज़िल बहुत दूर हो।

'यह सफर कब खत्म होगा ?' आलिया ने अपने-आप से पूछा और अपने बिस्तरबन्द की तरफ बढ़ी, जो आँगन में एक तरफ पड़ा हुआ था। उसका बक्स और बिस्तर ऊपर की मंजिल के छोटे कमरे में जाना था।

'मैं चलती हूँ बजिया।" छम्मी के गरारे की फटी हुई गोट जमीन पर लोट रही थी। वह बिस्तरबन्द के तस्मे घसीटने लगी। "तुम हट जाओ बेवकूफ।" जमील भैया बड़ी तेज़ी से उठकर छम्मी के हाथ से तस्मे खींचने लगे।

"ज़रा होश में रहिएगा भैया। मैं बजिया की वजह से आप को जवाब नहीं देना चाहती वरना ।" छम्मी का चेहरा लाल हो गया, "हट जाइये। मैं खुद ले जाऊँगी बजिया का बिस्तर।" छम्मी ने जमील भैया का हाथ झटक दिया और बिस्तरबन्द घसीट-घसीटकर ज़ीने पर चढ़ने लगी। जमील भैया चौकी पर बैठकर जैसे बड़े मज़े से तमाशा देखने लगे। बिस्तरबन्द की रगड़ से ढेरों धूल उड़ रही थी।

"अरे छम्मी गिर जाएगी। क्यों अपनी जान के पीछे रहती है।" बड़ी चची पान लगाते-लगाते घबराकर उठ गईं।

"गिरने दो अम्मा। कभी तो मैं भी इसे बेबस देखूं।" जमील भैया खिसिया कर हँसे।

'वाह, क्या बात है। बेबस देखकर खुश होते हैं, जमील भैया। फिर उससे और अम्मा से तो बहुत खुश होंगे।' आलिया ने ज़रा व्यंग से जमील भैया की तरफ देखा और फिर नजरें झुका लीं। वह तो पहले ही से उसे कनखियों से देख रहे थे। वह जल्दी से छम्मी के पीछे हो ली, मगर बिस्तरबन्द पहले ही ऊपर जा चुका था। छम्मी उसे देख बड़े फख्र से मुस्करा दी।

"देखिए बजिया मैं ले आई न अकेले। बड़े आए जमील भैया। ज़रा-सा सामान उठाकर वह थक बैठे थे। बिस्तरबन्द ऊपर चढ़ाते तो हाँफने लगते।" वह ज़ोर से हँसी, "अरे यह गोट भी फट गई।" उसने पाजामे की गोट इस तरह देखी जैसे अभी देख रही हो। अब भला वह कैसे कहती कि गोट तो उस वक्त भी फटी हुई थी, जब उसे पहनने के लिए बक्स से निकाला था। यह बरसों पुराने कपड़े उसकी स्वर्गीया अम्मा के थे जो अब उसका तन ढाँक रहे थे।

आलिया छम्मो के साथ मिलकर बिस्तरबन्द खोलने लगी। शाम का झुटपुटा हो चला था मगर अभी गली में रोशनी न हुई थी।

रात को वह जिस बिस्तर पर लेटी थी उसे समेट कर अपना बिस्तर लगा दिया। इतने में जमील भैया उसका बक्स उठाए आ गए, "आलिया यह कमरा तुम्हारे लिए ठीक रहेगा न। पहले मैं इस कमरे में रहता था। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि गली से बिजली की खैराती रोशनी भी मिल जाती है। मैंने यहीं बी० ए० की तैयारी की वरना

लालटेन की रोशनी में तो आँखें फूट जातीं। यह बड़ा कमरा भी खाली रहता था। यहाँ कोई न आता था। बस किसी-किसी वक्त कोई चमगादड़ आ जाती थी।" जमील भैया ने कनखियों से छम्मी को देखा, मगर वह बड़ी खामोशी से कमरे के बाहर खुली छत पर जा खड़ी हुई थी।

क्या आपा की शादी इसी बदतमीज से हो रही थी। उसने सख्त नागवारी से सोचा। अरे वह तो इसके साथ चन्द दिन भी न जीती। क्या यह वही शख्स है जिसके नाम को आपा के साथ लेकर वह खुश होती थी।

आलिया ने अपना बक्स ठिकाने लगा दिया और जमील भैया से कोई बात किए बग़ैर छम्मी के पास चली गई। जाते हुए उसने मुड़कर देखा। जमील भैया जहाँ खड़े थे वहीं खड़े रह गये थे।

"आपसे मिलने का इतना शौक था बजिया कि बस क्या बताऊँ।" छम्मी बोली, "बड़े चचा और चची आप की बड़ी तारीफ करते थे। आप पढ़ी हुई हैं न। इसीलिए बड़े चचा तहमीना आपा से जमील भैया की शादी करना चाहते थे। मैं तो अनपढ़ हूँ न बजिया ?"

'तुम बग़ैर पढ़े इतनी प्यारी हो छम्मो, मैं तो तुमसे मिलकर सबसे ज्यादा खुश हूँ।" उसने कहा।

"मैं खत भी लिख लेती हूँ और पढ़ लेती हूँ। बस स्कूल नहीं गई न।" छम्मी ने बड़े गुरूर से बताया।

'तुम इससे मिलकर जरा भी खुश नहीं हो। तुम यहाँ किसी से भी मिलकर खुश नहीं होगी। तुम महज़ पढ़ी-लिखी लड़कियों वाली शालीनता दिखा रही हो।" जमील भैया ने बड़े मज़े में कहा और हाथ हिला-हिलाकर छत पर टहलने लगे। किसी ने देखा ही नहीं कि वह कब आकर पीछे खड़े हो गए थे।

"पता नहीं आज जमील भैया को क्या हो गया है। आपको देखकर इनमें कुछ शान आ गई है। बजिया वैसे तो ये हाल था कि मेरे बग़ैर कोई काम न होता।" छम्मी ने तिरछी नज़रों से जमील भैया को देखा।

"मैं कह रहा हूँ छम्मी कि अब तुम नीचे चली जाओ।" जमील भैया जाने क्यों एकदम गंभीर हो गए। "क्यों जाऊँ। इस घर में मेरे बाप का भी हिस्सा है। जहाँ चाहूँगी बैठूँगी, बड़े आए।"

"अच्छा तो फिर मैं ही चला जाता हूँ।" जमील भैया बड़ी तेज़ी से सीढ़ियाँ उतरने लगे।

आलिया के लिए यह सारी बातें कितनी अजीब थीं। उसने हैरान होकर छम्मी को देखा।

"बजिया आप परवाह न करें। यहाँ तो हरदम ऐसी बातें होती रहती हैं।" छम्मी सख्त शर्मिंदा नज़र आ रही थी।

"चलो, मैं अपनी किताबें ठीक कर लूँ।" उसे अचानक अपनी पढ़ाई का खयाल सताने लगा। अल्लाह मियाँ अब वह कैसे पढ़ेगी, रुपये कहाँ से आएँगे। मगर जैसे ही उसे याद आया कि मामूँ के पास अम्मा ने ढेर से रुपये जमा करा रखे हैं तो उसने इत्मीनान की एक लम्बी साँस ली।

छम्मी को दादी का काम याद आ गया और वह जल्दी से नीचे भाग गई। आलिया जब अपनी किताबें मेज़ पर रख रही थी तो उसे यह देखकर खुशी हुई कि जमील भैया उस पर मेज़पोश बिछा गए थे। यह वही मेज़पोश था जो रात जमील भैया की मेज़ पर बिछा हुआ था। चलो जमील भैया उसकी तो इज़्ज़त करते हैं।

किताबें ठीक करके वह खिड़की से नीचे गली में झाँकने लगी। बिजली के खम्भे के तले रोशनी का गोल दायरा पड़ रहा था और गली के दूसरे सिरे से कोई फेरी वाला आ रहा था। उसके सिर पर रखे हुए थाल में दो लवों वाला चिराग जल रहा था।

"नीचे आओ आलिया बेटी!" बड़ी चची की भारी आवाज़ सुनकर वह जल्दी से उठ पड़ी।

अम्मा ने दादी के कमरे से निकलते हुए कहा, "रात की बारिश से सर्दी बढ़ गई थी इसलिए तुम्हारी दादी की तबियत ज़्यादा खराब है। सर्दी तो इस मर्ज़ की दुश्मन होती है।" वह भी दादी के कमरे में चली गई। छम्मी अपनी मसहरी पर बैठी पुराने कपड़ों की मरम्मत कर रही थी और बड़े मज़े में कोई पुरानी गज़ल गुनगुना रही थी—

जिगर के टुकड़े हैं ये हमारे, जो बन के आँसू निकल रहे हैं।

आलिया को देखकर वह गाना भूल गई और पुराने कपड़ों के ढेर को लिहाफ के अन्दर छिपाने लगी, "अब तो दादी बिल्कुल ठीक हैं न बजिया?"

आलिया दादी की पट्टी पर टिक गई। वह आँखें बन्द किए बेसुध पड़ी थीं। उनका सीना अब तक उभर-उभर कर डूब रहा था। उसे बचपन में देखी हुई लोहार की धौंकनी याद आ गई। जाने यह जिन्दगी की आग कब बुझ जाएगी। मारे हमदर्दी के उसकी आँखों में आँसू आ गए। बड़े ताक में रखी हुई लालटेन की रोशनी एकदम मद्धिम लगने लगी। आलिया ने दादी के खुले हुए हाथ को चुपके से लिहाफ़ में छिपा दिया।

करीमन बुआ कमर टेढ़ी किए हुए कमरे में आई और झुककर दादी को देखने लगीं।

"मालिकन !" उन्होंने धीरे से पुकारा और जवाब न पाकर दबे कदमों चली गईं। उनके हाथों में गीली राख भरी हुई थी।

"क्या दादी सो रही हैं ?" शकील दहलीज़ पर खड़े-खड़े कमरे में झाँका।

"सो रही हैं फिर तुमको क्या ?" छम्मी ने उसे चिढ़ाने के अन्दाज़ से जवाब दिया।

"बको मत, बड़ी आई !" शकील हुंकारा।

"अरे दादी सो रही हैं, चुप रह शकील मेरे भैया।" आलिया घबरा कर खड़ी हो गई।

"मुझे कुछ पैसे चाहिए, आलिया बजिया किताबें खरीदनी हैं।"

"दादी की तबियत खराब है इस वक्त।" आलिया ने उसे समझाना चाहा।

"अब धरी है न इनके पास रोकड़ा। सब कुछ तो ले गया पाँव दबा-दबा कर चालाक।" छम्मी मारे गुस्से के बोला रही थी, "इतनी बहुत सी थीं गिन्नियाँ। खा गए सब मिलकर।"

"तुमसे तो कभी पाँव भी न दाबे गए। बेचारी दादी पड़ी तड़पती होती हैं और यह लाट साहब मज़े करती हैं।" शकील ने जवाब दिया।

"मेरे मुँह न लगा कर कमीने। देख तो अभी बताती हूँ।" छम्मी अपनी मसहरी से कूदी। दादी ने एक लम्हे को आँखें खोलीं और फिर कराह कर करवट बदली।

आलिया शकील को खींचती हुई बाहर ले आई। करीमन बुआ सहन में बिछी हुई चौकी पर लालटेन रख रही थीं। उन्होंने मुँह ही मुँह में कुछ कहा और फिर बरामदे में चली गईं।

"अरे शकील, अब तो तुम बड़े हो रहे हो फिर भी लड़ते हो। छम्मी भी तो तुमसे कितनी बड़ी है।" आलिया ने उसके कंधे को दबाया मगर वह कुछ न बोला। आस्तीन से आँसू पोंछकर सिर झुकाए खड़ा रहा।

"लड़ना बुरी बात है मेरे भैया।" आलिया ने उसे लिपटा लिया।

"दादी मुझसे मुहब्बत करती हैं। वह कहती हैं कि मैं छोटे चचा की तरह हूँ। इसलिए छम्मी मुझसे जलती है। फिर दादी मुझे अब तक किताबों के लिए पैसे देती रहीं। यह बात छम्मी को सबसे ज्यादा बुरी लगती है। आप ही बताइये कि मैं किससे माँगूं। अब्बा, जमील भैया, अम्मा सब पैसों के नाम पर चीखने लगते हैं।" शकील ने मासूम बच्चों की तरह सिसकी भरी।

"मेरे पास दो रुपये हैं, लोगे ?" आलिया ने पूछा तो शकील मारे खुशी के और ज़ोर से लिपट गया, "सुबह मुझसे रुपये लेकर किताब ले आना।"

"अच्छा बजिया।"

टाट का पर्दा मरका कर वह दालान में चली गई। अम्मा और बडी चची तख्त पर बैठी थी। अम्मा बिल्कुल चुप थी मगर बडी चची बडे उल्लास से बातें करते हुए छालिया काट रही थी। शकील को देखते ही उसकी तरफ पलटी, "पढता भी है या घूमता फिरता है, इम्तहान मे फेल न हो तो जब की बात।"

"कहाँ घूमता हूँ, पढता हूँ अपने दोस्तो के साथ। मेरे पास तो पूरी किताबें भी नही। ख्वामख्वाह टोकती रहती हैं।" शकील ने भी सख्ती से जवाब दिया। आलिया ने देखा कि अम्मा हैरत और नफरत से शकील को घूर रही हैं।

"बजिया जब मैं मिडिल कर लूँगा तो इसी सामने वाले स्कूल में पढूँगा। कितना बडा स्कूल है।" शकील करीमन बुआ के पास चूल्हे के सामने बैठ गया।

"बसंत आने वाला है।" करीमन बुआ लालटेन जलाकर बैठक में रखने को चली गई। फिर वापस आकर आटा गूँधने बैठ गई, 'अल्लाह सलामत रखे बडे मियाँ को। वह हो न हो कमरे में रोशनी तो रहे।"

"बडे चचा कब आएँगे?" आलिया ने पूछा।

"जब उनका जलसा खत्म होगा।" बडी चची बेबसी से हँसी, "जमील भी आ जाता तो गरम रोटी खा लेता।"

"अल्लाह करे मजहर मियाँ का जेल से खैरियत का खत आ जाए। मौला तू ही अपनी सरन रखने वाला है।" करीमन बुआ ने आटा गूँधकर तवा चूल्हे पर रख दिया।

आलिया के दिल में हूक सी उठी। उसे अब्बा से कितनी मुहब्बत थी। हालाँकि उसने अपने घर में कभी हँसती खेलती जिन्दगी न देखी थी। वह अम्मा को अब्बा की तल्ख जिन्दगी का जिम्मेदार समझती थी। उसे राजनीति से नफरत हो गई थी। अब्बा के ध्येय उसकी नजर मे कितने भौंडे थे, फिर भी वह उन्हें बेतहाशा चाहती थी। अब्बा की हिफाजत में कितनी शांति महसूस करती थी। मगर अब वह उस मुहब्बत की हिफाजत से महरूम हो गई थी।

"बजिया अब आप कालेज में नही पढेंगी?" शकील दो रुपया की कल्पना से कितना खुश नजर आ रहा था। घर के सामने गली के उस पार बडे से मैदान में बनी हुई स्कूल की लाल इमारत उसकी तमन्नाओ का केन्द्र थी। अपने घटिया से मिडिल स्कूल से भाग जाने की कितनी ख्वाहिश थी।

आलिया चुप रही। अम्मा ने उसे बडी दुखी नजरो से देखा मगर ऐसी नजरें जिनमे निश्चय भी था।

अब्बा की याद ने उसे इतना बेकल कर दिया था कि करीमन बुआ और बडी चची के आग्रह के बावजूद अच्छी तरह खाना भी न खा सकी और जल्दी से उठ

गई। करीमन बुआ बडबडती रह गई, "घरवालों की यह चिडियो जैसी खूराकें रह गई हैं। और इसरार मुस्तडा इतना खाए कि पका-पका कर हाथ टूट-टूट जाएँ और ..।"

सत्रह

थोडे दिनो में आलिया को घर के सारे हालात मालूम हो गए। बडे चचा ने जागीर बेचने के बाद कपडे की दो बडी बडी दुकानें खोल ली थी जिनकी निगरानी किसी जमाने में वह खुद करते थे। उन्होने यह खबसूरत सा घर बडे चाव से बनवाया था। घर मे आदर्श खुशहाली थी। मगर जब वह बडी सरगर्मी से राजनीति में हिस्सा लेने लगे तो दूकानें इसरार मियाँ की निगरानी में लस्टम पस्टम चलने लगी। वह भी उनकी आमदनी चन्दो और राजनैतिक वर्करो पर खर्च हो जाती। बडे चचा कई बार जेल जा चुके थे। उन्हें कैद तनहाई और बेडियाँ पहनने की सज़ा भी मिल चुकी थी। उनके पैरो में स्याह घट्ठे पडे हुए थे। पाँव धोते वक्त उन स्याह घट्ठो को बडे फ़ख्र व ध्यान से देखा करते थे। वह इस कदर कट्टर कांग्रेसी थे कि खालिस मुसलमान की किसी भी जमात को बरदाश्त न कर सकते थे। उन्हें तो उनके मुसलमान होने पर भी शुबहा रहता। कांग्रेस के सिवा हर जमात के लोग उनकी नज़र मे मुल्क के गद्दार थे।

बडे चचा उसी दुनिया में इस कदर मगन रहते कि अपने घर की दुनिया को भूल चुके थे। अपनी इकलौती अकेली बेटी को एक मामूली से लडके से ब्याह दिया था। वह भी सिर्फ इसलिए कि लडका कांग्रेसी था। उस वक्त से अब तक उनकी बेटी चार अदद बच्चो के साथ अपने आँगन में गोबर थाप-थाप कर ज़िन्दगी गुज़ार रही थी। बडे चचा को भला इतनी फुर्सत कहाँ थी कि अपनी बेटी के भविष्य की चिन्ता करते या कोई खाता-पीता घराना तलाश करते। बडी चची ने जब बेटी की जवानी की बहुत दुहाई दी तो उन्हें अपने राजनैतिक कार्यकर्ता से ज्यादा बेहतर आदमी नज़र न आया। मगर चन्द ही दिनो बाद बडे चचा को उस बेहतर आदमी से भी नफरत हो गई क्यो कि वह राजनीति से अलग होकर अपने चन्द बीघे जमीन और बीवी-बच्चो में खो गया था। बडे चचा फिर कभी अपनी बेटी के घर न गये।

जमील भैया को उन्होने एक मुफ्त के प्राइमरी स्कूल में दाखिल करा दिया था। जमील भैया ने बी० ए० तक किस तरह पढ़ा, इसकी उन्हें कोई खबर न थी। शकील जब पढ़ने के लायक हुआ तो जमील भैया ने उसको मार-मार कर उसी प्राइ-

मेरी स्कूल में पढने बैठा दिया जहाँ खुद पढा था।

जमील भैया की अपने बाप से न बनती थी। वह इश्किया तुकबन्दी करते थे, मुशायरों में जाते थे और पत्र-पत्रिकाओं मे भेजी हुई ग़ज़लें वापस पाकर एडीटरों को बुरा-भला कहते थे।

बडे चचा जब तक घर में रहते बडी चची और करीमन बुआ मेहमानों के खाने के इन्तज़ाम में सारा दिन गुज़ार देती। बडे से पतीले में बडा गोश्त सरसों के तेल में पकाया जाता। हिन्दुओं के लिए दुकान से पूरी-तरकारी खरीदी जाती। करीमन बुआ ढेरों रोटियाँ पकाते हुए बडबडाती रहतीं। खालिस घी की खुशबू याद कर-कर के उनकी आँखों में आँसू रहते। फिर भी यह घर चल रहा था, सबको पेट भर रोटी ज़रूर मिल जाती।

बडे चचा से जब घर की ज़रूरतों का ज़िक्र किया जाता तो वह लाल पड जाते। जाने क्यों झेंप-झेंप कर सब की तरफ देखते। अपने बढे हुए पेट पर हाथ फेरते और फिर बडी उमग से सबको समझाना चाहते, "जब मुल्क आज़ाद हो जाएगा तो सबकी तकलीफें दूर हो जाएँगी। तुम लोग ज़रा गहराई में जाकर सोचो।"

"कहाँ तक जाएँ गहराई में।" बडी चची कभी-कभी झल्ला उठती।

'बडे चचा का मतलब है कि कुएँ में गिर जाओ।" छम्मी ऐसी बातें सुनकर ज़रूर मज़ाक उडाती और वह उसकी बातें इस तरह नज़र-अन्दाज़ कर जाते जैसे कुछ सुना ही नहीं। जाने बडे चचा में इतना सब्र कहाँ से आ गया था। वह घर में होते तो कोई-न-कोई तीर व नश्तर बना रहता। मगर वह हँस-हँस कर सहते या फिर बैठक की राह लेते।

बडी चची इस घर में उसे 'कर्म-फल-भय' की लाश मालूम होती। उनकी आँखों में जैसे सदियों का दुख समाया हुआ था। इतनी बहुत सी जानों की फिक्र सिर्फ उनके कांधों पर सवार रहती। इसरार मियाँ दुकान से कुछ काट-पीट कर बडी चची की फिक्रों को कभी-कभी कम कर दिया करते, मगर खुद देर तक बैठक में पडे, साँइयों की तरह चन्द रोटियों के लिए आवाजें लगाते रहते।

इन सब बातों के बावजूद आलिया को बडे चचा बहुत अच्छे लगते थे। बस बिल्कुल उसी तरह जैसे उसे अपने अब्बा से शिकायतों के बाद भी आध्यात्मिक सी मुहब्बत थी। उसकी समझ में न आता था कि यह घरों के दुखों और तबाहियों के अलम्बरदार उसके दिल में मुहब्बत की हलचल क्यों मचाते रहते हैं। यह कैसी श्रद्धा थी, कैसी मुहब्बत थी कि वह ज़रा सी बात पर उनके लिए तडप उठती। बडे चचा जब घर में आते तो वह सब काम छोड कर उनके हाथ-मुँह धोने के लिए चौकी पर पानी रख देती। जब वह हाथ मुँह धो के, थके-थके से अपने बिस्तर पर लेट

जाते तो वह उनके सिरहाने बैठकर होले-होले उनका सिर सहलाने लगती। बडे चचा उसका सिर अपने सीने से लगाकर उसे दुआएँ देते और फिर शांति से आँखें बन्द कर लेते और छम्मी दुपट्टे के पल्लू को मुंह में ग्रडस कर अपनी हँसी रोकने लगती, "हाय बडे चचा बेचारे थककर चूर हो जाते हैं, काम ही ऐसा टहरा न।"

आलिया को इस घर की जिन्दगी अपने घर से ज्यादा भगडालू और थकी हुई मालूम हुई मगर वह किसी तरह खुद को बहला रही थी। बडे चचा ने उसको अपनी किताबो की आलमारियों की चाभियाँ दे दी थी कि वह उन्हें पढे और दिल-वो-दिमाग़ रौशन करे। साथ ही यह भी हिदायत कर दी थी कि यह चाभी जमील भैया के हाथ न लगने पाए। उस बेकार तुकबन्द के लिए यह किताबें कोई हैसियत नही रखती। दोपहर के सन्नाटों में वह बडी एहतियात से एक-एक किताब निकाल कर लाती और पढती। उसका दिल उन किताबों के हर उस पात्र से हमदर्दी रखता था जिन्होने आजादी और इन्सान के उपकार और कल्याण के लिए गोलियाँ खाईं, मगर वह उनसे खौफ भी महसूस करती थी। उसे यकीन था कि ऐसे लोग किसी से मुहब्बत नही करते। ये लोग शादियाँ करते हैं, बच्चे होते हैं और उन्हें तबाह कर देते हैं। उनका अपना घर दुनिया के किसी हिस्से में शामिल नही होता। उनके घर वाले इन्सान नहीं होते। ये मुहब्बत के कदमो में काँटे होते है जो जरा देर में लहू-लुहान कर देते है। अम्मा, बडी चची, कुसुम दीदी, तहमीना आपा का अन्जाम उसके सामने था। सत्रह-अठारह साल की उम्र मे वह कितनी समझदार हो गई थी। फिक्रो और गमो ने उसका बचपन कितने जल्दी छीन लिया था।

अठारह

मामूँ का खत आया था। उन्होने अम्मा को लिखा था कि उनकी भाभी की सलाह के मुताबिक वह सारा रुपया इकट्ठे नही भेजेंगे बल्कि तीस रुपया महीना आलिया की तालीम के लिए भेजते रहेंगे, जिससे कपडा वगैरह भी बन जाएगा। बुरे वक्त में ज्यादा रुपया पास नही रखना चाहिए। हर-एक की नजर पडती है।

अम्मा यह खत पाकर बहुत खुश थी और तीन महीने बाद मनीआर्डर वसूल करते हुए उनके हाथ खुशी से काँप रहे थे। मगर आलिया को गुस्सा आ रहा था कि एक तो तीन महीने के बाद पूछा है, उस पर से सिर्फ तीस रुपये महीने भेजने का फैसला।

क्या वह खराब हलात में भी बडे चचा पर बोझ नही रहेगी। अम्मा से कुछ कहना बेकार था। मामूं के खिलाफ कुछ कह कर वह अम्मा का दिल न दुखाना चाहती थी। वह बडी खामोशी से अपने कमरे में चली गई। मामूं के खत से उसको जान जल गई। जिसके खत का बेचैनी से इन्तज़ार था वह न आया। इन तीन महीनो में अब्बा ने सिर्फ एक खत लिखा था, जिसमे चचा के पास आ जाने पर खुशी जाहिर की और आलिया की तालीम जारी रखने की हिदायत दी थी। अपने लिए एक लफ्ज भी न लिखा था।

अभी वह सोच रही थी कि अम्मा ऊपर आ गईं। सीढियां चढने की वजह से वह हांफ रही थी। मगर उनका चेहरा खुशी से सुर्ख हो रहा था, "भाभी कितनी होशियार हैं। उन्हें तो मालूम ही हो गया था कि यहाँ सब नंगे-भूखे हैं, लूट खाएँगे।" अम्मा फुसफुसाकर बातें कर रही थी, "जमील से कहकर एक मास्टर का इन्तजाम कर लो और घर बैठे इम्तहान दो।"

"मगर अम्मा इन रुपयो से क्या होगा। हमें अपने सारे खर्च बर्दाश्त करने चाहिए। कुछ दिन की बात है, फिर अब्बा आ जाएँगे। बडे चचा ने बहुत अच्छा वकील किया है। अब्बा को कम से कम सजा होगी।"

"क्या पता। वह अफसर मरा तो नही मगर इल्ज़ाम तो कत्ल का है। जाने वह कब आएं। हाय अगर उनमें ज़रा भी शराफत होती तो अपने घर का ख्याल करते।" अम्मा को शायद बीते हुए तल्ख दिन याद आ रहे थे। वह जाने क्या सोच रही थीं।

"दुल्हन, ए दुल्हन!" नीचे आंगन में खडी हुई बडी चची अम्मा को आवाज दे रही थीं। साथ ही शकील और छम्मी की तू-तू, मैं-मैं करने की आवाजें आ रही थीं।

"आती हूँ! अल्लाह किस मुसीबत में फँस गए।" अम्मा बडबडाईं, "हम इससे ज्यादा रुपये नही मँगाएँगे। तुम्हारे बडे चचा का फर्ज है कि वह हमारी हर जरूरत को पूरा करें। आखिर तो उनके भाई का कुसूर है। हम खुद से तो उनके घर आकर नही बैठ गए।" अम्मा जवाब सुने बग़ैर नीचे चली गईं।

तीसरा पहर था। धूप लौट चुकी थी। वह बडी देर तक बिस्तर पर औंधी पडी रही। गली में खिलौने वाला झुनझुना बजाता और सुरीली आवाज में पुकार लगाता जा रहा था, "यह रबड वाला बबुवा।"

छम्मी लडने-भिडने के बाद अब घिसी हुई सूइयो से ग्रामोफोन का रेकार्ड बजा रही थी। उसने सोचा कि इस तरह तो सारे रेकार्ड खराब हो जाएँगे। वह शकील से कहकर छम्मी के लिए सूइयों की एक डिबिया जरूर मँगा देगी।

धूप पीली पड चुकी थी। करीमन बुआ चाय पीने को शोर मचा रही थीं।

मगर उसका जी न चाहा। वह नीचे खुली छत पर आकर उस खुर्रे पलँग पर बैठ गई जो सारा दिन धूप में तपता रहा था। आस-पास की छतों पर बच्चों का शोर-गुल बढ़ता जा रहा था और मकानों से उठते हुए धुएँ की वजह से फिज़ा सुरमई हो रही थी।

पलँग अब तक हल्का सा गर्म था। वह उठ कर टहलने लगी। कैसा बुझा सा जी हो रहा था। उस वक्त तो यही दिल चाहता था कि घर से निकल कर कहीं हो आए। मगर कहाँ। वह तो जब से आई थी इस घर से बाहर कदम न निकाला था। छम्मी का जब जी चाहता बुर्का ओढ़कर घर-घर फिर आती। वह भी सिर्फ मुसलमान घरों में, हिन्दुओं से उसे लिल्लाही बुग्ज़ था। इस घर में तो उसकी दुनिया सिर्फ किताबें रह गई थीं। बड़े चचा की किताबों की अलमारी की चाभी उसने सँभाल कर अपने बिस्तर में छिपा दी थी।

करीमन बुआ चाय पीने के लिए पुकार रही थी। वह मजबूरन नीचे जा रही थी कि छम्मी उसकी चाय की प्याली लिए आ गई। उस वक्त छम्मी का गोल-गोल चेहरा बेवकूफी की हद तक गंभीर हो रहा था और आँखें हल्की सी सुर्ख पड़ी हुई थी।

"क्या बात है छम्मी ?" प्याली लेते हुए उसने पूछा।

"कुछ नहीं, अब्बा मियाँ का खत आया है।"

"फिर, सब ख़ैरियत है न ?" वह छम्मी की गंभीरता से डर रही थी।

"नहीं बजिया, उन्होंने लिखा है कि अब तुम को सिर्फ दस रुपया महीना मिला करेगा। क्योंकि तुम्हारा एक भाई और पैदा हो गया है, उसका खर्च भी बढ़ा है। उन्होंने पूरे पाँच रुपये कम कर दिए हैं।"

"अरे यह बात है। भाई मुबारक हो छम्मी !"

"मेरा भाई क्यों होने लगा। अल्लाह करे मर जाए वह। मेरी अम्मा के साथ मेरे सारे बहन-भाई मर गए हैं। मैं अकेली हूँ। मेरा कोई नहीं।" उसने होंठ लटका लिए।

"ऐसी बातें न करो छम्मी।"

"फिर आप ही बताइये न कि हमारे अब्बा जितनी शादियाँ करें और उनसे जितने पिल्ले हों वह सब मेरे बहन-भाई होंगे।" उसकी आँखों में आँसू आ गए। उस वक्त वह कितनी मासूम नज़र आ रही थी। उसके चेहरे की बनावट ही कुछ ऐसी थी कि वह लड़ते-भिड़ते और गुस्से से पागल होते वक्त भी मासूम ही रहती।

आलिया ने छम्मी को लिपटा लिया। उस वक्त मँझले चचा उसे दुनिया के सब से बड़े बेदर्द नज़र आ रहे थे। उन्होंने दुनियाँ में बीवियाँ बदलने के सिवा कोई काम न किया। छम्मी की माँ के मरने के बाद उन्होंने दो शादियाँ की और दोनों को ज़रा-ज़रा सी बात पर तलाक दे दी। उनका तलाक देने का भी अजब तरीका था। बैठक

में जाकर तलाक लिखते और बीवी को अन्दर भिजवा देते। बस उसी वक़्त से बीवी से पर्दा करने लगते। मगर चौथी बीवी ने उन पर मुसीबतों का पहाड़ तोड़ दिया था। ताबड़ तोड़ बच्चे पैदा कर उन्हें ऐसा जकड़ा कि दुनिया का न रखा। इधर छम्मी सबके लिए अज़ार बनी हुई थी। बाप ने मुहब्बत से हाथ खींचकर उसे दुखों की पोट बना दिया था।

"मैं तो बिलकुल अकेली हूँ बजिया। आपको तो सब चाहते हैं। जमील भैया भी आपको बहुत चाहते हैं। बाहर से आकर आप ही के इर्द-गिर्द फिरते हैं।" वह व्यंग से हँसी।

आलिया ने काँपकर छम्मी को देखा। उसके सामने मेहदी का लहलहाता हुआ पौधा सूख कर स्याह पड़ गया था और फिर कुसुम दीदी की सफेद साड़ी से पानी की बूँदें टपक कर ज़मीन में जज़्ब हो गईं।

'लाहौल विला', वह इतनी बुद्धू नहीं रही। उसके साथ यह कुछ नहीं हो सकता। वह बेवकूफ आदमी! बड़े चचा अपनी किताबों की अलमारी की चाभी तक नहीं देते।

"छम्मी तुम तो बिलकुल बच्चा हो बस। तुम मुझे समझती क्या हो। ऐसे-ऐसे दस जमील भैया आ जाएँ तो मेरा क्या बिगाड़ लेंगे।"

"छम्मी ने आलिया की आँखों में गौर से झाँका।" जैसे वह सच की तलाश में हो। फिर कुछ आश्वस्त सी होकर आलिया से लिपट गई, "मैं ख़ुद यही समझती हूँ कि हमारी बजिया ऐसी थोड़ी हो सकती हैं।" वह बड़े फख्र से हँसी, "पर बजिया आप तो यह बताएँ कि अब इतने रुपयों में गुज़ारा कैसे होगा ?"

"मुझे तो कोई दस रुपये भी भेजने वाला नहीं छम्मी।" उसे अब्बा याद आ गए।

"वाह मेरे जो दस रुपए होंगे वह आपके नहीं होंगे बजिया ?" छम्मी ने रूठकर प्याली उठाई।

"बस यह ठीक है। मैं तुमको उसमें से एक पैसा न दूँगी। आलिया ने उसे खुश करने को कहा।"

"अरे बजिया हाँ वह कल हमारे कमरे में जलसा होगा।" छम्मी जैसे सब कुछ भूल कर चौंकी।"

"कैसा जलसा ?" आलिया ने उसे हैरत से देखा।

"अरे मुस्लिम लीग का जलसा बजिया।"

"पर बड़े चचा जो नाराज़ होंगे। तुम दिल से रहो न मुस्लिम लीगी।" आलिया ने उसे समझाना चाहा।

हिला रही थी और बड़े गुरु-गम्भीर मौन के साथ छम्मी और बच्चों का शोर सुन रही थी। उनके चेहरे से बेचैनी के आसार जाहिर हो रहे थे। आलिया उनके सिर-हाने बैठ गई और उनके हाथ से पंखिया लेकर झलने लगी।

"चलिए न बजिया मेरे जलसे में।" छम्मी ने आलिया का हाथ पकड़कर खींचा।

"मैं नहीं जाऊँगी छम्मी। मुझे यह बातें ज़रा भी अच्छी नहीं लगतीं।"

"मत जाइये। आपके बगैर जलसा थोड़ी खतम हो जाएगा।" वह रूठ गई, "मुझे पता है न कि आप बड़े चचा का साथ देंगी।"

"तुमको मालूम है तो ठीक है। आलिया ऐसी बातों में नहीं जाती।" अम्मा ने छम्मी को घुड़का मगर छम्मी ने कोई जवाब न दिया। उसका मुँह उतर गया था। वह जल्दी से कमरे में चली गई और बच्चों से नारे लगवाने लगी।

"हाय अब क्या करूँ दुल्हन। इसके बड़े चचा बैठक में हैं। वह यह नारे सुनेंगे तो क्या होगा। दस बार कहा कि जब जलसा करे तो मीलाद पढ़ा करे, मगर नहीं सुनती।" बड़ी चची छम्मी के जलसे से बहुत परेशान नज़र आ रही थीं, "अरे इसके बाबा को होश ही कहाँ जो इसके दो बोल पढ़ा कर ठिकाने लगा दें।"

'जिसे शौक हो वह खुद अपने दो बोल पढ़वा ले।" छम्मी ने कमरे की दहलीज पर आकर जवाब दिया और फिर व्यस्त हो गई।

"अरे शकील उठकर बैठक का दरवाज़ा बन्द कर दे ताकि आवाज़ न जाए।" बड़ी चची छम्मी की बात का बुरा मानने की बजाए उसकी हिफ़ाज़त का सामान कर रही थीं।

"मैं क्यों बन्द करूँ। अच्छा है अब्बा एक दिन इसकी हड्डियाँ तोड़ें।" शकील अपने बस्ते में पैवंद लगाते हुए बड़े मज़े में उचका।

"बकवास करता है। कितनी बड़ी है तुझसे छम्मी।" बड़ी चची ने गुस्से से उसकी तरफ़ देखा और करीमन बुआ ट्रे में चाय के बर्तन रखते हुए उठ पड़ीं। बैठक के दरवाज़े बन्द करके वह फिर बर्तन लगाने लगी। नारे लगाने के बाद सारे बच्चे छम्मी के साथ गा रहे थे :

काशी में तुलसी तो बोई बकरियाँ सब चर गई,
गाँधी जी मातम करो हिन्दू की नानी मर गई।

छम्मी के इस स्वरचित गीत को सुनकर आलिया हँस पड़ी। मगर जैसे ही उसने देखा कि बड़े चचा बैठक के दरवाज़े के पास खड़े हैं तो घबराकर छम्मी को पुकारने लगी।

छम्मी ने मुड़कर देखा और फिर आराम से बच्चा में बताशे बाँटने लगी।

"अरे इस पागल, अनपढ को कोई नही समझाता। मैं एक दिन इसकी हड्डियाँ तोड दूँगा। बडे चचा आगन में आकर खडे हो गए। गुस्से से उनका मुँह सुख हो रहा था।

बच्चे भर्रा मारकर भाग पडे। एक बच्चे के बताशे गिर कर टुकडे-टुकड हो गए और वह बडे चचा की तरफ सहमी हुई नजरो से देख-देखकर उन्हे चुन रहा था।

'आप तो बहुत काबिल हैं न। मुझे बहुत पढाया-लिखाया है जो अनपढ होने के ताने देते हैं।" छम्मी भला क्यो चुप रहती।

बडे चचा उसकी तरफ लपके तो बडी चची बीच में आ गई, "हय, क्या दीवाने हो गए हो। जवान लडकी पर हाथ उठाप्रोग।" बडी चची हाँफने लगी।

"भई मार लेने दीजिए। दिल की हसरत तो निकल जाए।" छम्मी डटकर खडी हो गई। आलिया उसका हाथ पकड कर कमरे में ले जाना चाहती थी मगर वह उसे भी धक्के मार रही थी। करीमन बुआ स्तब्ध खडी थी। कुछ कहने की कोशिश में दादी की साँस चढ़ गई थी और अम्मा तमाशाइयो की तरह पलँग पर बैठी सब कुछ देख रही थी।

"छम्मी अन्दर चलो मेरी बहन। मेरा कहना मानो, नही मानती।" आलिया ने मिन्नत की तो छम्मी उसे अजीब सी नजरो से देखती अपने कमरे में चली गई।

"मैं क्या करूँ। मुझे किस कदर आजिज किया है सबने। आलिया बेटी तुम्हीं इन लोगो को समझाया करो।" बडे चचा का गुस्सा रफूचक्कर हो चुका था और वह बडी बेचारगी से आलिया को देख कर अपनी बेबसी की दाद चाह रहे थे। चन्द मिनट बाद सिर झुकाए बैठक में चले गए और जरा देर को सन्नाटा छा गया।

"हाय अपने जमाने में काहे को यह सब कुछ देखा होगा।" करीमन बुआ पीढे पर बैठकर अपने-आप कह रही थी, "यह स्वर्गीय मुजफ्फर मालिक का खान्दान है। उन्हें तो कब्र मे भी चैन न मिलता होगा मालिक।

रात का अँधेरा पडने लगा तो करीमन बुआ ने लालटेन जलाकर हर तरफ रख दीं और सहन में बिछे हुए खुर्रे पलँगा पर बिस्तर लगा दिए। छम्मी के कमरे से उसकी धीमी-धीमी सिसकियो की आवाज आ रही थी।

"छम्मी का क्या बनेगा?" दादी ने आलिया की तरफ देखकर धीरे से पूछा। अब उनकी साँस काबू में आ चुकी थीं। मुहब्बत ने दम अटका रखा है।

आलिया से कुछ भी न कहा गया। उसने दादी का हाथ थाम लिया। इस जिन्दगी के साथ कितने बखेडे होते हैं। छम्मी दादी को कुछ न समझती थी मगर वह बिस्तर पर पडे-पडे उसका सहारा बनी हुई थीं।

"क्या हुआ है आलिया बेगम ?" जमील भैया ने घर में दाखिल होते ही सवाल किया और फिर लोहे की जंग लगी कुर्सी पर बैठ गए। उस वक्त बड़ा सन्नाटा छाया था।

जमील भैया जब उसे आलिया बेगम कहते तो उसे ऐसा महसूस होता कि वह ज़हर उगल रहे हैं। वह चुप रही। "मुस्लिम लीग का जलसा हुआ था यहाँ, बड़े भैया ने डाँटा था, बस इतनी सी बात।" अम्मा ने बड़े फसादी अंदाज़ में कहा। "ख़ूब ! ख़ूब !" वह ज़ोर से हँसे," फिर हमारे अब्बा का स्वाभिमान जाग उठा। वाह क्या महान आदमी हैं हमारे अब्बा भी। यह घर उनकी महानता का आदर्श नमूना है। बरसों से कांग्रेस की ग़ुलामी कर रहे हैं और मुझे एक नौकरी न दिला सके। हालाँकि अब कांग्रेस का मन्त्रि-मण्डल बन गया है।" जमील भैया फिर हँसे।

"हाँ, अब तुम आग लगाओ। ज़रा लिहाज़ नहीं बाप का।" बड़ी चची बफर गईं, "कांग्रेस की ख़िदमत करते हैं तो कोई लालच से थोड़ी करते हैं।"

"अम्मा आप क्या जानें। अरे मुझे सख़्त भूख लगी है। अगर अब्बा के मेहमानों से कुछ बचा हो तो मुझे भी खिला दीजिए।" जमील भैया लड़ने पर तुल गए।

"बस हरदम बकवास करता है। कहीं और से खा-खा कर इतना बड़ा हो गया है। यहाँ तो भूखा मरता है न ?" बड़ी चची चीख़ पड़ीं।

"मई अम्मा तो ख़्वाहमख़्वाह नाराज़ होती हैं।" जमील भैया हँस पड़े, "अच्छा तुम्हीं बताओ आलिया बेगम कि हमारे अब्बा यहाँ जिस दुनिया के फ़िक्र में हैं क्या हम उसके बाशिन्दे नहीं हैं। आख़िर हमें क्यों तबाह किया जाए। और मज़हर चचा जो एक अंग्रेज़ का सिर फोड़कर जेल चले गए तो उन्होंने कौन सा कारनामा अन्जाम दिया ? क्या उन्होंने तुम सबको तबाह न किया ? अब तुमको इस घर में कितनी तकलीफ़ होगी। तुम लोगों ने कितने ठाठ की ज़िन्दगी गुज़ारी थी। अभी तो मैं भी किसी लायक नहीं वरना ..।" वह एक पल को रुक कर आलिया को देखने लगा।

"आप ऐसी बातें न कीजिए जमील भैया। दादी कहीं सोते में भी न सुन लें।" वह जल्दी से जमील भैया के पास आकर आहिस्ता से बोली।

"जाने भाभी किस तरह यह सब कुछ बर्दाश्त करती हैं। मैं तो उनसे लड़-झगड़ कर थक गई थी। भला क्या मिला उन्हें अंग्रेज़-दुश्मनी में।" अम्मा ने ठण्ठी आह भर कर पान की गिलौरी मुँह में रख ली।

"क्या तुम मेरे साथ खाना न खाओगी आलिया बेगम ?" जमील भैया ने करीमन बुआ के हाथ से तश्तरी लेते हुए पूछा।

"नहीं मई। अभी मुझे भूख नहीं लगी।"

वह उठकर छम्मी के कमरे मे चली गई। वह अब तक अपने बिस्तर पर औंधी पडी सिसक रही थी।

"चलो बाहर चलें छम्मी। अन्दर तो बडी गर्मी है।" आलिया ने उसे ज़बरदस्ती उठाया, "छत पर चलकर टहलेंगे।"

"छम्मी कमरे से तो निकल आई मगर जमील भैया को देखकर वहीं बैठ गई, "आप जाइये टहलिए।"

नीचे के घुटे हुए माहौल से ऊपर की खुली हुई फिज़ा में आकर उसे बडी शाति महसूस हुई। गर्मियो के गुबार में डूबी हुई चाँदनी में भी बडी मीठी सी ठडक थी। गली मे बच्चे बडे जोश व खरोश से रेल-रेल खेल रहे थे। ज्यादा खुश होते तो 'मुस्लिम लीग जिन्दाबाद' और 'कांग्रेस ज़िन्दाबाद' के दो चार नारे भी लगा देते। जब वह सीटी बजाते और छुक-छुक करते और चले जाते तो एकदम सन्नाटा छा जाता।

छत की मुंडेर के पास खडे होकर उसने देखा कि हाई स्कूल की इमारत दरख्तों के घने साये की वजह से अँधेरे में डूबी हुई थी।

वह देर तक उस इमारत को खाली-खाली नजरो से देखती रही। एक दिन शकील इसी स्कूल में पढेगा। उसका ख्वाब रग जरूर लायेगा। मगर उसके सारे ख्वाब अंररधम हो गए। अब वह किसी कालेज में न पढ सकेगी। फिर भी उसे पढना है। अपने पैरो पर खडा होना है। अब्बा कब आएँगे यह कोई नही जानता। बडे चचा उसे कितने निराश नज़र आते। जब वह अब्बा के मुकदमे के सिलसिले में बात करती है तो वह इधर-उधर की बातें छेड देते हैं।

सोचते-सोचते जब आलिया ने आसमान की तरफ देखा तो चाँद उसे बडा मटियाला मालूम हुआ।

"आलिया !"

उसने चौंककर देखा तो जमील भैया उसके पीछे खडे थे, "यहाँ अकेले क्या कर रही हो ?"

"कुछ नही भैया।" तन्हाई में वह भैया के अस्तित्व से घबरा गई। भैया इधर-उधर देख रहे थे।

"यहाँ घबडाती होगी आलिया। अगर तहमीना ज़िन्दा होती तो शायद तुम खुश रहती और शायद हमारी शादी भी हो चुकी होती। यकीन जानो कि यह शादी मेरी इन्तहाई मुखाल्फत के बावजूद हो रही थी। फिर भी जब वह मरी है तो एक बार मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं रँडुवा हो गया हूँ।" जमील भैया ने जैसे दुख से आँखें बन्द कर ली।

"मगर आप इन बातो का जिक्र क्यो कर रहे है।'

"वैसे ही, मुझे उससे हमदर्दी थी न। मुझे सब कुछ मालूम था न। और मुझे तो यह भी यकीन है कि वह अपनी मौत नहीं मरी।" जमील भैया ने उसकी आंखों में आंखें डाल दी।

"अब तो आपके घर में हूँ जो चाहिए कहिए।" उसने मुँह फेर लिया। मगर जमील भैया फिर उसके सामने आ गए, "सुनो तो आलिया, मैं इतना बुरा तो नहीं हूँ, बात यह है कि सफदर का मेरे पास खत आया था। उसने इल्तजा की थी कि तहमीना से शादी न करो, मुझे उससे मुहब्बत है। फिर भी मैं उस शादी को रुकवा न सका। आज तक अपने को मुजरिम समझता हूँ। अगर मेरा बस चलता तो सफदर और तहमीना की शादी कराके दम लेता मगर।" वह एक पल को चुप हो गए, "तुम तो मुझे मुजरिम नहीं समझती ?"

"अरे यह तो सब कुछ जानते हैं।" उसने हैरान होकर जमील भैया की तरफ देखा और फिर नजरें झुकाली। आपा का भेद खुला देखकर उसे जमील भैया की सूरत से नफरत होने लगी। सारी बातें तीर की तरह उसके कलेजे में छिदकर रह गई थीं।

"अगर मैं चाहूँ तो अभी अपने मामूँ के घर जा सकती हूँ।" मामूँ की हकीकत जानते हुए भी वह और किसका नाम लेकर धमकाती।

"तुम जा ही नहीं सकती। मुझे तुमसे मुहब्बत है। फिर मैं क्या करूँगा।" जमील भैया का पसीजा हुआ ठण्डा हाथ उसके हाथ को दबोचने लगा और उसे महसूस हुआ कि वह छत में धँस रही है। मारे कमजोरी के वह अपने को बचा नहीं सकती। उसने बड़ी बेबसी से जमील भैया के ठण्डे हाथ की तरफ देखा तो एकदम उसे वह मेंढक याद आ गया जो बरसात के दिनों में उसके हाथ पर कूद गया था। उसने डरकर आंखें बन्द कर लीं और उसके मुंह से चीख निकल गई, फिर जाने उसे क्या हुआ कि वह चीखती ही चली गई।

जब उसने आँखें खोलीं तो सब लोग उसके पास जमा थे। अम्मा रो रही थीं और बड़े चचा कोई माजून चटा रहे थे, मगर जमील भैया वहाँ नजर न आए।

"आस-पास कमबख्त हिन्दुओं के मकान में कोई भूत दिखाई दे गया होगा।" छम्मी ने उसके आंख खोलते ही विचार प्रकट किया और अम्मा बेताब होकर उसके हाथ चूमने लगी।

"फिर वही जहालत की बातें। किसी ख्याल से डर गई होगी। मानसिक बीमारी है। तुम यह माजून रोज खाना। दिमाग मजबूत हो जाएगा बेटी।" बड़े चचा छम्मी को फटकार कर आलिया को नसीहत करने लगे थे, इसलिए उन्होंने देखा भी नहीं कि छम्मी अपनी जहालत का बदला लेने के लिए किस कदर बेचैन थी मगर जाने क्या सोच कर चुप हो रही थी।

"आखिर क्या हुआ आलिया ?" बडी चची ने पूछा तो उसने घबरा कर इस तरह आँखें बन्द कर ली जैसे सोना चाहती हो। अब भला वह सब क्या बताती।

बीस

अब्बा का मुकद्दमा खत्म हो गया। कत्ल के इरादे से हमला करने के सिलसिले में सात साल की कैद का हुक्म सुना दिया गया था। दोपहर ढल चुकी थी। हल्की सी बूँदा बांदी के बाद अब आसमान बिल्कुल साफ हो गया था। जब बडे चचा निढाल से घर में दाखिल हुए तो जैसे वह बकरने की ताकत वहीं बाहर ही छोडकर आए थे। अम्मा उसकी कमर से लिपट गईं, "बडे भैया मुझे अच्छी खबर सुनाना।" अम्मा मुँह उठाए उन्हें बडी उम्मीद से तक रही थी। बडे चचा आँगन में बिछी हुई चौकी पर आहिस्ता से बैठ गए तो आलिया ने लोटे में पानी भर कर उनके पास रख दिया। कैसी धूल उड रही थी बडे चचा के मुँह पर।

बडे चचा कठपुतलिया की तरह मुँह पर पानी के छींटे देने लगे।। वह सबसे नजरें बचा रहे थे। अम्मा का सब्र जवाब दे गया। बुरी खबर तो बडे चचा की आँखो से झांक रही थी। अम्मा उसका मुँह तकते तकते दहाडकर रोईं तो बडी चची और करीमन बुआ ने जल्दी से उन्हें सँभाल लिया।

"अम्मा बी के कमरे के दरवाजे बन्द कर दो। कहीं वह रोने की आवाज न सुन लें।' बडे चचा ने आलिया की तरफ देखकर कहा और फिर अम्मा से मुखातिब हो गए, "मजहर की दुल्हन सब्र से काम लो। यह सात साल भी गुजर जाएंगे और यह भी हो सकता है कि मजहर एक साल भी जेल मे न रहे। क्या पता हम आजाद हो जाएँ।"

"सब बेकार बातें है बडे भैया। उन्होने भरा घर उजाड दिया। अब सात साल कौन गुजारेगा। हाय सात साल नही गुजरते।" अम्मा बिलक बिलक कर रो रही थीं।

'अरे हाकिमो ने नही देखा इस घर का जमाना। उन्हें पता ही नही वह किसका बेटा है। अपने स्वर्गीय मालिक तो लोगो को फांसी के तख्ते से उतरवा लेते थे। हाकिम उनकी डालियों पर जीते थे। पर अब जमाना बिगड गया है।" गुजरा जमाना याद करके करीमन बुआ का मुँह सुर्ख हो रहा था और वह रोती हुई अम्मा को लिपटाए कमरे में ले जाने की कोशिश कर रही थी।

"हम उजड गए, तबाह हो गए। उन्हें मुझसे कौन सी दुश्मनी थी जो यह सब कर दिया।" अम्मा बेकाबू हो कर अपने को छुडा रही थीं।

जब अम्मा को ज़बरदस्ती कमरे में ले जाया गया तो वह आंगन में अकेली खडी रह गई। अम्मा के रोने-धोने ने किसी को भी उसकी तरफ आकर्षित न किया। किसी ने भी न देखा कि उसके दिल पर क्या गुज़री। एक बार तो उसे महसूस हुआ कि उसके पैरों तले कुंआ खुद गया है। वह धीरे-धीरे गुज़र रही है। जाने किस तरह उसने आगे बढकर लोहे की कुर्सी थाम ली। सहन में कैसा सन्नाटा छाया था। कुछ पल बाद सीढियों को तय करके वह अपने कमरे में चली गई और फिर अपने बिस्तर पर गिर कर एकदम सिसकने लगी।

अच्छी तरह रो चुकने के बाद जब उसका दिल ठिकाने आया तो वह मानसिक दृष्टि से एकदम शून्य हो रही थी। उसने यूंही अपने कोर्स की किताबें उठाकर फिर से रख दी। पांच बजे मास्टर पढाने के लिए आता था। उसने किताबों पर तकिया रख दिया जैसे आज तो वह इन किताबों की सूरत से भी बेज़ार हो। आज कौन सी तारीख है। उसने अपनी याद को कुरेदा। आज रात सज़ा का एक दिन गुज़र जाएगा। शाम तो होने वाली है। उसने बडी उम्मीद से उस एक दिन को आगे ढकेल दिया।

सीढियों पर किसी के कदमों की आहट हो रही थी। उसने देखा कि बडे चचा उसकी तरफ बढ रहे हैं। वह अपने बिस्तर पर बैठ गई। उसने बडे सब्र से उनका उतरा हुआ चेहरा देखा। लेकिन जब बडे चचा ने उसकी आंखों में झांकते हुए सिर पर हाथ फेरा तो वह कांप कर रह गई। आंसुओं के पर्दे के उस पार सब कुछ धुंधला कर रह गया।

"तुम्हें अपनी मां को संभालना है बेटी। तुम हिम्मत से काम लो। मुझे उम्मीद है कि जेल की दीवारें उसे ज्यादा दिन तक न रोक सकेंगी, ठीक है न!" बडे चचा ने लम्बी सांस भरी। ऐसा यकीन था चाचा की आंखों में कि वह सिर झुकाने पर मजबूर हो गई।

बडे चाचा चले गये तो वह आंसू पोंछकर जैसे बडी शान्ति से लेट गई।

शाम हो रही थी। गली में मोतियों के हार बेचने वाले आवाज़ें लगाते गुज़र रहे थे। कमरे में हल्का सा अंधेरा छा रहा था, लेकिन आलिया मुंह छिपाये बिस्तर पर पडी रही। बडी चची, छम्मो, करीमन बुआ सभी तो बारी-बारी उसके पास आए, उसे नीचे ले जाने की ज़िद्दें कीं मगर वह कैसे जाती। भला वह अपनी अम्मा को किस तरह देखती। अम्मा, जो एक साल से इस घर में मुसाफिरों की तरह बैठी थी। अब निराशा ने उनका सफर खत्म कर दिया था। बंधा हुआ सामान खुल गया।

गली में बिजली का बल्ब जल गया था। वह कमरे से निकलकर छत पर आ गई। आज तो उसे अँधेरा बहुत अच्छा लग रहा था। फिर अँधेरी रात में तारे कितने रौशन हो रहे थे। जैसे दुख के अँधेरे में ग़म दहक रहा हो। क़रीब-क़रीब की छतों से शोर की आवाज़ आ रही थी। बच्चे लड़-झगड़ रहे थे, ग्रामोफोन रिकार्ड बज रहे थे, कोई आवाज़ भजन गा रही थी—

मीरा के प्रभु गिरधर नागर...... ...

"आलिया मैं तुमसे बात कर सकता हूँ ! तुम चीखोगी तो नहीं ?" जमील भैया जाने कब बिल्लियों की चाल चलकर उसके सिर पर आ खड़े हुए थे। वह उस वक्त सख्त बौखलाए लग रहे थे। मुहब्बत ज़ाहिर करने के तल्ख़ किस्से के बाद आज वह उससे बात कर रहे थे वरना कई महीने गुज़र गए उन्होंने उससे बात न की थी। वह घर में भी कम ही आते, चुप-चाप रहते। बड़ी चची अपने बेटे को यूँ देखकर फ़िक्रमन्द रहतीं। उनका ख्याल था कि अच्छी सी नौकरी न मिलने की वजह से यह हालत है। कुछ नालायक़ लड़कों की ट्यूशनों पर उनका गुज़ारा हो रहा था।

आलिया अपने हाल पर मगन सी बैठी रही।

"क्या तुमको मुझसे इतनी नफ़रत है कि जवाब तक न दोगी ?" उन्होंने जैसे विवशता में अपना हाथ उसकी तरफ़ बढ़ाया और फिर झिझककर खींच लिया। शायद उन्हें पहला किस्सा याद आ गया था, "मँझले चचा से मिलने जेल न चलोगी।"

"मैं अब्बा को जेल में नहीं देख सकती। भला मैं उन्हें मुजरिम की हैसियत में देखूँगी।" वह धीरे से बोली।

"वाह वह मुजरिम कब है ? अंग्रेज हाकिमों को मारना जुर्म कहाँ होता है।"

"हूँ !" उसने जैसे चौंककर जमील भैया की तरफ़ देखा। वह तो उसे अँधेरे में भी बड़े सरकश और गम्भीर नज़र आ रहे थे। वह कुछ न बोली। भीनी-भीनी हवा के हल्के-हल्के झोंके आ रहे थे और अब फिर बादलों के कुछ टुकड़े इधर-उधर तैरते फिर रहे थे।

"नीचे चलो भई। सबके साथ बैठकर जी बहल जाएगा।" जमील भैया ने इस तरह कहा जैसे जी बहलने की बात सरासर झूठ हो।

"आप जाइये, मैं थोड़ी देर में आ जाऊँगी।"

जमील भैया कुछ देर तक खामोश खड़े रहे, फिर चले गए। वह अपने कमरे में आ गई और मेज़ पलँग के पास खींचकर अब्बा को ख़त लिखने बैठ गई। वह बहुत

सोच-सोच कर लिख रही थी : जुदाई के ये सात साल मिलाप की चमक से हमेशा के लिए मांद पड़ जाएँगे । मैं हर वक्त आपका इन्तजार करूँगी ।

खत खत्म करने के बाद उसने वहीं मेज़ पर सिर टेक दिया । उस वक्त सात साल कितने लम्बे मालूम हो रहे थे । अल्लाह रामजी ने वनबास के चौदह साल किस तरह गुज़ारे होंगे ।

"करीमन बुआ घर में कहो कि मजहर भाई के जेल की खबर से बहुत अफ़सोस हुआ । *अगर बदले में कोई मुझे जेल दे दे तो अभी तैयार हूँ, अपनी बेकार ज़िन्दगी* . ।" बैठक की दहलीज़ से इसरार मियाँ की भर्राई हुई आवाज़ घर के सन्नाटे को चीरती हुई उसे साफ सुनाई दे गई । उसने मेज़ से सिर उठाकर खत लिफ़ाफ़े में बन्द कर दिया ।

इसरार मियाँ के पैग़ाम का कोई जवाब न था । सिर्फ़ करीमन बुआ के चिमटा पटकने की आवाज़ आ रही थी । अल्लाह करे इसरार मियाँ बुढापे से पहले ही दादी की तरह ऊँचा सुनने लगें । उन्हें यह शक तो रहेगा कि जवाब तो दिया गया है मगर उन्होंने सुना नहीं ।

बड़े कमरे की खिड़की से झाँककर उसने नीचे देखा । आँगन में बिछे हुए पलँगों पर सब लोग चुपचाप बैठे थे । सिर्फ़ बड़े चचा लेटे हुए सीने पर हाथ फेर रहे थे । बड़ी चची का सरौता हौले-हौले सुपारी कुतर रहा था और करीमन बुआ बड़ी फुर्ती से रोटियाँ पका रही थीं । जमील भैया लोहे की कुर्सी पर बैठे उँगलियाँ मरोड़ रहे थे । छम्मी का पता न था । इस घटना के बाद से तो उसकी आवाज़ भी न सुनाई दी थी । सारा लड़ना भिड़ना भूल गई थी ।

वह दबे कदमों नीचे उतर आई । लालटेन की पीली रोशनी में अम्मा उसे बड़ी बेबस नज़र आ रही थीं । वह जल्दी से चचा के पास बैठ गई । आज तो उसने बड़े चचा का सिर भी न सहलाया था ।

"मास्टर साहब रोज़ आते हैं न ?" आखिर बड़े चचा ने बात करने का विषय ढूँढ लिया और खामोशी का डेरा उठ गया ।

"आते हैं ।" वह खिसक कर बड़े चचा का सिर सहलाने लगी ।

"अब अगर तुम मेहनत से न पढ़ोगी तो हम क्या करेंगे । मेरा कौन सा लड़का बैठा है जो इन बरसों को बिता देगा ।"

अम्मा पर फिर से रोने के आसार तारी हो रहे थे । वह जल्दी से उठकर दादी के कमरे में चली गई । जब से रात को ओस पड़नी शुरू हुई थी, दादी का बिस्तर

कमरे में चला गया था। मई-जून के सिवा उनका सारा ज़माना कमरे में गुज़रता।।

वह दादी की पट्टी से टिक गई। छम्मी अपनी मसहरी पर मुँह छिपाए पड़ी थी। उसने आलिया को देखा और फिर मुँह छिपा लिया।

"मज़हर बेटे का कोई खत आया ?" दादी ने बेचैन साँस को काबू में करते हुए पूछा। इधर कुछ दिनों से तो उनपर हर वक्त दमें का हमला रहता।

"खत आया था दादी। काम बहुत है, छुट्टी नहीं मिलती।" उसकी आवाज़ घुट रही थी। छम्मो ने एक पल को सिर उठाया तो आँसू लुढ़ककर तकिये में जज़्ब हो गए।

"ऐसा मालूम होता है कि अब जिन्दगी खत्म हो रही है। तुम्हारा छोटा चचा जाने कब वापस आएगा। वह मुझसे बहुत मुहब्बत करता था। अट्ठारह साल का हो गया था, मगर मेरी गोद में मुँह छिपाकर सोता था। जाने वह कब ।"

दादी की साँस तेज़ होने लगी तो उन्होंने घुटने पेट में अड़ा लिए।

"आलिया छम्मी खाना खाने आ जाओ।" आँगन से बड़ी चची की आवाज़ आई तो आलिया उठ खड़ी हुई। करीमन बुआ दादी का खाना लिये अन्दर आ रही थी।

इक्कीस

अम्मा ने वक्त से समझौता कर लिया था। बहुत ऊँचे पर बैठे बैठे वह ज़रा नीचे सरक आई थी। पर इतनी भी नहीं कि चची के करीब बैठ गई हों। उनके चेहरे पर अब भी तीस रुपये महीने का गुरूर और उस दौलत का इत्मीनान था जो उनके भाई के पास जमा थी और हिफ़ाज़त का वह साया भी उनके साथ लगा हुआ था, जिसे इकलौते भाई के ऊँचे ओहदे और अंग्रेज़ भाभी ने जन्म दिया था।

मुकदमे के फ़ैसले के बाद अम्मा ने मामूँ को कई खत लिखे थे, जिनमें इस घर और यहाँ के माहौल की बुराइयाँ की थीं, उनके पास रहने की ख्वाहिश का इज़हार किया था मगर मामूँ ने बड़ी बेबसी से जवाब दिया था कि इस तरह वह भी सरकार की नज़रों में आ जाएँगे और उनका ओहदा खतरे में पड़ जाएगा।

आलिया ने अम्मा से उस खत का ज़िक्र न किया था जो उन्होंने उसे लिखा था और बड़ी सफ़ाई से स्वीकार किया था कि उनकी बीवी स्वतन्त्र वातावरण की पोषक

है। उसके मुल्क में रिवाज नहीं कि ख्वाहमख्वाह खान्दानी झमेलों को पाल कर ज़िन्दगी तल्ख की जाए, इसलिए जरूरी है कि किसी बहाने वह अपनी माँ को वहीं रहने पर मजबूर करे।

उसने यह खत पढ़कर फाड डाला। वह अम्मा का दिल न तोड़ना चाहती थी। आस टूटने के बाद इन्सान के पास क्या बचा रहता है। सहारे चाहे धोखा ही क्यों न दे जाएँ मगर कुछ दिन तो काम आ ही जाते हैं। उसे मामूँ से सख्त नफरत हो गई थी। 'यह हंस की चाल चलने वाला कौवा अपनी चाल भी भूल गया।' मामूँ का खत पाकर उसने बडी हिक़ारत से सोचा था। जब वह खुद किसी काबिल हो जाएगी तो अम्मा के इस सहारे को नोच कर दूर फेंक देगी। उसने फैसला किया कि अब वह और भी मेहनत से पढेगी।

उन दिनों बडे जोर की सर्दी हो रही थी। फिर भी वह रात को बारह-बारह बजे तक पढती रहती और जब शकील आवारागर्दी करके होले से सदर दरवाजा खट-खटाता तो वह दबे कदमों जाकर जंजीर खोल देती। शकील हाई स्कूल में दाखिल हो चुका था। फीस के रुपये उसने अम्मा से छिपाकर उसे दिए थे। मगर इतनी सी किताबें खरीदने के लिए वह कहाँ से रुपये लाती। शकील के पास भी यही बहाना था कि दोस्तों के साथ मिलकर पढता है। उसकी आँखों में कैसी ढिठाई आ गई थी। आलिया दर वाजा खोलते हुए कभी-कभी चेतावनी देती तो वह बडी बेपरवाही से हँस पडता।

आज भी रात को जब वह पढ रही थी तो दरवाजा खटका। वह किताबें रखकर जल्दी से सीढियाँ उतरने लगी और दरवाजा खोल रही थी तो जमील भैया कानों में मफलर लपेटे अपने कमरे से बाहर निकल आए। आलिया को देखकर एक पल को ठिठके और फिर शकील का बाजू पकड़ कर उसके मुँह पर दो-तीन थप्पड मार दिए, "ले यह सबक भी याद कर ले।"

शकील ने जमील भैया को ऐसी नज़रों से देखा जिनमें मुकाबले की ताक़त थी मगर वह जल्दी से बडी चची के कमरे में चला गया।

"ख्वाहमख्वाह मारते हैं। उसे किताबें खरीद दीजिए, फिर क्यों जाएगा दोस्तों में पढने।" वह धीरे से बोली।

"किताबें? मुझे भी किसी ने किताबें नहीं दी थीं मगर मैं ऐसा न था। यह इतना बडा ऊँट का ऊँट कुछ नहीं सोचता। घन्टे-दो-घण्टे पढकर भी आ सकता है। और फिर तुम देखती नहीं हो कि इसे सिल्क की कमीज़ किसने बनवाकर दी है। मेरा तो कोई ऐसा दोस्त न था।"

भैया गुस्से से हाथ मल रहे थे और वह बेवकूफ़ों की तरह उन्हें देख रही थी, "फिर क्या हुआ जो किसी दोस्त ने कमीज़ बनवाकर दी है।"

भैया सिर झुकाये खडे थे। उसे उनकी हालत पर रहम आने लगा : बेचारे रुपये की किल्लत की वजह से कोई ट्रेनिंग भी न ले सके। ढंग की नौकरी नहीं मिलती, ट्यूशनों के रुपये भी बडी चची के हाथ में टिका देते हैं, इस पर शकील उल्लू तंग करता है, कहना नही मानता।

वह ऊपर जाने के लिए मुडी तो जमील भैया भी साथ हो लिये, "मैं भी तुम्हारे साथ चलूं। जरा देर बातें करेंगे।"

"भला यह कौन सा वक्त है बातो का? सो रहिए।" उसने जल्दी से कहा और सीढियो पर कदम रख दिया।

"वाह ! यह आप इस वक्त क्या कर रही हैं बजिया?" छम्मी जाने किस काम से उठी थी।

"मैं शकील के लिए दरवाज़ा खोलने उठी थी।"

"खूब, आप दोनो दरवाज़ा खोलने आए थे। हाय ! कितनी सख्त ज़ंजीर थी।" वह बडे व्यंग्य से हँसी, "सबके सामने बजिया से बात करते आपको शर्म आती है क्या?" उसने भैया से पूछा।

"छम्मी इतनी फिज़ूल बातें तो न करो।" जमील भैया गिडगिडाए।

"इनके धोखे में न आइयेगा बजिया। यह पहले मुझसे इश्क करते थे और अब आप से।" छम्मी कुछ कहते-कहते रुक गई। आलिया तेजी से जीने पर कदम रखती ऊपर आ गई। उसकी सांस फूली हुई थी : 'अल्लाह क्या मुसीबत है। क्या इसी लिए छम्मी जमील भैया का साया बनी हुई थी। और अब जमील भैया उसे छोडकर इधर लपक रहे हैं।' सर्दी और नफरत से वह कांपने लगी। लिहाफ में घुसकर उसने फिर से किताब उठा ली मगर एक लफ्ज़ न पढा गया। इन कुछ महीनो में जमील भैया की खामोशी और गंभीरता ने उनकी जितनी इज्जत बनाई थी वह सारी की सारी तबाह होकर रह गई।

गली में कुत्ते इस ज़ोर-ज़ोर से भूंक कर रो रहे थे कि उसे रात से दहशत माने लगी।

सुबह रोज़ की तरह छम्मी उसे प्यार से जगाने न आई। आलिया बडी देर तक पडी उसका इन्तज़ार करती रही। गली में अखबार बेचने वाले चीखते फिर रहे थे, "योरोप में लोहे से लोहा बजेगा। जग सिर पर खडी है। आ गया, आ गया आज का अखबार। जग को कोई नही टाल सकता। चौदह साल की लडकी का अपहरण कर लिया गया।"

वह बिस्तर से झुंझला कर उठ गई। जग योरोप में होती है तो उसे क्या, कौन से अम्मा की भाभी के रिश्तेदार कट कर मर जाएंगे और लडकियो का तो उपयोग ही

सिर्फ यह है कि वह मुहब्बत करें, भागें या भगा ली जाएं। सब भाड़ में जाएं। सीढ़ियाँ तय करती हुई वह बड़े दुख से सोच रही थी ' मगर छम्मी उसपर क्यों शक करती है। अरे बेवकूफ पागल !

छम्मी तख्त पर बैठी हुई थी और हाथ में पकड़े हुए पराठे को दाँतों से काट-काट कर खा रही थी। उसकी आँखें सूजी हुई थीं। आलिया को देखकर उसने मुँह फेर लिया और प्याली की सारी चाय एक ही साँस में पी गई।

उसे छम्मी की बेवकूफी पर हँसी आ रही थी। वह छम्मी के पास घुसकर बैठ गई तो उसने बड़ी बेचैनी से पहलू बदला और एक तरफ सरक गई, फिर उठकर अपने कमरे में चली गई।

"रात शकील किस वक्त आया था आलिया ?" बड़ी चची ने पूछा।

"कोई बारह के करीब। जमील भैया भी जाग गए थे। उन्होंने उसके दो हाथ भी जड़ दिए थे।"

"इस लड़के के लच्छन अच्छे नहीं दिखाई दे रहे हैं।" अम्मा नफरत से बोलीं।

"मैं क्या करूँ मजहर की दुलहिन। मैं पागल हो जाऊँगी।" बड़ी चची ने ठण्डी साँस भरी।

"बड़े भैया सँभालें न अपनी औलाद को।" अम्मा ने भड़काया मगर बड़ी चची भला काहे को किसी के भड़काने में आतीं। उनका खुद जब जी चाहता तो बड़े चचा से लड़ लिया करती।

"ज़माने-ज़माने की बात है। एक ज़माना था कि बड़े सरकार के सब बच्चे सात बजे के बाद घर से बाहर कदम न निकालते।" गुज़रा ज़माना करीमन बुआ का साया बना हुआ था।

चाय पीकर वह छम्मी के कमरे में चली गई। दादी उस वक्त सो रही थीं। रात को तो साँस उन्हें एक मिनट को आँख न झपकाने देती। वह दबे कदमों छम्मी के पास जाकर बैठ गई। छम्मी सिर से पाँव तक लिहाफ ओढ़े पड़ी थी। जगह-जगह से फटा हुआ लिहाफ फकीर की गुदड़ी मालूम हो रहा था।

"चलो ऊपर धूप में बैठें छम्मी।" आलिया ने उसके मुँह पर से लिहाफ सरकाया।

"हम आपसे नहीं बोलते।"

"ऊपर तो चलो पगली फिर बातें होंगी।"

छम्मी उठकर उसके साथ हो ली। उसकी आँखों में अजीब सी बचैनी थी।

"सुबह से तुम मुझसे बोली क्यों नहीं।" छम्मी को अपने लिहाफ में बैठा कर उसने पूछा।

"वाह मुझे क्या पड़ी है जो आपसे बोल-चाल बन्द करूँ। कोई मैं उस गधे से मुहब्बत करती हूँ जो आपसे जलूँगी।" छम्मी ने बुरा-सा मुँह बनाया।

"तुमने अपने आप ही यह समझना शुरू कर दिया कि जमील भैया मुझसे मुहब्बत करते हैं। मैंने तो पहले भी तुमसे कहा था कि मुझे ऐसी बातों से सख्त नफरत है और फिर जमील भैया ने भी कभी मुझसे कोई बात नही की।" वह साफ झूठ बोल गई।

"जमील भैया खुद ही मुझसे मुहब्बत करते थे। मुझे तो पता भी न था कि मुहब्बत क्या होती है। मगर अब वह बदल गए तो बदल जाएँ, मैं कब उस उल्लू से मुहब्बत करती हूँ।"

"तुम मुहब्बत करो न करो, मगर मुझे यह मालूम हो गया कि तुम मुझसे कितनी मुहब्बत करती थी।" उसने बड़े उलाहने से कहा और छम्मी को देखा तो वह एकदम उससे लिपट गई, "भला मैं अपनी बजिया पर शक थोड़ी कर रही हूँ। मुझे तो रंज था एक बात का।"

छम्मी की मासूमियत पर उसका जी चाहा कि बस उसे कलेजे में धर ले। फिर भी वह उससे रूठी रही।

"अरे सुनिये तो मैं आपको सब कुछ बताती हूँ।" छम्मी ने आलिया का मुँह अपनी तरफ कर लिया, "जिस साल भैया एम० ए० का इम्तहान दे रहे थे तो उन्होने मुझसे रुपये माँगे। मैंने इन्कार कर दिया तो उन्होने मुझे ऐसी नजरों से देखा कि मैंने सारे जमा रुपये उन्हें दे दिए और उन्होंने मुझे जोर से लिपटा लिया। मुझे बड़ा अच्छा उनका लिपटाना।" वह मारे शर्म के सुर्ख पड़ गई।

"फिर क्या हुआ ?"

"फिर बजिया जमील भैया मुझे अच्छे लगने लगे। अपने खाने के पाँच रुपये बड़ी चची को दे देती। बाकी सारे जमील भैया को। मैंने इन तीन वर्षों में एक कपड़ा भी नही बनवाया। देखा है न आपने मेरे सारे कपड़े फटे हुए हैं ?"

वह एक पल को कुछ सोचने लगी, "जब आप नही आई थी जो जमील भैया इसी कमरे में रहते थे। मैं रात को उनके पास आ जाती थी। पर बजिया अल्लाह कसम उन्होंने कभी बदतमीजी नहीं की। एक बार मैं उनके पास लेट गई थी तो खुद ही उठकर बैठ गए थे। उन्होंने सिर्फ प्यार किया था।" छम्मी का मुँह चुकन्दर हो रहा था।

"फिर क्या हुआ छम्मी ?"

"फिर बजिया, बड़ी चची ने बजिया की शादी तय कर दी। बड़ी चची का ख्याल था कि अगर जमील मजहर चचा के दामाद बन गए तो वह आप ही एम०ए० करा देंगे और ट्रेनिंग भी दिला देंगे। वैसे मैं चुपके से आप को बता दूँ कि बड़ी चची आपकी अम्मा से बहुत डरती हैं। बस इसलिए बगैर रिश्ते के कैसे कहतीं कि आगे पढ़ा दो,

मेरा मियाँ तो निकम्मा है। बड़ी चची ने बड़े डरते-डरते तहमीना आपा का रिश्ता माँगा था और जिस दिन मँझली चची ने मंजूरी का खत भेजा था उस दिन बड़ी चची खुशी से रोती रही थीं। भला मैं कैसे कहती कि मैंने बी० ए० करवाया है तो एम० ए० भी करवा दूँगी। किसी को क्या पता कि मैंने कितने दुख झेले ?" वह सिर झुकाकर कुछ सोचने लगी।

"फिर छम्मी।"

"यह दुनिया सचमुच बड़ी बुरी है बजिया। जमील भैया भी तो बी० ए० करने के बाद बदले-बदले नज़र आने लगे। मैं अगर उनके पास ज्यादा बैठती तो बहानों से उठा देते। सब कुछ भूल गए न और अब तो कुछ भी याद नहीं रहा उन्हें। सबके सामने मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। उलटी-सीधी बातें करते हैं, खैर। करते रहें, मैं भी तो कोई कुतिया नहीं हूँ जो उनके पीछे फिरूँ।" छम्मी ने घुटी-घुटी आवाज भरकर उसे ऐसी नज़रों से देखा कि उसका जी दुखकर रह गया। उसे तहमीना आपा याद आ गईं। कहीं यह छम्मी भी कोई बेवकूफी न कर बैठे, फिर क्या होगा।

"क्या पता छम्मी जमील भैया तुमसे मुहब्बत करते ही हों और न भी करते हों तो क्या मुहब्बत के बगैर इन्सान खुश नहीं रह सकता ?"

"तो, तो क्या मैं उन पर निछावर होती फिरूँगी। भई जो हमसे मुहब्बत करेगा, हम उससे करेंगे। यह तो बदला है। इस हाथ दे, उस हाथ ले।" वह हँसती हुई उठ गई, "रात दादी की तबियत बड़ी खराब हो रही थी। मैं सो नहीं सकी।"

छम्मी के जाने के बाद वह देर तक यूँ ही लिहाफ़ में बैठी झूमती रही और फिर किताबें उठाकर धूप में जा बैठी। हाय क्या मिल गया जमील भैया को इस बेचारी से खेलकर। मगर ये औरतें मुहब्बत की इतनी भूखी क्यों हैं अल्लाह ?

बाइस

रात के बारह बज रहे थे। अब वह पढ़ते-पढ़ते थक चुकी थी। उसने मेज पर किताबें रख दीं। वह सोना चाहती थी मगर सो न सकी और जब नींद न आये तो कितनी बहुत सी बातें जेहन में कुलबुलाने लगती हैं। अब्बा का खत क्यों नहीं आया। तहमीना आपा ने इश्क के पीछे जान गँवा दी और अब वह बिल्कुल अकेली है। किसी की घनिष्ठता नसीब नहीं।" अम्मा अपने दुखों से ग्रस्त हैं, उन्होंने कभी अपनी इस औलाद के दिल में झाँककर नहीं देखा। उसके लिए कुछ भी

जिन्दगी में कोई और गम नही, लाहौल विला। मगर वह उनके लिए सोच ही क्यो रही है ? खिडकी से रोशनी अन्दर आ रही है इसलिए नीद नही आती। उसने उठ कर पट भेड दिये।

निचली मज़िल में अचानक सबके बातें करने की आवाज़ आने लगी। वह बातें सुनने की कोशिश करने लगी। बारह बजे हैं। शायद शकील आया होगा और अब उसकी ताक में होगे।

ज़ीने पर कदमो की चाप हुई तो वह घबराकर उठ बैठी। जमील भैया उसकी तरफ आ रहे थे।

"आलिया दादी की तबियत सख्त खराब है। ज़रा देर को नीचे चलो।" वह बहुत गम्भीर हो रहे थे, "तुम घबराओगी तो नही। एक दिन सब पर यह वक्त आता है।"

उनका दिल ज़ोर से धडका। वह समझ गई थी। उसे महसूस हुआ कि उसके पाँव काँप रहे हैं मगर वह बडी हिम्मत से जमील भैया के साथ हो ली। जमील भैया उसका हाथ थामे हुए थे मगर उसे तो पता ही न चल रहा था कि यह हाथ उसका है या किसी दूसरे का।

दादी की मसहरी खींचकर उनका मुंह क़िबले[1] की तरफ कर दिया गया था। अम्मा, बडी चची और बडे चचा मसहरी के इर्द-गिर्द खामोशी से खडे हुए थे। दादी की वह झगडालू साँस जाने कितनी मात हो गई थी। दूर दूर जिन्दगी की आहट भी न महसूस होती। दादी की आँखें दरवाज़े पर टिकी हुई थी। अभी उनमें इन्तज़ार का नूर बाकी था। शायद वह इस वक्त अपने सबसे लाडले छोटे बेटे का इन्तज़ार कर रही थी और छम्मी दादी के कदमो से लिपटी घुटी-घुटी सिसकियाँ भर रही थी।

'ज़ालिम छोटे चचा'—आलिया की नज़रो में अनदेखे छोटे चचा का भयानक नक्शा फिर गया। उसका जी चाह रहा था कि वह चीख कर कहे—'दादी अब तो ऐसी नाकारी औलाद का इन्तज़ार न करो।'

करीमन बुआ बडी बेताबी से मसहरी के चारो तरफ घूम-घूम कर दुआएँ कर थी, "मौला मालकिन को मेहत बख्श दे और बदले में मुझे उठा ले। मौला मौला।"

बाबर ने भी तो इसी तरह हुमायूँ की जान की खैर चाही थी। हय करीमन बुआ यह कौनसी मुहब्बत है जो तुम्हारे दिल में ठाठें मार रही है। आलिया न करीमन बुआ को बैठाना चाहा मगर वह अपने को छुडाकर दुआएँ करने लगी—"मौला, मौला ."

---

१. वह दिशा जिस ओर मुंह करके नमाज़ पढी जाती है।

एक हिचकी के साथ दादी को स्थायी शांति मिल गयी। करीमन बुआ हाथ जोड़ कर खड़ी हो गयी। उनकी आँख मे एक भी आँसू न था। बड़े चचा ने नब्ज पर से हाथ हटा कर दादी के हाथ सीने पर बाँध दिए और लिहाफ़ से मुह छिपा दिया। करीमन बुआ कमरे से सिर झुकाए निकल गई।

"छम्मी, अब उठ जा बेटी," बड़ी चची ने छम्मी को उठाया तो दादी का ढका हुआ मुंह देखकर वह बेकाबू हो गई। बड़े चचा का मुंह ज़ब्त की वजह से सुर्ख हो रहा था और उनकी आँखो से माँ की मुहब्बत भरी कहानियो की यादें झाँक रही थी और स्थायी बिछोह का सदमा कँपकँपा रहा था।

बड़े चचा सिर झुकाए बैठक में चले गए शायद इसरार मियाँ को सूचना देने। अम्मा और बड़ी चची छम्मी को चुप कराने की कोशिश कर रही थीं मगर वह हाथ से निकली जाती थी। फिर जब जमील भैया ने बढ़कर उसके कन्धे पर हाथ रख दिया तो छम्मी का सिर जैसे खुदबखुद उनके सीने पर आ अटका और वह इस तरह चुप हो गई जैसे कभी रोई न थी।

वह कमरे से बाहर आ गई। करीमन बुआ आँगन में ईंटो का चूल्हा बनाकर बड़े से पतीले में पानी गरमकर रही थीं और वह जो अब दादी की मौत पर एक आँसू भी न बहा सकी थी अँधेरे में आग की काँपती लपटो को देखकर सिसक उठी। करीमन बुआ ने उसकी तरफ देखा और सिर झुका लिया।

रात दादी की मसहरी के पास बैठकर कट गई। अम्मा और बड़ी चची दादी के ज़ुल्म व सितम भूलकर उन्हें इस तरह बिलख-बिलख कर याद कर रही थी जैसे उनके बगैर दुनिया सूनी हो गई है। जब तक दादी ज़िन्दा रही, उनके ज़ुल्म व सितम ने सबके कलेजे छलनी कर रखे थे। बुढ़ापे के आते ही सबने बदला ले लिया। बेकार चीज़ की तरह उठाकर एक तरफ डाल दिया और फिर ज़िन्दगी की व्यस्तताओ मे इतने दौरे पड़े कि दादी टुकुर-टुकुर मुंह तकने के सिवा कुछ न कर सकी।

आलिया का जी चाहा कि वह अपने कानो में रुई ठूँस ले। अम्मा और बड़ी चची की मुहब्बत की दास्तानें उससे न सुनी जा रही थी। आखिर इस वक्त सब को उनके ज़ुल्म व सितम क्यों नहीं याद आते? उसे तो सिर्फ छम्मी अच्छी लग रही थी जो कोई बात न कर रही थी बल्कि थोड़ी देर रो लेने के बाद दरी के एक कोने मे लेटी बड़ी शांति से सो रही थी, जैसे अब भी उसका सिर जमील भैया के सीने पर टिका हो। और करीमन बुआ जो सामने ठण्डी हवा में बैठी गीली लकड़ियाँ फूंक रही थी और गोद में रखे हुए पवित्र कुरान को हिल-हिलकर पढ़े जा रही थी। कितने सब्र और खामोशी से उन्होंने दादी की मौत को बरदाश्त कर लिया था। छ साल तक एकाकी दादी की सेवा करने वाली करीमन बुआ ने एक आँसू भी न बहाया था।

उसका जी चाह रहा था कि वह दरी के एक कोने पर सिकुड कर सो रहे। उसे दादी से न तो गहरी मुहब्बत थी और न कोई शिकायत। बस वह उसकी दादी थी। फिर भी वह लेट न सकी। क्योंकि अम्मा ने छम्मी के सो जाने पर बड़ी नफरत से आलोचना की थी।

आखिर को सुबह हो गई। करीमन बुआ ने आंगन में दरी बिछा दी थी और मुहल्ले की औरतें आ आकर जमा हो रही थी। वह सब अपने-अपने दुखों को याद करके आंसू बहा रही थी और छम्मी उन्हें देख देखकर अपनी जान हलाकान कर रही थी।

जब दादी को नहला धुलाकर आखिरी सफर के लिए तैयार कर दिया गया तो तमाम औरतें बरामदे में टाट के पर्दे के पीछे छिप गईं। सिर्फ करीमन बुआ हाथ जोड़े लाश के पास खड़ी जाने क्या कह रही थी।

जब मैयत उठाने के लिए मर्द अन्दर आए तो इसरार मियाँ सबसे आगे थे।

"खबरदार! ज़िन्दगी में कभी मालकिन ने मुँह न लगाया। अब उनकी लाश खराब करने आए हो।" करीमन बुआ इसरार मियाँ के सामने आ गईं और वह चोरों की तरह जमील भैया के पीछे छिपने लगे। तमाम लोगों की नजरें सवालिया निशान बनकर इसरार मियाँ का पीछा कर रही थी।

"अरे शकील कहाँ है। अपनी दादी को कब्र तक तो पहुँचा आता।" बड़ी चची टाट के सूराख से शकील को तलाश कर रही थी। मगर वह कहाँ था।

"अन्दर जाओ करीमन बुआ।" बड़े चचा ने करीमन बुआ के कन्धे पर हाथ रख दिया।

"अल्लाह को सौंपा मालकिन, अल्लाह को सौंपा।" करीमन बुआ आंगन से हटकर बरामदे में आ गईं।

दादी की लाश जब सदर दरवाज़े से पार हो रही थी तो एक बार सब चीखकर रो पड़े मगर करीमन बुआ सिर झुकाए आंगन में बिखरा हुआ सामान बटोर रही थी।

ज़रा देर बाद सब मेहमान चले गए तो जैसे घर एकदम वीरान हो गया। उसकी समझ में न आया कि वह क्या करे।

रात नौ बजे बड़े चचा किसी काम से कानपुर चले गए। असहयोग आन्दोलन ज़ोरों पर था और वह बहुत दिन से व्यस्त थे। चचा का उसी दिन चला जाना उसे सख्त बुरा लगा। क्या वह दो दिन घर में बैठकर अपनी माँ का शोक नहीं मना सकते थे। क्या उनकी राजनीति उन्हें इतना भी वक्त नहीं दे सकती?

मगर जब अम्मा ने उनके जाने पर एतराज़ किया तो वह चुपचाप सुनती रही। जाने क्यों वह बड़े चचा के खिलाफ एक शब्द न बोल सकती थी।

जमील भैया ने नजमा फूफी, अब्बा और छम्मी के अब्बा को तार कर दिये थे और अब सब लोग उनके आने का इन्तज़ार कर रहे थे।

दूसरे दिन से सब काम इस तरह होने लगा जैसे कोई बात ही न हुई हो। सिर्फ उस वक्त दादी की मौत का एहसास गहरा हो जाता जब करीमन बुआ काम से छुट्टी पाकर कुरान शरीफ पढ़ने बैठ जाती। और तो घर में किसी ने एक आयत भी न पढ़ी। आलिया को करीमन बुआ की मुहब्बत पर ईर्ष्या होने लगी। उसने कितनी बार चाहा था कि एकाध पारा पढ़कर दादी की रूह को बख्श दे मगर उसे फुर्सत ही न मिलती। इम्तहान की तैयारी सिर पर सवार थी। वह अब फिर ध्यान से पढ़ना चाहती थी। वह अपना एक साल दादी को बख्शने के लिये तैयार न थी। वह करीमन बुआ के मुकाबले में खुद को कमतर समझकर सब्र कर लेती।

छम्मी कुछ दिन तक अपने कमरे में जाने से घबराती रही। पुराने सुहृद का साथ छूटने के बाद वह कमरा शायद उसके लिये जंगल बन गया था। वह इधर-उधर मारी-मारी फिरती या फिर आंगन में चौकी पर बैठकर फटे हुए कपड़ों की मरम्मत करती रहती या फिर लोटों पानी भरकर क्यारी में डालने लगती और जब उससे भी उकता जाती तो बुर्का ओढ़कर मोहल्ले के घरों-घरों फिर आती।

फिर एक दिन उसने झाड़ू उठाकर अपना कमरा साफ करना शुरू कर दिया। सारे जाले छुड़ा दिए। मुहम्मद अली जौहर की तस्वीर से गर्द झाड़ी गई। उसने सफेद कढ़ी हुई पुरानी चादरों पर पेवंद लगाकर उन्हें दोनों मसहरियों पर बिछा दिया और साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटकर हमेशा की तरह गाने लगी—

माल सोचें गम हाए निसानी देखते जाओ

छम्मी को ग्रामोफोन के सारे गाने और फकीरों की गाई हुई सारी गजलें याद थीं। उसे हर मौके की गजल और गीत गाने में कमाल हासिल था। आज जब छम्मी-बड़े स्टाइल से लेटी गा रही थी तो आलिया का जी चाहा कि जाकर उसे लिपटा ले मगर छम्मी तो अब तक उससे सीधे मुंह न बोलती थी। सब कुछ बताने के बावजूद उसके दिल में कोई किर्च रह गई थी जिसे निकालना आलिया के बस में न था।

नजमा फूफी और छम्मी के अब्बा का खत आया था। उन्होंने लिखा था कि जब अम्मा रुखसत हो गईं तो फिर आने से क्या फायदा। काश उन्हें कोई पहले से इत्तिला कर देता।

छम्मी अपने अब्बा का खत पढ़कर आपे से बाहर हो गई, "हां, अब आने का क्या फायदा। एक दिन के लिए बीवी के पहलू से अलग होकर उन्हें कब करार आता है। मेरा बस चले तो अपने वालिद साहब किबला का गला अपने हाथों से घोंट दूं।"

"छम्मी कहीं तो जबान को लगाम दिया करो।" आलिया की अम्मा ने भुड़का तो छम्मी एकदम घुट-घुटकर रोने लगी। जाने क्यों वह इतने दिन गुजरने के बाद भी अम्मा को जवाब देने से चूक जाती थी।

अब्बा को भी दादी की मौत की सूचना मिल गई थी। उनका खत आया था। उन्होंने लिखा था कि कल्पना की दुनिया को कोई जेल बन्द नहीं कर सकता। उस पर कोई पाबन्दी नहीं लगाई जा सकती। मैंने अपनी माँ को कांधा दिया था। मैंने उसे कब्र में उतारा था। खैर तुम रंज न करना मेरी बेटी। तुमको जी छोटा न करना चाहिए। मौत भी ज़िन्दगी की एक हकीक़त है। मेहनत से पढ़ो और अपने पास होने की खुशखबरी सुनाओ।

खत पढ़कर आलिया बड़ी देर तक सिर झुकाए बैठी रही। दोपहर हो गई मगर उसका पढ़ने में जी न लगा। एक तो अब्बा के खत ने उसे रंजीदा कर दिया था, उस पर से दोपहर के सन्नाटे में करीमन बुआ के होले-होले पवित्र कुरान पढ़ने की आवाज़ जैसे फरियाद करती मालूम हो रही थी।

अपने कमरे से निकलकर वह नीचे उतर गई और तख्त पर करीमन बुआ के पास जा बैठी। अम्मा और बड़ी चची शायद सो रही थीं क्योंकि उनके बातें करने की आवाज़ न आ रही थी।

करीमन बुआ जब तक पढ़ती रहीं वह उनके पास सिर झुकाए बैठी रही और जब वह कुरान शरीफ बन्द करके दुआ करने लगीं तो आलिया की आँखों में आँसू आ गए। करीमन बुआ मुहब्बत की कैसी मिसाल पेश कर रही हैं। काम से थक कर वह भी तो दिन में सो सकती हैं।

"तुम सोईं नहीं आलिया बेटी?" दुआ खत्म करके करीमन बुआ ने पूछा।

"नींद नहीं आई करीमन बुआ और ।" वह चुप हो गई।

"क्या भूख लगी है बेटा को? एक रोटी उलट दूं आग जलाकर?"

"नहीं करीमन बुआ। तुम्हारे पढ़ने की आवाज़ से जी भर रहा था।"

"मँझले मियाँ और नजमा बेटा को जरूर आना चाहिए था। छम्मी भी अपने बाप को देख लेती और फिर कुछ नहीं तो उस मसहरी का दीदार कर लेते जिस पर उनकी माँ ने दम तोड़ा था। ज़माने-ज़माने की बात है। कभी माँ के बग़ैर चैन न पड़ता था।" करीमन बुआ के लहज़े में शिकायत थी।

"तुमको दादी से कितनी मुहब्बत थी करीमन बुआ। शायद दादी भी तुमको इतना ही चाहती होंगी।"

"क्या मालकिन तुझे चाहती थीं?" करीमन बुआ ने उलटा सवाल कर दिया, "तुमने अपनी दादी का ज़माना नहीं देखा बेटा। पता नहीं वह किसी को चाहती भी

थीं या नहीं। हाँ, सिर्फ छोटे मियाँ को चाहती थी जो पता नहीं कहाँ खो गए। उन्हें खिलाफ़त के जलसे ले गए। हम तो नौकर लोग थे। आलिया बिटिया हमारी क्या हैसियत।" करीमन बुआ ने अपनी कमीज़ पीठ पर से सरका दी और उसकी तरफ घूम कर बैठ गईं। उनकी पीठ पर काले निशान थे और एक जगह से सफेद-सफेद चर्बी-सी निकली हुई थी।

"यह क्या हुआ था करीमन बुआ?" उसने जल्दी से कमीज़ नीचे खींच दी।

"मेरी अम्मा मालकिन के जहेज़ में आई थी। मेरे अब्बा मर गए थे। मैं छोटी सी थी कि जब ज़रा बड़ हुई तो मालकिन ने अपने घर के नौकर से मेरी शादी कर दी। नई-नई शादी हुई थी इसलिए मालकिन की खिदमत में ज़रा सी कोताही हो गई। बस यह उसकी सज़ा थी।" करीमन बुआ सिर झुकाकर कुछ सोचने लगीं।

अल्लाह यह करीमन बुआ भी कैसी नौकरानी हैं। इतने सितम सहने के बाद भी जब तक दादी ज़िन्दा रहीं उन पर निछावर होती रहीं और अब भी उन्हें नहीं भूलतीं। वह हैरान होकर उनका मुँह तक रही थी।

"मैंने सारी ज़िन्दगी उनका नमक खाया था और अब भी उनकी औलाद का नमक खा रही हूँ। नमक का बड़ा हक होता है बेटा आलिया। मेरी अम्मा, अल्लाह उन्हें जन्नत नसीब करे कहतीं थीं कि जिसने नमक का हक न अदा किया वह खुदा के यहाँ भी माफ न किया जाएगा। मालकिन कोई गलती हो गई हो तो माफ कर देना। दूसरी दुनिया में तो सुख की साँस ले सकूँ।"

करीमन बुआ उठकर जूठे बर्तन समेटने लगीं और आलिया को ऐसा महसूस हुआ कि करीमन बुआ ने नमक का सारा डिब्बा उसके मुँह में उँडेल दिया जो उसे ज़हर से कड़वा लग रहा था।

तेईस

सूरज डूब रहा था और उस वक्त गली में सौदे वालों ने जैसे धावा बोल दिया था। सब एक दूसरे से बढ़कर आवाज़ लगा रहे थे और जरवों से खुली खिड़कियों से बच्चों और मर्दों की आवाज़ें आ रही थीं। रोज़ा खोलने के लिए सब अपनी पसंद के सौदे वाले को आवाज़ दे रहे थे।

खिड़की खोलकर उसने एक मिनट के लिए गली में झाँका। सामने हाई स्कूल का काला फाटक बन्द पड़ा था और दरख्तों के झुन्ड से कोयल के कूकने की आवाज़

आ रही थी। जाने शकील स्कूल जाता भी है कि नहीं—उसने सोचा। पर कौन है जो यह सब मालूम करे। अगर बड़े चचा घर पर जरा सा भी ध्यान दे दें तो सब कुछ ठीक न हो जाए। उसे एकदम अब्बा याद आ गये। इस बार वह उन्हें ईद का कार्ड जरूर भेजेगी। खिड़की बन्द करके वह छत पर आ गई तो उसे हल्की सी ठंड महसूस होने लगी। फिर भी वह टहलती रही। छतों से बच्चे पतंगें उड़ा रहे थे और शोर हो रहा था। आलिया को याद आया कि एक बार उसने भी भंगी के लड़के के साथ पतंग उड़ाने की कोशिश की थी और अब्बा ने उसे सख्ती से डाँटा था मगर आज तक उसे पतंग बड़ी अच्छी लगती।

"आलिया।" बड़ी चची हाँफती हुई ऊपर आकर उसके पास खड़ी हो गईं। उनका मुँह सुर्ख हो रहा था, जैसे बड़ी मशक्कत की हो। ऐसी ही मजबूरियाँ होतीं जो वह सीढ़ियाँ चढ़तीं। उन्हें तो ऊपर चढ़ने के खयाल से ही धड़कन होने लगती। "यह लो अपने कपड़े।" उन्होंने साँस दुरुस्त करते हुए हँस कर एक बंडल उसकी तरफ बढ़ा दिया, "दुपट्टा रंग कर चुन लो और पाजामा भी मशीन पर खटखटा लो। जम्पर तो तुम्हारे पास है ही।"

उसने बड़े चाव से बंडल खोलकर देखा। ढाका की मलमल का दुपट्टा और नीली साटन चमक रही थी।

"मगर बड़ी चची इसकी क्या...।"

"बस, बस तुम आज रात जरूर सी डालो और हँसी-खुशी ईद मनाओ।" वह जाने के लिए मुड़ीं, "रोजा खोलने का वक्त हो रहा है। तुम नीचे नहीं आईं?"

अल्लाह ये कपड़े कहाँ से आए, कौन ले आया। ईद के लिए किसी के भी तो कपड़े न बने थे। बड़ी चची ने तो कई बार बड़े चचा से कपड़ों के लिए कहा था। मगर वह हर बार शर्मिन्दा से होकर बैठक में चले गए थे। फिर उसके कपड़े किसने खरीदे हैं? क्या जमील भैया ने अपने ट्यूशन के रुपये इस पर खर्च कर दिए हैं या फिर बड़े चचा ने अब्बा की जगह को पूरा किया है? मारे खुशी के उसका दिल धड़कने लगा। जरूर बड़े चचा ने खरीदे होंगे।

मगर जरा ही देर में उसे मालूम हो गया कि कपड़े किसने खरीदे हैं। नीचे से शकील की आवाज बड़ी साफ सुनाई दे रही थी, "जमील भैया ने बजिया के कपड़े बनवा दिए। मेरे लिए कुछ नहीं आया। क्या दोस्त ईद भी मनवा दें।"

"बकवास न कर नामुरादे।" बड़ी चची उसे डाँट रही थीं, "क्या वह तेरी बहन नहीं। तू खुद उसके कपड़े बनवा। तेरे जितने लड़के एक कुन्बे का पेट भरते हैं।"

"हाँ जब तुम बाहर रहते हो वहाँ कपड़े भी पहनो। जमील तो बहुत शरीफ लड़का है।" अम्मा भी शकील का कलेजा जला रही थीं।

"मुझे इस घर से मिला ही क्या है कभी। कपड़े भी दोस्त ही देंगे।" शकील ने बड़े पक्केपन से जवाब दिया।

"तुम भी अगर बजिया की तरह बन जाओ तो अल्लाह कसम जमील भैया तुम्हारे दस जोड़े बना द। वैसे तुमको कौन पूछे।" छम्मी भी तीर बरसा रही थी जो सीधे आलिया के कलेजे में उतर रहे थे।

उसने कपड़े पलंग पर डाल दिए। एक क्षण को उसे महसूस हुआ कि ये कपड़े जमील भैया की इन्तहाई मुहब्बत का तोहफा है। मगर दूसरे ही क्षण ये कपड़े ठण्डे और कफन की तरह महसूस होने लगे। इन कपड़ों में लिपटा हुआ नीले होंठों वाला एक चेहरा झांक रहा था। उसने काँप कर कपड़ों को समेट लिया और अपने कमरे में जाकर उन्हें बक्स में ठूंस कर ताला लगा दिया। लाहौल विला! क्या वह भी कभी बेवकूफ हो सकती थी। यह सब उसी थैली के चट्टे-बट्टे हैं। मर्द का स्वभाव तो पारे जैसा है। जरा सी गर्मी मिली और चढ़ गया। कल छम्मी थी आज उस पर कृपा-दृष्टि है। फिर किसी और की बारी होगी।

जब वह नीचे गई तो सब लोग रोज़ा खोलने के पकवानों के नशे में मस्त से बैठे थे। करीमन बुआ रोटियाँ पकाने म लगी हुई थीं। बरामदे में बिछे हुए पलंगों पर बैठी हुई बड़ी चची और अम्मा पान बना-बना कर खा रही थीं और जमील भैया इस सर्दी में अपने लोहे की कुर्सी पर बैठे स्टूल पर रखी हुई लालटेन की रोशनी में कुछ पढ़ रहे थे। जब ज़ोर की सर्दी होती तो शाम को यह कुर्सी बड़ी सूनी-सूनी मालूम होती। दोपहर में छम्मी इस कुर्सी पर बैठकर धूप सेंकती। जाड़ा, गर्मी, बरसात, यह कुर्सी हमेशा क्यारी के पास पड़ी रहती, उसे कोई भी न उठाता।

आलिया को एक क्षण के लिए खयाल आया कि कहीं जमील भैया को सर्दी न लग जाए। अब तो अच्छी खासी ठण्डी हवा चल रही थी।

"अब तुम्हारी पढ़ाई का क्या हाल है। इम्तहान के तो बहुत थोड़े दिन रह गए हैं।" जमील भैया ने उसे देखते ही सवाल किया और इसके साथ बरामदे में चले गए।

"बस ठीक ही है।" वह अम्मा के पास बैठ गई। उसे तो डर ही लगता कि कहीं जमील भैया इम्तहान न लेने लगें। बड़े चचा लाख उन्हें अपनी लाइब्रेरी की चाभी न देते, फिर भी वह जमील भैया की प्रतिभा की कायल थी।

"मियाँ तुम भी ज़रा आलिया की पढ़ाई देख लिया करो।" अम्मा ने कहा।

"हाँ मैं ज़रूर देखूंगा। वैसे तो आजकल मैं भी एम० ए० की तैयारी कर रहा

हूँ।" जमील भैया ने खुश होकर बताया और फिर कनखियों से आलिया की तरफ देखा।

छम्मी जाने किस वक्त अपने कमरे की दहलीज़ पर आकर बैठ गई थी।

"यहाँ आ जाओ छम्मी, सर्दी है। इधर बरामदे में बैठो।" बड़ी चची ने कहा।

"मैं ठीक बैठी हूँ।" छम्मी ने कड़ुआहट से जवाब दिया।

"पहले भी जंग हुई थी तो यहाँ मँहगाई हो गई थी। मगर वह तो और ही जमाना था। हमारे घरों में तो पता भी न चला। बस पता चला भी तो उस वक्त जब मेरा भाई . ।" बड़ी चची चुप हो गईं और फिर ठण्डी साँस भर कर बोलने लगीं, "उन दिनों यह जमील पैदा हुआ था। जब उसके मामूं के मरने की खबर आई थी।" बड़ी चची ने सबकी तरफ देखा मगर सब नज़रें झुकाए रहे, "मगर अब तो मँहगाई का पता चल रहा है। अब तो वह हालत भी....।" बड़ी चची चुप हो गईं। अम्मा के माथे पर शिकनें पड़ गई थीं। जब भी बड़ी चची मँहगाई की बात करतीं तो अम्मा के माथे पर शिकनें गहरी हो जातीं।

"सब लोग खाना खा लो नहीं तो ठण्डा हो जाएगा।" करीमन बुआ ने तख्त पर दस्तरख्वान बिछा दिया। छम्मी झपट कर अपनी जगह से उठी और प्लेट में अपना खाना निकाल कर तेज़ी से अपने कमरे में चली गई। आलिया उसका मुँह देखती रह गई। हाय, यह छम्मी यूँ ही नाराज़ हो गई। कोई बात होती तो फिर ठीक था। उसका कैसा जी चाहता था कि छम्मी एक बार फिर पहले जैसी हो जाए। अब इतने प्यार से कोई भी तो बजिया कहने वाला न था। उसने बड़ी शिकायत भरी नजरों से जमील भैया की तरफ देखा मगर वह कैसे उसी को तक रहे थे। उसने घबरा कर नज़रें नीची कर लीं। एक जोड़ा कपड़ों का लाकर शायद वह उसे अपनी सम्पत्ति समझने लगे हैं। उसका जी चाहा कि कोई बहुत सख्त सी बात भैया के मुँह पर खींच कर मारे।

"आखिर यह जंग होती क्यों है ?" बड़ी चची ने जमील की तरफ देख कर पूछा। हर चीज़ में जो धेले-पैसे का फर्क पड़ा था उससे खाने का स्तर और भी गिर गया था।

"वैसे तो आप अब्बा की बड़ी भाभी हैं, मगर कभी-कभी लड़ क्यों पड़ती हैं ?" जमील भैया ने उलटा सवाल कर दिया।

"और तुम अपने अब्बा के दुश्मन हो ?" बड़ी चची ने उलटी झोंक दी।

"लीजिए बात साफ़ हो गई। जब भी फ़ायदे पर चोट पड़ती है या होश में आग लगती है तो जंग हुई है।" जमील भैया ने जवाब दिया। वह तो बिल्कुल इस

"हाँ जब तुम बाहर रहते हो वहीं कपडे भी पहनो। जमील तो बहुत शरीफ़ लडका है।" अम्मा भी शकील का कलेजा जला रही थीं।

"मुझे इस घर से मिला ही क्या है कभी। कपडे भी दोस्त ही देंगे।" शकील ने बडे पक्केपन से जवाब दिया।

"तुम भी अगर वजिया की तरह बन जाओ तो अल्लाह कसम जमील भैया तुम्हारे दस जोडे बना दे। वैसे तुमको कौन पूछे।" छम्मी भी तीर बरसा रही थी जो सीधे आलिया के कलेजे मे उतर रहे थे।

उसने कपडे पलंग पर डाल दिए। एक क्षण को उसे महसूस हुआ कि ये कपडे जमील भैया की इन्तहाई मुहब्बत का तोहफा है। मगर दूसरे ही क्षण ये कपडे ठण्डे और कफन की तरह महसूस होने लगे। इन कपडो मे लिपटा हुआ नीले होठो वाला एक चेहरा झांक रहा था। उसने कांप कर कपडो को समेट लिया और अपने कमरे में जाकर उन्हे बक्स में ठूंस कर ताला लगा दिया। लाहौल विला! क्या वह भी कभी बेवकूफ हो सकती थी। यह सब उसी थैली के चट्टे-बट्टे है। मर्द का स्वभाव तो पारे जैसा है। जरा सी गर्मी मिली और चढ गया। कल छम्मी थी आज उस पर कृपा दृष्टि है। फिर किसी और की बारी होगी।

जब वह नीचे गई तो सब लोग रोजा खोलने के पकवानो के नशे में मस्त से बैठे थे। करीमन बुआ रोटियाँ पकाने मे लगी हुई थी। बरामदे में बिछे हुए पलंगो पर बैठी हुई बडी चची और अम्मा पान बना-बना कर खा रही थीं और जमील भैया इस सर्दी में अपने लोहे की कुर्सी पर बैठे स्टूल पर रखी हुई लालटेन की रोशनी में कुछ पढ रहे थे। जब ज़ोर की सर्दी होती तो शाम को यह कुर्सी बडी सूनी-सूनी मालूम होती। दोपहर मे छम्मी इस कुर्सी पर बैठकर धूप सेंकती। जाडा, गर्मी, बरसात, यह कुर्सी हमेशा क्यारी के पास पडी रहती, उसे कोई भी न उठाता।

आलिया को एक क्षण के लिए खयाल आया कि कही जमील भैया को सर्दी न लग जाए। अब तो अच्छी खासी ठण्डी हवा चल रही थी।

"अब तुम्हारी पढाई का क्या हाल है। इम्तहान के तो बहुत थोडे दिन रह गए हैं।" जमील भैया ने उसे देखते ही सवाल किया और इसके साथ बरामदे में चले गए।

"बस ठीक ही है।" वह अम्मा के पास बैठ गई। उसे तो डर ही लगता कि कही जमील भैया इम्तहान न लेने लगें। बडे चचा लाख उन्हें अपनी लाइब्रेरी की चाभी न देते, फिर भी वह जमील भैया की प्रतिमा की कायल थी।

"मियाँ तुम भी ज़रा आलिया की पढाई देख लिया करो।" अम्मा ने कहा।

"हाँ मै जरूर देखूंगा। वैसे तो आजकल में भी एम० ए० की तैयारी कर रहा

हूँ।" जमील भैया ने खुश होकर बताया और फिर कनखियो से आलिया की तरफ देखा।

छम्मी जाने किस वक्त अपने कमरे की दहलीज़ पर आकर बैठ गई थी।

"यहाँ आ जाओ छम्मी, सर्दी है। इधर बरामदे मे बैठो।" बड़ी चची ने कहा।

"मैं ठीक बैठी हूँ।" छम्मी ने कड़ुआहट से जवाब दिया।

"पहले भी जंग हुई थी तो यहाँ मँहगाई हो गई थी। मगर वह तो और ही ज़माना था। हमारे घरो में तो पता भी न चला। बस पता चला भी तो उस वक्त जब मेरा भाई . ।" बड़ी चची चुप हो गईं और फिर ठण्डी साँस भर कर बोलने लगीं, "उन दिनो *यह जमील पैदा हुआ था। जब उसके मामूँ के मरने की खबर आई थी।*" बड़ी चची ने सबकी तरफ देखा मगर सब नज़रें झुकाए रहे, "मगर अब तो मँहगाई का पता चल रहा है। अब तो वह हालत भी....।" बड़ी चची चुप हो गईं। अम्मा के माथे पर शिकनें पड़ गई थी। जब भी बड़ी चची मँहगाई की बात करती तो अम्मा के माथे पर शिकनें गहरी हो जातीं।

"सब लोग खाना खा लो नही तो ठण्डा हो जाएगा।" करीमन बुआ ने तख्त पर दस्तरख्वान बिछा दिया। छम्मी झपट कर अपनी जगह से उठी और प्लेट में अपना खाना निकाल कर तेज़ी से अपने कमरे में चली गई। आलिया उसका मुँह देखती रह गई। हाय, यह छम्मी यूँ ही नाराज़ हो गई। कोई बात होती तो फिर ठीक था। उसका कैसा जो चाहता था कि छम्मी एक बार फिर पहले जैसी हो जाए। अब इतने प्यार से कोई भी तो बजिया कहने वाला न था। उसने बड़ी शिकायत भरी नज़रो से जमील भैया की तरफ देखा मगर वह ैसे उसी को तक रहे थे। उसने घबरा कर नज़रें नीची कर ली। एक जोड़ा कपड़ो का लाकर शायद वह उसे अपनी सम्पत्ति समझने लगे हैं। उसका जी चाहा कि कोई बहुत सख्त सी बात भैया के मुँह पर खींच कर मारे।

"आखिर यह जग होती क्यो है ?" बड़ी चची ने जमील की तरफ देख कर पूछा। हर चीज़ में जो धेले-पैसे का फर्क पड़ा था उससे खाने का स्तर और भी गिर गया था।

"वैसे तो आप अब्बा की बड़ी भाभी हैं, मगर कभी कभी लड़ क्यो पड़ती है ?" जमील भैया ने उलटा सवाल कर दिया।

"और तुम अपने अब्बा के दुश्मन हो ?" बड़ी चची ने उलटी झोंक दी।

"लीजिए बात साफ़ हो गई। जब भी फायदे पर चोट पड़ती है या होश में आग लगती है तो जग हुई है।" जमील भैया ने जवाब दिया। वह तो बिल्कुल इस

तरह बात कर रहे थे जैसे बड़ी चची दो साल की बच्ची हो।

"चल हट, बड़ा आया। यूं ही बकवास करता है। कभी ढंग से बात न की। ऐसी मजाक की आदत पड़ी है।" बड़ी चची हँसने लगीं।

"फायदे-वायदे की क्या बात है जमील मियाँ, बस जमाने-जमाने की बात है। सब बदल गया।" करीमन बुआ कैसे चुप रहतीं।

"यह सब तुम्हारे अब्बा और आलिया के अब्बा जैसे लोगों के काम हैं। यही गड़बड़ करते हैं जो जंग होती है। अब जो अंग्रेजों के खिलाफ हो रहे हैं, तो जंग न होगी?" अम्मा ने भी अपनी राय ज़ाहिर ही कर दी और जमील भैया बड़े जोर से हँसे, "आप ठीक कह रही हैं मंझली चची।"

"सब खा चुके हों तो मुझे भी खाना भिजवा दो करीमन बुआ।" सुनसान बैठक से इसरार मियाँ की मरी हुई आवाज आई।

बड़े चचा की कहीं दावत थी इसलिए वह अपने मेहमानों के साथ जा चुके थे और अब इसरार मियाँ बेसन की दो फुलकियों से रोजा खोलकर खाने के इन्तजार में घुल रहे थे।

"जरा सब्र से काम लिया करो, इसरार मियाँ साहब। क्या घर वालों से पहले तुम्हारी तश्तरी सजाकर भेज दिया करूं?" करीमन बुआ ने झल्लाकर जवाब दिया।

इस 'इसरार मियाँ' में कितना व्यंग्य छिपा था। कैसा मजाक कह-कहे लगा रहा था। मगर जब बड़े चचा उन्हें इसरार मियाँ कहते तो कितनी हार्दिकता और कितनी बराबरी का दर्जा देकर। जाने ये लोग सब इसरार मियाँ के लिए कुछ सोचते क्यों नहीं।

'हाय, इसरार मियाँ अगर मेरा बस चले तो सबसे पहले तुम्हारी तश्तरी सजा कर ले आऊँ।' उसने दिल ही दिल में कहा और खाना खत्म करके जल्दी से ऊपर चली गई। जमील भैया एक-सी उलटी-पुलटी नजरों से देखते जाते। उसका जी डूब रहा था। आराम से खाना भी न खाने दिया।

अपने बिस्तर पर आकर उसने बड़ी शांति से किताबें समेट लीं और तकिया सरकाकर उस तरफ लेट गई कि गली के बल्ब की रोशनी किताब पर पड़ रही थी।

सीढ़ियों पर चाप हुई तो उसने पलटकर देखा। जमील भैया चले आ रहे थे, "मैंने सोचा कि आज तुम्हारा इम्तहान ले डालूं।" वह उसके करीब बैठ गए।

"मुझे सब आता है, आप अपना वक्त खराब न करें। फेल हो गयी तो फ़िक्र नहीं, अगले साल फिर सही।" आलिया ने बड़ी रुखाई से कहा। जमील भैया की आँखें फ़र-फ़र वह सबक सुना रही थीं जो वह पढ़ने आए थे।

"तुमको पढ़ाकर मेरा वक्त खराब होगा ! आलिया कुछ तो सोचो। ऐसी बातें करके तुम मुझको कितना परेशान कर देती हो। मगर तुम मुझसे मुहब्बत नहीं करतीं तो दुख तो न दो।"

"जमील भैया।" आज तो वह भी उन्हें झाड़ने पर तुल गई, 'जब आप ऐसी बातें करते हैं तो आपको शर्म नही आती? क्या आप छम्मी को भूल गए। वह आपके साथ आपके घर में रहती हैं। मुझे सब मालूम है।"

"छम्मी।" जमील भैया ने सर झुका लिया, "तुमको मालूम है तो अच्छा ही है। मगर ठीक-ठीक बता दूँ कि मुझे छम्मी से कभी भी वैसी मुहब्बत न थी। मैं उसे चाहता हूँ मगर बहन की तरह। तुमको मालूम है कि अब्बा ने राजनीति के पीछे इस घर को लुटा दिया। मगर मैं अपने को लुटाने के लिए तैयार न था। मैंने न जाने किस तरह पढ़ा। कुछ इसरार मियाँ मेरे लिए बचत कर लेते और कुछ दादी के चोरी-छिपे के रुपये काम आते। मगर एफ० ए० करने तक घर की हालत बिगड़ चुकी थी। यह सारे खर्चे छम्मी ने बर्दाश्त किए, मैं कभी नहीं भूलूँगा। मगर वह मुझे गलत समझने लगी और मैं डर की वजह से उसे समझा न सका और....।'

"और फिर अचानक बी० ए० करने के बाद आप उसका मज़ाक उड़ाकर उसे समझाने लगे, है न?"

जमील भैया पर तरस आने के बावजूद वह चूकी नहीं।

"अब मैं क्या कर सकता हूँ?" उन्होंने पूछा।

"उससे शादी कर लीजिये भइया। वह आप से मुहब्बत करती है।"

"शादी!" वह जैसे उछल पड़े, "मुझे मालूम न था कि तुम मुझसे इतनी नफरत करती हो। आलिया, मैंने तुम्हारे सिवा किसी से मुहब्बत नहीं की। इधर देखो आलिया।" उन्होंने उसके दोनो हाथ थाम लिये और फिर उसकी गोद मे सिर रख दिया।

'मैं आज ही अपने मामूं के घर जा सकती हूं। समझे आप जमील साहब किबला?" धौंस जमाने के लिए और किसका नाम लेती। सख्त बेबसी का आलम था।

"तुम कहां जा सकती हो, आलिया बेगम। आज अम्मा, करीमन बुआ और मंझली चची से वह रही थी कि तुम हमेशा इस घर मे रहोगी!"

"कौन कह रहा था? कौन होते हैं वह सब कहने वाले?" आलिया ने दीवानों की तरह जमील भैय्या को धक्का देकर पलंग से उठा दिया, "मुझे कौन मजबूर कर सकता है। मैं तहमीना आपा नहीं हूं। बड़े आये सब लोग।"

जमील भैया ने हैरत से उसके लाल भभूका चेहरे को देखा और फिर खिसियाने

पे होकर चुपके से मुड़ गये। जब वह सीढ़ियां उतर रहे थे तो आलिया बड़बड़ा रही थी, बेकार तुकबन्द, जिसे बड़े चचा अपनी लायब्रेरी की चाबी तक नहीं देते।

चौबीस

कल ईद थी। छम्मी के अब्बा का मनीआर्डर आया था। छम्मी बड़े चाव से भाग कर दस्तखत करने आयी मगर जब पांच रुपये देखे तो उसका मुंह लाल हो गया। कूपन पर लिखा था कि इन रुपयों से ईद के कपड़े बनवाये। छम्मी ने पांच का नोट वसूल किया और बीच आंगन में खड़े होकर नोट के पुरज़े-पुरज़े करके फेंक दिया। सब हय-हय करते रह गये।

"इतने रुपयों से तो हमारे अब्बा की तीसरी बीवी साहबा का कफन तक न आयेगा। जाने लोग बच्चे पैदा ही क्यों करते हैं। इससे तो कुत्ते के पिल्ले लें।" छम्मी पलंग पर बैठ गयी।

"अरे छम्मी तुम पागल हो गयी हो! पांच रुपये में कितना अच्छा जोड़ा बनता।" बड़ी चची ने लपक कर नोट के पुरज़े उठा लिये और इस तरह हथेली पर रखने लगी जैसे जोड़ रही हो!

"आपसे किसने कहा था बोलने को।" वह खड़ी हो गई, "अगर मेरे जोड़े की फिक्र होती तो पहले से मनीआर्डर न करते? अब क्या रातों-रात परियां आकर मेरे कपड़े सी देंगी।" छम्मी पांव पटकती अपने कमरे में चली गई। बड़ी चची ने फूंक मारकर नोट के पुरज़े उड़ा दिए और चौकी पर बैठ कर पानदान खोल लिया।

करीमन बुआ पतीली मांजते-मांजते हाथ धोकर उठी और नोट के पुरज़े चुन कर आंचल में बांध लिये, फिर पतीलियों का कालिख साफ करने बैठ गई, "अल्लाह मारे यह कागज किस काम के। वह होते थे अपने ज़माने में खरी चांदी के रुपये, सोने की अशर्फियां और गिन्नियां। कोई उन्हें फाड़ता तो हम देखते।"

करीमन बुआ बड़बड़ाती रहीं और आलिया दालान की मेहराब के बीच में बैठी चुपचाप सुनती रही। वह बार-बार छम्मी के कमरे की तरफ देख रही थी जो अब खुद को दुख पहुंचाने के लिए इतने लकवोदक कमरे में अकेली पड़ी जाने क्या कर रही थी।

आलिया को तो उस कमरे से होल आता। दादी की मौत को कितने बहुत से दिन गुज़र गए मगर उसे तो आज तक दादी की इन्तज़ार करती नज़रें कमरे में डूबती-

उभरती नज़र आती । उनकी तेज़-तेज़ सांसें अब भी सायें सायें करती महसूस होती । अब भला छम्मी को किस तरह मनाया जाए । वह सख्त बेज़ार हो रही थी । अरे ज़फ़र चचा क्या यह छम्मी आपकी बेटी नहीं ? क्या बीवी के साथ औलाद भी मर जाती है ।

वह ऊपर कमरे में चली गई और अपने कोर्स की किताबें उलटने-पलटने लगी । लाख सिर मारा मगर पढ़ने में जी न लगा । बस उसे बार-बार छम्मी का ख़याल सता रहा था । छम्मी ख़ुद को दुख पहुँचा कर ख़त्म कर लेगी ।

खिड़की के बाहर स्कूल की इमारत के पीछे सूरज डूब रहा था । नीचे की मंज़िल में अब बड़ी गहमागहमी थी । रोज़ा खोलने का वक्त करीब आ रहा था । आलिया ने किताबें समेटकर तिपाई पर रख दीं और खिड़की में उकड़ूँ बैठकर बाहर देखने लगी । गँडेरियों वाले के सिर पर रखे हुए पीतल के थाल में फूलों के गजरे सजे हुए थे । वह गा-गाकर गँडेरियां बेच रहा था । आलिया को उसकी इस कदर भोंडी आवाज़ भी जाने क्यों बड़ी अच्छी लग रही थी और उसने एकदम महसूस किया कि वह उदास हो रही है । शामें उसे हमेशा उदास कर देतीं । जाने कैसी नामालूम सी कैफ़ियत तारी हो जाती ।

वह खिड़की से कूद कर नीचे आ गई । रोज़ा खुलने का वक्त अब बिल्कुल करीब आ गया था । यह करीमन बुआ यहां से भाग क्यों नहीं जाती । यहां सिर्फ़ फटे पुराने कपड़े और रोटी और सिर्फ़ नमक पर ज़िन्दगी बिताए देती हैं । इतनी मशक्कत पर तो उन्हें किसी भी घर में दस-पन्द्रह रुपये महीने की नौकरी मिल जाएगी । मेहनत का फल रुपया ही तो देता है । मगर शायद करीमन बुआ न तो कभी सपने में भी ऐसी बातें न सोची होंगी । करीमन बुआ किस क़दर फ़ख्र से कहतीं कि मेरी मां मालकिन के जहेज़ के साथ आई थी । मालकिन की खिदमत करते करते ख़ुदा को प्यारी हो गई और अब ख़ुदा मुझे भी बड़े मियां के हाथों सोवारत करे ।

आलिया कैसी हैरान होती इन बातों पर । इन बातों पर उसने कभी करीमन बुआ को इस घर से बेज़ार होते न देखा । वह काम से कभी न थकतीं । किसके वक्त के साथ उनका इज्जत देने का तरीका भी न बिगड़ा । क्या मजाल थी जो कभी ऊँची आवाज़ से बात की हो ।

तख्त पर दस्तरख्वान बिछाकर रोज़ा खोलने का सामान चुना जा चुका था । बड़ी चची तले हुए चनों पर नीबू निचोड़ रही थीं । करीमन बुआ को शायद रोज़ा लग रहा था इसलिए निढाल सी बैठी थीं । बड़े चचा बरामदे में बिछे हुए खुर्रे पलंग पर बैठे थे । जेब से निकली हुई घड़ी सीने पर लटक रही थी और उनके पास बैठा हुआ शकील बार-बार झुककर घड़ी देख रहा था । कुछ दिन से जमील भैया ने उस पर

सख्ती शुरू कर दी थी इसलिए वह घर से ज़्यादा देर ग़ायब न रह पाता।

छम्मी अपने कमरे की दहलीज़ पर खड़ी थी। पाजामे की फटी हुई मैली गोट से उसके गट्टे नज़र आ रहे थे। जब उसने आलिया को देखा तो आहिस्ता-आहिस्ता चलती हुई पास आ गई और बग़ैर कुछ बोले शकील के पास बैठ गई।

बाहर बैठक मे बड़े चचा के कई मेहमान विराजमान थे और इसरार मियाँ बैठक के दरवाज़े से कई बार सिर निकाल कर झाँक चुके थे।

"करीमन बुआ ज़रा जल्दी से अफतारी* भेज दो। रोज़ा खुलने मे सिर्फ़ दो मिनट रह गए हैं।" बड़े चचा ने सीने पर लटकती हुई घड़ी को देखकर कहा और करीमन बुआ कमर टेढ़ी किये-किये उठी और तख्त पर रखी दो प्लेटे उठाकर बैठक की तरफ लपकी। इसरार मियाँ तो जैसे ताक ही मे थे। जब मेहमान होते तो मज़े हो जाते वरना वह गरीब तो रोज़ा भी उस वक्त खोलते जब समय बीत चुका होता।

अम्मा तख्त पर एक कोने मे इस तरह बैठी छालिया काट रही थी जैसे अफतारी पर पहरा दे रही हो। घटिया काम तो उन्होने कभी किये ही न थे। बस यही कि खाने-पीने की चीज़ो के हिस्से कर दिए या इसरार मियाँ का लाया हुआ सौदा-सुल्फ देखकर ऐतराज़ कर दिए, शक व शुबहा के साथ हिसाब जोड़ लिया। करीब ही मस्जिद मे गोला छूटा और फिर नक्कारा बजने की तेज़ आवाज़ आने लगी तो अम्मा ने प्लेटो मे रखा हुआ सबका हिस्सा बाँटना शुरू कर दिया। आलिया ने ताँबे का नक्काशीदार जग उठाकर सबके गिलासो मे नीबू का शरबत भर दिया।

छम्मी की प्लेट यूँही पड़ी थी। उसने सिर्फ़ शरबत के घूँट से रोज़ा खोल लिया था।

"छम्मी कुछ तो खा लो। खाली पेट मे शरबत लगेगा।" बड़े चची ने प्लेट उठाकर उसके हाथ मे दी तो उसने बड़ी चची का हाथ झिटक दिया।

"जब भूख लगेगी तो खुद ही खा लेगी।" अम्मा ने कहा मगर छम्मी खामोश रही।

"अपने नोट का दुख होगा न। मँझले चचा ने भेजा था। इन्होने फाड़कर फेंक दिया। हमी को दे देती।' शकील रोज़ा खोलकर तरग मे आ चुका था।

"तुम जैसे फकीरो को नही देती।" छम्मी ने तड़ से जवाब दिया।

"भई यह तो सख्त बदज़बान लड़की है।" बड़े चचा ने घूरकर छम्मी को देखा, "किसी दिन मैं ज़बान खीच लूंगा।"

"आपको तो मैं अपनी ज़बान छूने भी न दूँगी। हर वक्त काफिरो की जमात

---

* रोज़ा खोलने की सामग्री।

में रहते हैं और दुनिया को दिखाने के लिए रोज़े रखते हैं। बस हद है।" छम्मी ने नफरत से होंठ सिकोड़ लिये।

'शर्म नहीं आती, कोई अपने बड़े चचा से यूँ बात करता है। कोई लिहाज़-पास नहीं।" बड़ी चची ने फौरन डांटा। मारे गुस्से के मुंह सुर्ख हो रहा था। यानी उनके सामने छम्मी उनके शौहर से इस तरह बात करे।

"मेरे कोई चचा-वचा नहीं।" छम्मी ने सख्त ढिठाई से कहा।

"भई तुम चुप रहो, क्यों इस जाहिल के मुंह लगती हो।" बड़े चचा गाव-तकिये से टिककर अधलेटे हो गए।

"हां, हमारे कोई मुंह न लगे। हम जाहिल हैं। सबकी डिग्रियां खा जाएंगे और डकार भी न लेंगे।" छम्मी पांव पटकती अपने कमरे मे चली गई।

"चौदहवीं सदी है। गाय सींग बदलेगी और क़यामत आ जाएगी।" करीमन बुआ किसी को कुछ नहीं कह सकती थी इसलिए उन्हें कयामत याद आ रही थी।

"भई हद है बदज़बानी की। घर में सांड़ पाला है तुमने भाभी।" अम्मा ने फ़ौरन बड़ी चची पर हमला कर दिया।

"अब देखो न दुल्हन, यह तो इसके बाप का कुसूर है। अब क्या पहनेगी यह बच्ची।" जब कोई छम्मी के पीछे पड़ने लगता तो बड़ी चची फौरन आड़े आ जाती।

ज़रा देर को सब खामोश हो गए। बड़े चचा ने आंखें मूंद ली। शकील अपने स्कूल के काम में जुट गया। करीमन बुआ लालटेनों की चिमनियां साफ करने लगी। मगर छम्मी कैसे चुप रहती। कपड़े न बनने का बदला अभी पूरा नहीं हुआ था। वह अपने अंधेरे कमरे मे अपनी तुकबंदी को लहक-लहककर गाने लगी :—

काशी में तुलसी बोई सब बकरियां चर गईं।
गांधी, नेहरू मातम करो काशी की मैया मर गई।

बड़े चचा एकदम चौंक पड़े, "देखो इसे मना कर लो। बाहर मौलाना साहब वगैरह बैठे हैं। सब क्या कहेंगे। सारी आवाज़ बाहर जाएगी।" बड़े चचा गुस्से से सुर्ख हो रहे थे।

"छम्मी खुदा के लिए कुछ तो सोचा कर, बाहर मेहमान बैठे हैं।" बड़ी चची छम्मी के कमरे की तरफ लपकी।

"आपको क्या ? हम अपने कमरे मे गा रहे हैं। यह कमरा हमारा है। जब आपके कमरे मे आकर गाएं तो मना कीजिएगा। बाहर सुनते हैं तो सुनें। ज़रा उन्हें भी तो मालूम हो कि यहां सब काफ़िर नहीं रहते।" वह बड़े चचा को चिढ़ाने के लिए फिर गाने लगी—"काशी में तुलसी...।"

"अरी जाहिल, पागल, मैं कुछ बोलता नहीं और तू आपे से बाहर है। अब

गा अच्छी तरह ।" बडे चचा तेज़ी से कमरे की तरफ लपके, "बैठक का दरवाज़ा बन्द कर दो शकील ।" उन्होने मुडकर कहा और फिर पूरे जोश मे बडे चचा ने छम्मी के मुँह पर कई थप्पड़ जड दिए। शकील दरवाज़ा बन्द करके इस तरह खडा था जैस तमाशा देख रहा हो।

"काशी मे तुलसी बोई " छम्मी ज़ोर से चीखी, "मैं गाऊँगी, गाऊँगी।"

"चुप।" बडे चचा ने उसके मुँह पर हाथ रखकर दबा दिया।

बडी चची हांफ हांफ कर अपने शौहर को अलग हटा रही थी, और आलिया कमरे की दहलीज़ पर खडी आँखें फाडे बडे चचा को देख रही थी। बडे चचा आज कितने अजीब तरीके से उस घर मे अपना महत्व जता रह थे और वह भी सिर्फ इसलिए कि उनकी राजनीतिक आस्था पर चोट लग रही थी। उस वक्त बडे चचा उसे राजनीतिक डाकू मालूम हो रह थे।

"गजब खुदा का ! जवान लडकी पर हाथ उठा रहे हो। बिन माँ की बच्ची पर।" बडी चची की आवाज भर्रा रही थी। वह बडे चचा को खींचती हुई कमरे से बाहर ले गई तो आलिया छम्मी से चिपट गई जो पुरानी मसहरी पर पडी सिसक सिसक कर रो रही थी। "बजिया बाहर भाग जाइये।" रोते-रोते छम्मी एक-दम चुप होकर जैसे बडी शाति से चित लेट गई। आलिया बाहर आकर बरामदे की मेहराब से टिककर खडी हो गई।

बडी चची ज़ारोकतार रो-रोकर चुपके-चुपके कह रही थी, "अब अगर कभी हाथ उठाया तो याद रखो अपनी जान दे दूँगी। मेरा तो कलेजा फट गया। बिन माँ की बच्ची है। मैंने उसे पाला है। मेरे दिल मे उसकी मामता है।" उस वक्त उन्हें यह एहसास ही न रहा था कि छम्मी गरीब तो खुद से पल गई। बडी चची उसे पालना तो चाहती थी, मगर ढेरो कामो के मलबे मे दबने के बाद उन्हे इतनी फुर्सत ही कहाँ मिलती थी जो छम्मी को भी उसका पैदायशी हक दे सकती।

"मैं तो खुद घर मे किसी से नही बोलता। मगर यह लडकी पाप है। कल ही ज़फर मियाँ को खत लिखता हूँ कि किसी के साथ इसके दो बोल पढाकर इस घर से यह लानत दूर करो। बडे चचा ने करवट लेकर आँखें बन्द कर ली और बडी चची आँसू पोछकर पान बनाने लगी। अम्मा ऐसे आराम से बैठी थी जैसे कुछ हुआ ही नही।

हगामे के बाद का सन्नाटा छाया हुआ था। बडे चचा का चेहरा तमतमाया हुआ था। वह बार बार आँखें खोलते और बन्द कर लेते थे। उसी वक्त जमील भैया आ गए।

"सब चुप क्यों हैं। कल ईद है भई ?" जमील भैया ने आलिया की तरफ

देखा जो ऊँघती मालूम हो रही थी।

"पिटाई हुई है।" शकील ने जमील भैया की तरफ झुककर कहा।

"किसकी पिटाई हुई है ?"

'अरे कुछ भी नही। वही छम्मी 'काशी मे तुलसी बोई' की रट लगा रही थी। बाहर मेहमान बैठे थे। तुम्हारे अब्बा ने एक थप्पड लगा दिया।" बडी चची ने बात को हल्का-फुल्का बनाकर कहा और फिर जल्दी से एक पान कल्ले मे ठूँस लिया।

"मगर आपने उसे मारा क्यो ? आप उसे समझा सकते थे। उसकी बदतमीज़ी को रोक सकते थे। मगर मारना कहाँ का इन्साफ है ? वह अपने ख्याल का इज़हार करती है तो आप चिढते क्यों हैं ? जब आप लोगो को विचारो की आज़ादी नही देते तो अपना मुल्क किस तरह आज़ाद कराएँगे ? और अगर आपका मुल्क आज़ाद भी हो गया तो उस आजादी को कैसे बरकरार रखेंगे ?" जमील भैया ने बडे जोश से एक ही साँस मे इतना कुछ कह डाला।

"साहबज़ादे तुम घरेलू बातो को मुल्की मामलो से मत टकराया करो और न ज्यादा काबिलयत झाडा करो। तुम कुछ नही जानते।" बडे चचा ने सख्त हिकारत से देख कर फिर आँखे मूँद ली।

आप मेरी काबिलियत की बात न किया करें। आपने तो मुझे सिर्फ प्राइमरी तक पढा कर गुल्ली-डडा खेलने को छोड दिया था और फिर मुल्क आज़ाद कराने लगे थे। जैसे मैं तो आपके मुल्क का बाशिन्दा था ही नहीं। जैसे मुझे तो अच्छी जिन्दगी गुज़ारने का कोई हक ही न था। मैंने बी० ए० नही किया है लोहे के चने चबाए हैं। ज़रा आप यह तो बताएँ कि जब आपको एक घर का ख्याल नही तो इतने बडे मुल्क के इतने बहुत से घरो का किस तरह ख्याल करेंगे ? यह भी खूब रही कि एक घर को कुरबान करके दो घरो को बचा लो।"

"लाहौल किस क्या बेतुका भाषण करके दिमाग चाट रहे हो। मियाँ आजादी और कुर्बानी का मतलब तुम्हारी समझ मे परे है। बस अपनी शायरी करो और वाहवाही पाओ। रगेगुल से बुलबुल के पर बाँधो और खुश रहो।" बडे चचा ने करवट ले ली।

"जी बिल्कुल दुरुस्त है मगर...।" जमील भैया आलिया के सामने किस तरह हार मानते, वह फिर कुछ कहना चाहते थे कि बडी चची माथा पीटने लगीं, 'हाय मैं कहती हूँ कि इस घर का आवाँ ही बिगड गया है। हद है कि बेटे साहब अपने बाप से बहस कर रहे हैं। खुदा की कसम एक दिन जहर खा लूँगी।" बडी चची को दौरा सा आने लगा।

"भइ ठीक तो कहता है जमील।" अम्मा ने जमील भैया की हिमायत की

मगर वह तो चुप हो कर बडी बेबसी से अपनी लोहे की कुर्सी पर जा बैठे थे और हाथ मल-मल कर कुछ सोच रहे थे।

"दोनो वक्त मिल रहे हैं और यह लडाई-झगडे। इस मुल्क के दुख ने तो सब कुछ तबाह कर दिया।" करीमन बुआ हर तरफ जली हुई लालटेनें रखती फिर रही थी।

"वडे आए हमदर्दी करने वाले।" छम्मी धमाके से बाहर निकल आई और बडे चचा के पलँग के पास खडी हो गई। "हमे कौन रोक सकता है हाँ, काशी मे तुलसी बोई सब बकरियाँ चर गई।" वह ज़ोर से चीखी।

"लाहौल विला।" बडे चचा वेसाख्ता हँस पडे, "कतई पागल है।"

बडे चचा के हँसते ही शकील, अम्मा, बडी चची और जमील भैया भी हँसने लगे।

"हाँ अब ठीक है।" छम्मी जमील भैया की तरफ बढी, "तुम हँसो। तुम से किसने कहा था कि मेरी हिमायत करो। मैं तुम जैसो को मुँह नही लगाती। अब मैं उन जैसो से मुहब्बत करूँगी। रवाहमख्वाह वी० ए० करने के लिए मेरे सामने नाक रगडते हैं।" छम्मी फिर अपने कमरे मे जाने के लिए मुड गई मगर कमरे की दहलीज पर ही बैठ रही। क्षण भर के लिए कैसा सन्नाटा छा गया।

सबने जैसे चौंक कर जमील भैया की तरफ देखा। सबसे ज्यादा गहरी नजरें अम्मा की थी मगर जमील भैया बडी गंभीरता से नजरें झुकाए शकील की किताब के पन्ने उलट रहे थे। और इस सन्नाटे मे बडे चचा इस तरह खँखार रहे थे जैसे गले म कुछ फँस गया हो।

"आज उन्होने अपना पाँच रुपये का नोट भी फाड डाला। मुझे दे देती तो मैं मिन्टो मे अपने ईद के कपडे सिलवा लेता। अब मैं उनके खत नही ले जाया करूँगा।" शकील ने नोट फटने की इत्तिला के साथ विरोध प्रगट किया।

"कहाँ ले जाते थे खत?" अम्मा ने घबराकर पूछा।

"थानेदार के बेटे मन्सूर साहब को देता था।" शकील ने छम्मी की तरफ देख कर बडी मासूमियत से कहा।

"अरे, अरे।" अम्मा और बडी चची इस धमाके से आतंकित हो कर रह गई। सब खामोश थे। कोई किसी की तरफ न देख रहा था। कितनी गहरी खामोशी छा गई थी।

छम्मी उठी और बडी बेरुखी से सबकी भावनाओ पर दर्राती जीने पर हो ली।

आलिया नजरें गडो-गडो कर शकील को देख रही थी। वह डर रही थी कि अब बडे चचा छम्मी का बुरा हश्र करेंगे। ग्यारह-बारह साल का शकील उसे पन्ना

पाजी मर्द नजर आ रहा था।

बड़े चचा ने करवट बदली तो आलिया सिर से पाँव तक काँप गई। उसे ऐसा महसूस हुआ कि बड़े चचा छम्मी पर हमला करने के लिए उठ रहे हैं। मगर बड़े चचा करवट लेकर गुमसुम पड़े रहे तो उसने इत्मीनान का साँस लिया।

"भई हद है बड़े भैया।" अम्मा ने बफरकर बड़े चचा की तरफ देखा, 'क्या पैसे के साथ साथ इस घर की हया भी उड़ गई। पहले भी इस खानदान में क्या कुछ नहीं हो चुका जो अब छम्मी कमी पूरी करेगी। मार-मार कर उसका भुरकस निकाल दीजिए, न कि चुपचाप लेटे रहिए।"

बड़े चचा उठकर बैठ गए, "शकील बैठक से कलम, कागज ले आओ। मैं जफर मियाँ को खत लिख दूँ। वह शादी की इजाजत दे दें तो फिर कोई लड़का ढूँढ लूँगा।"

शकील भाग कर कलम, कागज ले आया और बड़े चचा खत लिखने बैठ गए।

क्या बड़े चचा अपनी बेटी की तरह छम्मी को भी कहीं ढकेल देंगे। आलिया ने दुखे दुखे जी से पूछा और आँसू जब्त करने की कोशिश में मुँह छिपा कर बैठ गई।

"मेरा बस चले तो हड्डियाँ तोड़ दूँ। क्या मजे से छलावा ऊपर चली गई।" अम्मा बराबर बफरे चली जा रही थीं।

"वाह सब लोग ईद का चाँद देखना तो भूल ही गए।" शकील हड़बड़ा कर पलँग से कूदा और इसी बहाने बाहर भाग गया। जमील भैया उसकी तरफ से बिल्कुल बेखबर बैठे थे।

दरवाजा जोर से खड़का। नजमा फूफी का तार था। वह कल सुबह पहुँच रही थीं।

पच्चीस

नजमा फूफी अपने ढेरों सामान के साथ आ गईं। वह सिर्फ बड़ी चची से गले मिलीं और सब को नजरअन्दाज कर दिया।

आलिया ने अपने होश में पहली बार उन्हें देखा था। नुची हुई भवें पहली तारीख के चाँद की तरह तीखी हो रही थीं। पट्टे बिखरे हुए थे और मेकअप के मारे असली सूरत पहचानी न जाती थी।

छम्मी सब कुछ भूल गई थी और सुबह-सुबह सिंगार करके अपनी स्वर्गीया अम्मा

के जहेज़ का गला हुआ जोडा पहन कर बडी खूबसूरत लग रही थी। नजमा फूफी ने उसे लिफ्ट न दी थी मगर वह थी कि उनके पास घुसी जा रही थी। उसे पता था न कि अम्मा और बडी चची नजमा फूफो से कसर रखती हैं।

जमील भैया अपनी लोहे की कुर्सी पर खामोश बैठ थे। वही तो उन्हें स्टेशन लेने गये थे। बडे चचा तो सुबह ही सुबह नमाज़ के बाद उधर ही से कही चले गये थे।

"नजमा फूफी घर मे और लोग भी हैं।" जमील न उन्हें याद दिलाया। शायद उन्हे बुरा लगा था कि उन्होन आलिया और उनकी अम्मा से एक बात भी न की थी।

"देख रही हूँ भई। इतने लम्बे सफर से थक गई हूँ। बडे भैया कहाँ हैं। वही अपनी राजनीति बघारने गए होगे कही। और तुम आलिया कहो कुछ पढ रही हो कि नही ?"

"जी एफ० ए० का इम्तहान देने वाली हूँ।" आलिया ने धीरे से जवाब दिया।

"खूब, खूब।" नजमा फूफी के चेहरे पर सख्त नागवारी के आसार थे, "और तुम जमील मियां क्या कर रहे हो ?" उन्होंने पूछा।

"बस बी० ए० करके बैठा हूँ।" जमील भैया ने जवाब दिया।

"वाह सिर्फ बी० ए० से क्या होता है। आदमी अनपढ ही रह जाता है। थोडी तालीम खतरनाक होती है। करना है तो एम० ए०, बी० टी० करो। अब मुझे देखो जिस कालेज मे जाऊँ हाथो हाथ ली जाती हूँ। मगर एम० ए० भी करो तो इंग्लिश मे। उर्दू एम० ए० तो हर जाहिल कर सकता है।"

"दुरुस्त है। मैं भी अंग्रेजी मे ही एम० ए० कर लूँगा कभी।"

"मजहर भैया ने भी जेल जाकर जाने कौन सा तीर मार लिया। बस हद है भई। कोई खत भी आया उनका कि नही ? या शर्मिन्दगी के मारे चुप हैं ? मुझे तो एक खत भी न लिखा।" नजमा फूफी अम्मा से मुखातिब थी मगर अम्मा इस तरह पान बनाती रही जैसे कुछ सुना ही नही।

आलिया का जी कुढ गया। यानी अब्बा की बहन भी उन्हें दोषी समझती है। उसका जी चाहा कि नजमा फूफी की ज़बान काट ले—अच्छा ही हुआ जो अम्मा ने उनकी बात का जवाब न दिया।

"अरे भई छम्मी तुमने भी कुछ पढ़ा लिखा या नही ?" छम्मी के इन्तहाई इश्क के इजहार पर उन्होने उसकी पीठ पर थपकी दी। छम्मी ने शरमा कर सिर का लिया। अनपढ़ होने के एहसास से वह सख्त शर्मिन्दा नजर आ रही थी।

"अब तो यही नौकरी करनी है इसलिए बस कल सुबह से छम्मी को पढ़ाना शुरू कर दूँगी। हय बेचारी जाहिल ही रह गई और किसी ने ध्यान नहीं दिया। इस खान्दान की यही तो बदनसीबी है कि कोई लड़की पढ़ी-लिखी न निकली।" नजमा फूफी ने आलिया को भी जाहिलों में शुमार कर लिया, "तो अब छम्मी तुम मेरी तौलिया, साबुन वगैरह गुसलखाने में रख आओ। जरा हाथ-मुंह धोकर ईद मनाने की सोचूं।"

नजमा फूफी उठी तो छम्मी पाजामे की गोट से उलझी गुसलखाने की तरफ भागी। आज बन-ठन कर उसने तो जमील भैया को बिल्कुल नज़रअन्दाज़ कर दिया। उसने एक बार भी उनकी तरफ न देखा जैसे ज़ाहिर कर रही हो कि यह सिंगार तुम्हारे लिए नहीं, मंजूर के लिए है।

करीमन बुआ ने नजमा फूफी के लिए चाय बनाकर बड़े सलीके से तख्त पर लगा दी और फिर सेवइयाँ पकाने में लग गईं, "ईद में मनों के हिसाब से सेवइयाँ पकती थीं मगर अब वह दिन नहीं रह गए। अल्लाह बड़े मियाँ को अक्ल दे। सब लुटा बैठे।" दो सेर सेवइयों का ज़र्दा पकाते हुए करीमन बुआ बड़बड़ा रही थी।

बड़ी चची बोली, "तुम भी कपड़े बदल लो आलिया मेरी बच्ची। फिर मोहल्ले वालियाँ आने-जाने लगेंगी तो देख कर क्या कहेंगी। तुमने नए कपड़े भी तो नहीं सिये।"

"फुरसत ही नहीं मिली बड़ी चची।" उसने आहिस्ता से कहा। जमील भैया उसे बड़ी मीठी नज़रों से देख रहे थे। "मैं अभी कपड़े बदल लूँगी।"

वह अपने कमरे में जाने के लिए उठ खड़ी हुई। नजमा फूफी गुसलखाने से आकर चाय पीने बैठ गई थी।

ज़ीने पर चढ़ते हुए उसने मुड़ कर देखा कि शकील पान खाए और गले में हार डाले घर में दाखिल हो रहा था मगर सामने ही जमील भैया को देखकर उसने हार गले से नोच कर मुट्ठी में छिपा लिये।

कपड़े बदल कर आलिया चुपचाप अपने कमरे में बैठी रही। 'जेल में अब्बा की ईद किस तरह आई होगी।' उसका जी दुख रहा था।

"मुझसे ईद नहीं मिलोगी आलिया ?" जमील भैया भी ऊपर आ गए।

गली में बच्चों और सौदे वालों ने कितना उधम मचा रखा था। उसने खिड़की के पट भेड़ दिए।

"फिर ?"

"फिर क्या ईद न मिलोगी ? आज के दिन तो दुश्मन भी दुश्मन से मिल लेता है फिर मैं दुश्मन तो नहीं हूँ।"

"मैं आपको कुछ भी नहीं समझती।"

"कुछ न समझना तो इन्तहाई हतक की बात है।"

"खुदा के लिए जमील भैया ये टेढी बातें न किया कीजिए। अच्छे-भले इन्सान बन जाइये। मुझे मुहब्बत-वुहब्बत से कोई दिलचस्पी नही। जो मर्द-औरत एक-दूसरे को मुहब्बत के धोखे देते रहते हैं उससे मुझे सख्त चिढ है।"

"क्या अब्बा की लायब्रेरी से इस विषय पर कोई किताब मिल गई है?" जमील भैया ने बडे व्यग्य से उसकी तरफ देखा।

"हाँ उसी लायब्रेरी से मिल गई है जिसकी कुजी आपको नही दी जाती।" वह जोर से हँसी। जमील भैया एकदम गभीर हो रहे थे।

"आलिया तुम मुझे जितना ठुकरा रही हो उतना ही मैं तुम्हारे करीब होता जा रहा हूँ। अगर तुमने मेरा साथ न दिया तो मैं दुनिया मे कुछ न कर सकूँगा।" जमील भैया का मुँह तमतमा गया। उनकी आखो से दुख छलका पडता था। आलिया ने सिर झुका दिया। उस वक्त उसे महसूस हो रहा था कि अगर उसे जमील की नजरो मे पनाह न मिली तो जाने क्या हो जाएगा।

"अगर मैं किसी और से मुहब्बत करूँ, तो आप कहिएगा।"

"सब झूठ, औरत मर्द से मुहब्बत किए बगैर रह ही नही सकती। जैसा कि कहा जाता है, पैदा भी मर्द की पसली मे हुई है।" जमील भैया जोश मे आ गए।

"अच्छा अब मैं समझी।" वह एकदम हँस पडी, "यह मर्द इसीलिए तो औरत को छलता रहता है कि उसे हजरत आदम की पसली का दर्द याद आता होगा।"

जमील भैया भी उसके साथ बेसाख्ता हँस पडे मगर फिर गभीर हो गए, "तुम मेरी हो आलिया। मै सच कहता हूँ कि मैं जिन्दगी मे सब कुछ करूँगा। मैं सफदर नही हूँ जिसने तहमीना को खत्म कर दिया," फिर वह जैसे सरगोशी करने लगे, "सफदर बम्बई मे है। वह कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर है। आजकल जेल मे है।"

आलिया जरा देर को बिल्कुल चुप हो गई। वह खाली खाली नजरो से जमील भैया का मुँह तक रही थी। बीती हुई बातें किस तेजी से इन्सान के दिमाग पर झपट पडती हैं।

"आलिया मैं सारी जिन्दगी तुम्हारे लिए भेंट कर दूँगा। यकीन करो आलिया कि मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करूँगा। लेकिन अगर तुमने जिन्दगी के सफर मे मेरा साथ न दिया तो मैं थक जाऊँगा। मैं तो कुछ भी न कर सकूँगा।" उसने गौर से जमील भैया की तरफ देखा। कैसी सडी-बसी बातें हैं। वही बातें जो तहमीना आपा कहानियो मे पढ-पढकर मर गई। ये आशिक महाशय कुटनियो जैसे होते हैं। उसने नजरें झुका ली। जमील भैया की आंखो की गहराई से कैसा अजीब सा लगता।

"तो फिर जमील भैया आप थक ही जाइये। चाय वगैरह का इन्तजाम कर-

चाई ?" वह जोर से हँसी। बात मजाक मे उड जाए तो शायद जान छूटे मगर जमील भैया पर तो गम्भीरता का भूत सवार था।

"देखो आलिया।" वह उसकी तरफ झपटे और फिर रुक गए।

"यह लीजिए अपना खत। मुस्लिमलीग के दफ्तर कानपुर से आया है। मैंने बडी चची की नजरें बचाकर उडा लिया है। अरे हाँ, ख्वामख्वाह बेचारी बडी चची इस सदमे से भी दो-चार होती।" आलिया ने कापी के बीच से लिफ़ाफ़ा निकालकर इस तरह जमील के हाथ में टिका दिया जैसे कि बात खत्म हो गई।

जमील भैया अपराधियो की तरह सिर झुकाए खडे थे। जिस बात को इतने दिनो से छिपाए हुए थे वह दर्रा कर सामने आ गई थी।

"अच्छा भई ईद मुबारक हो। अम्मा से खत का जिक्र न करना।" वह जल्दी से चले गए।

छम्मी नजमा फूफी का बिस्तरबन्द खीच-खीचकर ऊपर बडे कमरे मे ला रही थी और उसकी स्वर्गीया अम्मा के जरी के जोडे की गोट फट गई थी।

"छम्मी नजमा फूफी भी तुम्हारी इस मुह बत की क्या कद्र करेंगी। तुम मुझसे क्यो रुठ गई ?" आलिया ने बडे प्यार से छम्मी की तरफ देखा और फिर अपने कमरे के दरवाजे बन्द करके कपडे बदलने लगी।

ईदगाह से वापस होते हुए बच्चे गली मे बड जोर से ऊधम मचा रहे थे।

"करीमन बुआ, मझली भाभी और बडी भाभी को मेरा सलाम कहो और ईद मुबारक भी।"

सीढियो को तय करते हुए आलिया ने इसरार मियाँ का खुशी से काँपता हुआ पैगाम सुना। कैसा जी चाहा कि आज तो वह भी इसरार मियाँ को सलाम कर ले। ईद का दिन है आखिर।

"सब्र करो, तुमको भी सेवइयाँ भिजवा दूँगी।" करीमन बुआ ने इस तरह जवाब दिया जैसे मजाक उडा रही हो।

नजमा फूफी करीमन बुआ को त्योहारी का एक रुपया दे रही थी। उन्होंने आलिया की तरफ देखा तो वह उलटे पैर अपने कमरे की तरफ चल दी।

छब्बीस

इतवार का दिन था। चाय पीने के बाद बडे चचा बैठक मे जाने के बजाय अपने बिस्तर पर लेट गये। कुछ बुझे-बुझे से नजर आ रहे थे। आलिया उनके पास जा बैठी। बडे चचा को इस तरह देखकर बेचैन हो

गई थी। हय वेचारे बडे चचा। कोई उनकी परवाह नही करता। अगर वडी चची इस घर मे न होती तो सब उन्हे भून खाते। जो उठता है अपनी तकलीफो का रोना रोता है। कोई उनकी तकलीफो को नही पूछता और यह हैं कि सब कुछ सहे जाते हैं। अपनी सगी वहन किस तरह शर्मिन्दा करती है। सिर्फ इसलिए कि अपने खाने के रुपये देने पडते हैं। वह यह भूल गई कि कभी बडे चचा के रुपयो से ही तालीम हासिल की थी।

"पढाई का क्या हाल है बेटा ?"

"ठीक है बडे चचा। आपकी तबियत खराब नही ?" वह भरे-भरे जी से बोलती चली गई, "आप अपनी सेहत की ज़रा फिक्र नही करते। आप कितने कमज़ोर हो रहे हैं। इन्सान कुछ अपने लिए भी तो करता है।"

"अयँ, बेटा मैं तो ठीक हूँ।" बडे चचा हैरान होकर आलिया का मुँह तक रहे थे, "अरे क्या कोई मेरी फिक्र करने वाली भी है। क्या किसी को मुझसे भी हमदर्दी हो सकती है। मैं तो इस घर का भूत हूँ जो सब कुछ खा गया।"

बडे चचा की आँखो मे उसने दुख की वह मद्धम सी लिखावट पढ ली जिसे छिपाने के लिए वह ख्वामख्वाह हँस रहे थे, "वाह री पगली, मुझे आराम की क्या जरूरत है। हट्टा कट्टा हूँ। ख्वामख्वाह फिक्र करती है। अच्छा यह बताओ कि मेरी लाइब्रेरी से किताबें पढती हो कि नही ?"

"पढती थी बडे चचा मगर अब इम्तहान सिर पर है न इसलिए सब छोड बैठी हूँ।"

"तुम्हारे जैसे ज़ेहन की लडकी के लिए यह किताबें पढना ज़रूरी है।" बडे चचा जब खुश होते तो अपनी लाइब्रेरी की किताबें पढने की नसीहत शुरू कर देते थे।

"बडे चचा जब आज़ादी मिल जाएगी तो फिर क्या होगा ?" उसने सख्त बेवकूफी के साथ बडे चचा की मनपसद बातें छेडनी चाही। बडे चचा के सामने उसने राजनीति से नफरत का कभी इज़हार न किया था।

"आज़ादी मिल जाए तो फिर क्या रह जाता है। मरना और जीना दोनो आसान हो जाते हैं। दुआ करो कि गुलामी के ज़माने मे न मरूँ।"

'बडे चचा, खुदा आपको हमेशा सलामत रखे।' उसने दिल ही दिल मे दुआ की। घरो की इतनी सारी तबाहियो और बर्बादियो को देखने के बाद भी वह अपने अब्बा और बडे चचा से नफरत न कर सकती थी।

सदर दरवाज़े की ज़ंजीर बडे ज़ोर से खडकी तो वह एकदम खडी हो गई।

"ठहर जाओ, तुम मत जाओ। मैं देख लूँगा।" बडे चचा बाहर जाकर फौरन ही पलट आए। बडी चची बरामदे मे तख्त पर बैठी डलिया सामने रखे पालक

के पत्ते चुन रही थीं। बड़े चचा उनके पास जाकर खड़े हो गये। "मेरा बुलावा आ गया है।" उनके माथे पर हल्की सी फ़िक्र थी।

"कहाँ का ?"

"अंग्रेज़ बहादुर का। चार छ महीने बाद वापस आ जाऊँगा। तुम मेरा सामान ठीक कर दो।"

आलिया जहाँ खड़ी थी वहीं खड़ी रह गई। बड़ी चची डलिया फेंक कर एकदम उठ पड़ी। करीमन बुआ मैले बर्तनों के ढेर से उभरी और टुकुर-टुकुर सब का मुँह तकने लगी।

बड़ी चची कमरे म जाकर बड़े चचा के कपड़े बक्स मे ठूँसन लगी, "भला इन सब हरामज़ादों का क्या बिगाड़ा है किसी ने जो रोज़-रोज़ पकड़ते हैं। क्या कर लेंगे पकड़ कर। भला किसी की ज़बान भी बन्द की है किसी ने।" बड़ी चची अम्मा की तरफ देखकर कह रही थी और अम्मा इस नई मुसीबत पर चचा को ज़िम्मेदार ठहराते हुए सख्त हिकारत से देख रही थी, 'बड़े भैया अब तो तौबा कर लो। अपना घर, अपने बच्चे सँभालो। सब तबाह हो गया।" अम्मा ने नसीहत दी। मगर बड़े चचा कुछ न बोले। बरामदे के कोने मे खड़ी छड़ी उठाकर एक हाथ मे सूटकेस थाम लिया।

'क्या सारी ज़िन्दगी इसीलिए मुसीबत झेली है। मैंने कहा कि ये तौबा कर लें। भला क्या बुरा काम करते हैं।' बड़ी चची गुस्सा और ग़म से रो पड़ी।

ज़ंजीर फिर ज़ोर से खड़की और बड़े चचा दरवाज़े की तरफ लपके, "अपनी बड़ी चची को समझाना बेटी। छम्मी के रिश्ते की बात की थी। शायद उधर से जवाब आ जाए तो फ़ैसला कर लेना।" आलिया की पीठ पर हाथ फेर कर वह बाहर निकल गए।

बड़े चचा बाहर चले गए। खुले दरवाज़े से सन्नाटा दर्राता हुआ अन्दर दाखिल हो गया। वह बीच मे खड़ी रह गई। सामने गली मे बड़े चचा आठ आदमियों के साथ चले जा रहे थे। आठ आदमियों के बीच म घिरे हुए बड़े चचा उसे बिल्कुल दूल्हा से नज़र आ रहे थे पर यह कैसी बारात थी कि कलेजा मसला जाता था।

बड़ी चची ने पालक की टोकरी फिर उठा ली थी। करीमन बुआ फिर बर्तनों के अंबार तले खो गई थीं। नल से बहते हुए पतली सी धार का सारा पानी क्यारियों मे जा रहा था। गेंदे के फूल हल्की सी हवा में डोल रहे थे। अरे उसने एक फूल बड़े चचा को तोड़ कर दे दिया होता बहार का तोहफ़ा। मगर अब तो वक्त गुज़र चुका था।

बड़ी चची अपने मियाँ के जेल जाने का विवरण सुना-सुनाकर गिरफ्तार करने वालों के हाथ टूटने की दुआएँ कर रही थी। आलिया को हैरत हो रही थी कि न तो बड़ी चची रो रह थी और न सीना कूट रही थी जब कि उसका दिल हिला जाता था। उसे अपने अब्बा की गिरफ्तारी का वक्त याद आ रहा था। शायद बड़ी चची को जेल और पुलिस के मतलब ही नहीं मालूम थे। उसके बचपन की यादों में एक किस्सा अब तक सुरक्षित था। एक बार दीनू के क्वार्टर में पुलिस के दो सिपाही आ गए थे तो उन छुटभैय्यों की पूरी आबादी खौफ से घरों में छिप गई थी और औरतें मातम कर-करके रोने लगी थी। तो क्या बड़ी चची को ज़रा सी घबराहट भी नहीं हुई। क्या उन्हें कुछ भी नहीं मालूम।

धूप ऊँची-ऊँची दीवारों से उतर कर आँगन में रेंग गई थी।

"मुझ पर इन किस्सों का कोई असर नहीं होता बड़ी भाभी।" अम्मा बड़े जोश से कह रही थीं, "अगर आप बड़े भैया को इन हरकतों से रोकतीं तो आज लाख का घर खाक न होता। आप तो उनकी तरफदारी करके हिम्मत बढ़ाती हैं। बस हद है।"

आलिया आँगन में पड़ी हुई लोहे की कुर्सी पर इस तरह बैठ गई जैसे उसे किसी ने गिरा दिया हो। बड़ी चची ने अम्मा का कोई जवाब न दिया। वह जाने क्या सोच रही थी।

"दुल्हन!" बड़ी चची धीरे धीरे बोलने लगी, "तुमने मज़हर मियाँ पर सख्ती की थी तो क्या हुआ? कोई किसी के शौक पर पाबन्दी नहीं लगा सकता। सब झेल गई। अब अल्लाह करेगा तो जमील सुख देगा। तुम्हारे बड़े भैया के साथ तो सारी जवानी यूँ ही गुज़र गई। उन्हें तो इसका भी वक्त न मिला कि बीवी को नज़र भर कर देख ही लेते।" बड़ी चची एकदम रो पड़ी तो अम्मा ने घुटनों में सिर छिपा लिया। "अल्लाह मियाँ तू ही इस घर का बेड़ा पार लगाने वाला है। कुर्बान तेरी शान के, तू जो चाहे कर दे।" करीमन बुआ ने आह भरी।

"करीमन बुआ अगर ..." बैठक से इसरार मियाँ की मरी सी आवाज़ आई और करीमन बुआ बीच ही में चीख पड़ी, "एक दिन चाय न पियेंगे तो क्या जान निकल जाएगी। बेचारे को अपनी चाय की पड़ी है।" करीमन बुआ ने इसरार मियाँ के हिस्से की चाय नाली में उँडेल दी, "मरदूद, निगोड़ा यह यहाँ से नहीं जाएगा।"

"करीमन बुआ मैं कह रहा था कि अज़हर भाई का सामान न गया हो तो मैं पहुँचा दूँ।"

"सब चला गया है।" करीमन बुआ चूल्हे के पास झाड़ू देने लगी।

तो यहाँ जो कुछ होना है उसके सिर्फ जिम्मेदार इसरार मियाँ हैं। गुनाहों की

बरसात से पैदा होने वाले कीड़े जल्दी से क्यों नहीं मर जाते ? इसरार मियां अब तुम आराम से दो बजे तक भूखे फिरो। आलिया कुर्सी से उठकर जल्दी से ऊपर चली गई। अम्मा और करीमन बुआ की मौजूदगी में वह इसरार मियां के लिए चाय तो बना नहीं सकती थी। फिर वहां बैठने का क्या फायदा।

दिन के दो बज गए थे। गली के उस पार एक उजड़े से पेड़ से उल्लू के बोलने की आवाज आ रही थी और यह आवाज उसके जेहन के सन्नाटे को और भी बढ़ाए चली जा रही थी मगर ज़ालिम भूख थी कि दर्रांती चली आ रही थी। चाहे सदमे से दिमाग फट जाए मगर भूख नहीं रुकती। यानी कि आज वह बड़े चचा के जेल जाने के गम में मेदे से जवाब नहीं पा सकती।

वह बिस्तर से उठकर नीचे चली गई। तख्त पर प्लेटें लगी हुई थीं। अम्मा नल के पास बैठी पान थूककर सुर्ख कुल्लियां कर रही थीं। और बड़ी चची दस्तरख्वान के पास बैठी जैसे ऊंघ रही थीं। छम्मी और नजमा फूफी सुबह से बाजार गई थीं और अब तक वापस न आई थीं।

"खा लो, सबका कहां तक इन्तज़ार करूं ?' बड़ी चची ने कहा और बस उनके पास बैठ गई। इतने में जमील भैया शकील को घसीटते आ गए और जैसे ही घर में दाखिल हुए शकील पर थप्पड़ बरसाने लगे।

"यह कुछ नहीं पढ़ सकता। सारा दिन आवारा घूमता रहता है। मैंने अभी-अभी इसे सख्त लफंगों के साथ घूमते देखा है।

"और मारो बदज़ात को।" बड़ी चची ने जलकर कहा, "जब यह हालत है तो इस घर को कौन संभालेगा।"

"उन्हीं की किताबों से तो पढ़ता हूं।" शकील भैया के वार रोकने के लिए इधर-उधर बच रहा था और आलिया को छुटकारा मांगती नज़रों से देख रहा था।

"बस भी कीजिए जमील भैया। अब नहीं घूमेगा।" आलिया ने सिफारिश की तो जमील भैया अलग हो गए और नल के नीचे हाथ धोने लग।

"अरे इसे क्यों बचाती हो। यह कभी नहीं ठीक होगा। मैं यूंही तड़प-तड़प कर मर जाऊंगी। उनका ठिकाना तो जेल में है।"

"क्या अब्बा फिर गये ?" जमील भैया हाथ धोना भूल गए।

"और नहीं तो क्या ! आज नौ बजे के करीब पुलिस आकर ले गई। अल्लाह से तौबा है बस।" अम्मा ने फौरन जवाब दिया।

'खूब !" जमील भैया फिर हाथ धोने लगे, 'ये कांग्रेसी लीडर तो जैसे जेल जाए बगैर कुछ कर ही नहीं सकते। खालिस हिन्दुओं की जमात के लिए इतनी कुर्बानियां देकर जाने इन्हें क्या मिल जाएगा। किस कदर हिन्दू तबीयत है इन साहब

की। कैसे-कैसे हिन्दू-मुस्लिम झगडे हुए मगर इन पर ज़रा भी असर न हुआ।"

"शर्म नहीं आती अपने बाप को हिन्दू कहते! वे हिन्दू थे तो तुम कहाँ से मुसलमान पैदा हो गये।" बड़ी चची मारे गुस्से के आपे से बाहर हो गई। यानी उनके शौहर को हिन्दू कहा जाए जब कि उन्होने हिन्दुओं के त्योहार में आए हुए हिस्सों को चखा तक नही कभी। भला ऐसी औरत का शौहर हिन्दू हो सकता है!

"अच्छा भई कट्टर हिन्दू न सही मुसलमान सही मगर..।" जमील भैया खिसियाकर हँसने लगे। खाना यूँ ही पडा ठण्डा हो रहा था। "अब तुम सँभालो न घर को, क्या मेरी मौत का इन्तज़ार कर रहे हो?" बडी चची खाना भी चैन से न खा रही थी।

"मैं....मैं ..बस अब यही सोच रहा हूँ।" जमील भैया बौखला गए थे, "दो-चार दिन मे लाहौर जा रहा हूँ। वहाँ से आकर नौकरी कर लूँगा।" वह कुछ सोच-सोचकर खा रहे थे। ज़रा देर के लिए खामोशी छा गई।

नजमा फूफी और छम्मा बण्डलो से लदी-फँदी अन्दर दाखिल हुई तो खामोशी टूट गई।

"अरे शकील ज़रा ताँगेवाले को यह रुपया तुडाकर दे दो।" नजमा फूफी ने पर्स से रुपया निकालकर उसकी तरफ बढा दिया। शकील अब तक आँगन में लोहे की कुर्सी पर बैठा था। उसे खाने के लिए भी किसी ने न पूछा था।

"पहले हाथ धोकर खाना खा लो।" बडी चची ने कहा मगर नजमा फूफी तो बण्डल खोलकर सबको दिखाने के लिए बेताब थी।

"हद है भई हर कपडे पर दाम बढा दिए हैं। अब भला कोई बताए कि यह रेशमी कपडा क्या गोरो के कफन के लिए जाता है।" नजमा फूफी ने प्रशंसा चाहने वाली नज़रों से सबकी तरफ देखा मगर वहाँ तो सब अपने गम मे डूबे थे। छम्मी को उनकी बात पर बडी ज़ोर की हँसी आई। "तुम लाहौर जाकर क्या करोगे? क्या वहाँ नौकरी करने का इरादा है?" बडी चची ने जमील भैया की तरफ देखा।

"वहाँ मुस्लिमलीग का एक ज़बरदस्त जलसा है। ज़रा उसमें शामिल हूँगा।" जमील भैया जाने क्या सोचते हुए बोले। "क्या कहा जलसा?" बडी चची अपनी जगह से उछल पडी, "अरे तू भी? तुझ पर भी जोग साधा था तो अब तू भी?" बडी चची दीवानो की तरह जमील भैया की तरफ देख रही थी। उनकी आँखों से ऐसा मालूम होता कि उछल कर गर्दन दबोच लेंगी। "बस हद है। इस घर का खुदा ही मालिक है।" अम्मा ने भी हाथ का निवाला रख दिया था। आलिया को ठिकाने लगाने की उम्मीद ने शायद दम तोड दिया था और जमील भैया थे कि चुपचाप बैठे गर्दन झुकाए खाए जा रहे थे। तीर जो कमान से निकल चुका था।

'अगर तूने इस राजनीतिबाजी को अपनाया तो जान दे दूँगी। जहर खा लूँगी एक-न एक दिन। मेरी जिन्दगी तडप-तडप कर गुजरी है। अब मैं आराम करना चाहती हूँ। मुझे सब कुछ चाहिए। बावले, तू राजनीति मे नही जा सकता।" बडी चची की दीवानगी कम नही हो रही थी। जमील भैया खाना दाना भूलकर अपनी अम्मा के गले मे हाथ डाले हँस रहे थे, "भई बस भी कीजिए अम्मा।"

नजमा फूफी ने कपडे के बण्डल समेत कर पलँग पर डाल दिये। कोई कमबख्त देखता ही न था। जान जलकर रह गई। करीमन बुआ ने थाली मे खाना लगाकर उनके सामने रख दिया था। वही हड्डियों के ढेर के पास बैठकर बडी बेदिली से खाने लगी। उनके चेहरे से नफरत बरस रही थी। मगर छम्मी आज बडी मुद्दत के बाद जमील भैया को बडी चाहत से देख रही थी।

"मैं न कहती थी हर मुसलमान मुस्लिमलीग मे शामिल हो। मुस्लिमलीग जिन्दाबाद!" छम्मी ने नारा भी लगा दिया। मगर उस वक्त किसी ने उसकी खुशी और नारे की परवाह न की। बडी चची हाथो से निकली जा रही थी, रो-रोकर उनकी आँखें सुर्ख पड गई थी। जमील भैया उन्हे थपक रहे थे, पानी पिला रहे थे मगर उनकी दीवानी आँखो मे जरा भी ठहराव न पैदा हो रहा था।

आलिया हैरान नजरो से बडी चची को देख रही थी। अरे क्या यह वही बडी चची हैं जिन्होने इतने बरस तक बडे चचा की राजनीतिक जिन्दगी में साथ दिया था। बडे चचा की तरफदारी मे सबसे आगे-आगे रही लेकिन जब अपना जी जला तो उन्हें जली-कटी सुना डाली मगर किसी दूसरे की जबान से एक शब्द न सुना। बडे चचा जो भी करते रहे उसे अपने सिर से गुजारती रही और आज सुबह तक वह वतन के वजाए गिरफ्तार करने वालो को कोस रही थी। क्या यह सब्रोजब्त इसलिए था कि उन्होंने अपनी सारी आशाएँ और आकाक्षाएँ जमील भैया के गले मे हार बनाकर डाल दी थी।

"अम्मा अब आप देखिएगा कि मैं कैसी ठाठ की नौकरी करता हूँ। आपको चाँदी के तख्त पर बैठा दूँगा। और बस अपना यही काम होगा कि पान खाती रहें और मेरी दुल्हन आपके पान धो धोकर लाती रहे।" जमील भैया खिदमत के वादो के साथ-साथ अपनी अम्मा को हँसाने की कोशिश कर रहे थे मगर जाने क्यो आलिया ने दुल्हन के नाम पर उनकी आँखो को अपनी तरफ उठता देखकर नजरें झुका ली थी। "वाह कोई यूँ नौकरी मिल जाती है। चाँदी के तख्त ऐसे नही मिला करते। न कोई ट्रेनिंग न अंग्रेजी मे एम० ए०।" नजमा फूफी बडी हिकारत से बोली। और छम्मी को फिर हँसी आने लगी। वह नजमा फूफी के साथ बडे घमण्ड से खाना खा रही थी।

"हुँह! मुझे तो मारते थे। अब देखिए कि बेटा भी लीगी हो गया।" छम्मी

को बड़े चचा की मार याद ग्रा गई थी। उस वक़्त किसी को बड़ी चची से हमदर्दी न हो रही थी।

"एम० ए० पास कुछ नहीं जानते ग्रम्मा। मुझे बड़ी ठाठ की नौकरी मिलेगी।" जमील भैया ने सीधा वार किया।

नजमा फूफी बिलबिला उठी, "खुदा की शान है। ग्रब ऐसे-ऐसे लोग एम० ए० पास को जाहिल कहें। सच है, थोड़ी तालीम खतरनाक होती है। ग्रब ऐसे लोग बेचारे राजनीति मे हिस्सा न लें तो क्या करें। बड़े भैया ने भी तो तीर मार लिया। ग्रौर बेचारे करते भी क्या।" नजमा फूफी ने खाना छोड़कर बण्डल समेट लिये। वह जाने कितने बार बड़े चचा पर व्यंग कर चुकी थी। उनके ग्ररबी व फारसीदां होने की फब्ती उड़ाई थी। कई बार कहा था कि जब कोई डिग्री लेने की काबलियत न हो तो लोग ग्ररबी व फारसी पढ़ते हैं।

"नजमा फूफी ग्राज सुबह नौ बजे ग्रापके बड़े भैया जेल जा चुके हैं। जब वह ग्राएँ तो ग्राप उनसे पूछ लीजिएगा कि मारा हुग्रा तीर कहाँ लगा है।" जमील भैया ने मुड़कर नजमा फूफी को देखा। एक क्षण को उनका रंग फक् हो गया था, "हय बड़े भैया फिर चले गए!" नजमा फूफी ने सिर थाम लिया, "इस घर की कैसी बदनामी हो रही है, जिसे देखो जेल काट रहा है।"

जमील भैया की थपकियाँ बड़ी चची को शान्त कर चुकी थी, ग्रौर ग्रब वह टुकुर-टुकुर नजमा फूफी ग्रौर जमील भैया को लड़ते देख रही थी।

ग्रब किसी ने भी नजमा फूफी को जवाब तक न दिया। वह ग्रपने कपड़ो के बण्डल छम्मी पर लदवाकर ऊपर ग्रपने कमरे मे चली गई।

नजमा फूफी के जाते ही एक बार फिर सन्नाटा छा गया। ग्रालिया ने देखा कि जमील भैया ग्रपनी ग्रम्मा से लिपट कर बैठे हुए बड़े ग्रच्छे लग रहे थे ग्रौर शकील ग्रब तक ताँगे का किराया ग्रदा करके न ग्राया था। ग्रालिया इस सन्नाटे मे चुपके से उठकर ग्रपने कमरे मे चली गई।

सत्ताइस

जमील भैया को लाहौर गये चौथा दिन था। उनके जाने से पहले बड़ी चची की हालत देखने के काबिल थी। बस जैसे उनसे कुछ बन न पड रहा था कि इस मुसीबत से किस तरह खुद को बचा लें पर जमील भैया चले गये ग्रौर वह कुछ न कर सकी।

जमील भैया के जाते ही अखबारों की खबरें आँखें दिखाने लगी। अखबार बेचने वाले कलेजा फाड़-फाडकर चिल्लाते रहे—"पुलिस और खाकसारो के बीच संघर्ष, कितने ही खाकसार गोलियो का निशाना बन गए, मुस्लिमलीग के जलसे मे रुकावट का बदला।" बड़ी चची अखबार फरोशो की आवाजो पर दिल थाम लेती। आलिया उन्हें हर तरह तसल्ली देती। लाख समझाती कि जमील भैया तो लीगी हैं, खाकसार नही। मगर बड़ी चची किसी तरह चैन न लेती। छम्मी भी एकदम खामोश रहने लगी थी। वह सुवह-सुवह जाकर मोहल्ले से अखबार माँग लाती थी और घटों अपने बिस्तर पर औंधी पड़ी रहती थी। जबसे बडे चचा गए थे अखबार आना भी तो बन्द हो चुका था। अब उस मद् पर खर्च करने के लिए किसके पास पैसे रक्खे थे। छम्मी मेहरबानी के मूड मे आती तो मांगा हुआ अखबार पढने को दे देती और बड़ी चची मोटे शीशों की ऐनक लगाकर पढाया करती। वैसे तो वो किसी को अखबार छूने तक न देती, "पराया है फट जाएगा।"

उन दिनो छम्मो ने पढना-लिखना भी छोड़ दिया था। नजमा फूफी लाख कहे मगर वह किताब उठाकर न देती थी। वरना इससे पहले तो यह हाल था कि नजमा फूफी का दिया हुआ सबक घन्टो टहल-टहल कर याद किया करती और आलिया को इस तरह देखती जैसे कह रही हो कि तुमसे आगे निकलकर न दिखाऊँ तो मेरा नाम छम्मी नही।

कालेज से आने से वाद नजमा फूफी वडे नखरे से चन्द लफ्ज पढा दिया करती और वदले मे उसे ढेरों काम बता दिया करती। सबक याद करने के बाद बस यही काम रह जाते। अभी कपडों पर इस्त्री हो रही है तो अभी सैन्डिल पालिश से चमकाई जा रही है। दुपट्टे रग-रग कर इतने बारीक चुनती कि अँगूठे और उँगलियां छिल कर रह जाते।

"मैं अब एक लौंडा काम के लिए रख लूंगी।" नजमा फूफी उसे इतना काम करते देख ऊपरी दिल से कहा करतीं।

"लीजिए भला मैं किस काम के लिए हूँ। वाह ! अब मैं आपसे नहीं वोलूँगी। छम्मी मारे प्रेम के नजमा फूफी से लिपट जाती और वह निहाल होकर उसी वक़्त कोई और काम बता देतीं।

छः दिन हो गए। जमील भैया नहीं आए। बडी चची तडपी-तडपी फिर रही थी। और अम्मा उनकी इस बेचैनी पर बफर-बफर उठती, "अरी बडी भाभी क्यो अपनी जान जलाती हैं। बेटा भी बाप के पद्-चिह्नों पर चलेगा। वस अब उससे भी हाथ धो लें।"

"मुझे तो उसके साए में बैठना है।" बडी चची से जिन्दगी की बिलबिलाती

धूप अब बर्दाश्त न हो रही थी।

बड़ी चची ने ये छः रातें छालिया काट कर गुज़ारी थीं। जब बरामदे से कटर-कटर की आवाज़ें आती तो आलिया अपने बिस्तर पर करवटें बदलने लगती। रात का सन्नाटा और गहरा हो जाता। बड़ी चची के लिए उसका दिल भरने लगता। यह सब क्या है। यह कौन सा जज़्बा है जो अपने से प्यारों को दुख की भट्टी में जलने के लिए छोड़ देता है।

लाहौर-प्रस्ताव मंज़ूर हो गया। आठ करोड़ मुसलमान अपना हक लेकर रहेंगे। सुबह तड़के अख़बार फ़रोश चीखता भागता जा रहा था। "अख़बार वाले, अख़बार वाले।" खिड़कियों और दरवाज़ों से झाँक-झाँक कर लोग आवाज़ें दे रहे थे। आज अख़बार खरीदने में सारा मोहल्ला आगे-आगे था। आलिया ने खिड़की से झाँककर देखा। सुबह कैसी निखरी हुई थी। कान पर जनेऊ डाले और हाथ में पीतल की चमचमाती लुटिया पकड़े कोई सख़्स सड़क के नल पर नहाने के लिए जा रहा था। अब यह नहा कर पूजा करेगा। हाथ जोड़कर भगवान की मूर्ति के सामने झुक जाएगा। यह हिन्दू पूजा करते हुए इतने ख़ूबसूरत क्यों मालूम होते हैं। उसे एकदम कुसुम दीदी याद आ गईं।

सदर दरवाज़े की जंजीर ज़ोर से खड़की और करीमन बुआ बौखला कर उधर लपकीं। जमील भैया का तार था। वह ख़ैरियत से थे और जल्द आ रहे थे। बड़ी चची ने तार के कागज़ को झपट कर पानदान की कुल्हिया में छिपा लिया और मारे ख़ुशी के चाय की दूसरी प्याली बना ली। बड़ी चची ने दिन चहक कर गुज़ारा। रात को बड़ी चची के सरौते की आवाज़ जल्दी से सो गई। वह बड़ी शान्ति से रात के एक बजे तक पढ़ा की।

अट्ठाइस

इम्तहान ख़त्म हो गए थे। अब वह कुछ अर्से छुट्टी मनाना चाहती थी। वह किस कदर थक गई थी। कोर्स की किताबों से जी उकता गया था। अब वह रातों और दोपहरों को बड़े चचा की लायब्रेरी से लाई हुई किताबें पढ़ा करती। सारा दिन गरम-गरम लू चलती रहती और स्कूल के दरख़्तों से उल्लू के बोलने की आवाज़ आती रहती। इतनी लम्बी दोपहरें काटे न कटती। तपता हुआ माहौल किसी तरह चैन न लेने देता। अगर बड़े चचा की किताबें न होतीं

तो इतनी लम्बी दोपहरें पलँग पर पडे-पडे इधर-उधर की बातें सोचने और दिमाग खराब करने मे कटतीं। उधर इम्तहान के नतीजे की फिक्र। उसे तो फेल होने के ख्याल से ही खौफ होता। अगर वह फेल हो गई तो नजमा फूफी को उसके स्थायी अनपढ पने पर ज़रा भी शक न रहेगा। वैसे भी वह ताने देती रहती, "घर बैठकर इम्तहान देना भी कितना आसान बना लिया है लोगो ने। हम जैसी ने तो यो ही कालेजो और युनिवर्सिटियो मे झक मारी थी। बस एक पन्द्रह रुपय का मास्टर रख कर काम की बातें रट लें।"

इन सारी शान्दार बातो के बाद भी वह छम्मी को घर मे पढाए चली जाती और कई महीने गुज़ारने के बाद भी छम्मी का दूसरा कायदा खत्म न हुआ था। जमील भैया ने उन दिनो मामूली सी नौकरी कर ली थी। वह सारे के सारे रुपये बडी चची के हाथ पर रख देते थे और घर मे बस जीने का सहारा हो गया था। जमील भैया का बाकी वक़्त मुस्लिमलीग के कामो मे गुज़र जाता। आलिया तो अब उनके साये से भागती मगर वह साया तो लम्बा होता जा रहा था। मुहब्बत की धूप चढ़ती जा रही थी।

आज अब्बा का खत आया। उन्होने लिखा था कि वह उसके नतीजे के इन्तज़ार मे हैं। अच्छे और हट्टे-कट्टे हैं। कभी कभी हौलदिली की तकलीफ हो जाती है जो शायद गर्मी की वजह से शुरू हुई है। जेल का डाक्टर दवा दे रहा है जिससे क़तई फ़ायदा हो गया है।

अम्मा उस खत को सुनकर ज़रा देर के लिए फिक्रमन्द हो गई थीं और अपने कमरे के दरवाज़े बन्द करके बडी देर तक रोती रही थी। वह तो अपने अब्बा की बीमारी की कल्पना भी न कर सकती थी कि वह सचमुच बीम.र पड जाएँ और वह भी उसकी नज़रो से दूर, जेल की कोठरी मे।

जून के आखिरी दिन किस कदर गरम थे। दोपहरो में किस गजब का सन्नाटा छाया रहता। सौदे वालो तक की आवाज़ न सुनाई देती। मगर छम्मी पर इन दोपहरो में पढने का भूत सवार था। जैसे उसने अपने जी में ठान ली कि या तो पढ-लिखकर काबिल बन गए या फिर अनपढ ही रह गए। इतनी मेहनत के बाद भी उसका दूसरा कायदा खत्म होने को न आ रहा था। लिखते-लिखते उँगलियाँ बँध जाती। सारा सबक एक ही सांस में अटके बगैर सुना देती पर नजमा फूफी के एतराज़ खत्म न होते।

इस वक्त भी छम्मी को जम्हाइयों पर जम्हाइयाँ आ रही थी मगर वह होठ बनी ज़ोर-ज़ोर से सबक याद किए चली जा रही थी। किसी किसी वक्त अधभिडे दरवाज़े से आलिया की तरफ भी देख लेती। पढते-पढते थककर छम्मी ने किताब

मेज पर रख दी, "नजमा फूफी सारा कायदा तो याद हो गया। अब तीसरा शुरू करा दें न।"

"अभी नही। मैं जिस तरह पढाऊँ उसी तरह पढो। यह उर्दू नही कि हर जाहिल पढ लेता है, यह अग्रेजी है।" नजमा फूफी एकदम बरहम हो गई।

"अब हमे नही पढना है। यह कायदा कभी न खत्म होगा। हुह बडी आयी पढाने वाली। जैसे हम बेवकूफ हैं। अपने काम के लिए नौकर रख लीजिए। नजमा फूफी हमे तो अल्लाह मियाँ ने पैदा ही अनपढ किया है।" छम्मी ने किताब, कापी और कलम ऊपर उछाल दिए।

"अरी क्या बकवास करती है छम्मी, भई अनपढो को समझाना कितना मुश्किल काम होता है। अगर पहला, दूसरा क़ायदा कमज़ोर रह गया तो फिर आगे पढना मुश्किल होता है, जल्दी से पढो। कल तुम्हारे लिए तीसरा कायदा ले आऊँगी।" नजमा फूफी हडबडा कर उठ बैठीं। बेदाम का गुलाम हाथो से निकला जा रहा था।

"बस भई अगर हम काबिल हो गए तो आप अनपढ किसे कहेगी।" छम्मी पाँव पटकती नीचे चली गई।

'हद है भई! इस खान्दान का गँवारपन कभी न जाएगा। कोई तो इस लायक नही कि बात करके जी खुश हो।" नजमा फूफी अपने आप से कह रही थी। आलिया ने उठकर अपने कमरे के दरवाजे जोर से बन्द कर लिए 'अरे नजमा फूफी मैं आप को खूब जानती हूँ।' वह बडबडाई और किताब लेकर लेट गई। आज तो एकदम आसमान पर बादल छाने लगे थे। खिडकी से हवा का एक भीगा भीगा ठण्डा झोंका आया तो वह किताब रखकर सो गई। गरमियो की सारी दोपहर जागकर और तडप कर गुजारी थी। यहाँ तो छतो पर कपडे और चटाइयो का पखा भी न लगा था। फिर यहाँ कौन से नौकर लगे थे जो सारी दोपहर पखा खीचते।

छम्मी ने जब से पढना शुरू किया था अपने असली रूप मे आ गई थी। घर मे तूफान बरपा रहता। वह हर एक से लडती या फिर बुर्का ओढकर मोहल्ले मे गायब रहती। सब उससे परेशान थे मगर अम्मा को तो उसकी सूरत से नफरत हो गई थी, 'अल्लाह जाने शादी का पैगाम देने वाले कहाँ मर गए।'

"छम्मी मैं तुमको पढाया करूँ?" बहुत दिन बाद आलिया उसके कमरे मे गई थी। दादी की सूनी मसहरी पर नजर पडते ही उसका जी दुखने लगा।

'जमील साहब आपसे नाराज हो जाएँगे फिर।" छम्मी ने ज़ोर से कह-कहा लगाया।"

"खुदा के वास्ते छम्मी ऐसी बातें तो न किया करो।"

"अच्छा तो फिर हटाइये। मैं खुद उनका मनहूस नाम लेना पसन्द नही

करती। मजूर के सामने अब कोई नही जँचता। अल्लाह कसम कितना चाहता है मुझे।" छम्मी ने बडे मजे से आँखें बन्द कर ली।

"छम्मी कोई मर्द किसी से मोहब्बत नही करता। अपने आपसे मोहब्बत करो न।"

"वाह अच्छी पट्टी पढ़ाती हैं। जमील भैया यूँ ही आपके पीछे दीवाने फिरते है। यही तो एक मोहब्बत होती है दुनिया मे। जब तक चले चले न चले तो खेल खतम पैसा हजम। लो अपने आपसे मोहब्बत करो। कुछ दिन बाद आप कहेंगी कि अपने अब्बा और उन तमाम घर वालो से मोहब्बत करो। यह बाप-भाइयो वाली मोहब्बत कुछ नही होती। सब उल्लू के उल्लू होते हैं कमीने।"

आलिया छम्मी को लाइलाज समझ कर इधर-उधर देखने लगी। कमरे मे अनवर कमाल पाशा की एक तस्वीर और इस साल के एक कलेन्डर की वृद्धि हो गयी थी। जाने किसने दिये थे उसे।

वह चुपके से उठकर चली आई। छम्मी ने उसे बैठने को भी न कहा। अभी वह आँगन पार कर रही थी कि नजमा फूफी छम्मी के कमरे मे जाते हुए उससे टकराते-टकराते बची। सख्त बौखलाई हुई थी। 'हय, इतनी पढी-लिखी औरत के काम से एक अनपढ लडकी ने हाथ उठा लिया'' आलिया को हँसी आ रही थी।

छम्मी न मानी और अब नजमा फूफी खुद ही खाँस-खाँसकर अपनी साडियो पर स्तरी करती। कोयले दहकाते हुए आँखो मे आँसू आ जाते और सैंन्डिलो पर पालिश करते हुए किस्मत की सारी लकीरें स्याह पड जाती।

"मँझले भैया को तो फिक्र ही नही कि किसी के साथ अपनी इस बेटी के दो बोल पढा दें। कौन से एम० ए० तलाश करते हैं। जैसे बडे भैया ने अपनी साजिदा की शादी कर दी।" नजमा फूफी का बस चलता तो छम्मी की ऐसी जगह शादी करती कि पानी तक नसीब न होता। किसी कर्बला मे ढकेल देती कमबख्त को ताकि प्यासी मर जाती।

"पहले आप कीजिए शादी नजमा फूफी, बुढापा आ रहा है।" जवाब मे छम्मी उनका कलेजा नोचने की कोशिश करती।

"हुँह, मुझे किस बात की कमी है। लोग नाक रगडेंगे। तुझे तो पन्द्रह रुपये महीने का सिपाही भी न जुडेगा।"

छम्मी उन्हे जलाने के लिए ही, हँसती, "सिपाही मिल गया तो मैं सबसे पहले नजमा फूफी को पकडवा दूँगी।"

नजमा फूफी तनतना कर अपने कमरे मे भागती। भला छम्मी जैसी गँवार के मुँह कौन लगता।

घर मे तूफान उठाने के बाद छम्मी बुर्का ओढ कर मोहल्ले में घरो-घरों घूमने के लिए निकल जाती और जब वापस आती तो सख्त जोश मे भरी होती। सारे किस्से घर-घर के सुनाने शुरू कर देती, "वह कल्लू की अम्मा का लडका था न, वह मजदूरो की किसी जमात मे चला गया। वह जमात अन्डर-ग्राउड रहती है। अल्लाह वह जमीन के अन्दर कैसे रहते होंगे।" छम्मी को नजमा फूफी से सुनकर और पढकर शुरुआती अंग्रेजी के कुछ मतलब तो मालूम ही हो गए थे, जिनका वह लफ्ज़-ब-लफ्ज़ अनुवाद कर लेती।

"हय बेचारी बेवा।" बडी चची ठण्डी आह भरती, "जभी तो उस बिपदा की मारी ने बहुत दिनों से इधर आना ही छोड दिया था। वैसे तो साल-छ महीने मे निकल ही आती थी।"

"और बडी चची वह महमूद की माँ बेचारी बिलख-बिलख कर रो रही थी। महमूद जग पर चला गया। क्या सूझी हरामजादे को कि माँ का भी ख्याल न किया।"

"हय, हय, क्या हाल होगा दुखिया का ?"

"हूँ।" खबरें सुनाते हुए जाने क्या मूड खराब हो जाता छम्मी का, "मैंने कहा वह आपका लाडला पूत जो रात-दिन आवारा घूमता रहता है उसे क्यों नहीं भेज देतीं जग पर। कमीना कल जाने किस वक्त मेरे तकिए के नीचे से इकन्नी निकाल ले गया। हाथ टूटें इस शकील के खुदा करे।"

बडी चची ऐसे धीरज से होठ सी लेती कि हैरत होती। एक वही तो थी जो छम्मी की हर अच्छी-बुरी बात बर्दाश्त कर लेती। कभी रूठ कर न बैठी। छम्मी जब उनसे जवाब न पाती तो मुंह लपेट कर अपने कमरे में पड रहती।

उन्तीस

आज घर मे सख्त धूम मची थी। इसरार मियाँ ने तडके चाय की माँग कर दी थी। मगर आज करीमन बुआ ने भी उनकी इस सख्त नाजायज़ हरकत पर माफ कर दिया था। आज जिन्दगी मे शायद पहली बार करीमन बुआ ने उन्हे सबसे पहले चाय की ट्रे पकडा दी थी।

आज सुबह आठ बजे बडे चचा इलाहाबाद जेल से रिहा होकर स्टेशन पहुँच रहे थे। बडी चची का चेहरा खिला हुआ था। वह सोते हुए जमील भैया को बार-बार

झकोड रही थी कि वह भी बाप के स्वागत के लिए स्टेशन पर जाएँ। मगर जमील भैया ने हर बार कोई बहाना बना दिया। रात बादलों की गरज की वजह से सोए नहीं। सिर मे दर्द है। आज तो दफ्तर भी नहीं जा सकते। कुछ हरारत भी हो रही है। और जब स्टेशन जाने का वक्त निकल गया तो जमील भैया बड़ी तेज़ी से उठे, चाय पी और फटाफट कपड़े बदल करके दफ्तर भाग गए।

"शकील, मेरे भैया, ले तो आ चार हार बड़े चचा के लिए।" आलिया ने शकील के हाथ पर दुअन्नी रख दी। वह कुछ खुश नजर न आ रहा था। बाप से कुछ वास्ता हो न हो फिर भी पाबन्दी तो महसूस होती है।

"एक बीस-पच्चीस हार मेरे लिए भी लेते आना कहीं से माँगकर शकील। बड़ा तीर मार कर आ रहे हैं बड़े चचा।" छम्मी खी खी हँसने लगी और ऊपर कमरे की दहलीज के कुन्डे मे पड़े रस्से के झूले पर जा बैठी और लम्बी-लम्बी पेंग लेने लगी। यह झूला सावन मे पड़ा था जिसे आज तक न उतारा गया था।

बनवा के डोला रखदे मुसाफिर आई सावन की बहार रे।

वह सबको चिढ़ा कर गा रही थी। शकील बाहर चला गया। करीमन बुआ बड़े चचा पर से खैरात करने के लिए डलिया में सवा सेर गेहूँ तौल कर रख रही थी।

'ओफ्फोह! बड़े चचा से किस तरह मिला जाएगा।' आलिया सोच रही थी और मारे खुशी के उसका दिल बल्लियों उछल रहा था। वह जल्दी से अपने कमरे में आ गई और खिड़की मे बैठकर गली मे झाँकने लगी। वक्त कितनी सुस्ती से गुजर रहा था। 'एक दिन अब्बा भी इसी तरह आ जाएँगे।' उसने सोचा और गम की एक ठेस उसके कलेजे को छलनी कर गई। मगर अभी तो पाँच साल बाकी हैं।

सामने से एक साधू बाबा शरीर पर भभूत मले, लाल लँगोट बाँधे और हाथ में चिमटा पकड़े आ रहे थे, "भिक्षा दे दो बच्ची तेरी सब मुरादें पूरी होंगी।" साधू बाबा दरवाजे पर खड़े थे।

'माफ करो बाबा।" करीमन बुआ ने बाहर झाँककर जल्दी से सिर अन्दर कर लिया, "यह भी नहीं देखते कि किसका घर है। नग धड़ग सामने आकर खड़े हो जाते हैं कमबख्त।" करीमन बुआ ने जोर से कहा और हँसने लगी।

"अरे करीमन बुआ बड़े चचा की खैरात तो किसी हिन्दू ही को दो।" छम्मी ने फौरन मश्वरा दिया और फिर गाने लगी।

अपने महल मे गुड़ियाँ खेलत थी सैयाँ ने भेजे कहार रे।

"अल्लाह भला करे।" दूसरा फकीर मोटे मोटे मोतियों की माला गले में डाले दरवाजे पर आ खड़ा हुआ। करीमन बुआ ने हाथ बढ़ा कर अधन्ना पकड़ा दिया,

"थोड़ी देर बाद आकर ख़ैरात भी ले जाना बाबा जी ।" करीमन बुआ ने कहा। जब से जंग छिड़ी थी फ़क़ीर कितने बढ़ते जा रहे थे।

पक्की गली में ताँगे के पहियों की खड़खड़ाहट हो रही थी। बड़े चचा आ रहे थे। सबसे आगे वह हार पहने बैठे थे। उनके साथ इसरार मियाँ और पीछे उनके दो-तीन दोस्त बैठे थे।

'बड़े चचा आ गए !" आलिया ने चीखकर सारे घर को ख़बर दी। करीमन बुआ गेहूँ की डलिया उठा कर दरवाज़े पर खड़ी हो गई। छम्मी झूले से उतरकर अपने कमरे में चली गई।

शकील कहाँ है अल्लाह ! अब वह बड़े चचा को माला क्या पहनाएगी। आज पहली दफ़ा उसे शकील की बेईमानी पर गुस्सा आ रहा था।

बड़े चचा ने अन्दर क़दम रखा तो सबसे पहले करीमन बुआ ने गेहूँ की डलिया उनके हाथ से छुआ दी और फिर दुआएँ देने लगी। बड़े चचा ने सबकी तरफ़ एक विजेता की नज़रों से देखा।

"तुम अब बी० ए० की तैयारी कर रही हो ?" बड़े चचा ने पूछा।

"जी बड़े चचा। मैंने शकील से हार मँगाए थे। वह अब तक नहीं आया। मैं भी तो आपको हार पहनाती।"

"हाँ, जभी शकील नज़र नहीं आ रहा है। कैसा है वह ?" बड़े चचा ने जैसे रसमन पूछा। वह चौकी पर बैठ कर जूते उतार रहे थे। करीमन बुआ ने ताँबे के बड़े से लोटे में मुँह धोने के लिए पानी भर कर रख दिया था। आलिया उन्हें चुपके-चुपके देख रही थी। बड़े चचा उसे कितने कमज़ोर नज़र आ रहे थे। तोंद घट गई थी और दाढ़ी में आधे से ज़्यादा सफ़ेद बाल नज़र आ रहे थे।

"तुम्हारा बेटा रात को बारह बजे आता है या फिर सारी रात ग़ायब रहता है। न पढ़ता है न लिखता है। तुमको क्या। तुम तो जेल जाकर सब भूल जाते हो और यहाँ रहते हो तो भी बेगाने लगते हो। और तो और तुम्हारा बड़ा बेटा भी मुस्लिमलीग के जलसों में शरीक होने लगा है।" बड़ी चची ने सारी शिकायतें करके ही साँस ली। बड़े चचा तो सख़्त शर्मिन्दा नज़र आ रहे थे। इस आख़िरी बात पर एकदम चौंक पड़े, "ख़ूब, ख़ूब ! साहबज़ादे मुस्लिमलीगी बन गए।" बड़े चचा एक तकिया ज़रा सिर के नीचे रख कर लेट गए। रात भर के सफ़र ने निढाल कर दिया था।

"अब अपने साहबज़ादे का कुछ बिगाड़ लीजिए तो जानूँ।" छम्मी अपने कमरे से निकलकर वहीं दीवार से पीठ लगा कर खड़ी हो गई थी। सलाम किए बग़ैर ही उसने बड़े चचा से बदला लेना शुरू कर दिया। आलिया का जी चाहा कि

उस वक्त वह बड़े चचा को कहीं छिपा दे। उस वक्त तो कोई उन्हें कुछ न कहे। उस वक्त तो कोई उन्हें पुरानी बातें न याद दिलाए। कितनी मुद्दत बाद वह अपने घर आए हैं। जेल ने उन्हें तोड़ दिया। उन्हें आराम की जरूरत है।

"अरे तुम कैसी हो छम्मी ?" बड़े चचा ने मुस्करा कर उस ताने को सह लिया और छम्मी जैसे बिलबिला कर अपने कमरे मे घुस गई।

"अरे बड़े भैया इस छम्मी चुडैल के रिश्ते वाले कहाँ मर गए। पूरे चार महीने हो गए इन्तजार करते करते।" अम्मा उनके पास बैठकर प्याली मे चाय उँडेलने लगी।

अभी चाय की प्याली खत्म भी न होने पाई थी कि बैठक के दरवाजे की जंजीर खड़कने लगी। बड़े चचा बाहर दोस्तो में चले गए और आलिया उनके पास बैठकर उनसे ढेर सी बातें करने को तरसती रह गई। वह तो उनसे उस वक्त बहुत सी बातें करना चाहती थी। उनके उस कारनामे को सराहना चाहती थी। घर मे सब उनके लिए बेचन थे मगर किसी ने भी उनका स्वागत न किया। जमील भैया बीमार हो गए। छम्मी तीर चला गई और बड़ी चची शिकायतो का दफ्तर खोलकर बैठ गई। हय बड़े चचा आपको क्या मिल गया है यह सब करके। आपने जो मुल्क का जोग साध लिया है तो तबाहियो और बर्बादियो के सिवा क्या है और। घर वाले तक इज्जत नही करते। काश उस वक्त तो सब उन्हें खुश हो कर सराहते। काश!

तीस

शाम से कुहरा पड़ना शुरू हो गया था। करीमन बुआ खाना पकाते हुए चूल्हे की कोख मे समाए जा रही थी। आलिया को डर लगने लगा कि कहीं उनके कपड़ों में आग न लग जाए। जरा में भुनकर राख हो जाएँगी। वैसे भी उन्हें अब सुझाई कम देता है "करीमन बुआ जरा चूल्हे से सरककर बैठो।" आलिया ने बेचैन होकर कहा।

"एक जान रह गई है वह भी जल जाए। नसीब तो पहले ही जल चुका। आलिया बेटा इसी घर मे जाडो के दिनो मे अपने हाथो से मनो लकड़ी फूँक देते थे। अरे यह दल्लान जो ठण्डा पड़ा है पहले आग की तरह तपता था। अब कोई आग भी है चूल्हे मे बेटा। दो तो लकड़ियाँ लगी हैं। भला इतने में क्या जलूँगी।" कुछ दिनो से करीमन बुआ बड़ी बुझी बुझी और हताश नजर आने लगी थी। बीता जमाना

उन्हे बहुत शिद्दत से सताने लगा था। इतने भाषण के बाद भी वह चुप न रही, आहिस्ता-आहिस्ता बडबडाने लगी। अल्लाह मारा सब कुल जलसो, जुलूसो की नज़र हो गया। सब खा गए मोटी तोदो वाले। लो भला कोई पूछे घर फूंक कर भी किसी को आज़ादी मिली है। अल्लाह अकल दे बडे मियाँ को।"

बडी चची और अम्मा तख्त पर बैठी थी। उनके सामने मिट्टी की कन्डाली मे अगारे रखे हुए थे जिन पर अब राख जम चुकी थी। वह दोनो बार बार अपने हाथो को सेंक रही थी।

बडी चची ने एक लम्बी आह भरी और तख्त के एक कोने मे रखी हुई लालटेन की बत्ती को जरा सा ऊँचा कर दिया। लालटेन मे शायद तेल कम था। बत्ती बार-बार नीची हो रही थी। हर चीज़ सँभाल-सँभाल कर कम से कम खर्च की जाती। जग को कई साल हो गए थे। मँहगाई ने इस घर को बिल्कुल ही लूट लिया था। सब परेशान रहते। खाने को जैसे-तैसे मिल जाता तो तन को कपडा न जुडता। जमील भैया की छोटी सी तनख्वाह इस घर के लिए दाल मे नमक के बराबर थी। बडे चचा के दूकान की आमदनी फिर भी उस घर मे न आती। वह सब बाहर ही बाहर उड जाती। बडी चची हर वक्त जमील भैया की जान खाती कि कुछ और करो। मगर वह भी तो मुल्क आज़ाद कराने लगे थे। शकील ने वक्त के पहले मूँछें निकाल दी थी मगर दूसरो के कोर्स की किताबें सारी रात और कई दिन खत्म न होती। उसे तो सब बेकार अग समझ कर जैसे सब्र कर बैठे थे।

करीमन बुआ जैसे सचमुच आज अपने को जलाने पर तुल गई थी। वह और भी चूल्हे से लिपट कर बैठ गई। आलिया को घबराहट होने लगी, "करीमन बुआ हटकर बैठो। जलाने को एक चिंगारी भी बहुत होती है।" आलिया ने तख्त के पास खडे खडे कडाली पर हाथो का छप्पर छा दिया। हाय! कैसी सर्दी हो रही है। कम-बख्त स्वेटर भी तो इतना पुराना हो गया है कि गर्मी नाम को नही रह गई।

हाथो को सेंककर जरा जिस्म गरम हुआ तो वह भी बडी चची के पास टिक गई। गली से रेवडियो वाले की ठिठुरी हुई आवाज आहिस्ता-आहिस्ता दूर होती जा रही थी। कुहरे की रात किस कदर वीरान मालूम हो रही थी।

"जाडो मे यही इसी तख्त पर बैठे बैठे सब लोग मुट्ठियाँ भर भर कर रेवडियाँ खाते थे। अपना तो मुँह थक जाता था चबाते चबाते। अब तो जाडे यूँ ही गुजर जाते हैं मगर एक रेवडी नसीब नही होती, वाह रे ज़माने।" करीमन बुआ ने लकडियाँ चूल्हे मे सरका दी। करीमन बुआ को अब हर वक्त बोलने का रोग हो गया था। बडी चची ने फिर एक लम्बी साँस भरी और लालटेन की बत्ती ऊँची कर दी।

'हाय करीमन बुआ इतनी सर्दी मे तुम्हारी आवाज़ कैसे निकल रही है ?"

भ्रालिया ने झुंझला कर कहा। पीली-पीली रोशनी में बड़ी चची का चेहरा कैसा मर्दों जैसा लग रहा था। भ्रगर उसके पास पैसे होते तो वह कभी कभी करीमन बुआ को रेवड़ियाँ मँगा कर खिला देती। गुज़रे हुए वक़्त की भ्रावाज़ ऐसी ऐसी बातों से बड़ी चची कितनी निढाल हो जाती हैं। भ्रालिया ने भ्रपनी भ्राह को सीने में घोट लिया। भ्रगर इस वक़्त जल्दी से खाना मिल जाए तो थोड़ी देर पढ़ ले। सारा दिन गुज़र गया मगर किताब को हाथ नहीं लगाया। खुर्री खाट पर लेट कर ऊँघते हुए दिन गुज़र गया।

सब चुप बैठे थे। भ्रालिया यूँ ही टुकुर-टुकुर दालान की दीवारों भ्रौर छत को तक रही थी। बिजली का कनेक्शन कटे कितना ज़माना गुज़र चुका था मगर इस बरामदे में भ्रब तक ब्रैकेट में फ़्यूज़ बल्ब लगा हुआ था, जिसे धुएँ ने बिल्कुल काला कर दिया था। किसी में हिम्मत न थी कि इस काले बल्ब को निकाल फेंके। करीमन बुआ हाथ न लगाने देतीं। ख़्वामख़्वाह पुरानी निशानियों को कलेजे से लगाकर रख छोड़ा है। भ्रालिया ने उलझ कर नज़रें झुका लीं।

"करीमन बुआ खाना पक गया? भ्राज तो बड़ी सर्दी है।" बैठक में सर्दी से सिकुड़ते हुए इसरार मियाँ ने दूसरी बार भ्रावाज़ लगाई थी।

"ठहर जाभ्रो लाट साहब।" करीमन बुआ ने दूसरी बार जलकर जवाब दिया, "कैसा मर-भुक्खा है। ज़रा भी सब्र नहीं।"

"तौबा कैसा मरता है खाने पर नदीदा। कैसे-कैसे लोग पाल रखे हैं बड़े भैया ने भी।" भ्रम्मा या तो इतनी देर से चुपचाप बैठी हाथ सेंक रही थीं या एकदम कलेजा फाड़कर बोलीं। भ्रालिया की जान ही तो जल गई मगर भ्रम्मा को भला क्या कहती। कोई इतना नहीं सोचता कि सर्दी किस गज़ब की हो रही है। इसरार मियाँ भी इन्सान हैं पत्थर तो नहीं। भ्रालिया सोचती गई। कैसे दुख से ज़िन्दगी गुज़र रही है। वह तो जब से भ्राई है उसने यही देखा कि बड़े चचा के पुराने खद्दर के कुर्ते भ्रौर पायजामे पहने कौड़ी-कौड़ी के काम करते फिरते हैं। इसी तरह सर्दियाँ भ्रौर गर्मियाँ गुज़र जाती हैं। कभी उनको एक गरम कपड़ा भी नसीब नहीं होता। क्या हाल होगा ग़रीब का इस सर्दी में।

'बस खाना तैयार है इसरार मियाँ।" भ्रालिया ने कमज़ोर सी भ्रावाज़ में कहा भ्रौर घबराकर भ्रम्मा का मुँह तकने लगी।

"तुमसे किसने कहा था कि उसे जवाब दो। क्या तुम्हारी भी शर्म उड़ गई।" भ्रम्मा ने फ़ौरन डाँट पिलाई।

भ्रालिया ने जवाब न दिया। वह माँ का दिल न दुखाना चाहती थी। रस्सी जल जाए मगर बल नहीं जाए। पुरानी शान झेलने वाली एक यही तो रह गई थीं।

क्या हो गया दुल्हन जो उसने जवाब दे दिया! भ्राख़िर इसरार भी तो तुम्हारे

खानदान की औलाद है।" बड़ी चची अपनी तरफ से मज़ाक करके हँसने लगी।

'है तो मगर अपनी औकात भी तो पहचाने रहे।" अम्मा ने मुँह बना लिया और फिर उन्हें छम्मी की शादी का खयाल सताने लगा, "बड़ी भाभी जब पैगाम आ गया है तो शादी की तारीख भी मुकर्रर कर दीजिए। देखिए यह वक्त हो गया मोहल्ले मे गए अब तक नही आई।"

"आ क्यो नही गई। अपने कमरे में है।" आलिया ने जल्दी से कहा।

"मगर उसके बाप ने जो पाँच सौ शादी के लिए भेजे हैं उसमे सब काम कैसे होगा ?" अब अम्मा को दूसरी फिक्र सताने लगी।

"बस कुछ हो ही जाएगा।" बड़ी चची ने सिर झुका लिया।

"बस जैसे कमीनो के यहाँ शादी होती है।" अम्मा ने कहा।

"फिर हजारो कहाँ से आएँगे।" आलिया से आज अम्मा की बातें बर्दाश्त नही हो रही थी।

"पाँच-पाँच सौ की तो आतिशबाजी छोड़ी जाती है अपने घरो की शादियो मे, इन आँखो ने सब देखा है।" करीमन बुआ तेजी से रोटियाँ पका रही थी।

पर्दा सरका कर छम्मी अन्दर आ गई और करीमन बुआ के पास चूल्हे के सामने बैठ गई तो शादी की बात वहीं खत्म हो गई। सब चुप हो गए। छम्मी से तो सब छिपा रहे थे, किसी ने उसे खबर न दी थी कि शादी की बात पक्की हो चुकी है। जहेज के लिए उसके बाप ने रुपये भेज दिए हैं और वह एक दिन डोले मे सवार होकर चली जाएगी। सब उससे डरते थे कि कही कोई तूफान न खड़ा कर दे। भला उसका क्या एतबार। सब चुप थे। दालान मे पड़े हुए टाट के पर्दो मे कितने बड़े-बड़े सूराख हो गए थे। धूप और बारिशो ने उनका हुलिया बिगाड़ दिया था। और अब तो उन सूराखो से इतनी हवा आ रही थी जैसे खुली खिड़की के सामने बैठ गए हो। आलिया खामोशी से उकता कर टाटो के सूराख गिनने लगी।

'इतनी सख्त सर्दी मे बड़े भैया कानपुर चले गए। अँग्रेजी पोशाक से भी तो नफरत करते हैं। शेरवानी से कोई सर्दी जाती है। हर तरफ से भर-भर हवा लगती है। एक कोट पहन ले तो क्या हर्ज हो भला। बस अल्लाह ही रहम करे।" अम्मा ने फिर बातें छेड़ दी, "इस खानदान म जाने य हरकतें कहाँ से घुस आई।"

"बस इनकी यही जिन्दगी है। अल्लाह इसी मे भला करेगा। खुदा उन्हे सर्दी से बचाये रखे। अँग्रेजी पोशाक तो उन्होने कभी पहना ही नही। हमेशा से नफरत की, फिर जब से गरम शेरवानी फटी दूसरी पहनने की नौबत न आई। पुरानी से क्या सर्दी जाती होगी।" बड़ी चची ने कहा और कोयलो पर जमी राख तिनके से कुरेदने लगीं।

आलिया ने अपना सिर बाजुओं में छिपा कर आंखें मूंद लीं। अंधेरे में लाल-पीले धब्बे नाचने कूदने लगे। और फिर उसके सामने लोहे की सलाखें उभरने लगीं और उन सलाखों के पीछे उसके अब्बा का चेहरा चमक रहा था। अब्बा वहां कितनी सर्दी होगी! वहां तो कोई कोयले दहकाकर कमरा भी गर्म न करता होगा और वह गर्म कपड़े भी तो अब पुराने हो चुके होंगे। रात किस तरह गुज़रती होगी। उसने घबरा कर आंखें खोल दीं। यह दिल को कौन चुटकियों से मसल रहा था।

"करीमन बुआ रोटी तो पकती रहेगी। आज मुझे सबसे पहले खाने को दे दो। मुझे पढ़ना है।" आलिया ने कहा।

"मैं सदके जाऊं। तुम गरम गरम रोटियां खा लो। तुम्हारे साथ छम्मी बेटा भी खा लेंगी।"

"मुझे कौन सा पढ़ना है जो गरम-गरम रोटियां तोड़ने बैठ जाऊं।" छम्मी ने त्योरियां चढ़ा कर कहा और बाजुओं में मुंह छिपाकर चूल्हे के और आगे सरक गई।

आलिया बड़ी बेदिली से खाना खा रही थी। उस वक्त फिर सब लोग खामोश बैठे थे। इतने लोगों के बीच में भी ज़िन्दगी के आसार ढूंढे न मिलते। बड़े चचा होते तो दस-ग्यारह बजे रात तक बैठक ही आबाद रहती। उसने सोचा, और जाने आज जमील भैया कहां चले गए। वह किन कार्रवाइयों में लगे हैं और शकील अल्लाह ही जाने कहां आवारा घूम रहा होगा।

"करीमन बुआ अब तो इसरार मियां को भी खाना भेज दो।" आलिया ने उठते हुए कहा मगर करीमन बुआ तो ऐसे मौकों पर हमेशा गूंगी-बहरी बन जातीं।

"भिजवा दिया जाएगा। अब कोई करीमन बुआ दस हाथ कर ले।" अम्मा ने तल्खी से जवाब दिया।

"हां देख लीजिए छोटी दुल्हन।" करीमन बुआ जल्दी से बोलीं, "वह भी क्या ज़माना था कि....।"

आलिया जल्दी से पर्दा सरका कर बाहर निकल आई। कितना अंधेरा था। ज़रा सा फासले की चीज़ दिखाई न देती। वह आंगन में पड़ी हुई लोहे की कुर्सी से टकरा गई। छम्मी के कमरे से निकलती हुई पीली रोशनी कुहरे की दीवार के उस पार रह गई थी। आंगन पार करके वह जल्दी जल्दी सीढ़ियां तय कर गई। करीमन बुआ के दस हाथों के ख्याल ने उसे बुरी तरह झुंझला दिया था।

नजमा फूफी का कमरा तय करते हुए उसने नीची-नीची नज़रों से देखा कि नजमा फूफी आराम-कुर्सी पर लेटी अपने से दुगनी मोटी किताब में डूबी हैं और उनके पैरों पर रेशमी लचका लगी दुलाई बड़ी नफासत से पड़ी हुई है। नजमा फूफी ने हमेशा

की तरह नज़र उठाकर भी नही देखा। अब भला वह उस रास्ते को कैसे छोड दे। दरअसल हवा से उडकर तो अपने कमरे मे जाने से रही।

अपने नन्हे से कमरे मे दाखिल होते ही उसने गली मे खुलने वाली खिडकी के पट खोल दिए। बिजली की तेज़ रोशनी मे उसने अपना बिस्तर ठीक किया फिर लिहाफ मे दुबक कर लेट गई और जब ज़रा हाथ गर्म हो गए तो बडे चचा की अलमारी से निकाली हुई किताब उठाकर पढने लगी।

खिडकी खुलने की वजह से सर्दी कितनी ज्यादा हो गई थी। मगर खिडकी बन्द करने से तो अंधेरे मे गोते लगाने पडते। लालटेन की प्यासी और बीमार सी रोशनी से उसको कितनी उलझन होती। वैसे एक ज़माना वह भी था, जब तक लालटेन की ही प्यासी रोशनी मे ज़िन्दगी का एक हिस्सा गुज़र गया था। बरसात के दिनो मे जब लालटेन के गिर्द पतिंगे जमा हो जाते तो उसे कितना मजा आता। लो अब एक पतिंगे ने शीशे से सिर टकराया और औंधा हो गया। अब दूसरा और अब तीसरा। इसी तरह पतिंगे गिनते-गिनते सो जाती मगर अब तो खैरात मे मिली हुई बिजली की रोशनी के बगैर उससे एक मिनट को न पढा जाता।

अभी तो रात का शुरुआती हिस्सा गुज़रा था मगर गली मे कैसा सन्नाटा छाया हुआ था। स्कूल की इमारत और उसके आस-पास के घने पेड़ कुहरे की चादरो मे ढके हुए थे। नीचे की मंज़िल से अब ज़ोर-ज़ोर से बातो की आवाज़ आ रही थी और इन आवाज़ो मे इसरार मियाँ की मद्धिम सी आवाज़ उलझ रही थी, "करीमन बुआ खाना पक गया हो तो दे दो ?"

"खा लेना इसरार मियाँ। देर से खाओगे तो खुल कर भूख लगेगी। इस मँहगाई के ज़माने मे अगर तुम्हारी भूख न खुली तो हम सब क्या करेंगे।" छम्मी अपनी खास अदा से कह रही थी और फिर उसकी हँसी की आवाज़ आलिया के कानो के पार हो गई। आलिया ने किताब सीने पर रख ली। रहम की एक टीस उसके कलेजे को पार कर गई। अरे इन बेचारे का क्या कुसूर है। यह सब लोग इनके लिए पत्थर क्यो हो गए। आखिर यह आपही आप तो दुनिया मे नही आ गए जो अब सब लोग इनके बेगाने बन गए। वह किसी के मामू नही, किसी के चचा नही, किसी के भाई नही किसी के बाप नही ? भला किसी को क्या गरज़ पडी है कि इस सिलसिले मे सोचे। यह किसके बाप बनेगे जबकि इनका कोई बाप नही।

उसका कैसा जी चाहा कि बस उसी वक्त दौडकर नीचे चली जाए। अपने हाथो से थाली सजाए फिर इसरार मियाँ के सामने रख दे और जब तक वह खाते रहे सलीकेदार भतीजियो की तरह उनके पास खडी रहे। मगर यह सब कुछ कितना नामुमकिन था। इस तरह उसको माँ के इतनी पुरानी शान को ठेस लग जाएगी और

करीमन बुआ तो यकीनन बीते हुए जमाने का मातम करने लगेंगी, "खैर यह मेरा घर तो नही।" वह बडबडाई। उसने फिर किताब उठाई। चगेज खाँ के अत्याचार पढ-पढकर मारे दहशत के दिल काँपा जाता।

किताब रखकर उसने लिहाफ मे मुँह छिपा लिया। इस बौद्धिक प्राणी ने कैसे कैसे अत्याचारो से इतिहास रचा है। इस वक्त वह चिन्ता की मूर्ति बनी हुई थी। बर्बरता की आग कभी नही बुझती। लाख सभ्यता जन्म लेती रहे। कुछ नही बनता। मदान्धता सब कुछ जला कर भस्म कर देती है। इसके बावजूद लिख रखा है कि अब हम सभ्य हो गए हैं। सिरो के मीनार बनाकर और इन्सानो को पिंजरे मे बन्द करना तो सदियो पुरानी बर्बरता के युग की यादगारें हैं। मगर आज जो जग हो रही है, एक से एक बढिया बम लो जिससे सबसे ज्यादा बेगुनाह मरें, वह सबसे तरक्की याफ्ता हथियार, फिर जलियान वाले बाग़ का किस्सा कौन सदियो पुरानी घटना है। इस सभ्य युग ने तो इस घटना को जन्म दिया था और उसे एकदम कुसुम दीदी याद आ गईं। अँधेरे मे उनकी लाश आँखो के सामने तैरने लगी। बसन्ती साडी से बूँद-बूँद टपकता पानी उसके दिल पर गिर रहा है।

किसी ने हौले से उसका लिहाफ सरकाया तो वह बौखला कर उठ बैठी, "अरे तुम तो डर गई।" जमील भैया उसके सिरहाने खडे थे।

"हाँ मैं तो सचमुच डर गई। अभी जरा देर पहले चगेज खाँ के अत्याचार पढ रही थी।"

"और यह भी हो सकता है कि तुम मुझको ही चगेज खाँ समझ रही हो। भला मुझमे इतनी हिम्मत कहाँ?" जमील भैया हँसे।

"तुम्हें कैसे कह सकती हूँ। तुम तो सभ्य हो और फिर शायद..। इसरार मियाँ को खाना मिल गया?"

"मैं करीमन बुआ के मामले मे दखल नही देता।" बड़े भैया ने बडे फीकेपन से कहा, "इस वक्त तो मैं तुमसे बातें करने आया हूँ और..।" जमील भैया इस वक्त बहस के मूड मे न थे। वह कुछ सोच रहे थे। वह पहले ही समझ गई थी कि वह क्या सोच रहे हैं और क्या कहना चाहते हैं। और अब जबकि रात सो रही है, इस सर्दी में सब लोग अपने बिस्तरो मे दबे पडे हैं तो वह उसके कमरे मे क्यो आए हैं। फिर उसे ख्याल आया कि नजमा फूफी कुछ सोचने न लगें। उसने खिडकी के दोनो पट खोल दिए।

जमील भैया कुर्सी खिसका कर उसकी पलँग की पट्टी के पास बैठ गए और उसे बडी गहरी गहरी नजरो से घूरने लगे। वह जमील भैया को टालने के लिए इधर-उधर देखने लगी।

"तुम्हारी आँखें कितनी खूबसूरत हैं। शायर ने शायद ऐसी ही आँखों को जन्नत के नाम से याद किया है।"

"शुक्रिया जमील भैया।" वह जोर से हँसी, "यह असली जन्नत नही है। हो सकता है कि शद्दाद की जन्नत[1] हो।"

"आलिया बेगम सिरो के मीनार बनाना इतना बडा जुल्म नही जितना किसी की भावनाओ का मजाक उडाना।"

"क्या यह भी शायरी का कोई बारीक नुक्ता है। खैर चलो माफ कर दो। भावनाओ का मजाक उडाने के बजाए अब सिरो के मीनार बना लिया करूँगी।" उसने अपने हाथ लिहाफ मे छिपा लिए, "जमील भैया अगर इस बार मैं पास हो गई तो मजा आ जाएगा। नजमा फूफी की काबिलियत को जरूर कुछ ठेस लगेगी।"

वह तो बातचीत का विषय बदल रही थी मगर जमील भैया ने जरा भी दिलचस्पी न ली। सिर झुकाए खामोश बैठे रहे। खुली खिडकी से हवा के कितने ठडे झोके अन्दर आ रहे थे मगर वह खिडकी बन्द भी तो न कर सकती थी। अँधेरा भावनाओ से सारी रोशनी छीन लेता है।

"मुझे मालूम है। तुम मुझसे बात नही करना चाहती। तुम मुझे टालती हो आलिया। क्या तुम मेरी मुहब्बत का सम्मान भी नही कर सकती।"

"भैया आप कैसी बातें करते हैं। मैं...मैं...।" वह जमील की आंखो मे आंसू देख बौखला गई। उससे बात न करते बना।

"आलिया!" जमील भैया ने उसे एक झटके से उठा लिया और आलिया को ऐसा महसूस हुआ कि खिडकियो के दोनो पट बन्द हो गए हैं और उसके ओठो पर अगारे रखे हो।

यह सब कुछ इतनी तेजी से हो गया कि वह कुछ भी न कर सकी और उसने जमील भैया को जब अपने-आपसे झटकना चाहा तो वह उसके बाजू पर सिर रखे बच्चो की तरह सिसक रहे थे और उनका एक-एक आंसू खौलती हुई बूंद की तरह उसके दिल पर गिरता महसूस हो रहा था। उसे इन बूंदो के गिरने की आवाज तक महसूस हो रही थी। इन बूंदो की रोशनी सारे कमरे मे फैल गई थी। उसे एक साफ-सुथरा रास्ता नजर आ रहा था जिस पर दौडने के लिए उसके पाँव जैसे बेताब से थे। वह बेसुध सी बैठी थी और जमील भैया अब सिर उठाकर उसकी तरफ देखते हुए बडे मीठेपन से मुसकरा रहे थे। कितना गर्व और कितनी शाति थी उस मुस्कराहट मे।

---

१ शैतान की सहायता से शद्दाश बादशाह द्वारा धरती पर निर्मित प्रपचपूर्ण स्वर्ग-लोक।

'बस अब आप तशरीफ ले जाएँ जमील भैया।" आलिया ने डाइनो की तरह उनकी तरफ देखा, "किसी और को उल्लू बनाइयेगा। मेरा नाम है आलिया। चले जाइये वरना इतनी जोर से चीखूंगी कि हाँ. ।"

जमील भैया दीवार से टेक लगाए उसे टक-टक देख रहे थे। उनकी नजरें चीख रही थी, 'तुम किसी से मुहब्बत नही कर सकती आलिया बेगम। तुम सचमुच डाइन हो।' और जब जमील भैया खडे-खडे एकदम चले गए तो आलिया ने खिडकियो के पट भेड दिए और सिसकियाँ भर-भर कर रोने लगी, 'जमील मेरे जिस्म में तुम जादू की सूइयां चुभो गए हो। इसे अब कौन सा शहज़ादा आकर निकालेगा।'

रोते-रोते जब उसका जी हल्का पड गया तो वह अपनी बेवकूफी पर हँसने लगी। हद है भई। क्या वह आपा और कुसुम दीदी से कुछ कम हैं। हुँ, पता नही वह कैसे पागल हो गई थी।

वह अपने कोर्स की किताब उठा कर बडी शाति से पढने लगी और फिर न जाने किस वक्त किताब उसके हाथ से छूट कर सीने पर गिर पडी तो कच्ची नीद मे वह चौक पडी।

अरे यह छम्मी इतने ठण्ड मे नगे पांव क्यो चुपचाप खडी है। आलिया ने किताब मेज़ पर रख दी।

"तो क्या आप अब तक जाग रही हैं बजिया?" खिडकी की तरफ बढते-बढते वह एकदम ठिठक कर रह गई।

"मगर तुम क्या करती फिर रही हो इस सर्दी मे? इधर लिहाफ मे आ जाओ छम्मी।"

"मज़ूर ने कहा था कि रात बारह बजे गली मे खम्भे के नीचे खडा हूँगा, तुम खिडकी मे आकर खडी होना। खैर आप सो जाइये। ख्वामख्वाह नीद खराब की मैंने।" वह कमरे का दरवाजा खोलकर जल्दी से चली गई।

"ऐ छम्मी!" आलिया ने आवाज दी मगर वह तो सीढियाँ तय करके अपने कमरे मे जा चुकी होगी।

आलिया ने खिडकी के पट खोलकर नीचे गली मे झाँका। कुहरा फट गया था। चांद की हल्की रोशनी गली में लोट रही थी। वहाँ और कुछ भी न था।

इक्तीस

जग जा रही थी। मँहगाई ने घर में झाडू फेर दी थी। जमील भैया की थोडी सी आमदनी सही मानो मे किसी का भी पेट न भर सकती थी। घर मे सब कितने स्वार्थी थे। अम्मा के माथे पर हर वक़्त

शिकायती शिकनें पड़ी रहती। बड़े चचा की सूरत से उन्हें नफरत हो गई थी। उन्हें पूरा यकीन था कि अगर दूकान के रुपये घर में आने लगें तो यह हालत ज़रा के ज़रा में बदल जाए। ज़रा ढंग की रोटी तो नसीब हो। धमकी के तौर पर वह हर वक्त अपने भाई के घर जाने की जिद्द करती और बड़ी चची इस खयाल से कांप उठती कि इस तरह तो घर की बदनामी होगी। सब यही कहेंगे न कि पेट भर रोटी भी न खिला सके। उधर छम्मी की यह हालत थी कि हर वक़्त लड़ने-भिड़ने पर तैयार रहती। छींके पर रखा हुआ शकील का खाना उतार कर खा जाती और जब बदले में वह बकवास करता तो मज़े से हँसती या फिर मारने-मरने पर तुल जाती। नजमा फूफी यह हगामे देखकर नफरत से मुँह फेर लेती, "अनपढ़ होने पर यही सब कुछ होता है। अगर सबके पास तालीम होती तो आज यूं भूखे मरते?" वह बड़े गर्व से कहती, और फिर अपनी तालीम के सिंहासन पर बैठकर बड़े फख्र से मुस्कराने लगती। जमील भैया यह सब कुछ देखते-सुनते और इन सबके बीच में बड़े बेबस और खामोश नज़र आते। मगर वक़्त की इस खराबी के बावजूद करीमन बुआ ज़रा भी न बदली थी। जंग की वजह के फकीरों से दल पैदा हो गए थे। करीमन बुआ पिछले ज़माने की दी हुई मनों खैरातों को याद करके कुढ़ा करती और इसरार मियाँ की रोटियों के टुकड़े-नवाले काट-काटकर फकीरों को खैरात दे ही दिया करती। इस अजीबो-गरीब खैरात पर आलिया का जी हिलने लगता। आखिर यह इसरार मियाँ इतने ईमानदार क्यों हैं? क्या वह दूकान से एकाध रुपये उड़ाकर ऐश नहीं कर सकते? इस ईमानदारी और शराफत का चल्ला काट कर उन्हें क्या मिल जाएगा। इस तरह वह दादा की जायज़ औलाद तो कहाने से रहे। कुछ भी करते रहें फिर भी दादा की रखैल की औलाद ही कहलाएंगे। उन्हें कोई बाप के नाम से याद न करेगा। यह दुनिया उनके लिए मैदान कयामत ही रहेगी।

घर की ऐसी बुरी हालत देखकर भी बड़े चचा का दिल न पसीजा था। लक्ष्य के तीरों ने उन्हें इस बुरी तरह घायल कर रखा था कि सारे दुख-दर्द हेच थे, "जंग ने आज़ादी को बहुत करीब कर दिया है।" वह सबकी तरफ देख कर कहते मगर कोई भी तो उन्हें जवाब न देता। वह शर्मिंदा होकर सिर झुका लेते। मुजरिमों की तरह उलटे-सीधे निवाले तोड़ते और बैठक की राह लेते।

सर्दियों में अब वह तेजी न रह गई थी। आलिया रात गए तक गली की खिड़की खुली रखती और गली की रोशनी से पढ़-पढ़ कर इम्तहान की तैयारी करती रहती। उन दिनों उसने सोच-विचार से हाथ उठा रखा था। अम्मा के खत उसकी हिम्मत बढ़ाते रहते।

धूप ढल चुकी थी। सारी दोपहरी पढ़ने के बाद भी वह छत से न सरकी।

साए की वजह से अब उसे सर्दी लग रही थी।

पढते-पढते उसने सिर उठाकर देखा तो छम्मी उसके पास खडी थी। रात से वह चुप-चुप थी और सुबह से कई बार आलिया के पास से गुजरी थी। ऐसा महसूस होता था कि वह कुछ कहना चाहती है मगर जब भी आलिया उसकी तरफ देखती चली जाती।

"क्या बात है छम्मी ?"

"कुछ भी नही बजिया। बस यूँ ही जी चाहा कि आपके पास बैठूँ।" वह आलिया के पास कुर्सी पर टिक गई।

छम्मी ने आज कितनी मुद्दत के बाद उसे प्यार से बजिया कहा था। वह उसे बडी प्यारी लग रही थी, खोयी-खोयी सी उसे तक रही थी।

"कुछ तो जरूर है छम्मी, वर्ना तुम ऐसी क्यो नजर आ रही हो।" आलिया ने उसे अपने करीब सरकाया तो छम्मी उसके कधे पर सर रख कर रोने लगी—"वह मन्जूर भी जग मे भरती हो गया बजिया। एक सहारा था सो वह भी गया।"

"हुँह ! अगर उसे तुमने मोहब्बत होती तो फिर जग पर क्यो जाता पगली। और अब तुम उसे याद करके रो रही हो। बेवकूफी न करो छम्मी।" आलिया ने उसे लिपटा लिया।

"बस वैसे ही रोना आ गया। कोई मुझे उससे मोहब्बत थोड़े थी। वह मुझसे मोहब्बत करता था, इसलिए मुझे भी अच्छा लगने लगा था। चलो कोई मुझसे मोहब्बत तो करता था। छम्मी ने बेबसी से हँसते हुए आँसू पोछ लिए।

आलिया से कुछ कहते न बन पड़ा। भला वह कहती भी क्या, "मैं जो तुमसे मोहब्बत करती हूँ छम्मी।"

"आप, आप मुझसे मोहब्बत करती हैं बजिया ?" वह जोर-जोर से हँसी। कितनी पीडा थी उसकी बेतहाशा हँसी मे।

आलिया उसे कैसे यकीन दिला सकती थी कि वह उससे मोहब्बत करती है। वह उससे हमदर्दी रखती है। छम्मी की हँसी से बौखला कर उसका मुँह तक रही थी।

"देखिए बजिया मेरे पाजामे की गोट किस बुरी तरह फट गई है, मैं नीचे जाकर इसे सी लूँ तो फिर आऊँगी।" छम्मी भदर-भदर करती चली गई और आलिया किताब गोद मे रखे बेवकूफो की तरह बैठी रह गयी। यानी उसने ऐसी बेकार बात की थी कि छम्मी को पाजामे की गोट सीना याद आ गया। छम्मी उसकी मोहब्बत पर एतबार नही करती। दुनिया ने उसके एतबार का जनाज़ा निकाल दिया है। आलिया रंजीदा हो रही थी।

छत की मुँडेर पर बैठा हुआ कौवा काँव काँव करता हुआ उड गया। धूप छत

की मुंडेरों पर चढते-चढते गायब हो गई थी। अब अच्छी-खासी सर्दी हो रही थी किताबें समेट कर वह अपने कमरे में रख आई। छम्मो के जाने के बाद एक लफ्ज़ भी तो न पढ सकी थी। थोडी देर तक वह आँखें बन्द करके अपने बिस्तर पर पडी रही और फिर नीचे चली गई। क्यारी मे गेदे और गुल-अब्बास के फूल बहार का पता दे रहे थे। आलिया ने एक फूल तोडकर अपने बालो मे लगा लिया मगर जब उसने देखा कि जमील भैया दालान की मेहराब के पास खडे उसे बडी चाहत से रहे हैं तो उसने बौखला कर फूल क्यारी मे उछाल दिया। जाने कैसे उसको एहसास हुआ कि सिंगार मर्द से मोहब्बत करने की चुगली खाता है।

फूल फेंककर उसने देखा कि जमील भैया की आँखें जैसे कुम्हला गई हैं। वह लोहे की कुर्सी पर सिर झुकाकर बैठ गए। अम्मा तख्त पर बैठी छालिया काट रही थी और बड़ी चची चने की दाल चुन रही थी। उनका दुखो मे घिरा हुआ चेहरा इस कदर खडहर हो रहा था। सारे दुख, सारे दर्द उनके चेहरे की लुनाई को तोड फोड-कर अब भी अपना घेरा न छोड रहे थे। इधर दो दिन से वह एक नए दुख मे मुब्तिला थी। दो दिन हो गए मगर शकील घर न आया। जमील भैया ने उसे तलाश भी किया लेकिन कोई पता न चला। जाने वह किताबो की तलाश मे कितनी दूर चला गया था।

"शामे हमेशा उदास होती हैं।" जमील भैया ने आलिया की तरफ देखा।

"सब शायरी है। मुझे तो कोई उदासी नही लगती।" आलिया हँसी और अम्मा के पास तख्त पर बैठकर पानदान की कुल्हियाँ साफ करने लगी।

"मेरे सामने इतनी खूबसूरत और इतनी मुकम्मल गजल है कि अब अपना सारा कलाम बेमानी मालूम होता है। इसलिए शायरी-वायरी छोड दी है। तुमने फैज और नदीम को पढा है?" उन्होने पूछा।

आलिया खामोश रही। वह भला खुद को गजल कैसे समझ लेती। यह जमील भैया भी खूब हैं। हर बात मे अपना मतलब तलाश लेते हैं। उसे गुस्सा आ रहा था।

"तुम्हारे बडे चचा की लाइब्रेरी मे फैज और नदीम का कहाँ गुजर हो सकता है।" वह हँसे, "सुनाओ गाधी पर और कोई किताब छपी कि नही?" जमील भैया फूल फेंकने का बदला ले रहे थे।

वह बड़ी उपेक्षा से पानदान साफ करती रही। उसने नजर उठा कर भी न देखा। जैसे उसे मालूम ही नही कि कोई उससे मुखातिब है। जमील भैया के लिए उसने कुछ और भी न सोचा था। फिर भी क्यो वह उनसे घबराने लगी थी।

"क्या तुमने आज भी शकील को तलाश किया था। भला तुमको अपनी मुस्लिम लीग से कब फुर्सत मिलेगी।" दाल के ककर साफ करते-करते बडी चची ने

सिर उठा कर पूछा।

"अम्मा अब आप उसकी फिक्र न करें। वह बम्बई चला गया है। वहाँ मजे से कमा खाएगा।" जमील भैया ने जैसे ढेला खींच मारा।

"बम्बई मे ? इतनी दूर ?" बडी चची की आवाज कॉंप रही थी, "अरे उसे शरम न आई भागते हुए। उसे अपनी मां का भी खयाल न आया।" बडी चची कलेजा थाम कर रोने लगी।

आलिया तख्त से कूद कर बडी चची की तरफ लपकी और उन्हें अपनी बाँहो मे ले लिया, "न रोइये बडी चची। वह आ जाएगा।"

"वह क्यो आएगा आलिया बेगम। यहाँ उसके लिए क्या रखा है और अब उसे किसका खयाल आएगा। वह अपनी जिन्दगी बनाने गया है या बिगाडने उसने कुछ सोचा ही होगा। इस गोरख धन्धे मे रह कर क्या करता।" जमील भैया की नजरो तक मे व्यग था।

"जमील मियाँ कोई क्या कर सकता था। उसके बाप का फर्ज था कि घर की फिक्र करते, अपनी औलाद को देखते, पढाते-लिखाते, रास्ता दिखाते। यह गरीब आवारा फिरता रहा। कभी पलट कर न पूछा।" अम्मा को तो वडे चचा के खिलाफ जहर उगलने का मौका मिलना ही चाहिए था। बस मजबूर थी कि खुले-खजाने उनके सामने कुछ न कहती। उनसे यह यकीन कोई नही छीन सकता कि सब घरो की तबाही के जिम्मेदार सिर्फ बडे चचा थे। बाकी तमाम लोग मासूम थे। वह वडे यकीन से कहती थी कि बुनियाद टेढी रखी जाए तो सारी इमारत ही टेढी बनेगी।

जमील भैया सिर झुकाकर जाने क्या सोचने लगे। बडी चची दुपट्टे के पल्लू में मुँह छिपाए रोये जा रही थी। उनकी कोख से जन्म लेने वाला उनके दुखो पर थूक कर साथ छोड गया था। वह लाख आवारा हो गया था फिर भी एक माँ को उससे कोई आस तो थी।

"मत रोइये बडी भाभी जब मुल्क आजाद हो जाएगा तो शकील भी वापस आजाएगा।" अम्मा ने मजाक उडाने के ढग से कहा और प्रशसा पाने वाली नजरों से देखनी लगी।

"और जब मुल्क आजाद होगा तो सारे अँग्रेज दुम दबा कर भाग जाएँगे। हमारे पाकिस्तान मे तो एक भी अँग्रेज न रहेगा।" छम्मी अपने कमरे से निकल आई थी।

"मेरे अल्लाह।" आलिया होठो मे ही बडबडाई, "एक दफा फिर सब लोग सुन लो कि शकील भाग गया। बडी चची का कलेजा सदमे से फट रहा है। आप लोग जरा देर को अपनी बहस से हाथ उठा लें। आलिया के लहजे मे सख्ती थी।

और कुढ कर रह गई। बडे चचा का झुका हुआ सिर देख कर उसका दिल तडप उठा था। काश बडे चचा से अब कोई कुछ न कहे। उन्हे उनके हाल पर मस्त रहने दिया जाए। मगर यहाँ तो कोई उन्हें माफ करने को तैयार नहीं था। खाने के बाद बड़े चचा बैठक मे चले गए तो आलिया ने बडी मिन्नतो से बडी चची को खाना खिलाया। आज तो वह पेट के नरक को पाटने के लिए तैयार नही थी।

"करीमन बुआ बडी भाभी से पूछो कि मैं बम्बई जाकर शकील को तलाश करूँ।" जब आलिया अपने बिस्तर पर लेट रही थी तो इसरार मियाँ की कँपकँपाती आवाज उसके कलेजे के पार हो गई। क्या सचमुच यह आवाज इसरार मियाँ की थी, उसे यकीन न आ रहा था।

बत्तीस

इम्तहान के बाद जब आलिया ने सिर उठाया तो देखा बहार जा चुकी थी। हवाओ मे गर्मी बस गई थी। नाली से ढेरो पानी क्यारी मे जाता मगर फूलो पर रौनक न आती, पत्तियाँ मुर्झा मुर्झा कर झडती रहती। मारे प्यास के नन्ही नन्ही चिडियो की चोंचें खुली रहती और चूल्हे के पास काम करते हुए करीमन बुआ के हाथ से पखिया न छूटती। शाम को आँगन ठण्डा करने के लिए कितनी ही पानी की बाल्टियाँ छिडक दी जातीं फिर भी चैन न मिलता। सारा माहौल जल रहा था।

इन बेकार, वीरान और गर्म दिनो मे बडी चची ने छम्मी के जहेज़ के पाँच जोडे कपडे उसके सुपुर्द कर दिए थे। दोपहर मे जब सन्नाटा छा जाता तो वह मशीन पर कपडे सीने बैठ जाती। बडी चची से तो अब कुछ न होता था। हर वक्त बुझी बुझी सी रहती। उनका किसी काम मे जी न लगता और अम्मा तो वैसे भी छम्मी को बर्दाश्त न करती। उनका बस चलता तो जहेज के कपडो से छम्मी का कफन सी डालतीं। बस एक आलिया रह गई थी जो बडे चाव से जहेज सी रही थी और हर वक्त छम्मी के अच्छे नसीब होने की दुआएँ कर रही थी।

इधर छम्मी थी कि अपने नसीब की बाजी लगने से बेखबर सारे घर मे उधम ढाती फिर रही थी। मन्ज़ूर की मुहब्बत ने जो जरा सी सजीदगी पैदा कर दी थी वह भी खत्म हो गई थी। बडे चचा को देखते ही उसे पाकिस्तान का खयाल सताने लगता। अंग्रेजो को वह बेभाव सुनाती कि अम्मा के छक्के छूट जाते और जब सब को चिढ़ा-

चिढा कर वह थक जाती तो फिर आलिया के पास आ घुसती "ऐ वजिया यह किसके कपड़े सिल रही हैं। अल्लाह हय, कितने प्यारे है। यह कौन पहनेगा ?" वह इठला कर पूछती।

"किसी के हैं छम्मी।" वह कांप कर बहाना करती कि कहीं सच्ची बात का पता न चल जाए।

"एक दुपट्टा हमें दे दीजिए। इसमे लचका लगा कर मैं ओढूंगी।" वह चुने हुए दुपट्टे को उठा कर मरोडने लगती, "देखिए मेरा दुपट्टा कैसा लत्ते सा हो रहा है।"

"छोडो छम्मी। चुन्नट खुल जाएगी।" आलिया दुपट्टा छीनने लगती।

"आखिर ये हैं किसके जहेज के। बेचारी बता भी नहीं सकती। ज़बान थकती है।" छम्मी लडने पर आमादा हो जाती।

"मैं तुमको पीटूंगी जो मुझसे लडी।" आलिया बडे प्यार से अपनी बडाई का रौब डालती तो छम्मी हँसने लगती।

आज दोपहर मे कैसा सन्नाटा था। वह छम्मी के दुपट्टे मे किरन टांक रही थी और अपने भविष्य के खयाल को जान पर नाजिल किए जा रही थी। अगर वह फेल हो गई तो क्या होगा। अगर पास हो गई तो ले-देकर एक-ही बात रह जाती है कि बी० टी०करे, उस्तानी बन जाए। मगर क्या वह बी० टी कर सकेगी। क्या अम्मा उसे अलीगढ जाने देगी। और क्या मामूं उसे इतने रुपये भिजवाते रहेंगे।

हाईस्कूल के आहाते मे आम के दरख्तों पर कोयल लगातार चीखे जा रही थी और पास के कमरे मे सोई हुई नजमा फूफी के खुर्राटे छत सिर पर उठाए हुए थे। उसका जी चाहा कि वह भी सो जाए और इतने खुर्राटे ले कि नजमा फूफी अपनी बेफिक्र नींद से चौंक पडें और फिर सारी दोपहर बैठ कर काट दें।

बालम आय बसो मोरे मन मे।

चिलचिलाती धूप से बचने के लिए कोई राहगीर बालम का साया तलाश करता गली से गुज़र गया।

"वह एक पल को गली में झांकी और फिर किरन टांकने लगी। कितनी सदियाँ गुज़र गईं। मगर उन बालम साहब की सज धज मे फर्क न आया, कितनों को कब्र मे सुला दिया मगर खुद मौत का मुँह न देखा।

"क्या हो रहा है!" जमील भैया ने आते ही पूछा।

आज कितनी ही मुद्दत के बाद वह फिर उसके पास आ बैठे थे। लो एक और बालम साहब आ गए। आलिया बौखला कर उलटे सीधे टाँके मारने लगी, "छम्मी का दुपट्टा टांक रही हूँ।"

वह दुपट्टे का एक सिरा पकड कर यूंही उलटने पलटने लगे। आलिया ने नीची-

नीची नज़रो से देखा कि आज फिर उनकी आँखो मे पागलपन झाँक रहा था और चेहेरे पर ज़िन्दगी से थक जाने के आसार उमड रहे हैं। हाय यह कौन सा जज़्बा होता है जो इतनी झिडकियाँ खाने के बाद भी खत्म नही होता।

"अच्छा तो छम्मी बीबी का जहेज़ तैयार रहा है।" वह जैसे बात करने की खातिर बोले।

"हाँ जमील भैया, अभी खैर है। खूब सोच लीजिए।"

"आलिया!" मारे गुस्से के जमील भैया एक दम चुप हो गए, "तुम मुझे चिढा कर खुश होती हो ?" कुछ पल बाद वह बोले तो उनकी आवाज़ मे कम्पन था।

"भई हद है। आप तो ज़रा-ज़रा सी बात पर नाराज़ होते हैं।" वह हँसने लगी। उसने सोचा कि बात यूँ ही हँसी मे टल जाए तो अच्छा हो। जमील भैया तो सख्त संजीदा हो रहे थे।

"आलिया।" उन्होने पुकारा।

"हूँ।" आलिया ने सिर तक न उठाया।

"ज़रा यह दुपट्टा तो ओढ कर दिखाओ।" उनकी आवाज़ भावनाओं के बोझ से भारी हो रही थी।

"क्यो ?"

"बस यही देखना चाहता हूँ कि तुम दुल्हन बन कर कैसी लगोगी।"

"आपकी दुल्हन के लिए भी ऐसा दुपट्टा टाँक दूँगी।"

"मेरी कोई दुल्हन नही।"

"कहिए तो आपकी चार शादियाँ कर लाऊँ।"

"बीवियो का क्या है। वह तो बहुत सी मिल जाएँगी मगर मुझे मेरी दुल्हन कभी न मिलेगी। तुम मेरी शादियाँ करने की जहमत न करो तो बहुत अच्छा है।"

जमील भैया की आँखो मे इतना दर्द था कि वह डूब कर रह गई। उसने दोनो हाथो से दुपट्टे को इस तरह तान लिया जैसे अब सिर पर डाल लेगी। वह इस वक्त तो जमील भैया की फरमाइश ज़रूर पूरी कर देगी। जमील भैया उसे किस शौक से देख रहे थे। फिर एक दम जैसे वह चौंक पडी। उसने दुपट्टे को लपेट कर एक तरफ रख दिया और इधर-उधर देखने लगी। अगर आज उसने यह दुपट्टा ओढ लिया होता तो फिर यही दुपट्टा घूँघट बन जाता और यह घूँघट उसकी आँखो पर पर्दा बन कर पड जाता। इस घर मे एक और बडी चची ज़िन्दगी की राह पर भटकने के लिए जन्म लेती और फिर मुल्क आज़ाद होना रहता।

"तुम यह दुपट्टा ओढना चाहती हो मगर बुज़दिल हो।" जमील भैया फिर आपे से बाहर होने लगे, "जाने तुम किस किस्म की लडकी हो।"

"जमील भैया साहब आप अपनी अम्मा की जिन्दगी से सीख हासिल कीजिए, किसी सीधी-सादी औरत से शादी कर लीजिए और बस वह सब सह जाएगी।"

जमील भैया ने उसे गौर से देखा। शायद वह उसके व्यंग की गहराई को पार कर गए थे, "मुझे नहीं मालूम कि मेरे बाप किस मिट्टी के बने हुए हैं। बहरहाल यह खयाल गलत है कि मुल्क का गम घरो के गमो से मुक्ति दिला सकता है या राजनीति में हिस्सा लेने वाले किसी से मुहब्बत नहीं करते।" वह जाने के लिए उठ खड़े हुए, "तुम उस शख्म के दुख का अन्दाजा लगा ही नहीं सकती जिसका कोई अरमान पूरा न हुआ हो।"

वह ज़रा देर ठहर कर चले गए मगर आलिया ने कोई जवाब न दिया। वह जवाब देना भी न चाहती थी। इस वक़्त जमील भैया के सामने वह किसी ढिठाई को ज़ाहिर करने की ताकत न रखती थी। इस वक्त उसे उनके दुख का एहसास हो रहा था। मगर इन दुखों का इलाज उसके बस मे न था। उसने फिर से दुपट्टा टाँकना चाहा मगर जी न लगा। नाउम्मीदियो के बोलो के बाद का सन्नाटा कितना बोझिल हो रहा था। वह बड़ी देर तक यूँ ही खाली-खाली सी पड़ी इधर-उधर ताकती रही।

शाम को वह जब नीचे उतरी तो करीमन बुआ आँगन मे पानी छिड़क रही थी। जमील भैया लोहे की कुर्सी पर बैठे उँगलियाँ मरोड़ रहे थे और बड़े चचा बरामदे मे टहल-टहल कर जैसे किसी चीज का इन्तज़ार कर रहे थे। उनका चेहरा उतरा हुआ था और आँखे लाल हो रही थी। बड़ी चची सबसे उदासीन तख्त पर बैठी आलू छील रही थी।

"बड़े चचा आपकी तबीयत कैसी है ?" आलिया ने बड़े चचा के करीब जाकर पूछा।

"सिर मे दर्द है बेटी।"

बड़ी चची ने चौंककर अपने शौहर की तरफ देखा, "करीमन बुआ जल्दी से पलँग बिछा दो। बस आँगन ठण्डा हो गया।"

"नास जाए इस दर्द का।" करीमन बुआ बरामदे मे एक तरफ खड़े पलग उठा-उठाकर आँगन मे बिछाने लगी।

बड़े चचा जमील भैया की तरफ से करवट करके लेट गए। आलिया को सख्त कोफ्त हो रही थी कि बेटा पास बैठा है मगर बाप को पूछता तक नहीं। कितना अर्सा हो गया, दोनो के दरम्यान बातचीत बन्द थी।

"तुम आज दो दिन से घर मे क्यो बैठे रहते हो ?" बड़ी चची ने जमील भैया की तरफ देखा।

"नौकरी छूट गई है अम्मा। सरकार के दफ्तर में राजनीतिक लोगो का

गुजारा मुश्किल से ही होता है।"

आलिया ने जलकर जमील भैया को देखा। खूब, इसी बिरते पर अपनी दुलहन की तलाश हो रही है, उसने सोचा और फिर जमील भैया को कटती हुई नज़रो से देखकर मुंह फेर लिया।

"मुस्लिम लीगियो की खपत तो अंग्रेज़ बहादुरी के दफ्तर मे ही होती है।" बडे चचा ने करवट बदले बगैर कहा।

"आपका खयाल बिल्कुल गलत है। असल बात तो यह है कि जब कांग्रेसी सिफारिश कर देते हैं तो फिर नौकरी मिल जाती है।" जमील भैया भी क्यो चुप रहते।

"हूँ।"

बाप-बेटे दोनो ही अपने अपने व्यग की आग मे जलकर खुद ब-खुद बुझ गए और दोनो ने इस तरह मुंह फेर लिया जैसे एक-दूसरे को बात करने के लायक न समझ रहे हों। आलिया ने जमील भैया को मलामत भरी नज़रो से देखा और बडे चचा के पास बैठकर होले होले सिर सहलाने लगी। अम्मा गीले बाल झटकती हुई गुसलखाने से निकल आई और सबको एक जगह जमा देख बडी बेज़ारी से पानदान उठा कर आखिरी तख्त पर बैठ गई।

'अब क्या होगा ?" बडी चची ने जमील भैया से पूछा।

"फिक्र न कीजिए अम्मा। एक बडी अच्छी नौकरी मिलने वाली है। अब सबके ठाठ हो जाएंगे।"

"शकील की फिर कोई खैरियत मालूम हुई या नहीं ?" बडी चची ने अचानक पूछा।

अम्मा आप उसकी फिक्र न किया कीजिए। बस बडे मज़े मे है। यहाँ के सारे दुख भूल गया होगा।" जमील भैया ने फिर बडी सफाई से झूठ बोला। उन्होंने आलिया को सारी हकीकत बता दी थी कि उन्हें शकील का पता तक नहीं मालूम।

"खैर जहाँ रहे खुश रहे।" बडी चची ने ठण्डी आह भरी।

"बडे चचा आपका पलंग बाहर चबूतरे पर बिछवा दूं। खुली फिज़ा मे दर्द कम हो जाएगा।" आलिया ने पूछा। दो विरोधी कट्टर दृष्टिकोण एक जगह जमा हो जाते हैं तो उसे डर लगने लगता है। शकील के फिक्र से वह परेशान थी। शकील भैया मौके पर चूकने का नाम न लेते।

"हाँ वहीं बिस्तर लगवा दो तो बडा अच्छा हो।' बडे चचा बाहर जाने के लिए उठ खडे हुए।

गली मे कांग्रेसी बच्चो का जुलूस निकल रहा था। वे शोर मचा रहे थे,

"झण्डा ऊँचा रहे हमारा," "काग्रेस ज़िन्दाबाद," "गांधी जी ज़िन्दाबाद," "जवाहर-लाल नेहरू ज़िन्दाबाद," हिन्दुस्तान नही बँटेगा," "झण्डा ऊँचा रहे हमारा।"

बडे चचा के होठो पर एक हल्की सी मुस्कराहट फैल गई। उनकी आँखें चमक रही थी। जमील भैया हँस रहे थे और अम्मा जो बडी देर से चुप बैठी छालिया काट रही थी आखिर बोल ही पडी, पहले आजादी तो मिल जाए फिर सब होता रहेगा और फिर यह हिन्दुस्तानी लोग पहले हुकूमत करना भी तो सीख ले।"

सब चुप रहे। किसी ने भी तो अम्मा को जवाब न दिया। बाहर बडे चचा का बिस्तर लग गया था। वह चले गए और जमील भैया फिर उँगलियाँ मरोडने लगे। जुलूस का शोर दरवाज़े के क़रीब होता जा रहा था। छम्मी दीवानो की तरह भद-भद करती अपने कमरे से निकल पडी, "और मेरे दरवाज़े के पास से जुलूस निकला तो ढेले मारूँगी।" वह दरवाज़े की तरफ लपकी।

'खबरदार जो आगे बढी, बैठ जाओ चुपके से।" जमील भैया जोर से गरजे और छम्मी जाने कैसे रौब में आ गई। उसने जमील भैया को घूर कर देखा और बडबडाने लगी, "हुह ! बडे आए बेचारे। आज ही मुस्लिम लीग का जुलूस न निकाला तो मेरा नाम छम्मी नही। जुलूस दरअसल दरवाज़े के पास से गुज़र गया तो जमील भैया कपडे बदल कर बाहर निकल गए। छम्मी जैसे उनके जाने का इन्तज़ार कर रही थी। जमील भैया के जाते ही बुर्का ओढ कर खुद भी बाहर निकल गई। आलिया उसे रोक न सकी।

"ज़माने-ज़माने की बात है। पहले तो जब बीवियाँ घरो से निकलती तो दो-दो, चार-चार मामाएँ साथ रहती।" करीमन बुआ छम्मी के यूँ बाहर निकल जाने पर हमेशा कुढा करती।

आलिया ने किवाडो की ओट से झाँक कर बाहर देखा। बडे चचा अपने साफ सुथरे बिस्तर पर पाँव फैलाए शान्ति से लेटे थे और इसरार मियाँ उनके करीब आराम-कुर्सी पर बैठे बातें कर रहे थे। सामने पीपल के दरख्त से चाँद की रोशनी उभरती मालूम हो रही थी। आलिया का जी चाह रहा था कि वह भी बाहर चबूतरे पर जा बैठे, इसरार मियाँ की बातें सुने, उन्हें पास से देखे। वह किस तरह बोलते हैं, कैसी बातें करते हैं। वह जो उसके दादा के बदनियती का नतीजा हैं। उनकी आँखो मे कौन सी कैफियत होगी। अपने-आप को पहचानने के बाद कौन से प्रभाव उनके चेहरे पर थरथरा रहे होंगे। वह क्या सोचते होंगे और जब वह यह सब कुछ मालूम कर लेगी तो एक बार उन्हे चुपके से 'इसरार चचा' कहेगी और वह भी उसे बडे चचा की तरह प्रिय हैं। वह उनकी बेहद इज्जत करती है। और ज़िन्दगी में एक बार उनकी खिदमत करना चाहती है और वह उनके दिल से उन तमाम तीरों

को खीच कर फेंक देगी जो करीमन बुआ ने गडा किए हैं। वह उन्हे समझाएगी, उनकी किसी बात का बुरा न मानें। वह किसी की दुश्मन नही। वह किसी को कुछ नही कहती। यह जालिम नमक उनसे सब कुछ कहलवाता है।

"आलिया बेटी एक पान खिलाओ।" बडी चची ने फर्माइश की तो वह तख्त पर आ बैठी और पानदान खोलकर पान बनाने लगी। बाहर चबूतरे पर जाकर नही बैठ सकती। उसे अजीब सी बेबसी का अनुभव हो रहा था।

मोहल्ले की मस्जिद से अजान की आवाज आ रही थी। उसने श्रद्धा से साडी का पल्लू सिर पर डाल लिया। करीमन बुआ जल्दी जल्दी लालटेनें जला रही थी।

"अल्लाह शकील को खैर से रखियो।" बडी चची दोनो हाथ फैलाकर दुआ करने लगी। वह उस वक्त कितनी दुखी और ममता से भरपूर नजर आ रही थी। अँधेरा अब तक घिर आया था मगर छम्मी अभी तक न लौटी थी। आलिया को ख्वामख्वाह फिक्र हो रही थी। वैसे घर मे और किसी ने न पूछा कि वह है कहाँ।

जरा देर बाद छम्मी आयी तो मुँह लाल हो रहा था। सांस फूली हुई थी, "ऐ बजिया मैंने ऐसा शान्दार जुलूस तैयार कराया है कि आप देखती रह जाएंगी। बस जरा देर मे इधर से गुजरने वाला है। अजरा की मां ने झण्डा बनाया, ताहिरा की मां ने एक बोतल मिट्टी का तेल दिया था। मैंने मशालें तैयार की। सारे मोहल्ले के लडको को जमा कर दिया है। हाय बडे चचा देखेंगे तो आंखें खुल जाएंगी। मैंने सारे बच्चो को समझा दिया है कि मेरे दरवाजे पर आकर खूब नारे लगाएँ।" छम्मी एक ही सांस में सब कुछ कह गई, फिर बुर्का फेंककर जुलूस के इन्तजार मे टहलने लगी।

खुशियो का कोई पैमाना उस वक्त छम्मी की खुशी को नही नाप सकता था। आलिया ने उसे कोई जवाब न दिया। वह परेशान हो रही थी कहीं यह नन्हे मुन्ने लडको का जुलूस घर मे फसाद न करा दे। उसने यही बेहतर समझा कि ऊपर अपने कमरे मे खिसक ले। दूर से बच्चो के नारे की आवाज आ रही थी।

बडे कमरे से गुजरते हुए उसने देखा कि नजमा फूफी अपने साफ सुथरे बिस्तर पर लेटी कोई मोटी सी किताब पढ रही थी। गर्मियों मे बडी छत पर नजमा फूफी का डेरा जमता था इसलिए वह अपने कमरे के पास वाली छोटी छत पर गुजारा कर लेती। इतनी काबिल नजमा फूफी का और उसका साथ कैसे हो सकता था।

जुलूस करीब आ गया। बच्चे बडे जोर-जोर से नारे लगा रहे थे, 'मुस्लिम लीग जिन्दाबाद, कायदे आजम जिन्दाबाद, बनके रहेगा पाकिस्तान, धोतियाराज नहीं होगा, टोपीराज नही होगा।" आलिया छत की मुंडेर से झुककर गली मे झांकने

लगी। दो बड़े लड़के मशालें उठाए सबसे आगे थे।

"नहीं देखने दिया जालिम ने।" छम्मी भागती हुई आई और आलिया के बराबर खड़े होकर नीचे गली मे आधी लटक गई।

"हाय क्या शान्दार जुलूस है। वह आपके बड़े चचा ने मुझे दरवाजे से जुलूस देखने नही दिया। जलकर खाक हो गए हजरत।"

"छम्मी जरा सरक कर झांको। कही जुलूस के साथ तुम्हारी लाश भी न निकल जाए।" आलिया ने छम्मी को अपनी तरफ खींचा।

"हाय बजिया मैंने मशालें कैसी अच्छी बनाई हैं। हैं न?" छम्मी ने कहा, "आज आपके बड़े चचा जलते-जलते खाक हो जाएंगे।"

"छम्मी कैसी बातें करती हो। बस पता चल गया कि लीगी-वीगी कुछ नही हो। बड़े चचा को जलाने के लिए यह स्वांग रचा है।"

"वाह हूं क्यो नही।" वह शर्मिंदा सी हो गई और आलिया के गले में हाथ डालकर झूल गई।

जुलूस गली के मोड पर गायब हो गया तो थकी-थकी सी छम्मी आलिया के बिस्तर पर लेटकर लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगी और आलिया खामोशी से टहलती रही। अब कितने दिन यूं सबको जलाने के लिए छम्मी बैठी रहेगी। आखिर तो एक दिन अपने घर चली ही जाएगी। जाने वह घर भी उसका घर बनेगा या नहीं! छम्मी को वहां मुहब्बत मिलेगी या नही। क्या वहां भी सबसे बदले चुकाने के तरीके ईजाद करके जिन्दगी गुजारेगी।

"आलिया बेटा और छम्मी बेटा दोनो खाना खाने नीचे आओ।" करीमन बुआ की आवाज आई।

तैंतीस

वह पास हो गई थी मगर अब पूरा साल बर्बाद जा रहा था। वह बी० टी० करने अलीगढ न जा सकी। बस इतनी सी बात थी कि वह अपने कलम से लिखकर मामूं से ज्यादा रुपयो की फर्माइश न कर सकती थी। जब अब्बा से बात हुई तो उन्होने बड़े लाड़ से कहा था कि अपने मामूं को लिख दो ज्यादा रुपये भिजवा देंगे। उस वक्त आलिया ने सख्ती से इन्कार कर दिया था। उसने यह तक कह दिया था कि वह उनको खत लिखना पसंद न करती थी। बस

उसी दिन से अम्मा ने मुँह फुला लिया था। अपने भाई और अँग्रेज़ भावज के लिए अपनी एकलौती औलाद के दिल मे ऐसे ख़यालात पाकर उनके तन व बदन मे आग लग गई थी। उन्होने आलिया से बात करना छोड दिया था। और इस तरह एक कीमती साल ज़िद्द की बाज़ी पर हार दिया था।

"अरे उर्दू लेकर बी० ए० कर लिया, यही गनीमत है और कर भी क्या सकती थी गरीब।" एक दिन नजमा फूफी बोल ही पडी। शायद उन्हें यकीन होगा कि अब तालीम का सिलसिला ख़त्म। आलिया ने सुनकर मुँह फेर लिया। वह उसके अब्बा की बहिन थी। वह उनके मुँह न लगना चाहती थी। अगर उसके हालात न खराब होते तो एम० ए० भी उर्दू मे ही करती। उर्दू जो उसकी मादरी ज़बान थी। उसके चहेते चचा की ज़बान थी। बडे चचा तो अंग्रेज़ी ज़बान तक से नफरत करते थे। उन्हीं के कहने से उसने बी० ए० मे उर्दू भी ली थी। उसे खुद अंग्रेज़ी ज़बान से नफरत न थी और न वह नालायक थी। वह तो अंग्रेज़ी मे ए० ए० करके नजमा फूफी के मुँह पर अपनी डिग्री मार सकती थी। मगर यह सब कुछ करने के लिए उसे बडे चचा का हुक्म टालना पडता।

सितम्बर की बीस तारीख छम्मी के निकाह के लिए तय हो चुकी थी। अम्मा के लाख मना करने के बावजूद आलिया न छम्मी का सारा जहेज़ तैयार किया था। इसरार मियाँ ने बाज़ार के पचासो चक्कर लगाने के बाद छम्मी के जहेज़ के बर्तन खरीदे थे। नक्काशादार लोटा, कटोरा जग, ओगालदान, पानदान, दो पतीलियाँ और छ प्लेटें जब बक्स मे रखी जा रही थी तो करीमन बुआ देर तक सिर पकडे बैठी रहीं। उनकी आँखो को यह ज़माना भी देखना था कि उनके स्वर्गीय मालिक की पोती को ऐसा जहेज दिया जाए। अच्छे ज़मान मे तो ऐसा जहेज़ बाँदियों की बेटियो को देकर रुखसत किया गया था। बस इतना ही फर्क था कि वह बर्तन नक्काशीदार न होते थे।

जब बडी चची बर्तन बन्द करके उठी तो करीमन बुआ को बेतहाशा रोना आ गया। बडी चची ने उन्हे समझा-बुझा कर बडी मुश्किल से चुप कराया। क्या फायदा था जो छम्मी को पहले से खबर हो जाए। सब उससे डरे हुए थे। बडे चचा की लगाई हुई शादी से कहीं इन्कार न कर दे।

बडी चची को शादी के दिन का सख्त इन्तज़ार था। शादी मे शरीक होने के लिए साजिदा आपा भी आ रही थी। साजिदा आपा की शादी को कितना अर्सा गुज़र गया था। मगर बडी चची घर के धन्धो से छूट कर एक दिन के लिय भी अपनी बेटी के घर न जा सकी। साजिदा आपा शुरू-शुरू में तो घर आती रही फिर जैसे सबकी तरफ से सब्र करके बैठ रहीं। यहाँ साजिदा आपा के लिए कौन पडवा जा

रहा था। आलिया ने शायद दो-चार दफा ही उनका जिक्र सुना था। फिर मैके में कौन जोड़े-वागे उनके लिए रखे हुए थे जिन्हें लेकर खुशी खुशी रुखसत होती। इधर उनके मियाँ भी यहां आने से कतराते। जब से कांग्रेस छोडा तो बड़े चचा भी छूट गए थे। उनके सामने किस मुंह से आते।

ज्यो-ज्यो शादी के दिन करीब आ रहे थे आलिया को यह फिक्र सता रही थी कि छम्मी को वह क्या दे। अम्मा ने तो अपने जहेज़ के कपडो से गला हुआ जोड़ा निकालकर दिया था। इस तरह वह अपने फर्ज़ से मुक्त हो गई थी। उन्होने आलिया से मशविरा तक न किया था। आलिया को अपनी अम्मा की इस ज्यादती का शिद्दत से एहसास था। इधर बड़ी चची भी आलिया से कुछ कम परेशान न थी। जमील भैया को रोजाना टहोके देती रहती कि कुछ रुपये का इन्तजाम करके छम्मी के लिए कपडा खरीद लाओ। जमील भैया उनकी बातें सुनकर चुप ही रहते। आजकल ट्यूशनो से घर का कुछ काम चल रहा था। नौकरी वगैरह के लिए वह कोई खास फिक्रमन्द भी नज़र न आते थे। मुस्लिमलीग के कार्यकर्ताओं ने उन्हें दुनिया की फ़िक्रों से मुक्ति सी दिला रखी थी। मगर जमील भैया के सिलसिले मे बड़ी चची भी हार मानने वाली न थी। जब भी वह घर मे आते पीछे पड जाती, "तुमको कब मिलेगी नौकरी। मँहगाई ने खा लिया है। घर मे धेला नही। फिर छम्मी की शादी के दिन करीब हैं। क्या तुम्हारी मुस्लिम लीग ने कुछ देने का वायदा कर रखा है।"

"सब कुछ हो जाएगा। अम्मा आप परेशान न होइये।" जमील भैया शर्मिदा हो जाते, "मैं कोई अब्बा की तरह हूँ जो अपने घर को तबाह होने देता रहूँगा।"

"अब्बा को ताने मत दो। कुछ करके दिखाओ।"

"अम्मा मैं तो सब कुछ करने को तैयार हूँ मगर कोई करने नही देता।" वह आलिया की तरफ देखने लगते तो वह मुंह फेर लेती।

"कौन नही करने देता। मैं उसका कलेजा खा लूंगी। वही न तुम्हारी मुस्लिम लीग।"

"नही अम्मा।" जमील भैया जोर से हँसते तो आलिया अपने कमरे मे पनाह लेने चली जाती। इतनी फिज़ूल बातें सुनकर वह उकता जाती।

इधर कुछ दिनो से छम्मी बिल्कुल खामोश रहने लगी थी। जाने उसे क्या हो गया था। कोई बात करता तो इस तरह जवाब देती जैसे बार गुज़र रहा है। खाना खाने के लिए अपने कमरें से निकलती और फिर जा छिपती। बहुत होता तो ग्रामोफोन पर रिकर्ड बजाने लगती। उसके चेहरे से सारी ताज़गी गायब हो चुकी थी। आलिया उसे यूँ चुपचाप देख कर मारे फिक्र के घुली जाती। कही छम्मी को अपनी शादी के सिलसिले मे शुबहा न हो गया हो। कहीं वह बड़े चचा की इज्जत बर्बाद न

कर दे। यह छम्मी है, साजिदा आपा नहीं हो सकती है जो यूँ ही चुप हो। वह अपनी इतनी सी उम्र मे इतना बोल चुकी है कि थक गई होगी और क्या पता वह मजूर की जुदाई मे उदास हो। मगर छम्मी मजूर से मुहब्बत कब करती थी। वह तो उसे सिर्फ सहारा समझती थी। उसकी मुहब्बत से लुत्फ लेती थी। आलिया छम्मी के सिलसिले मे सोच-सोचकर थकी जाती। लाख उसके साथ सिर खपाती मगर छम्मी खी-खी करके टाल देती।

बड़े चचा दिल्ली गए हुए थे। बैठक सूनी पड़ी थी। जमील भैया भी आज सुबह से गायब थे। छम्मी गूँगी बन गई थी और यह बादलो से लदा-फँदा दिन बेहद उदास हो रहा था। कोई काम न था जिससे आलिया अपना दिल बहला लेती। छम्मी का जहेज तैयार हो चुका था। बड़े चचा की लाइब्रेरी की किताबें पढते-पढते थक चुकी थी और अब आज उसकी समझ मे न आ रहा था कि क्या करे। यह रेंगता हुआ दिन किसी तरह तो कटे और कुछ नही तो छम्मी ही उसे छेड़े, उससे लड़े, शोर करे। यह वीरान खामोशी किसी तरह तो दूर हो।

आलिया छम्मी के कमरे की दहलीज पर जाकर खड़ी हो गई, "ऊपर नही चलती मेरे कमरे मे।" उसने पूछा।

'मुझे नींद आ रही है बजिया।" छम्मी ने करवट बदल ली। उसने अपनी मसहरी से उठने की जहमत तक न की।

ऊपर तीन घन्टे की बारिश ने जैसे सारी वीरानी और उदासी को धो सा दिया था। शाम को जब जमील भैया घर आए तो वह भी खुश नजर आ रहे थे। आलिया ने सोचा कि आज यह हजरत खुश क्यो हैं। कौन सा कारनामा अन्जाम देकर आए हैं जो आज उसे देखने के बाद भी सूरत पर मातम न था।

"अम्मा हैदराबाद से जफर चचा का खत आया है और मजे की बात यह है कि मेरे नाम है।" वह लोहे की कुर्सी पर बैठकर सबकी तरफ़ देख कर हँसे, "भई यह उन्हें मेरी शिकायतें कौन लिखता है। मेरी बीमारी की किसने इत्तिला दी है।"

"तुम्हारी नजमा फूफी से खत-वो-किताबत है। उन्होने लिखा है और तो किसी को पूछते भी नही।" बड़ी चची ने कहा।

"मेरी शिकायतें लिखने की वजह से खतोकिताबत होगी। भला मेरा कोई क्या बिगाड़ेगा।" छम्मी अपने कमरे की दहलीज पर बैठी-बैठी बोली।

"क्या लिखा है उन्होने।" अम्मा ने पूछा।

"उन्होने लिखा है कि हैदराबाद चले आओ। यहाँ किसी चीज की कमी नही। यह हिन्दोस्तान, पाकिस्तान का क़िस्सा छोड़ो ! यहाँ तो बना-बनाया पाकिस्तान है।" जमील भैया हँसने लगे।

"तो फिर चले जाओ न। जहाँ रुपया है वहीं सब कुछ है।" अम्मा ने सलाह दी।

"फिर मैं सब कुछ भूल जाऊँगा। आप में से कोई न याद आएगा। वहाँ के पानी का यही असर है।"

"बस यूँ ही बकवास करता रहता है।" बड़ी चची को गुस्सा आ गया, "फिर यहाँ कोई नौकरी करके दिखा न।"

"नौकरी तो मिल गई है अम्मा। बस अब जाने वाला हूँ।" जमील भैया ने सूचना दी।

"कहाँ ?" मारे उल्लास के बड़ी चची की आँखें खुल गई।

"फौज मे भर्ती होने की दरख्वास्त दी थी सो मजूर हो गई है और अब बन्दा आपको ढेरो रुपये भेजा करेगा।"

"फौज मे ?" बड़ी चची की आँखें इस तरह स्थिर हो गई जैसे वह मर गई हो, "अरे तू बौला गया है। जमील फिर मुझे जहर क्यो नही दे देता।"

"भई हद करती हैं अम्मा। हजारो आदमी फौज मे जाते हैं तो क्या सब मर जाते हैं और फिर जनाब अगर हिटलर का मुकाबला न किया तो अंग्रेजो से बदतर साबित होगा। उसकी गुलामी झेलना आसान न होगी।" जमील भैया ने समझाना चाहा मगर बड़ी चची बेबसी की तस्वीर बनी बैठी थी। आलिया का जी चाहा कि जमील भैया को चीख-चीखकर कमीना कहे, जालिम कहे। यह अपनी बेरोजगारी दूर करने नही जा रहे हैं और यह खुद नही जानते कि वह खुद अपनी अम्मा के लिए कितने बड़े हिटलर हैं।

"अब अपना नाम कटा लो जमील मियाँ।" करीमन बुआ ने बड़े अनुरोध से देखा तो जमील भैया हँस पड़े, "करीमन बुआ मैं तो सिर्फ तुम्हारी खातिर जा रहा हूँ। तुम्हारा बावर्चीखाना आबाद हो जाएगा और तुम गुजरे हुए जमाने को भूल जाओगी।"

बड़ी चची रोने के करीब हो रही थी, "जग पर जाने के बजाय तुम भी शकील की तरह भाग जाते तो फिर मुझे सब्र आ जाता।" वह रो पड़ी।

"मेरी अम्मा।" जमील भैया उनसे लिपट गए, 'अम्मा कोई मैं बन्दूक उठा कर लड़ूँगा' भई मैं तो कलम से लड़ूँगा। मैं तो सिर्फ हिटलर के खिलाफ प्रोपेगेन्डा करूँगा और अपनी अम्मा की खिदमत करूँगा।"

'तुम लड़ोगे नही!" बड़ी चची ने शक की निगाहो से देखा।

"कतई नही अम्मा। मैं तो दूसरे ही काम करूँगा।"

"कैसे काम ?" नजमा फूफी ने पूछा। वह जाने कैसे इस वक्त सब के बीच

आ बैठी थी।

"मैं फौज मे जा रहा हूँ।" जमील भैया फौरन बोले।

"बहुत अच्छी बात है। अब इतनी तालीम पर और कोई नौकरी भी कैसे मिलती।" नजमा फूफी ने इत्मीनान की साँस ली।

"बिल्कुल दुरुस्त। वह कहिए कि औरतों मे तालीम न के बराबर है वरना आप भी बेकार फिरती।"

नजमा फूफी उल्टे पैरों वापस हो ली। भला इन अनपढो के कौन मुंह लगे। इस घर मे इन बेचारी की काबलियत की ज़रा भी तो इज्जत नही। आलिया को हँसी आ रही थी।

"मेरे सिर पर हाथ रखकर कसम खाओ कि लडोगे नही।" बडी चची ने जमील भैया का हाथ अपने सिर पर रख लिया।

"इस प्यारे सिर की कसम अम्मा।" जमील भैया ने कहकहा लगाया तो सब हँस दिए और छम्मी जो इतनी देर से चुप बैठी थी एक दम अपने कमरे मे चली गई। उसका मुंह लाल हो रहा था।

चौंतीस

जमील भैया चले गए। जाने से पहले रात गए आलिया से रुख़सत होने उसके कमरे मे आए थे और बडी देर तक उसके पास कुर्सी पर बैठे पाँव हिलाते रहे थे। दोनो खामोश थे और बाहर बारिश हुई चली जा रही थी। आलिया को अपनी कमज़ोरी पर गुस्सा आ रहा था। आखिर वह क्यो नही बोलती। वह इतनी खामोशी के साथ किस सोग का एलान कर रही है। वक्त गुज़रता जा रहा था। बारिश अब हल्की हो गई थी। खामोशी और जमील भैया की मौजूदगी से उसका दम घुटा जा रहा था, "आप सुबह जा रहे हैं?" आलिया ने बडी हिम्मत करके पूछा।

"हाँ जा तो रहा हूँ, फिर?" जमील भैया ने सख्त अक्खडपन से जवाब दिया और इधर-उधर देखने लगे। जाने वह अपनी किस भावना का गला घोंट रहे थे जो उनकी आँखें मारे दर्द के चीखती हुई मालूम हो रही थी।

"पूछना कोई गुनाह तो नही।" आलिया ने सिर झुका लिया। जमील भैया के जवाब से दिल पर चोट लगी थी।

"तुम मुझे याद करोगी आलिया ?" जमील भैया ने जैसे झपट कर उसके हाथ पकड़ लिए थे।

"नहीं, मैं आपको किसलिए याद करूंगी ? आप मेरे लिए मेरे चचेरे भाई से ज्यादा कुछ नहीं हैं। मैं आपको और कुछ समझना भी नहीं चाहती। सच्ची बात तो यह है कि मुझे मर्द की मुहब्बत पर एतबार ही नहीं है। और फर्ज कर लीजिए कि कभी एतबार किया भी तो वह आप जैसा नहीं होगा। अब्बा और बड़े चचा जैसा भी नहीं होगा। पराई आग मे जलने वाले अपनी घरेलू आग से हमेशा बेखबर रहते हैं। बहरहाल मैं जिसे चाहूँगी उसके लिए कुछ नहीं बता सकती कि कैसा होगा। आपसे यह सब इसलिए कह रही हूँ कि आप वहाँ इतनी दूर रहकर मुझे याद न करें। घर से दूर रह कर और सबको छोडकर उनकी यादें बहुत तकलीफदेह हो जाती हैं। तो आप आज ही इस तकलीफ़ से छुटकारा पा लें। जहाँ तक घर और बड़ी चची का सवाल है तो वह आपके लिए कोई हैसियत नहीं रखती। बड़ी चची और कितने दिन जियेंगी ?" आलिया की आँखो में आँसू आ गए थे। जाने क्यों वह उस वक्त जी भर कर रोना चाहती थी।

"तुमने बहुत अच्छा किया जो सब कुछ कह दिया। अगर तुम न भी कहती तो मुझे मालूम था। वैसे मैं तुमको यह बता दूँ कि अम्मा मुझे बहुत अजीज हैं और जहाँ तक पराई आग का सवाल है तो वह पराई नहीं मेरी अपनी आग है। इस आग में जलकर मैं जरा भी जलन नहीं महसूस करूँगा। काश इस आग को और भड़काने वाला कोई साथी भी होता। तुममे और छम्मी में फर्क ही क्या है ? खैर खुदा हाफिज।" जमील भैया उठ खड़े हुए, "मगर एक बात तो बताओ कि क्या बदले की कायल हो। मेरा खयाल है कि इन्सान जो कुछ करता है उसका बदला जरूर चाहता है तो मुझे भी जाने से पहले बदला चाहिए। शायद यही बदला वहाँ इतनी दूर मेरे लिए राहत का सामान बन सके।" जमील भैया ने उसकी आँखों में आँखें डाल दीं, वह काँपने लगी।

"कैसा बदला ?" वह जानते-बूझते अनजान बन रही थी।

जरा देर के लिए खामोशी छा गई। जमील भैया उसे देख रहे थे। नजरों मे तलखी थी। कुछ खो जाने का दुख था। कुछ पा लेने की तमन्ना थी।

"मैं आपको क्या बदला दे सकती हूँ ?" उसने जमील भैया को चौंकाया था। अब वह उनकी नजरों का मुकाबला न कर पा रही थी।

"बस यही।" जमील भैया ने आगे बढ़कर अपने बाजुओ मे जकड़ लिया। वह उसे पागलो की तरह चूम रहे थे। उसे अपने सीने मे जज्ब कर रहे थे और वह उनका विरोध भी न कर सकी थी। वह नफरत से उन्हे धक्का भी न दे सकी थी।

उसे नहीं मालूम था कि यह सब इतने अचानक कैसे हो गया था और वह यह सब कुछ कैसे कुबूल कर रही थी। और फिर जमील भैया जैसे उसे बिस्तर पर फेंककर चले गए थे और वह मारे बेबसी के रोने लगी थी। भला वह किस बात का बदला चुकाने को राजी हो गई थी। वह खुद की मलामत करते-करते न जाने कब सो गई।

जमील भैया सुबह सुबह चले गए थे। वह तो उस वक्त सोकर भी न उठी थी। छम्मी उसे जगाकर शिकायत करने आई थी, "बजिया आप सोती रहीं। आपने तो जमील भैया को रुखसत न किया। अच्छा होता कि अभी कुछ दिन और न जाते।"

"क्यों ?" बिस्तर से उठते हुए उसने चौंक कर छम्मी को देखा। यह इसे किन दिनों का इन्तजार है।

"बस न जाने क्यों !" वह गडबडा गई, "बेचारी बडी चची सख्त रंजीदा हो रही हैं। इस औलाद का भी कोई सुख नहीं मिलता। क्यों पालती हैं माएँ। मैं सबसे अच्छी जो खुदबखुद पल गई। मेरे लिए कोई दुखी नहीं।" छम्मी ने ठण्डी साँस भरी।

"बेचारी, बडी चची को कोई सुख न मिला।" आलिया ने कहा और छम्मी का हाथ पकड़ कर नीचे उतर आई। शकील खो गया। जमील भैया जग पर चले गए। बडी चची मई-जून की प्यासी चिडिया की तरह नजर आ रही थी।

'अल्लाह उसे खैरियत से रखे। घर में पैसा आएगा। बडी भाभी आपको सुख मिलेगा।" अम्मा बडी चची को समझा रही थीं और वह खामोश बैठी ठण्डी साँसें भर रही थी।

"जमाने जमाने की बात है। आज मरहूम मालिक की औलादें नौकरियों की तलाश में कहाँ-कहाँ जा रही हैं। कभी वह जमाना भी था कि दौलत अपने कदमों चलकर आती थी और कोई उठा कर रखने वाला न था।" करीमन बुआ की नजरें जाने क्या तलाश कर रही थी।

दोपहर में बडी चची ने कपडों का एक बंडल आलिया को थमा दिया, 'यह कपडे जमील छम्मी के लिए दे गया है और कह गया है कि आलिया से सिलवा लेना। सबका खयाल तो करता है मगर इस बुरे वक्त ने उसे दूर जाने पर मजबूर कर दिया। अगर कोई अच्छी सी नौकरी मिल जाती तो फिर वह क्यों जाता।"

"खुदा उन्हें खैरियत से वापस लाएगा। बडी चची आप परेशान न हों।" वह कपडे लेकर अपने कमरे में चली गई। उसका जी चाह रहा था कि छम्मी को यह कपडे दिखा दे और उसे बताए कि जमील भैया उसे दे गए हैं। मगर किस लिए

वह इसका क्या जवाब देगी। उसे छम्मी से डर लगता था। शादी में सिर्फ पन्द्रह दिन रह गए थे।

शाम को बड़े चचा दिल्ली से श्रा गए। जब उन्हें मालूम हुआ कि जमील भैया फौज मे चले गए हैं तो एकदम बिलबिला उठे, 'अरे इस नालायक से और क्या हो सकता था। अंग्रेजो की मदद करके ही तो पाकिस्तान बनाएगा। यह सब अंग्रेजो के पिट्ठू हैं।"

"तो क्या अल्लाह मरे काफिरो का साथ देता ?" अम्मा ने फौरन जवाब दिया और बड़े चचा सिर झुका कर रह गए।

"आप कपड़े वगैरह तो बदल डालिए बड़े चचा। सफर से थक गये होगे। ज़रा देर आराम कर लीजिए।" आलिया ने बातो का रुख बदलना चाहा।

बड़े चचा कपड़े बदलने के बाद बड़ी चची के कमरे मे मसहरी पर लेट गए। शायद वह इतने थक गए थे कि बैठक तक जाने को भी जी न चाहता था। करीमन श्रा ने सिरहाने रखी हुई तिपाई पर लालटेन रख दी। आलिया उनके पास बैठकर सिर दबाने लगी।

"मुझे डर लगता है। यह लीगी मुल्क को बाँट न दें।" बड़े चचा ने दुख से कहा।

"हाँ डर तो मुझे भी है।" उसने बड़े चचा का दिल रखने के लिए हाँ मे हाँ मिलाई।

"तुमने देखा जमील फौज मे चला गया। यह मेरी औलाद है।"

''जमील भैया फौज मे न जाते तो फिर इन पेटो की भट्ठी को कैसे सर्द किया जाता।'

"मज़हर का खत आया ?"

' "इधर कुछ दिनो से नहीं आया।" वह एकदम रंजीदा हो गई। उसे अब्बा के खत का कितना इन्तज़ार था। वह साड़ी के पल्लू को इस तरह मरोड़ने लगी कि फर से हो गया, "बहुत पुरानी हो गई।" वह शर्मिन्दा होकर हँसी।

"अरे हाँ तुम्हारे कपड़े तो अब बहुत पुराने हो गए हैं। नये कपड़े बने भी तो नहीं।" वह भी शर्मिन्दगी की हँसी हँसे।

"अभी तो मेरे पास कई जोड़े रखे हैं।" वह सफा झूठ बोल गई। जाने क्यों वह बड़े चचा को एक पल के लिए भी शर्मिन्दा देखने को तैयार न थी।

बड़े चचा जाने क्या सोचने लगे और फिर उन्होने इस तरह आँखें बन्द कर ली जैसे सो रहे हो। आलिया दबे कदमो बरामदे मे आ गई। कमरे में कितनी जल्दी रात हो गई थी। मगर बाहर तो अभी धुँधलका भी न हुआ था। करीमन बुआ

लालटेनों की चिमनियां साफ कर रही थी और छम्मी आंगन मे कुर्सी पर बैठी दस-बारह साल के एक भिखारी लडके को बासी रोटी खिला रही थी, "यह बहुत अच्छा गाता है बजिया।" आलिया को देखते ही छम्मी ने परिचय कराया, 'बस अब गाओ।" छम्मी ने हुक्म दिया। कमीज के दामन से हाथ मुंह साफ करने के बाद लडका आंखें ब द करके गाने लगा—

चिड़ियों ने बाग उजाडा,
पत्ता-पत्ता चुग डारा

आलिया को उसकी आवाज़ बडी अच्छी लगी। वह बडे शौक से सुन रही थी। मगर छम्मी को जाने क्या हुआ कि अचानक सिसकियां भरती अपने कमरे में भाग गई और लडका घबडा कर सब की तरफ देखने लगा। फिर भीख की पोटली समेट डरा डरा सा भाग निकला। बस आलिया परेशान खडी रह गई। छम्मी दीवानी ने उस गाने से कौन से रोने के पहलू तलाश कर लिए मगर उसने देखा कि बडी चची भी तो आंसू पोंछ रही थीं।

"यह जमाने भी आ गए कि भिखारी लडके बीबियों के पास बैठकर गाने गाएं।" दालान के मेहराब के कुन्डे मे लालटेन लटकाते हुए करीमन बुआ बडबडा रही थी।

"करीमन बुआ एक प्याली चाय बना लाओ। पढते-पढते सिर दुखने लगा है।" खिडकी से झांककर नजमा फूफी ने हुक्म दिया और करीमन बुआ चूल्हे की तरफ सरक गयी।

आलिया ने नजमा फूफी की तरफ देखा और मुंह फेर लिया। हर वक्त अंग्रेजी की मोटी मोटी किताबें पढ पढकर नजमा फूफी की आंखों में कैसे हल्के पड गये हैं। आखिर यह किस लिए पढती हैं। यह सब किस काम आता है। यह सब इसलिए कि सही अंग्रेजी बोलने पर फख्र कर सकें।

अब अंधेरा छाने लगा था और आंगन मे पडी हुई लोहे की कुर्सी उस अंधेरे में डूबी महसूस हो रही थी। जमील भैया का सफर खतम हुआ होगा कि नही। आलिया को बार बार खयाल आ रहा था।

"करीमन बुआ प्रकाश बाबू आए हैं। बडे भैय्या को बता दो।" बैठक से इसरार मियां की आवाज आई।

"उन्हें कोई आराम भी नही करने देता। वह सो रहे हैं। वह इस वक्त नही आएंगे।" करीमन बुआ ने झल्ला कर जवाब दिया। मगर बडे चचा तो जैसे इसरार मियां की आवाज़ के इन्तज़ार मे थे।

पंतीस

शादी से चार दिन पहले साजिदा श्रापा अपने चार श्रदद तले-ऊपर बच्चों के साथ श्रा गई । बडी चची मुद्दत से बिछडी हुई बेटी को गले लगा कर देर तक रोती रही श्रौर फिर सारी मोटी-मोटी खबरें सुना डाली। शकील का भाग जाना, जमील भैया का फौज मे जाना श्रौर छम्मी से शादी की खबर सुनाना । इतनी बहुत सी दर्दनाक खबरो को सुन कर साजिदा श्रापा का रग पीला हो गया था श्रौर भाइयो की जुदाई के ग़म में वह देर तक सिर न्यौढाए बैठी रही।

श्रालिया ने श्रम्मा की ज़बानी सुना था कि साजिदा श्रापा खूबसूरत हैं मगर श्रब वह देख रही थी कि हुस्न का कही दूर-दूर तक निशान न था। हड्डियों का ढेर था जिस पर सफेद खाल मढी हुई थी । वह श्रालिया से इस क़दर प्यार से पेश श्रा रही थी कि उसे बार-बार श्रपनी तहमीना श्रापा याद श्रा रही थी।

साजिदा श्रापा के श्राने पर नजमा फूफी को भी उनसे मिलने के लिए नीचे उतरना पडा । वह उनसे गले मिलने के बजाय श्रलग ही खडी रहीं, "तुम्हारी सेहत बहुत खराब हो रही है, साजिदा ।" नजमा फूफी ने कहा।

"बच्चो ने तग कर रखा है नजमा फूफी। ऊपर से घर के ढेरो काम । दो-दो भैंसों की देख-भाल ।"

"तो तुम्हारे मियाँ हल चलाते हैं ?" नजमा फूफी ने हिकारत से पूछा।

"जी हाँ नजमा फूफी ।"

"कितना पढे हैं ?"

"दस दर्जा नजमा फूफी ।" साजिदा श्रापा ने फख्र से भरा जवाब दिया।

"बस फिर ठीक ही है । इतना पढ कर श्रौर क्या कर सकता है बेचारा श्रौर, साजिदा तुम्हारे बच्चे बेहद शरारती हैं । इन्हें खूब पढाना । कम-श्रज़-कम इगलिश मे एम० ए० ज़रूर कराना ।"

"ज़रूर पढाऊँगी नजमा फूफी," साजिदा श्रापा का मुँह लटक गया श्रौर नजमा फूफी ऊपर चली गई । श्रालिया तख्त पर बैठी सारी बात चीत सुन-सुन कर कुढती रह गई ।

जब से साजिदा श्रापा श्राई थी करीमन बुश्रा बहुत खुश नज़र श्रा रही थीं। बच्चो ने सारे घर मे तहलका मचा रखा था श्रौर करीमन बुश्रा निहाल हो-होकर एक के गदे हाथ धुलातीं तो दूसरे का मुँह श्रौर तीसरे को बहलाने के लिए रोटी का टुकडा पकडा देती । शाम को बडे चचा घर श्राए तो बेटी से बडे चाव से बातें करने लगे । तभी छम्मी को एक दम जोश श्रा गया । सारी सजीदगी डूब गई। वह बच्चों को जमा करके नारे लगाने लगी, "मुस्लिमलीग जिन्दाबाद, बन के रहेगा पाकिस्तान, धोतिया राज नही चलेगा । चुटिया राज नहीं चलेगा ।"

बच्चे छम्मी के गिर्द जमा होकर साथ दे रहे थे। बड़े चचा चुपके से बैठके में सरक गए।

"अल्लाह की मार है इन मनहूस नारों पर। इधर आओ तुम सब। खबरदार जो शोर मचाया। शादी का घर और यह नारे?" साजिदा आपा ने अपने बच्चों को खींच-खींचकर बिठाना शरू कर दिया।

"भई किसकी शादी हो रही है।" छम्मी शोक पूर्ण हँसी हँस रही थी।

'तुम्हारी और किसकी।" अम्मा ने जल कर जवाब दिया और सबने घबरा कर छम्मी की तरफ देखा। आलिया को अपने रोंगटे खड़े होते हुए महसूस हो रहे थे। छम्मी ने सबको हैरान होते नजरो से देखा और सिर झुकाए अपने कमरे में चली गई। बड़ी चची ने इत्मीनान की लम्बी सांस ली। छम्मी से कैसी कैसी उम्मीदें लगी थीं। मगर उसने तो चूं भी नही की। सबकी आशकाओं को ठुकराकर सिर झुका दिया।

"लड़का जात कैसी ही शरारती क्यो न हो मगर होती अल्लाह मियाँ की गाय है। जिधर चाहो हँका दो। चूं नहीं करती।" बड़ी चची आँसू पोंछने लगीं। जरा देर बाद आलिया छम्मी के कमरे में गई तो वह अपने बिस्तर पर जाने किन खयालों में गुम थी।

"आपने पहले क्यो नही बताया था बजिया?" छम्मी न भीगी-भीगी आँखो से उसकी तरफ देखा, "खैर कोई बात नही। जब से साजिदा आपा आई हैं उनके रूप मे मैं अपने आपको देख रही थी।"

"अरे बाबा मैंने तो सिर्फ इसलिए नही बताया कि तुम शरमा कर कमरे में छिप रहोगी, मुझे ऐसी शरम से चिढ है। आज तुम्हारे मेहदी लगेगी। तुम माइयों बिठाई जाओगी। बस आज से शरम शुरू कर दो।"

"अच्छा।" छम्मी उसे वहशियो की तरह ताक रही थी। उसके चेहरे पर जरा भी शरम न थी। वह उठ कर कमरे की दहलीज मे उकड़ूँ बैठ गई और आलिया को तहमीना आपा याद आ गईं। ढेरों खयालों ने उसे जकड कर रख दिया। अरी छम्मी तू भी कही बावली न हो जाना। उसने सोचा कि इन दिनो वह छम्मी का साया बन जाएगी। वह छम्मी को कुछ भी न करने देगी। शाम दबे क़दमो चली आ रही थी। छम्मी लुटी पिटी वीरान बैठी थी। सब व्यस्त से। बच्चे शोर मचा रहे थे। करीमन बुआ वजीराबाद की मेहदी पीस रही थी। मगर आलिया को महसूस हो रहा था कि हर तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। सीता ने बनवास में शायद ऐसी ही शामे गुजारी होगी। हाय यह मेहदी की सिल से एक छोटा सा गुलाबी हाथ क्यों उभर रहा है। आलिया ने घबरा कर अपना मुँह छिपा लिया और फिर छम्मी को लिपटा कर इस तरह बैठ गई जैसे वह हाथ छम्मी को खीचे लिए जा रहा हो।

शाम की नमाज़ के बाद इसरार मियाँ मीरासिनों को बुला लाए। आँगन में उनकी करख्त और खटकती हुई आवाज़ें सुनाई दे रही थी। आलिया छम्मी के पास से उठ कर आँगन मे आ गई। अतीत की तल्ख यादों का अभिशाप उस पर प्रकट हो कर गुज़र चुका था।

"दुल्हन की बहन जीवे, दुल्हन की चची जीवे।" आलिया को देख कर मीरासिनो ने दुआएँ देनी शुरू कर दी।

चौकी पर बैठी हुई साजिदा आपा थाल मे मेहदी सजा रही थी। अम्मा और बड़ी चची दलान से चीज़े सरका-सरका कर मँगनी की दरी बिछवा रही थीं और साजिदा आपा के बच्चे मेहदी ले भागने की ताक में इर्द-गिर्द मंडला रहे थे। आलिया थोडी देर तक खड़ी तमाशा देखती रही और छम्मी के पास आ गई। वह किस कदर अजनबियो की तरह मसहरी से पाँव लटकाए बैठी थी।

"बजिया जब मैं चली जाऊँगी तो इस कमरे मे कौन रहेगा ?" छम्मी ने उसे देखते ही पूछा।

"मैं रहूँगी। रोज इसे साफ भी कर दिया करूँगी। और फिर जब तुम आया करोगी तो तुम्हारा कमरा छोड कर भाग जाया करूँगी।"

छम्मी फौरन उठी और खूंटी पर लटका हुआ मैला जम्पर उतार कर मसहरियाँ और मेज़-कुर्सी साफ करने लगी। आलिया खामोश बैठी देखती रही। इन्सान को अपनी जगह से कितनी मुहब्बत होती है। मगर उसका तो कोई ठिकाना ही नहीं वह किसी जगह को अपना न कह सकती थी।

सफ़ाई करने के बाद छम्मी बैठ गई और दोनो हाथों से मुंह छिपा कर सिसकियाँ भरने लगी। आलिया ने उसे लिपटा लिया, "यह क्या बेवकूफी है छम्मी। एक दिन सब की शादी होती है।"

"ठीक है आलिया बजिया। मेरी शादी हो जाएगी और किसी को खबर भी न होगी।" छम्मी बराबर रोये जा रही थी।

"तुमने मुझसे कहा होता तो मज़हर के सिल सिले मे बात करती। मगर उसने भी तो पैगाम नही दिया छम्मी। फिर वह बेमुरव्वत तुमको छोड कर जग पर चला गया। अब उसे क्यो याद करती हो छम्मी।"

छम्मी ने उसे कुछ ऐसी नज़रो से देखा कि आलिया पहचान न सकी। उन नज़रो के सामने उसका इल्म और समझ जवाब दे गई, "क्या बात है छम्मी ?" उसने उलझ कर पूछा।

"कुछ नही बजिया।" आँसू पोछ कर वह हंसने लगी।

"यह गैस का हंडा अन्दर ले जाओ करीमन बुआ और अगर सबने चाय पी

सो हो तो ..।" बैठक से इसरार मियाँ की आवाज़ आई तो आलिया का जी दुख गया। आज तो करीमन बुआ काहे को चाय देने लगीं।

"कभी तो चाय को भूल जाया करो इसरार मियाँ। आज एक गिलास पानी पी लो।" करीमन बुआ जवाब देते हुए हस रही थी और मीरासिनें उनका साथ द रही थीं। आलिया का जी चाहा सब के मुँह नोच ले।

बड़ी चची, साजिदा आपा और अम्मा मेहदी का थाल और पीला जोड़ा लिए अन्दर आ गईं तो छम्मी ने सिर झुका कर दुपट्टे मे मुँह छिपा लिया। रस्म के मुताबिक यह जोड़ा और मेहदी ससुराल वालो को लेकर आना चाहिए था लेकिन ऐसा न हुआ, कौन आता उतनी दूर से। सदर दरवाज़े पर भिखारी लड़के के गले की आवाज़ आ रही थी,

चिड़यों ने बाग उजाड़ा।

"भाग जा मनहूस कहीं का, भाग जा।" करीमन बुआ दहाड़ रही थी।

चादर की आड़ मे छिप कर छम्मी ने पीला जोड़ा पहन लिया और साजिदा आपा ने उसके हाथो में मेहदी लगाकर अपने आँसू पोंछ लिए।

हाथी झूलें ससुर दरवजवा।

मीरासिनो ने गाना शुरू कर दिया और आलिया को खयाल आया कि उसने साजिदा आपा से छम्मी की ससुराल के लिए तो कुछ पूछा ही नहीं।

मेहदी लगा कर सब बाहर चली गईं। छम्मी ने फिर भी नज़रें न उठाईं।

"जमील भैया तुम्हारे जहेज़ के लिए एक बड़ा खूबसूरत जोड़ा बना गए हैं।" आलिया ने सूचना दी।

"अच्छा।" छम्मी ने उसकी तरफ देखा और मेहदी कुरेदने लगी।

अटरिया पर मोरी भौजी दिया तो जलाओ।

मीरासिनें बहुत जोश से गाए चली जा रही थी। रस्म सूनी सूनी देख कर मीरासिनें माँझे के गीतो के बजाय ग्रामोफ़ोन रेकर्डों के चलते हुए गाने गाने लगीं।

"छम्मी तुम मुझे अपनी ससुराल बुलाओगी न?" आलिया उसे बहलाने के लिए बराबर बातें किये जा रही थी।

देखिए किस हुस्न से पोशीदा ग़म का राज़ है
तीर मेरे दिल मे है पर्दे मे तीरन्दाज़ है

मीरासिनें अब कव्वाली पर उधार खा बैठी थी।

"मुझे क्या मालूम।" छम्मी ने आहिस्ता से जवाब दिया।

"अच्छा तुम मुझे नही बुलाओगी, बस मालूम हो गई तुम्हारी मुहब्बत।"

ग्रालिया वनकर रुठी मगर छम्मी जैसे कुछ सुन ही न रहा हो।

ग्राने वाले जल्द ग्राग्रो ग्राखिरी ग्रावाज है।

मीरासिनें गाते गाते चुप हो गईं।

छम्मी यूं ही खाली खाली नजरों से कमरे में इधर-उधर देखे जा रही थी, "ग्राने वाले जल्द ग्राग्रो ग्राखिरी ग्रावाज है।" देखते-देखते छम्मी गुनगुनाने लगी।

"तुम्हें यह कव्वाली इतनी पसंद क्यों है छम्मी ?" ग्रालिया ने जैसे बफर कर पूछा।

"वाह, तो मैं किसी को बुला थोड़े रही हूं।" छम्मी ने भी गुस्से से जवाब दिया। ग्रालिया का जी चाहा कि छम्मी को पीट कर रख दे ग्रौर ग्राने वाला न ग्राए तो ग्रफीम खा लो पगली, मर जाग्रो ग्रौर उसे दुनिया के सीने पर दर्राने के लिए छोड़ कर कब्र में जा रहो।

बड़ी देर तक वह दोनों एक-दूसरे से न बोलीं ग्रौर जब मीरासिनें गा बजा-कर चली गईं तो छम्मी ग्रपने बिस्तर पर लेट गई, "ग्राप ऊपर कमरे में जाकर सो रहें। ख्वामख्वाह इतनी देर से बैठी हैं।" ग्रांखें बन्द किये-किये छम्मी ने ग्रक्खड़पन से कहा।

"मैं तो यहीं तुम्हारे पास लेटूंगी।" ग्रालिया ने उसे प्यार से लिपटा लिया। खामख्वाह छम्मी से यूं बात की। वैसे ही बेचारी का दिल टूटा हुग्रा है।

परसों बारात ग्रा रही थी मगर छम्मी के ग्रब्बा ग्रभी तक नहीं ग्राए थे। इधर बड़े चचा को ग्रपने कामों से फुर्सत न मिलती। करीमन बुग्रा सख्त फिक्रमन्द हो रही थीं, "ग्रब क्या इसरार मियाँ बारात की ग्रावभगत करेंगे। ग्रगर उन्हें पता चल गया कि यह कौन हैं तो क्या कहेंगे दिल में। ग्राखिर तो उन्हें मालूम ही हो जाएगा न।" वह बराबर बड़बड़ाए जा रही थीं। ग्रालिया उनकी बातें सुन-सुनकर जल रही थी। ग्रौर ग्रगर उन्हें न मालूम हो तो तुम बता देना करीमन बुग्रा। तुम भी इसरार मियाँ का ढका हो। सुबह से बड़ी गहमागहमी थी। शाम को चार बजे रात ग्रा रही थी। ग्रालिया ने करीमन बुग्रा के साथ मिल कर बैठक साफ करा दी तब। दूल्हा को बिठाने के लिए तख्त की चाँदनी ग्रौर गावतकिए के गिलाफ बदल दिए गए थे। बाहर इसरार मियाँ इन्तजाम करते फिर रहे थे। स्कूल के मैदान को एक दिन के लिए माँग लिया गया था। शामियाने लग चुके थे ग्रौर पुलाव, जर्दे की देगें खड़क रही थीं।

दो बजे के करीब ग्रालिया थककर ग्रम्मा के पास तख्त पर टिक गई।

ग्राया री हरियाला बन्ना।

मीरासिन बड़े जोर से गा रही थीं, ग्रम्मा ग्रौर बड़ी चची मेहमान ग्रौरतों

को पान, तम्बाकू खिला रही थीं। साजिदा आपा अपने बच्चों को नए कपड़े पहना रही थी और करीमन बुआ आज रोटी, हांडी की फ़िक्र से आज़ाद हो कर इधर-उधर चहकती फिर रही थी, "मालिक के ज़माने में तो दस-दस दिन तक घर से बाहर मुजरा होता था। सबसे अच्छी रंडियां आती थीं। घर मे महीना-महीना यह मीरासिनें ढोल लेकर बैठ जाती थीं और जब घर से जाती तो उनकी झोलियां रुपये से भरी होतीं, वाह क्या ज़माने थे।"

इतनी गहमागहमी के बावजूद आलिया को लोहे की कुर्सी बड़ी अकेली और उदास लग रही थी। वह आज भी पहले की तरह आंगन मे पड़ी थी। साजिदा आपा के बच्चों ने नंगे पांव रख-रख कर उसे मिट्टी से लेस दिया था। आलिया जब छम्मी के पास से जाने लगी तो न जाने किस भावनावश कुर्सी के पास खड़ी हो गई। साड़ी के पल्लू से उसकी मिट्टी पोंछी और चली गई।

"अब्बा नहीं आए बजिया?" छम्मी ने उसे देखते ही सवाल किया और मेंहदी से रचा हुआ हाथ उसके ऊपर रख दिया।

"नहीं आए छम्मी, वह तो बीमार हैं। खाने वग़ैरह के लिए दो सौ रुपये और भिजवा दिए हैं।" आलिया झूठ बोल रही थी।

"शायद वह बेचारे मौत की बीमारी में मुब्तिला होंगे।" छम्मी ने नफ़रत से हर तरफ़ देखा और सिर झुका लिया।

आलिया खामोश रही। भला वह कहती भी क्या। झूठ के पांव कब होते हैं। जफ़र चचा अगर आ ही जाते तो क्या बिगड़ जाता। मगर वह क्यों आते। उके आराम मे खलल पड़ जाता। वह अपने हैदराबाद के स्वर्ग से क्यों निकलते।

बारात आने में अब थोड़ी देर रह गई थी। उसने छम्मी को ग़ौर से देखा। वह शरमाई हुई बैठी थी। छम्मी के चेहरे से उसे किसी क़िस्म का खतरा नज़र न आ रहा था। वह उठ खड़ी हुई क्योंकि उसे भी तैयार होना था।

"करीमन बुआ ज़रा मेरी बात सुन लो—करीमन बुआ।" इसरार मियां की आवाज़ आ रही थी मगर करीमन बुआ तो बहरी हो गई थी, वरना क्या आज के शुभ दिन भी वह इसरार मियां के काम न करती। आलिया ने हिम्मत करके इसरार मियां को जवाब दे ही दिया।

"यह कपड़े छम्मी बेटा के लिए खरीदे हैं। उन्हें मेरी तरफ से दे देना, और कुछ न कर सका।" इसरार मियां की आवाज़ आंसुओं में डूबी हुई थी और बढ़ा हुआ हाथ कांप रहा था। करीमन बुआ के कान फौरन चौकन्ने हो गये, "यह आपका काम नहीं आलिया बेटा।" उन्होंने आलिया के हाथ से बन्डल ले लिया।

अम्मा और बड़ी चची कपड़े देख रही थीं, "वाह कितने अच्छे कपड़े हैं। यह

इसरार मियाँ ने छम्मी को दिए हैं।" आलिया ने गर्व से कहा।

"इसरार मियाँ ने ? वाह खूब रही। पराए माल पर या-हुसैन।" करीमन बुआ चुलबुला उठी, "ज़माने-ज़माने की बात है। इसरार मियाँ इस घर की बेटियों को जोड़े दें। मालकिन को खुदा जन्नत नसीब करे। इसरार मियाँ की माँ को अपने पुराने कपड़े दे दिया करती थी।"

"चलो अब तो कपड़े आ ही गए। यह जोड़ा बड़े भैया की तरफ़ से हो जाएगा। आखिर तो उन्हीं की दुकान से पैसे काट-काट कर बनाया होगा।" अम्मा ने फ़ौरन फ़ैसला कर लिया।

"ठीक है छोटी दुल्हन।" करीमन बुआ ने इत्मीनान की साँस ली।

आलिया ने कपड़ों को इस तरह उठाया जैसे वह कोई बड़ी पवित्र चीज़ छू रही हो। उसका जी चाह रहा था कि ज़ोर-ज़ोर से चीखे। सबको बता दे कि यह कपड़े इसरार मियाँ ने भिजवाए हैं। यह उनकी मुहब्बत और शराफ़त का तोहफ़ा हैं। मगर वह कुछ भी न कह सकी। उसने धीरे से कपड़े पलँग पर रख दिए और अपने कमरे में चली गई।

नजमा फूफी अपने कमरे में बैठी मेकअप कर रही थी। उस वक्त ज़रदोज़ी से बसी हुई साड़ी पहने थी और सख्त बेज़ार नज़र आ रही थीं। अब तक उन्होंने किसी काम में हिस्सा न लिया था मगर आज छम्मी को रुखसत करने के लिए जैसे मजबूर हो गई हों। साड़ी बदल कर आलिया फिर नीचे आ गई। धूप पीली पड़ कर दीवारों पर चढ़ गई थी। सब बारात के इन्तज़ार में थे। वह छम्मी के पास जाकर बैठ गई।

बारात आने का शोर मचा तो छम्मी का रंग फ़क़ पड़ गया।

"बजिया।" जैसे किसी चीज़ से डर कर उसने पुकारा।

"क्या है छम्मी ?" उसने छम्मी को लिपटा लिया।

"कुछ नहीं, आप मेरे पास से हटियेगा नहीं। जी घबराता है।"

"मैं कहीं नहीं जा रही हूँ छम्मी।" वह काँपती हुई छम्मी को लिपटाए बैठी थी। मगर उसे क्या हो रहा था। वह तो खुद भी काँप रही थी।

अम्मा, बड़ी चची, साजिदा आपा और करीमन बुआ सब कमरे में आ गए। करीमन बुआ के हाथों में थाल था, जिसमें ससुराल से आया हुआ निकाह का जोड़ा, ज़ेवर और सेहरा सजा हुआ था।

"सब लोग पर्दा कर लो। निकाह के लिए आ रहे हैं।" इसरार मियाँ की आवाज़ आई तो करीमन बुआ ने चादर तान कर पर्दा कर दिया और सब उसके पीछे छिप कर बैठ गए, "आज के दिन तो बड़े मियाँ घर पर रहते। अपनी भतीजी का निकाह तो पढ़वाते। खुदा की कुदरत। इसरार मियाँ निकाह पढ़वाने आएँ। अल्लाह

नसीब अच्छा करना।" करीमन बुआ मारे दुख के रो रही थी।

छम्मी ने इतनी आसानी से 'हूँ' कर दी कि आलिया हैरान रह गई। उसे तो ऐसा महसूस हो रहा था कि कयामत तक बराती यूँ ही दरवाज़े पर पड़े रहेंगे। 'हूँ' सुनने वाले गवाहों पर से सदियाँ गुज़र जाएंगी और चादर के इस पर्दे को आंधियाँ भी न हटा पाएंगी।

गवाह वापस चले गए। मीरासिनें मुबारकबाद गा रही थीं, "हो मुबारक तेरी ससुराल से आया सेहरा।" और आलिया को ऐसा महसूस हो रहा था कि गाने की आवाज़ें कहीं कोसों दूर से आ रही हैं।

साजिदा आपा ने छम्मी को लाल जोड़ा पहनाकर ज़रा सी देर में दुल्हन बना दिया। आलिया अलग बैठी रही जैसे उसे फालिज मार गया हो।

जब सब लोग कमरे से चले गए तो आलिया ने छम्मी की घूंघट उलट दी। क्या सचमुच वह इतनी खूबसूरत थी, "शादी होनी थी सो हो गई। खेल खतम, पैसा हज़म।" छम्मी ने आँखें खोलकर धीरे से कहा। आलिया कुछ न बोली। यह भी कैसी कैफियत होती है, बाज वक्त कहने सुनने के लिए कुछ रह ही नहीं जाता।

आलिया खामोशी से बाहर चली गई। गैस की दूधिया रोशनी में छम्मी का ससुराल वालियाँ चाँदनी पर बड़े ठस्से से बैठी थीं। पान पर पान खाए जा रहे थे, बार-बार तम्बाकू फाँकी जा रही थी और उनके बीच में नजमा फूफी अपने वक्त की हीरोइन बनी बैठी थीं, "कितना पढ़ा है दूल्हा?" उन्होंने पूछा।

"आठ दर्जे। उसे पढ़ने की क्या ज़रूरत है। बीस बीघे ज़मीन है। दो भैंस हैं। अल्लाह का दिया सब कुछ है।" छम्मी की सास ने गुरूर से बताया।

"ठीक है, छम्मी के लिए और क्या चाहिए।" नजमा फूफी उन देहाती अनपढ़ औरतों को बड़ी हिकारत से देख देखकर मुस्करा रही थीं।

एक मीरासिन छम्मी को गोद में उठाकर बाहर ले आई तो ससुराल वालियों में हड़बोंग मच गई। सब छम्मी पर टूटी पड़ रही थीं। बाहर से दूल्हा अपने शहबाले के साथ आ गया। उलटे हुए सेहरे से उसका ठेठ देहाती पक्के रंग का चेहरा साफ नज़र आ रहा था। आलिया का जी चाहा कि अपना मुँह छिपा ले। यह छम्मी का दूल्हा है! छम्मी जो पहले जमील भैया को चाहती थी और मज़हर को पसंद करके मारे फख्र के फूली न समाती थी। बदले में उसे बस यही कुछ मिला है।

मीरासिनें 'आरसी मुसहफ की रस्म'[1] अदा करने लगीं तो छम्मी ने इस तरह उनको देखा कि मीरासिनें दाँतों तले उँगली दबाकर रह गईं। खाने के बाद छम्मी

---

[1] पवित्र कुरान की बगल दर्पण रखकर दूल्हे को दुल्हन का चेहरा दिखाने की रस्म।

की रुखसती का सामान शुरू हो गया। गली मे खडे हुए तांगों पर जहेज का सामान लादा जा रहा था और मीरासिनें बड़े करुण स्वर से गा रही थी।

माइयत दीनो महल-दुमहले, हमको दिया परदेस रे। लखिया बाबुल मोरे।

बडी चची और करीमन बुआ रो रही थीं, अम्मा सिर झुकाए जाने क्या सोच रही थीं। और नजमा फूफी बडी बेजारी से जाहिलो की महफिल के खात्मे का इन्तजार कर रही थीं।

"हाय वजिया, बडे चचा को इतना अच्छा दूल्हा कहां से मिल गया?" छम्मी ने आलिया की गोद म सिर रखकर धीरे धीरे सिसकते हुए कहा। आलिया ने उसे लिपटा कर कुछ कहना चाहा मगर उसे मोहलत न मिली और वह इतना अच्छा दूल्हा मीरासिनो के कहकहो के बीच मे छम्मी को उठा कर पर्दा लगे तांगे पर बिठा आया। आलिया ने अपनी चीख गले मे घोंट ली। रावन सीता को ले गया। जमील भैया! काश तुम राम ही बन सकते।

छत्तीस

छम्मी के जाने के बाद घर बिल्कुल वीरान बन गया था। मुस्लिम लीग और कांग्रेस पार्टियां इस घर से रुखसत हो गई थी। कोई किसी को न छेडता। सब ठहरे हुए तालाब की तरह शान्त थे। बडे चचा मजे से घर मे आते और चले जाते। अब बैठक के दरवाजे बन्द करने की कोई जरूरत न पडती। कमबख्त काफिर कांग्रेसियों के खिलाफ कोई नारा न गूंजता। बडी चची सरेशाम ही बरामदे के पर्दे गिरा कर तख्त पर बैठ रहतीं। मिट्टी की कुडाली में कोयले दहकते रहते। अम्मा और बडी चची हाथ सेंक-सेंक कर जाने क्या सोचा करतीं। कोई छम्मी की बात न करता। किसी को उसके खत का इन्तजार न था। छम्मी जैसे कभी इस घर मे रही ही न थी।

आजकल घर की हालत अच्छी हो रही थी। जमील भैया की तनख्वाह ने चूल्हे मे जरा सी जान डाल दी थी और करीमन बुआ मारे व्यस्तता के गुजरे हुए वक्त को कम ही याद करती। उन्हें तो यह दुख खा रहा था कि बडे चचा अपनी हाडी अलग पकवाते थे। उन्होने बडी सफ़ाई से इन्कार कर दिया था कि वह जमील की कमाई का एक पैसा भी अपने ऊपर खर्च न होने देंगे। जमील ने यह नौकरी करके अंग्रेजों का साथ दिया था। मुझे पता नहीं था कि जमील, मेरी औलाद मेरी

दुश्मन होगी।" बड़े चचा ने कई बार आलिया से कहा था और वह चचा की बेकरारी देख देखकर हैरान रह गई थी। वह घन्टों सोचती रहती कि इन्सान के उद्देश्यों में इतनी धार कहाँ से आ जाती है कि सारे रिश्ते-नाता को काट कर फेंक देती है। बड़े चचा न किसी के बाप हैं, न चचा, न शौहर। इसीलिए छम्मी रावन के साथ लंका चली गई। साजिदा आपा अपने खान्दान की सारी बड़ाई और प्रतिष्ठा को गोबर में मिलाकर उपले थाप रही थी। शकील भाग गया और जमील भैया ममता की आग भड़का कर फासिज्म की आग बुझाने चले गए।

सख्त सर्दी हो रही थी। आलिया छत पर धूप में पड़ी या तो बड़े चचा की लाइब्रेरी से निकाली हुई किताबों से जी बहलाती थी या फिर आवारा रूह की तरह भटकती फिरती। अम्मा अपने आप में मगन रहती। मामूँ के लम्बे-चौड़े मुहब्बत में डूबे हुए खत आते रहते। वह उन खतों को न पढ़ती। उसने अम्मा से अगले साल अलीगढ़ जाने की बात भी न की थी फिर भी फैसला कर लिया था कि ज़रूर जाएगी। कभी-कभी अब्बा का खत भी आ जाता जिसे पढ़कर वह नई ज़िन्दगी महसूस करती और बड़ी बेकरारी से उनकी रिहाई के दिन गिनने लगती।

खाली वक्त कैसे कटे? वह किससे बोले, किससे बात करे? आलिया कभी-कभी तो इतनी उलझन महसूस करती कि रो पड़ती। काश नजमा फूफी ही उसे बात करने के लायक समझ लें, मगर उसने तो बी० ए० में उर्दू ही ली थी। इसलिए वह बिल्कुल अनपढ़ थी उनकी नज़र में।

रात भर हल्की हल्की बारिश होती रही और बादल इतने ज़ोर से गरजते रहे कि दिल दहल कर रह जाता। थोड़ी देर तक ओले पड़ते रहे और जब खिड़की के बन्द पटों से आकर टकराते तो ऐसा मालूम होता कि कोई ढेले मार रहा हो। बारिश हल्की पड़ने पर वह सो गई मगर बड़ी उचाट सी नींद में उसने जमील भैया को ख्वाब में देखा। वह ओलों से सिर बचाते जाने कहाँ भागे जा रहे थे। आलिया ने उन्हें ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ दी तो रुक गए।

"मैं तुमसे नहीं बोलता आलिया।" और फिर उसकी आँख खुल गई। बादल बड़े ज़ोर से गरज रहे थे। खुदा करे वह खैरियत से वापस आएँ। बड़ी चची की ममता ठण्डी रहे। आलिया ने बिलख कर दुआ की मगर वह यह सोचने से कतरा रही थी कि जमील भैया उसके ख्वाबों में कहाँ से आ धमके।

सुबह बेहद सर्द थी। रात की बारिश से छत की मुंडेरें और आँगन अब तक गीला हो रहा था। उसने खिड़की के भिड़े हुए पट खोल दिए। कहीं ज़ोर से बैनों की आवाज़ आ रही थी। कौन मर गया? वह बिस्तर से उठ पड़ी। उन दिनों तो मोहल्ले के कई आदमी जंग में मारे गए थे मगर यहाँ इतनी दूर रोने की आवाज़ें न

आई थीं। बस यूं ही खबर सुनी थी मगर इधर कुछ दिनों से तो सारा मोहल्ला इस घर से कट गया था। छम्मी जब मोहल्ले में घूम फिर कर आती तो सारी खबरें सुना दिया करती। लाम पर कौन खत्म हो गया, किसकी बेटी की शादी हो रही है, किसके यहाँ लड़का पैदा हुआ, कौन अपनी पार्टी के पीछे जेल गया और कौन सा बूढ़ा मुद्दतों की बीमारी झेलकर खत्म हो गया। वह जल्दी से नीचे चली गई। आँगन में पड़ी हुई लोहे की कुर्सी रात की बारिश से धुलकर चमक रही थी और क्यारी के पौदे ओलों की चोट से दबकर ज़मीन पर झुक गए थे।

वह चुपचाप तख्त पर जा बैठी जहाँ अम्मा और बड़ी चची रोने की आवाज़ों पर कान लगाए खामोशी से बैठी चाय पी रही थी। करीमन बुआ पराठे पकाते हुए अपने घर की सलामती की दुआएं कर रही थीं।

"कौन मर गया ?" बड़ी चची ने जैसे अपने आपसे सवाल किया।

सदर दरवाज़ा ज़ोर से खुला और कमर पर झोआ रखे भगिन आँगन में आ गई, "वह थानेदार के साहबज़ादे मज़ूर मियाँ जंग पर मारे गए। हाय कैसे कड़ियल जवान थे। माँ अपनी जान पीटे लेती है।" आँगन में खड़े-खड़े उसने इत्तिला दी और फिर काम में जुट गई।

"मुझे लेना मैं चली।" बड़ी चची ने सीने पर हाथ रख लिए और आगे को झुक गई, "मेरा जमील ।"

"वह ठीक होंगे बड़ी चची। वह लाम पर नहीं जाएंगे। उनका दूसरा काम है।" आलिया ने बड़ी चची को थाम लिया। पराठा तवे पर जल रहा था और करीमन बुआ चची को पानी पिला रही थीं।

"ज़रा हिम्मत से काम लीजिए बड़ी भाभी। अल्लाह चाहेगा तो जमील खैरियत से होगा। कलकत्ता यहाँ से कौन सा दूर होगा। इसरार मियाँ को भेजकर खैरियत मालूम करा लें।" अम्मा भी समझा रही थी मगर बड़ी चची की बेकरारी कम न हो रही थी।

"क्या मज़ूर मर गया ?" बड़े चचा ने पूछा। वह आज देर से सोकर उठे थे। उनका मुँह लाल हो रहा था, "यह अंग्रेज़ बहादुर अपने फायदे के लिए हमारे खून से होली खेल रहे हैं।"

अम्मा की त्योरियों पर बल पड़ गए थे। मगर उस वक्त वह कुछ न बोलीं। बड़ी चची अब अपने को सँभाल कर बैठ गई थी। रोने की आवाज़ें मद्धिम पड़ते-पड़ते खो गई थीं।

"और सुना है कि जैनब बेगम का लड़का जर्मनों की कैद में है।" भगिन ने जाते-जाते दूसरी सूचना दी।

बड चचा चोकी पर बैठे हाथ मुंह धो रहे थे। आलिया ने देखा उनके हाथ-काँप रहे हैं। वह घबराकर गई, "आपकी तबियत तो ठीक है बड़े चचा ?" उसने करीब जा कर कहा।

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" वह खिसियानी हँसी हंसने लगे।

"इतने दिन से जमील का खत भी तो नही आया।" बडी चची की आवाज़ काँप रही थी।

सर्दियो की ठिठुरी हुई धूप दीवारो से उतर कर आँगन मे फैल रही थी। नजमा फूफी कालेज जाने के लिए नीचे उतरीं तो करीमन बुआ ने खबर सुनाई, "नजमा बेटा थानेदार के साहबज़ादे भी जग पर मारे गए। अल्लाह जमील मियाँ को खैरियत से रखे।"

"इस घर की कैसी बदनसीबी है कि इतनी तालीम भी न हासिल कर सके जो आराम से रोज़ी कमा लेते।" नजमा फूफी के चेहरे से फिक्र जाहिर हो रहा था।

"जी हाँ और आप तो आला तालीम हासिल करके बडे मार्के सर कर रही हैं।" जाने कैसे आलिया ने अंग्रेजी मे बात करने की जुर्रत की थी।

"ओफ्फोह! तुमसे किसने कहा है कि ग़लत-सलत अंग्रेज़ी बोला करो। घर मे बैठे बैठे बी० ए० कर लिया तो समझा बस काबिल हो गए।" नजमा फूफी ने बुरी तरह डपटा। उनके लहजे में इतनी हतक थी कि आलिया का जी चाहा कि यहीं जमीन मे दफन हो जाए।

"नजमा बी ज्यादा बातें न बनाओ। किसकी दौलत से काबिल बनी हो। मेरा और बडी भाभी का गला काट-काट कर यह बदला दे रही हो। मैं मजबूर नही हूँ जो तुम्हारी बात सुनूंगी। मेरा शौहर जिन्दा है। तुम जैसो को तो...।" अम्मा कुछ कहते-कहते रुक गईं।

"उफ! उफ! मैं आप लोगो के मुँह नही लगना चाहती। वह फारसी वाले सईदी साहब भी कह गए हैं कि जाहिलो से इस तरह भागो जैसे तीर कमान से ..." और वह नाश्ता छोड़ कर कालेज जाने के लिए बाहर निकल गई।

"करीमन बुआ बडी भाभी से कहो कि परेशान न हो। मैं जमील की खैरियत मालूम कर आऊँगा। अगर सब लोग नाश्ता कर चुके हों तो. ।" बैठक से इसरार मियाँ की कमज़ोर सी आवाज़ आई।

"तुम सबको परेशान होने दो इसरार मियाँ। तुम अपना नाश्ता कर लो।" करीमन बुआ चाय की प्याली और घी चुपड़ी रोटी लेकर इस तरह झपटीं जैसे इसरार मियाँ के मुँह पर दे मारेंगी।

"वह दो न खैरियत मालूम कर आएँ। और क्या काम है इस निखट्टू का।"

अम्मा ने करीमन बुआ से कहा मगर वह बडी खामोशी से जूठे बर्तन समेटती रहीं।

मजूर के घर से बैन की आवाजें फिर बुलन्द होने लगी थी। बडी चची घुटी घुटी सी बैठी थीं। गली से कोई फकीर सदा लगाता गुजरा तो उन्होंने पानदान की पुल्हिया से एक पैसा निकाल कर करीमन बुआ की तरफ बढा दिया। दोपहर को जमील भैया का खत और मनीआर्डर आ गया। बडी चची खुशी से कांप रही थी और थम-थम कर आने वाली बैन की आवाजें भी अब उतनी दर्द भरी न मालूम होती थीं। बडी चची बराबर जमील भैया की बातें किए जा रही थी और करीमन बुआ मजार पर चढाने के लिए मैदा बना रही थी। खुदा ने उनकी मिन्नत पूरी की थी। जमील भैया का खत आ गया था।

सैंतीस

फरवरी के खुशगवार दिन बहार दे रहे थे मगर बडे चचा का चेहरा क्यों पीला हो रहा था। उनके हाथ-पाँव सूखते जा रहे थे और पेट बडा होता जा रहा था। गाधी जी ने जेल में इक्कीस दिन का व्रत रखा था। आजादी के लिए उन्होंने जान की बाजी लगा दी थी और इधर बडे चचा ने आराम करना छोड दिया था। जाने कहां मारे-मारे फिरा करते या फिर बैठक मे दोस्तो का हुजूम होता, नित नई स्कीमें तैयार होती रहती। आलिया बडे चचा की हालत देख-देख कर कुढती रहती। अल्लाह यह बडे चचा किस मिट्टी से बने हुए हैं। कभी जमील भैया की खैरियत नही पूछी। शकील मरता है या जीता है, उन्हे कोई देखवर नही। बडी चची गमो की आग मे सुलग रही हैं मगर वह पलट कर नही देखत। गाधी के मर जाने का खौफ सता रहा है। आलिया कई दिन से सोच रही थी कि बडे चचा को समझाएगी, उन्हें उनकी सेहत की खराबी की इत्तिला देगी।

रात को जब सब लोग बैठक को खाली कर गए तो बडे चचा के पास जा बैठी। लालटेन की पीली-पीली रोशनी मे उनका चेहरा और भी कमजोर लग रहा था, "तुमको पता है न गाधी जी ने जेल मे व्रत रखा है। मुझे मालूम है कि वह कभी नही मरेंगे—मगर. .।"

"हां बडे चचा मालूम है। अखबार मे पढा था मगर....।" वह घिघिया गई।

"अगर खुदा न खास्ता उन्हें कुछ हो गया तो अंग्रेज बहादुर अपनी सारी मक्कारी भूल जाएंगे। एक इतना बडा तूफान आएगा जो अंग्रेजों को जग से भी ज्यादा

मँहगा पड़ेगा।" बड़े चचा मारे जोश के बैठ गए।

"ठीक है बड़े चचा।" उसने कमज़ोर सी आवाज़ में कहा। अब वह उन्हें कैसे समझाए। उनसे क्या कहे। वह हौले-हौले उनका सिर सहलाने लगी, "आप अपनी सेहत की फ़िक्र नहीं करते बड़े चचा। हम सब आपही पर हैं।"

"वह मैंने इसरार मियाँ से कह दिया है कि मेरे लिए हकीम महमूद साहब से कुछ माजूमें बनवा लाएँ बस दो दिन में ताकत आ जाएगी। बड़े पाए के हकीम हैं और लुत्फ़ यह कि आज़ादी हासिल करने के लिए सबसे आगे रहते हैं। मुझे भी कुछ ऐसा लग रहा है कि इन दिनों कमज़ोर हो रहा हूँ। ज़रा लालटेन की बत्ती ऊँची कर दो। बस जैसे ही आज़ादी मिली बिजली का कनेक्शन बहाल करा लूँगा। यह लालटेन की रोशनी रात को पढ़ने नहीं देती।"

आलिया ने उठकर लालटेन की बत्ती ऊँची कर दी। कौन जाने आज़ादी के बाद क्या होगा। फिर मुल्क की खिदमत शुरू हो जाएगी। बिजली का कनेक्शन बहाल कराने को किसको फ़ुर्सत होगी। यह घर तो अँधेरे में ही डूबा रहेगा। आलिया ने दिल ही दिल में सोचा और बड़े चचा के सिरहाने आ बैठी। उस वक्त उनके चेहरे पर कितनी खुशी थी। शायद आज़ादी का खयाल मचल रहा था, "फिर तो सब कुछ हो जाएगा बड़े चचा।" आलिया ने जैसे हारकर कहा।

"तुम मेरी किताबें पढ़ती हो न ?" उन्होंने पूछा।

"हाँ पढ़ती हूँ बड़े चचा।"

"नजमा कैसी है ? बहुत दिनों से देखा नहीं।"

"वह अनपढ़ों में नहीं बैठती। अच्छी हैं।"

"इतना पढ़ने के बाद भी वह लड़की गुम्बद की आवाज़ है। अंग्रेज़ों की तालीम का मकसद ही यही था।" बड़े चचा ने ठण्डी साँस भरी। आलिया ने कोई जवाब न दिया। बड़े चचा तो आँखें बन्द करके शायद सोने की तैयारी कर रहे थे। ज़रा ही देर में वह खर्राटे लेने लगे तो आलिया दबे कदमों कमरे से चली गई।

बाहर ठण्डी हवा साँय साँय कर रही थी और बादलों के कुछ टुकड़े इधर-उधर डोलते फिर रहे थे। अम्मा और बड़ी चची शायद अपने कमरों में सो रही थीं मगर करीमन बुआ अब तक चूल्हे के पास बैठी अपनी बूढ़ी हड्डियाँ सेक रही थीं। वह चुप चाप सीढ़ियों पर हो ली।

नजमा फूफी अभी तक पढ़ रही थीं। आलिया ने उनकी तरफ़ खुलने वाले दरवाज़े बन्द कर लिये और अपने बिस्तर पर लेट गई। हाई स्कूल की तरफ़ से उल्लू बोलने की आवाज़ आ रही थी। गली में कुछ आवारा कुत्ते लड़ रहे थे। उसे रात बड़ी डरावनी मालूम हुई और करीमन बुआ की बात याद आ गई। जब कुत्ते रोते हैं

तो कोई आफत आती है। अब और कौन सी आफत आने को रह गई है। अब्बा जेल में दिन किस तरह गुजार रहे होंगे ? रात जाने किस तरह गुजरी, गुजरी नही रात ने उसे गुजार दिया। कैसी बेचैनी, कैसी बेकली। जागते-जागते आंखो में जलन होने लगी। 'अल्ला-अल्ला' वह बार-बार कराहती और गली मे कुत्ते रोये चले जाते थे।

रात के पिछले पहर जब म्युनिसिपैल्टी की रोशनी बुझ गई तो कमरे मे घुप अंधेरा छा गया। मुर्गों की अजानों की आवाजें आने लगी तो वह बडी शांति से सो गई। सुबह के खयाल ने उसके दिमाग से सारी बलाओ को टाल दिया था। किसी ने जोर से जजीर खडकाई तो उसकी आंख खुल गई। नजमा फूफी की कांपती हुई आवाज उसके कानो को छेद गई।

"हाय मजहर भैया जेल में मर गए।" अम्मा की चीखें बुलन्द हो रही थी। वडी चची ऊँची आवाज स रो रही थी और करीमन बुआ के सीने पीटने की आवाजें साफ सुनाई द रही थी। फिर भी वह अपने बिस्तर पर सुन्न पडी रही। वह आंखें फाड फाड कर हर तरफ देख रही थी। यह सुबह सुबह रात कैसे हो गई। सूरज किधर गायब हो गया। क्या सचमुच अब्बा मर गए।

वह रोना चाहती थी, चीखना चाहती थी। उसे अपना दिल फटता हुआ महसूस हो रहा था। मगर वह कुछ भी न कर सकी और करीमन बुआ सीना पीटती उसके पास आ गई। उसे अपनी छाती से लिपटाए-लिपटाए नीचे ले गई और वह उनके साथ इस तरह चलती रही जैसे घुट रही हो। उसके पैरो मे जान कहां थी।

वडे चचा आंगन मे खडे थे। क्या यह वडे चचा हैं ? क्या यह जिन्दा हैं ? उन्हें क्या हो गया है ? बडे चचा ने उसकी तरफ देखा भी नहीं। वह उनके बराबर खडी रही। अम्मा बेतहाशा रो रोकर तडप रही थी। उनकी आंखो में कैसी बेबसी थी, कितनी हसरत थी। उनके चेहरे पर बेचारगी की धूल उड रही थी।

आलिया लडखडाते हुए कदमों से अम्मा की तरफ बढी और लिपट गई और फिर उसे महसूस हुआ कि वह भी रो सकती है।

"उसे अंग्रेजो ने मार दिया होगा। वह खुद नही मरा। वह मर ही नही सकता। वह मेरा भाई।" वडे चचा लोहे की कुर्सी को थाम कर बैठ गए, "मैं उसे लेन जा रहा हूँ।" बडे चचा अपने घुटनों पर हाथ रखकर जैसे बडी मुश्किल से खडे हो गए।

"जल्दी से चलिए बडे भैया।" बैठक से इसरार मियां की आंसुओ से भीगी हुई आवाज आई। लेकिन उस वक्त तो करीमन बुआ उनकी आवाज सुन ही न रही थी।

सब रोते-रोते थक गए। बरामदे मे बिछी हुई दरी पर अब शोक-मग्न बैठ

थे। धूप आंगन से सरककर दीवारों पर चढ गई थी और कौवे एकसां काएं-काएं किए जा रहे थे। भला अब ये किसकी आमद की इत्तिला दे रहे हैं। कहावतों में कोई जान नही होती। आलिया का जी चाह रहा था कि दीवार पर बैठे हुए कौवों को मार-मार कर उड़ा दे।

सबकी नजरें सदर दरवाजे पर लगी हुई थी। शाम को नमाज़ का वक़्त हो रहा था। बड़े चचा अब्बा को लेकर अब तक नही आए थे। गली मे किसी के कदमों की चाप होती तो सब चौक पड़ते। कोई फकीर सदा लगाता गुजरता तो ऐसा जान पड़ता कि बैन कर रहा है।

करीमन बुआ ने आंगन मे चूल्हा बनाकर बड़े पतीले में पानी चढा दिया था और सीली हुई लकड़ियों को फूंक-फूंक कर गोद में रखे हुए क़ुरान शरीफ पढती जा रही थी। आंगन में हवा कितनी सर्द हो रही थी। गली में बहुत से कदमों की चाप सुनाई दी और फिर इसरार मियाँ की आवाज़ आई, "सब पर्दा कर लें। मजहर भैया आ गए।"

थमे हुए तूफान ने फिर से ज़ोर पकड़ लिया। बरामदे में बिछे हुए पलंग पर अब्बा की लाश रखकर जब सब लोग बैठक में चले गए तो आलिया दौड़कर पलंग के पास आ गई। अम्मा पलंग की पट्टी से सिर फोड़-फोड़कर रो रही थी।

नजमा फूफी अपने भैया राजा को पुकार रही थीं। बड़ी चची अम्मा को लिपटाए बैठी थी और करीमन बुआ सिर झुकाए क़ुरान शरीफ पढ़े जा रही थी।

आलिया ने अब्बा के मुँह पर से चादर सरका दी। क्या सचमुच यह अब्बा हैं। उसने पहचानना चाहा। जेल ने कुछ भी तो न छोड़ा था, "बड़े चचा।" आलिया ने बड़े चचा का हाथ थाम लिया था। वह अपने भाई के सिरहाने सिर झुकाए खामोश खड़े थे, "मेरे भाई को उन्होने मार डाला। उसने तो अंग्रेज हाकिम को मार कर सवाब भी नही कमाया था और उन्होंने इतनी बड़ी सजा दे दी। मैं सबको बताऊंगा। मैं इस जनाज़े को जुलूस की सूरत मे ले जाऊंगा।" बड़े चचा जोश के मारे चीख रहे थे।

"कौन निकालेगा जुलूस ?" अम्मा तन कर खड़ी हो गईं, "जब ये ज़िन्दा थे तो आपके थे, आपका साया थे। अब ये मेरे हैं। इनकी लाश की कोई बेहुर्मती नही कर सकता।"

बड़े चचा का सिर एकदम झुक गया।

फिर अब्बा चले गए। एक हंगामा हुआ और ठहर गया।

रात ग्यारह बजे के करीब इसरार मियाँ और बड़े चचा क़ब्रिस्तान से वापस आ गए। उस वक़्त आंसू थम चुके थे और सब्र की सिल सीनों पर सरक आई थी।

"करीमन बुआ, छोटी दुल्हन से कहो अगर मजहर भाई की जगह मुझे मौत आ जाती तो मैं जरूर मर जाता। पर बन्दा बड़ा बेबस है।" इसरार मियाँ की आवाज सन्नाटे को चीर गई।

"तुम नहीं मर सकते इसरार मियाँ। तुम जिन्दा रहोगे। तुम नहीं मर सकते।" करीमन बुआ ने कुरान शरीफ पढ़ते-पढ़ते इसरार मियाँ की जिन्दगी पर लानत भेज दी।

तीसरे दिन शाम को हैदराबाद दक्न से जफर चचा और मामूँ दोनों ही आ गए। अम्मा पहले भाई से मिलकर बहुत बेकरार हो रही थी। उनकी आँखों में अजीब सी भीख और इल्तिजा थी मगर मामूँ नजरें चुरा रहे थे। वह कुछ नहीं देखना चाहते थे। क्या उनकी अंग्रेज बीवी खान्दानी जिन्दगी का फन्दा गले में डाल कर आत्महत्या कर लेती?

जफर चचा सदमे से निढाल थे और बार-बार कह रहे थे कि अगर मेरा भाई हैदराबाद में रहता तो आज यह हश्र न होता। फिर शाम को वह अपनी सुरक्षित हुकूमत की धरती की तरफ रवाना हो गए। उन्होंने अम्मा की हर तरह मदद करने का वायदा किया था।

कई दिन बाद छम्मी का खत आया था। शायद उसने रो-रोकर लिखा था। आँसुओं ने रोशनाई फैला दी थी। आखिर में उसने लिखा था कि अब वह उस घर में नहीं आना चाहती। छूटे गाँव से कैसा नाता? उसने अपने बारे में अब भी कुछ न लिखा था। जमील भैया का भी खत आया था। उन्होंने लिखा था कि मजहर चचा कभी नहीं मर सकते। वह हमेशा जिन्दा रहेंगे। उन्होंने दो दिन की छुट्टी पर आने को लिखा था।

अड़तीस

इस दफा बहार कितनी जल्दी गुजर गई। क्यारी में ढेरों गुल-अब्बास और सूरजमुखी के फूल खिले मगर उनमें कोई दिलकशी नजर न आई। आम के पेड़ों में बौर आते ही कोयल ने चीखना शुरू कर दिया था। मगर किसी नामालूम सी तड़प ने आलिया के कलेजे को न मसला। अब्बा की मौत के बाद वह कितनी हताश हो गई।

अम्मा अब हर वक्त सिर न्योढ़ाए जाने क्या सोचा करती और बड़ी चची

इधर-उधर की बातें करके उन्हें बहलाने की कोशिश करती रहती। फिर भी अम्मा की फिक्रों मे कमी न होती। जाने वह क्या सोचती। आलिया उनके पास पहरों बैठी रहती मगर वह दिल की बात न कहती।

बड़े ज़ोर की गर्मी पड़ने लगी। सरेशाम आसमान पीला होने लगता तो मोहल्ले के बच्चे शोर मचाते—पीली आंधी आई। शायद ही कोई दिन गुज़रता जो आंधी न आई हो। सारा दिन लू चलती रहती। गली मे बगूले लोटते फिरते और आलिया अपने छोटे से कमरे मे पड़े-पड़े अपने भविष्य के लिए सोचती रहती। यह दिन तो काटे न कट रहे थे। वह अब यहां से भाग जाना चाहती थी। इस घर की एक-एक चीज़ उसे काटने को दौड़ती। दादी के कमरे में जाती तो उनकी तेज़-तेज़ सांसें सुनाई देने लगतीं। आंगन मे बिछे हुए हर पलंग पर अब्बा की लाश पड़ी नज़र आती और जब लोहे की कुर्सी देखती तो जाने क्यों घबराहट होने लगती और फिर भाग चलने की ख्वाहिश और भी जड़ें पकड़ने लगती। जमील भैया उसे तसल्ली देने भी न आ सके। उसके बाप की मौत कितनी मामूली बात थी। इधर तो उसे जमील भैया से नफ़रत होकर रह गई थी।

धूप छत की मुंडेरों पर चढ़ते-चढ़ते गायब हो गई थी। आलिया अपने कमरे से निकलकर छत पर आ गई। नजमा फूफी अब तक अपने कमरे मे पड़ी ऊंघ रही थी। इधर कुछ दिनों से वह भी बदली बदली नज़र आती। किताब उनके सीने पर खुली पड़ी रहती और जाने क्या सोचती रहती। आलिया को कई बार ख़याल आया कि इस तरह नजमा फूफी की अंग्रेज़ी कमज़ोर हो जाएगी।

करीब की छतों से लड़के लाल-पीली पतगें उड़ा रहे थे। 'वोह काटा' की आवाज़ें आ रही थीं और गली में गुलाब की गड़ेरियां बेचने वाला तो जैसे इसी गली का होकर रह गया था। उसने दिलचस्पी से पतगों को देखना और गिनना चाहा। मगर ज़रा ही देर में मन उचाट हो गया। आज वह बेहद उदास और परेशान थी। सारे दिन की धूप मे तपे हुए पलंग पर मुँह लपेट कर पड़ रही।

"आलिया!"

"अम्मा!" आलिया हड़बड़ा कर उठ बैठी। अम्मा के आने पर उसे हैरत हो रही थी। मुद्दतें गुज़र गई उन्होने ज़ीने पर कदम न रखा था। कभी अकेले मे बैठकर उससे बात भी न की थी। फिर इधर अब्बा के मरने के बाद तो वह जैसे सुध-बुध खो चुकी थी।

"अलीगढ़ जाओगी बी० टी० करने ?" उन्होंने आलिया के पास बैठते हुए पूछा।

"ज़रूर जाऊंगी। आप मामूं को लिख दीजिए कि वह ज़्यादा रुपये भेजने

लगें।"

अम्मा ने उसे गौर से देखा और फिर किसी खयाल में गुम हो गई। बसेरा लेने वाले परिन्दे कतार से उड़े जा रहे थे। आलिया ने उन्हें बेदिली से देखा और फिर अम्मा का मुंह तकने लगी।

"अगर तुम्हारी जगह कोई लड़का होता तो मुझे इतनी मायूसी न होती। खैर अब तो तुम ही सब कुछ हो। तुम्ही को सब कुछ करना है।" अम्मा की आंखों में चमक थी।

"बस एक साल की देर है अम्मा। फिर मैं अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊंगी।"

"मैं कहती हूं कि अब तुम अलीगढ़ जाने का खयाल ही छोड़ दो। खुदा जमील को खैरियत से वापस ले आए। मैं तुम्हारे मामूं से सब रुपये लेकर उसे दे दूंगी। चचा की भी दूकानें कुछ दिन बाद चल निकलेंगी। वह बहुत अच्छा लड़का है। उसने मेरा हमेशा अदब किया है। खुदा उसे खुश रखे। मेरा ख्याल है कि अगर मैंने कहा तो जंग से आने के बाद तुम्हारे मामूं उसे जरूर कोई बड़ा ओहदा भी जरूर दिला देंगे। रहे तुम्हारे बड़े चचा और इसरार तो मैं उन्हें जल्द ही इस घर से चलता कर दूंगी। बना-बनाया घर है। हवेली से कुछ कम तो नहीं। सब तुम्हारे नाम लिखवा लूंगी। शकील तो समझो मर ही गया वरना कोई खत-वत लिखता मां को।" सब कह चुकने के बाद अम्मा उसका मुंह देख रही थी।

आलिया सब कुछ समझ गई थी। उसने आंखें फाड़कर अम्मा को देखा। बचपन में सुनी हुई कहानियों की चुड़ैल अम्मा का मुंह छिपाकर उसके सामने थिरकती मालूम हो रही थी।

"मैं अलीगढ़ जाऊंगी। यह घर बड़े चचा को मुबारक रहे। आप इस किस्म की बातें न सोचती तो बेहतर था।" आलिया ने सख्ती से कहा और इस तरह मुंह फेर लिया जैसे अब कुछ न सुनना चाहती हो।

'वही बाप वाला सुभाव है। मुझे मालूम है कि तुम मुझे खुश नहीं देख सकती। तुम चाहती हो कि मैं हमेशा बेघर रहूं। मेरा खोया हुआ राज-पाट अब कभी न मिलेगा।" अम्मा ने मुंह पर दुपट्टे का पल्लू रख लिया और सिसक सिसक कर रोने लगीं।

आलिया अजनबियों की तरह खामोश बैठी उन्हें रोते देखती रही। उसे अपनी अम्मा की तबाह जिन्दगी से हमदर्दी है। वह उन्हें सुख देना चाहती है। मगर वह कुछ नहीं जानती और कितनी खतरनाक स्कीम लेकर उसके तबाह होने का सामान कर रही हैं। वह मां होकर उसे धोखा दे रही हैं। जमील ने कभी एक पल को भी जिन्दगी की खुशियां समेटने की कोशिश नहीं की और अब पैसा कमाने भी

गए तो मकसद फासिज्म को खत्म करना है। वह कभी चची की तरह शाप भरी जिन्दगी नही गुजारेगी और अम्मा ने खुद कैसी जिन्दगी गुजारी है। अब्बा एक मिनट को भी घर के न हो सके। अम्मा यह सब कुछ नही सोच सकती। क्या यह सचमुच उसकी माँ हैं। उसने धुंधलाई हुई आंखो से अम्मा को देखा जो अब आंसू पोछकर उसमे मुंह मोडे उठ रही थी, "तुम अलीगढ जाओ। मैं अपने भाई को लिख दूँगी। मैं तुमसे किसी किस्म की उम्मीद नही रखती। जो जी चाहे करो।"

आलिया अम्मा को जाता हुआ देखती रही। अपने भाई पर कितना गुरूर था उनको। आलिया का जी चाहा कि खूब जोर से हँसे मगर वह अम्मा के जाते ही फूट-फूट कर रोने लगी। उस वक्त इतनी बेबसी मे वह खुद को बेहद अकेली महसूस कर रही थी। रो चुकने के बाद वह जैसे हल्की फुल्की होकर खुर्रे पलंग पर लेट गई। बसेरा लेने वाले परिन्दे कैसे कतार से उडे जा रहे थे।

"करीमन बुआ क्या सब लोग चाय पी चुके?" इसरार मियाँ की कमजोर सी आवाज उसके दुखे हुए दिल को और भी दुखा गई। इसरार मियां तुम अब तक चाय के इन्तजार मे बैठे हो। आज करीमन बुआ ने कोई जवाब नही दिया। आज तुमको कयामत तक चाय नही मिलेगी। आलिया ने ठण्डी सांस भरी। कालेज खुलने मे कितने दिन बाकी रह गए हैं। वह दिल ही दिल मे हिसाब लगाने लगी।

उन्तालीस

वह पूरे दस महीने बाद अलीगढ से लौटी थी। बडे दिन की छुट्टियाँ गुजारने भी घर न आई थी। अम्मा ने भी उसे न बुलाया था। बडी चची के कई खत आए थे कि वह जरूर आए और भी सब हाल-चाल लिखने वाली वही थी। अम्मा तो इतने दिनो से नाराज थीं। इतनी मुद्दत मे अम्मा ने एक भी खत न लिखा था। उन्हे खबर भी न थी कि वह जिससे नाराज हैं वह रातो के अकेलेपन मे उनके दुखो को याद करके तडपती रही। वह अम्मा को एक पल के लिए अपने जेहन से उतार न सकी थी। उसके बाद अगर कोई शिद्दत से याद आता तो वह बडे चचा थे। गरमागरम खबरें और गैर मामूली हालात उनकी याद मे वृद्धि करते रहते। उसने बडे चचा को कई खत लिखे मगर जवाब का इन्तजार ही रहा।

तांगे से उतर कर वह सबसे पहले बडी चची से मिली और इस बेपनाह मुहब्बत को अपने सीने मे समोए हुए अम्मा से लिपट गई और रो रोकर अम्मा का सीना

तर कर दिया।

घर का नक्शा कैसा बिगड़ा-बिगड़ा लग रहा था। आँधियों और बारिशों ने दीवार का रंग चाट लिया था। कमरों की सफेदी पीली और मरीज मालूम हो रही थी। दालान के पर्दे कई जगह से फट कर लटक गए थे। करीमन बुआ अतीत की यादों के बोझ से कमर झुकाकर चलने लगी थीं और अम्मा के माथे के सामने बहुत से सफेद बाल झाँकने लगे थे। बड़ी चची तो जीता-जागता ताजिया थीं और आँगन में पड़ी हुई लोहे की कुर्सी के पायों में जंग लग चुका था।

"छम्मी के लड़की हुई है। साजिदा का खत आया था।" बड़ी चची ने सूचना दी।

"ओह प्यारी छम्मी, अम्मा भी बन गई!" वह खुशी से उछल पड़ी। पर उसकी बच्ची का कुर्ता, टोपी लेकर जाने वाला कौन है। अब तो इस घर में सारी रस्में मर चुकी हैं। वह रंजीदा हो गई।

"शकील की कोई खबर मिली बड़ी चची?" आलिया ने पूछा।

"तुम्हारे जमील भैया ने लिखा था कि वह बड़े मजे में है। ढेरों कमाता और उड़ाता है और किसी को याद नहीं करता। उसके लिए सब मर गए हैं। तुम्हारे जमील भैया बम्बई गए थे न।" शकील के नाम पर बड़ी चची की कुछ ऐसी हालत हो गई जैसे चिलचिलाती धूप में नंगे पाँव चल रही हों, "देखो जिसने पैदा किया उसी को भूल गया। अकेले ऐश करता है।" उन्होंने लम्बी आह खींची।

"एक वह भी जमाना था जब सारे छोटे सुबह उठकर अपने बड़ों को सलाम करते थे। जो कुछ था सब माँ बाप के हाथ में था।" करीमन बुआ बड़बड़ाईं। हाय बड़ी चची कितनी भोली हैं! आलिया सोच रही थी। भला जमील भैया बम्बई में क्यों तलाश करते फिरेंगे। पता नहीं शकील कहाँ होगा। फिर भी शुक्र है कि जमील भैया अपनी माँ का दिल रख रहे हैं। हाय किस पत्थर का बना था शकील।

ऊपर के कमरे की खिड़की खुली और नजमा फूफी का सिर झाँका। कैसी ढल गई थीं नजमा फूफी भी। उसका जी चाहा कि उन्हें भी सलाम करे मगर उन्होंने लिफ्ट ही न दी। उसकी तरफ देखा भी नहीं। नजमा फूफी को सलाम करने के लिए अब अंग्रेजी में एम० ए० करना होगा।

करीमन बुआ ने बड़े चाव से उसके लिए चाय तैयार की थी। इतनी मुद्दत बाद उनके हाथ के सूखे पराठे खाने में बड़ा मजा आ रहा था।

"बड़े चचा कहाँ हैं?" चाय पीने के बाद उसने पूछा।

"वहीं कहीं आजादी का झंडा गाड़ रहे होंगे।" अम्मा ने त्योरियों पर बल डालकर कहा और बड़ी चची घबराकर इधर-उधर देखने लगीं। "कहीं बाहर तो

यही गए हैं ?" उसने फिर पूछा। वह उनसे मिलने के लिए सख्त बेताब थी।

"नही आलिया यही हैं।" बडी चची ने जवाब दिया।

"बस अब तुम जल्दी से नौकरी की दरख्वास्तें देने लगो। मैं भर पाई इन मुसीबतो से। इस उजडे घर में न जाने किस तरह दिन गुजरे हैं। कभी पेट भर खाना न मिला।" अम्मा ने बडी बेबाकी से कहा। उस वक्त वह बडी मगरूर नजर आ रही थी।

"अरी छोटी दुल्हन मैंने तो अपनी जान से ज्यादा तुम्हारा ख्याल किया है।" और बडी चची से कुछ कहते न बन पड रहा था।

"बस जनाब आपके खयाल का शुक्रिया। आप लोग मेरी जान बख्श दें और एहसान न जताएं। मुझे पता था कि एक दिन यही सुनना होगा।"

"अम्मा !" आलिया ने हैरान होकर अम्मा को पुकारा और बडी चची की तरफ देखकर सिर झुका लिया। अभी तो इम्तहान का नतीजा भी नही निकला। क्या यही सब कुछ सुनने के लिए उसने अपने पैरो पर खडा होना चाहा था। उसका जी चाहा कि अपने फेल होने की दुआएं मांगने लगे।

बडी चची मुंह फेर कर दुपट्टे के पल्लू से आंखें पोछ रही थीं, "इतनी मुद्दत बाद आलिया आई है। उससे बातें करो दुल्हन।" वह जैसे रेंगती हुई उठी, "सारा काम पडा हुआ है। कुछ भी तो नही किया।"

"खुदा जब देने पर आता है तो इतना बडा कलेजा दे देता है।" वह चुपचाप बडी चची को जाती देखती रही।

"आलिया बेटा खुदा आपका पास कर दे। आपके दिन फरे। पुराना जमाना याद करती हूं तो कलेजा मुह को आता है।" करीमन बुआ अपनी कहे जा रही थी। उन्होंने शायद अम्मा की बातें सुनी नही थी। नल की मोटी धार पक्के फर्श पर तड तड गिरे जा रही थी और क्यारी मे पानी रेंग रहा था। बहार के खिले हुए लाल पीले और ऊदे फूल अब मुर्झा चुके थे।

"हाय अब मुझे कितना सुकून मिला है। अब हमारे दिन पलट जाएंगे।" अम्मा बडे हुलास से आलिया को देखे जा रही थी।

क्या आज इस कमरे मे बडी चची जिन्दगी भर का काम निपटा लेंगी। आलिया का ध्यान बडी चची मे लगा हुआ था। वह अम्मा की कोई बात नही सुन रही थी।

बडे चचा आ गए। अम्मा ने नागवारी से दूसरी तरफ सिर फेर लिया और आलिया उनकी इस हरकत को नजर अन्दाज करके उनकी तरफ लपकी, "बहुत दिन बाद देखा है आपको बडे चचा।" वह उनसे लिपट गई।

"इम्तहान कैसा रहा ?" वह उसके सिर पर हाथ फेर रहे थे।

"बहुत अच्छा रहा। कामयाबी की पूरी उम्मीद है।"

"फिर तुम अब इन बेकार दिनों मे खूब पढो। यह मेरी लाइब्रेरी की चाभी अपने पास रख लो।" वह अपनी शेरवानी की जेब टटोलने लगे, 'अभी गांधी जी की आत्मकथा मँगाई है, जरूर पढो।"

"अब आप इसे भी तबाह कर दीजिए बड़े भैया। मुझे बेवा करके आपको सब्र न हुआ। मेरे पास कुछ भी न रहने दीजिए।" अम्मा आज सबसे मुकाबला करने पर तुल गई थी। उनकी हालत तो कुछ ऐसी हो रही थी जैसे कमीने के हाथ पैसा आ गया हो।

"वह, वह . मैंने कहा जमील की अम्मा कहाँ हैं ? दो आदमियो का खाना पकेगा। ज़रा इन्तज़ाम करा देना।" बड़े चचा बौखलाकर बैठक में चल गए।

"ज़रूर पढ़ूँगी बड़े चचा। हाय कितनी अच्छी किताब होगी।" आलिया ने अम्मा की परवाह न करते हुए कहा और थके थके कदम उठाती ऊपर जाने वाले ज़ीनो पर हो ली।

"करीमन बुआ आलिया बेटा को दुआ कहो और कहो कि अल्लाह उन्हें कामयाब कर दे। बड़े भैया कहते थे कि पर्चे बहुत अच्छे हो गए हैं।" इसरार मियाँ की आवाज़ घर में दाखिल हुई तो करीमन बुआ का चिमटा बड़े ज़ोर से खड़का, "इसरार मियाँ कभी तो तुम चुप भी रहा करो। कोई भी मुबारक मौका हो तो जरूर दखल दोगे।"

आलिया एक पल को जैसे ज़ीनो पर जमकर रह गई और फिर तेजी से अपने कमरे में चली गई। करीमन बुआ पेट की ऐसी मार पड़ी कि अब तुम ज़ायकेदार चीज़ों का मज़ा तक भूल गई और तुम्हें सिर्फ अपने स्वर्गीय बड़े सरकार की हरामकारी के इस फल की कड़ुवाहट याद रह गई। तुम्हारी ज़िन्दगी की नाकामी और गुलामी दुश्मन बनकर इसरार मियाँ के पीछे पड़ गई है। अल्लाह यह इसरार मियाँ के हिस्से की मौत किस कुत्ते, बिल्ली को आ गई है। इतनी देर से पलकों में अटके हुए आंसू ढुलक कर बिस्तर म जज्ब हो गए।

चालीस

बहुत दिन बाद जमील भैया का खत आया था। बड़ी चची नन्हीं सी चिड़िया की तरह हर तरफ फुदकती फिर रही थी और अम्मा बड़े ममरव से आलिया की तरफ देखे जा रही थी। मगर आलिया को उस

वक्त तमाम जरूरी काम याद आ रहे थे। अम्मा के ममत्व में जो खौफनाक इरादा झांक रहा था उससे वह अच्छी तरह वाकिफ थीं। अम्मा दादी की हवेली की मालकिन न बन सकीं। जागीरदारिनी न कहला सकीं। अब वह भागते भूत की लँगोटी पर आस लगाए थीं। और फिर जमील भैया तो सचमुच उन्हें अच्छे लगते थे। क्या मजे से अपने बाप का मुंह चिढाकर अंग्रेजों को हार से बचाने के लिए दौड पडे थे।

"आलिया बेटी एक बार ज़रा फिर से खत पढ दो। अपनी आँखें तो अब काम नही देती। इतना पानी आता है कि सामने धुंध छा जाती है।" बडी चची ने पानदान से खत निकाल कर आलिया की तरफ बढ़ा दिया।

"मेरी प्यारी अम्मा। बेहद व्यस्तता की वजह से आपको खत न लिख सका मगर इसका यह मतलब तो नही कि आपको भूल गया। अम्मा आप तो हर वक्त याद आती हैं। आलिया बीबी तो अब वापस आ चुकी होंगी। खुदा करे वह कामयाब हो जाएँ। उन्हें तोहफे मे देने के लिए मेरे पास क्या बचा है और . ।"

आलिया को ऐसा महसूस हुआ कि बाकी खत वह नही पढ सकेगी। उसके गले मे काँटे चुभ रहे थे।

"इस घर को छोडकर फिर हम हमेशा के लिए घर से महरूम हो जाएँगे आलिया जान।" बडी चची के उठते ही अम्मा ने आहिस्ता से कहा।

"अम्मा फिर मैं कही चली जाऊँगी। आप मुझे जहन्नुम मे क्यो झोंकना चाहती हैं।" आलिया ने आज़ाद लडकियो के तेवर से अम्मा को देखा और फिर सिर झुका लिया। ख्वाह इस घर की दीवारों तक से लोना टपक रहा है। कितने बरस और यह घर अम्मा की जागीर बना रहेगा। अम्मा नाराज हुए बगैर खामोशी से उसको देखा की। उनकी आँखों मे असफलताओं का एहसास सिसकता हुआ मालूम हो रहा था। हवेली और जागीर से महरूम होने के बाद अब वह नाचीज से मकान को भी अपना न कह सकती थीं।

"यह आटा खाने लायक है? अल्लाह यह दिन भी दिखाना था। कभी अपनी ज़मीनें सोना उगलती थीं।" करीमन बुआ आटा छानते हुए सूत जैसे बारीक बारीक कीडे चुनकर फेंक रही थी। लम्बी जंग ने साफ गेहूँ के एक-एक दाने को तरसा दिया था। करीमन बुआ आए दिन पेचिश की शिकार रहती।

"अपनी हुकूमत जीत जाए तो करीमन बुआ सब कुछ खाने को मिलने लगेगा। सब हार गए हैं। बस एक जापान मुल्क ही तो रह गया है। अल्लाह जाने यह किस पत्थर के बने हैं।" अम्मा ने करीमन बुआ को तसल्ली दी।

"बीता हुआ जमाना फिर नही आता दुल्हन।" करीमन बुआ ने अपने हिसाब बहुत बडी बात कह कर सब की तरफ देखा और ठण्डी साँस भर कर गुँधे हुए आटे

को लोई ढांक दी, "जाने छम्मी बेटा कैसी होगी और वकील मियां।"

"चुप भी रहो करीमन बुआ। वकील का जिक्र न किया करो। बड़ी चची सुनती तो रोने बैठ जाती।" आलिया ने उन्हें टोक दिया। धोबिन कपड़े का गट्ठर उठाए अन्दर आ गई तो बड़ी चची मैले कपड़े जमा करने लगीं और धोबिन फूली हुई सांसों को ठीक करती तख्त के पास जमीन पर फसकड़ा मार कर बैठ गई, "ये छोटी दुल्हन कलजुग है।" धोबिन ने हाथ फैला दिया।

"कैसा कलजुग?" अम्मा ने पान का टुकड़ा उसके हाथ पर रख दिया।

"वह जो हाजी साहब का लड़का जंग पर मारा गया था न, उसकी बीवी किसी के साथ भाग गई। तीन साल हुए हाजी साहब के लौंडे को मरे। ऐसी शराफत से घर पर पड़ी रोया करती कि सब वाह करके रह जाते। किसी को क्या पता था कि यह गुन भरे हैं।"

"ग़जब खुदा का। कहीं मिल जाए तो खोदकर दफना दें हरामजादी को!" अम्मा ने बुरा सा मुंह बनाया, "चौदहवीं सदी है। एक जमाना था कि बारह-तेरह साल की लड़की बेवा होकर यूं ही बैठी रहती। कब्र के सिवा किसी दूसरे का मुंह न देखती। पर अब तो सब खत्म होता जा रहा है। सच कहा है बुजुर्गों ने कि चौदहवीं सदी में गाय गू खाएगी और कुंवारी बर मांगेगी।" करीमन बुआ भी चुप न रह सकी।

"करीमन बुआ यह गाय माता की बात न करो। किसी हिन्दू ने सुन लिया तो लेने के देन पड़ जाएंगे। अब वह भाई-चारा नहीं रह गया। जिसे देखो पाकिस्तान के खिलाफ है। औरतें तक कहने-सुनने से नहीं चूकतीं। हम तो चुपके से कपड़ों का गट्ठर उठाकर चले आते हैं। अल्लाह बचाए इस कौम को। कानपुर में कैसे-कैसे दंगे नहीं होते रहते।" धोबिन ने अपना सिर थाम लिया, "अपने कई रिश्तेदार कानपुर के दंगे में मर चुके हैं।"

"यह सब ठीक है। जमाने बदल गए।" करीमन बुआ जैसे इतनी बहुत सी बातों से ऊब कर जूठे बर्तन समेटने लगी।

इकतालीस

सारी रात बारिश होती रही। छाजो पानी बरस गया। सुबह भी आसमान साफ न था। बादलों के कजरारे टुकड़े इधर-उधर डोलते फिर रहे थे।

आलिया ने खिड़की के भिड़े हुए पट खोल दिए। सामने हाई स्कूल के आहाते के पेड़ रात की बारिश से नहाकर खूब निखर गए थे और किसी पेड़ मे छिपी हुई कोयल बराबर चीखें जा रही थी। गली मे पड़ी हुई आमों की गुठलियों और छिलकों की बू हवा में रची हुई थी और अखबार वाला गली से बड़ी तेज़ी से चीखता हुआ गुज़र गया, "खौफनाक बम। जापान की कमर टूट गई। हीरोशिमा तबाह हो गया। मित्र राष्ट्रों की फतह करीब है। आ गया, आ गया आज का अखबार, हीरोशिमा ।"

अच्छा तो एक पूरा शहर एक बम से खत्म हो गया। फिर इसके बाद क्या होगा? जमील वापस आ जाएँगे। अंग्रेज़ों के हक मे प्रोपेगेन्डा करने के सारे हथियार खत्म करके खाली खूली वापस आ जाएंगे। मगर वह बेचारे जो जंग की आग में जल मरे अब उनके इन्तज़ार करने वालों पर क्या गुज़रेगी? इस सवाल का जवाब न पाकर आलिया बिस्तर से उठ पड़ी। आज उसे अखबार पढ़ने की सच्ची तलब सता रही थी।

बड़े चचा बैठक मे जा चुके थे। उसने अखबार के पन्ने उठा लिए। हीरोशिमा मे आग के शोलों के सिवा कुछ नज़र नही आता, अखबार रखकर वह गुम-सुम सी बैठ गई। अल्लाह यह हुकूमतें शहरों को क्यों निशाना बनाती हैं। उनका क्या कुसूर। उन्हें क्यों मौत के घाट उतारा जाता है। मगर यह हमेशा से होता आया है। इतिहास कभी मुस्कराएगा भी कि नही। एक-एक लफ्ज़ खून की बूँद मालूम होता है। हीरोशिमा की आग मे क्या कुछ न जल गया होगा। पता नही लोग इस वक्त किस आलम में होंगे। वह क्या कुछ करने को घरों से निकले होंगे और क्या पता उस वक्त भी बच्चे जापानी गुड़ियाँ खरीदने किसी दूकान पर खड़े होंगे और उस वक्त अचानक खौफनाक बम का धमाका हुआ होगा और ।

"जल्दी-जल्दी चाय पी लो आलिया बेटा। स्कूल का तांगा आने वाला होगा। यूँही बैठी क्या सोच रही हो।" करीमन बुआ ने टोका। वह जल्दी से चाय पीने बैठ गई। अभी तो उसे तैयार भी होना था।

'जापान भी हारने वाला है। उनका एक पूरा का पूरा शहर तो तबाह हो गया।" गुसलखाने से निकल कर अम्मा ने बड़े इत्मीनान और शांति से खबर सुनाई।

"जी हां।" चाय पीकर वह आँगन मे आ गई। बड़ी चची नल के पास बैठी हाथ मुँह धो रही थीं। क्यारी म सारे पौदे बारिश के बोझ से दब कर ज़मीन पर झुक गए थे। वह कपड़े बदल कर बाल ठीक कर रही थी कि बाहर से आवाज़ आई, "उस्तानी जी, तांगा आ गया है।"

बुर्का हाथ पर डाले जब वह ज़ीने तय करने लगी तो आगे आगे नजमा फूफी

बहुत ऊँची एड़ियों के सैन्डिल पर झूमती उतर रही थी; "उस्तानी जी तांगा आ गया है।" नजमा फूफी ने गरदन घुमाकर कहा। उनके होंठों पर कैसी मजाक उड़ाने वाली मुस्कुराहट थी।

"हम दोनों एक ही काम करते हैं मगर आप लेक्चरार कहलाती हैं और मैं उस्तानी। यह फर्क अगर न भी मिटे तो क्या कयामत आ जाएगी।" आलिया ने तलखी से जवाब दिया।

"वाह यह फर्क मिट भी कैसे सकता है। क्या तुमने इगलिश में एम०ए० किया है। गधे और घोड़े में कोई फर्क तो जरूर होता है।" नजमा फूफी चाय पीने बैठ गईं।

"उस्तानी जी, कालेज से तांगा आ गया है।" बाहर से आवाज आई।

"तांगों वालों के लिए हम और आप दोनों बराबर हैं।" आलिया जोर से हँसी।

"आप इन्हें समझाती क्यों नहीं ?" वह तांगा पर जा बैठी। नजमा फूफी क्या कह रही थी उसने सुना नहीं।

"स्कूल से वापसी पर आलिया ने देखा कि कोई आंगन में खड़ा है। वह पीछे से पहचान न सकी मगर जैसे ही दो कदम आगे बढ़ी तो छम्मी पलट कर उससे लिपट गई।

"अरे छम्मी तुम आ गई ?" आलिया उसे जोर-जोर से खींच रही थी, "और वह बरामदे में कौन लेटा है खटोले पर ?"

"पता नहीं बजिया।" छम्मी झेंप गई।

"छम्मी की बिटिया है और कौन है।" बड़ी चची ने निहाल होकर बताया।

"ओह !" आलिया बुर्का उतारना भी भूल गई और बच्ची की तरफ भागी, "हाय, कितनी प्यारी है, बिल्कुल छम्मी की तरह।" आलिया का जी चाहा कि उसे सोते से उठाकर खूब प्यार करे। उसे याद आ रहा था कि अगर तहमीना आपा जिन्दा होतीं तो शायद उनके भी एक-दो बच्चे होते।

बच्ची के मुँह से दुपट्टा सरक गया था और गाल पर मक्खी आ बैठी थी। आलिया ने मक्खी उड़ा कर मुँह ढाँक दिया, "कल मैं स्कूल से आते वक्त इसके लिए एक छोटी सी मच्छरदानी खरीद लाऊँगी। फिर मक्खियों से बचाव हो जाएगा।" आलिया ने कहा।

"लो भला मक्खियों से कौन बचाता है। यह सब तो हमारे यहाँ मौसमी तितलियाँ हैं बजिया।" छम्मी हँस दी, "अगर हमारे गाँव में कोई ऐसी बात करे तो सब मजाक उड़ाने लगते हैं। भला मक्खियों से भी कोई बच सकता है।" वह फिर

हँसने लगी। कैसा दुख था उसकी हँसी मे। वह दुबली हो गई थी इसलिए कुछ ज्यादा ही खूबसूरत लग रही थी। जमील भय्या ने छम्मी को खोकर गलती जरूर की है। आलिया को ख्याल आया और वह बुर्का उतारने लगी, 'बड़े चचा से मिली ?" उसने बुर्का लपेटते हुए पूछा।

"कहाँ ? वह घर मे आए ही नही।" छम्मी ने कहा और फिर बडी चची की तरफ मुड गई "अच्छे तो हैं बड़े चचा ?"

"बस अच्छे ही हैं। कमजोर हो गए हैं।"

"तुम खाना खा चुकी हो छम्मी ?" आलिया ने पूछा।

"नही मैं तो आपका इन्तजार कर रही थी बजिया।"

छम्मी की बिटिया जागकर रोने लगी तो बडी चची ने उसे उठा कर कन्धे से लगा लिया और बडी मुहब्बत से थपकने लगी। अम्मा तख्त पर बैठी छालिया काट रही थी। उन्होंने एक बार भी छम्मी या बच्चो की तरफ नही देखा। जब से आलिया स्कूल मे तैनात हुई थी अम्मा की नजरो मे सबके लिए कितनी हिकारत पैदा हो गई थी। फिर छम्मी से तो वह हमेशा का बैर रखती थी।

"तुम्हारे मियाँ नही आए छम्मी ?"

"नहीं बजिया, वह कैसे आते। उनकी भैंस बीमार थी। उन्होंने मुझे जनाने डिब्बे मे बैठा दिया था और एक बूढी औरत से कह दिया था कि मुझे देखे रहे।" वह हँसने लगी, "तुम बहुत याद आती थी छम्मी।" आलिया ने उसे प्यार से देखा। छम्मी अपने माहौल से सतुष्ट नही। यह सोच-सोचकर उसे दुख हो रहा था।

"मैं भी आप ही से तो मिलने आई हूँ।"

"हूँ, तुम्हारे जाने के बाद घर मे शांति हो गयी थी। इसलिए तुम्हे याद करके तडपती थी।" अम्मा ने जली-कटी नजरो से छम्मी को देखा।

"अच्छा !" छम्मी उनके व्यग को सहकर हँस पडी।

अरे क्या छम्मी इतनी ठण्डी पड चुकी है। आलिया को यकीन न आ रहा था। कैसी गभीर और भारी-भरकम सी लग रही थी।

"छम्मी इसको तू मुझे दे दे। इसे पाल के जिन्दगी के दिन कट जाएँगे।" बडी चची छम्मी की बिटिया को चूम-चूम कर कह रही थी।

'ले लीजिए बडी चची।" छम्मी ने कहने को तो कह दिया मगर उसका चेहरा फक् हो गया। शायद छम्मी को अपनी परवरिश का जमाना याद आ गया था। उसे भी तो यहाँ पलने के लिए छोड दिया गया था।

छम्मी की बिटिया भूख से बिलबिला कर जोर जोर मे रोने लगी तो छम्मी ने खाना छोड दिया और हाथ धो कर उसे गोद मे ले लिया। बडी चची कमरे मे

चली गईं। अम्मा पहले ही कमरे मे पानदान लेकर जा चुकी थी। शायद उन्हें खतरा होगा कि छम्मी अपने कमरे में डेरा न डाल दे।

कितनी सख्त गर्मी पड़ रही है। हवा बन्द होने की वजह से सख्त उमस होती। दोपहर काटे न कटती।

"करीमन बुआ साहबजादी के लिए यह खिलौने ले जाओ और छम्मी बिटिया को मेरी दुआ कहो और अगर सब लोग खाना खा चुके हो तो...।" इसरार मियाँ बैठक के किवाड़ो की आड मे खड़े कह रहे थे और करीमन बुआ सबके आगे से बचा हुआ सालन एक प्याले में जमा करके इसरार मियाँ के हैजामार करने का सामान कर रही थी।

आलिया ने हाथ बढ़ाकर खिलौने ले लिए तो करीमन बुआ जैसे बिलबिला उठी, "खुदा की शान है। जमाने, जमाने की बात है। इसरार मियाँ छम्मी बेटा की औलाद के लिए खिलौने लाएँ।" करीमन बुआ ने सालन का प्याला और दो रोटियाँ उनके आगे बढ़े हुए हाथ पर पटक दिया।

"यह खिलौना इसरार मियाँ ने दिए हैं और दुआ कही है।" आलिया ने बच्चो की तरह झुनझुना बजाया।

"इस तरह तो ऊँचे होने से रहे इसरार मियाँ। यूँ ही झलझलाते फिरते हो। अपनी औकात भी नही पहचानते।" करीमन बुआ अब तक बड़बड़ा रही थी।

'करीमन बुआ अल्लाह करे तुम गूंगी हो जाओ या इसरार मियाँ मर जाएँ।' आलिया ने दिल ही दिल मे दुआ की और फिर बड़ी चची के पास बैठ गई। वह कपड़ों की गठरियों और तलेदानियो को खोले रेशमी टुकड़े छम्मी की बिटिया के लिए कुरता, टोपी सी रही थीं और बराबर बातें किए जा रही थी, "छम्मी तुम्हारी सास कैसी है? लड़ती तो नही। तुम्हारा मियाँ तो तुमसे बहुत मुहब्बत करता होगा?" छम्मी हँस-हँस कर हर बात का जवाब हाँ मे दे रही थी मगर आलिया देख रही थी कि छम्मी सबसे नजरें बचा रही है। "मुझे यह इतनी प्यारी क्यों है बजिया?" तमाम बातो से बचने के लिए छम्मी ने दूसरी बात शुरू कर दी।

"तुम्हारी बेटी जो है।"

"जबसे यह सामने आई है सारी दुनिया हेच हो गई है।" छम्मी ने ठण्डी साँस भरी और बिटिया को सीने से लगा कर लेट गई, "इसके बाप और दादी को इससे कोई मुहब्बत नही। उन्हे बेटा चाहिए था।" जरा ही देर मे छम्मी सो गई और सोने में लम्बी-लम्बी आहें भरने लगी। मगर आलिया बड़ी चची के साथ सारी दोपहर कुरता, टोपी सिलाती रही। शाम को सब लोग बैठे चाय पी रहे थे कि बड़े चचा आ गए। छम्मी ने उनकी तरफ देखा और मुँह फेर लिया।

"बड़े चचा खड़े हैं। मैं तो पहचानी नहीं।" वह बड़े व्यंग से हँसी, "तस्लीम बड़े चचा। सुनाइये आप की कांग्रेस पार्टी के क्या हाल हैं। माशा अल्लाह गाधी मियाँ की उम्र तो लम्बी होती जा रही है।"

अरे यह तो वही छम्मी है! बस इतना फर्क है कि अब गोद में बच्चा है। आलिया उसे हैरान नजरों से देख रही थी।

"तुम्हारे घर में सब खैरियत है।" बड़े चचा बौखला कर बैठक की तरफ पलटे, "करीमन बुआ चाय बाहर भिजवा दो।"

"उम्र लम्बी न हो तो क्या हो। बेचारा हिन्दुस्तान पर हुकूमत के ख्वाब देख रहा है। लो भला लगोटी बांधकर हुकूमत करेगा।" अम्मा खुश होकर छम्मी से बोल पड़ीं। ऐसे मामलों में तो वह सौ फी सदी छम्मी के साथ रहती। फिर इधर तो वह अंग्रेज हुकूमत पर दिलोजान से कुर्बान होने को तैयार थी। वजह यह थी कि जब से आलिया मुलाजिम हुई थी अम्मा की अंग्रेज भाभी बहुत मुहब्बत से खत लिखने लगी थी। इन खतों में वह बड़े मजे-मजे की बातें लिखा करती थी। मसलन यही कि अगर हिन्दुस्तान में हर औरत अपने पांव पर खड़ी हो जाए तो फिर यह मुल्क भी इंग्लैंड की बराबरी कर सकेगा।

"छम्मी अब तो तुम इतनी बड़ी हो गई हो, अम्मा बन चुकी हो, कुछ तो लिहाज करती बड़े चचा का।" आलिया ने जब्त करने के बावजूद छम्मी को टोक दिया।

"बस जाने क्या हो गया था। मैं उनसे माफी माँग लूँगी बजिया।" वह सिर झुका कर कुछ सोचने लगी, "मैं सुबह चली जाऊँगी।" वह करीमन बुआ की तरफ मुड़ गई, "करीमन बुआ इसरार मियाँ से कह देना कि वह सुबह तांगा ले आएँ और मुझे गाड़ी पर बिठाल दें।"

"अरे तो क्या तुम इतनी जल्दी चली जाओगी। छम्मी क्या तुम नाराज हो?" आलिया उसके पास सरक कर खड़ी हो गई।

"अई हद करती हैं आप भी! मैं आपसे नाराज हो सकती हूँ? आपको क्या पता कितनी मुश्किल से एक दिन की इजाजत मिली है। आप नहीं जानतीं आलिया बजिया, आप नहीं जानतीं।" उसकी आँखों में आँसू आ रहे थे, "जी तो यही चाहता है कि यहीं पड़ी रहूँ पर अब यह मेरी बिटिया जो है। अरे इसका कोई अच्छा सा नाम तो बता दें बजिया। इसकी दादी ने तो इसका नाम तमीजन रखा है।" छम्मी नाम बता कर हँसते हँसते लोट-पोट गई।

"तुम रुक क्यों नहीं सकतीं। आठ-दस दिन तक मत जाओ। घर कितना अच्छा लग रहा है। लगता है बहार आ गई।" आलिया भावुक हो रही थी, "तुम्हारे

जाने के बाद कैसा सन्नाटा छाया है छम्मी। जी ऊब जाता है इस खामोशी से।"

"फिर आऊँगी अजिया।" छम्मी बड़े अनमने ढंग से अपनी बिटिया को थपक रही थी।

गली मे तांगा रुका और नजमा फूफी घर मे दाखिल हुई, अरे वाह! छम्मी आई है! क्या हाल-चाल है? और यह तुम्हारी बेटी है? बड़ी प्यारी है। बाप पर बिल्कुल नही पड़ी।" उन्होने प्यार से बिटिया के गाल थपथपाए, "इसे खूब पढ़ाना छम्मी वरना यह भी अनपढ रह जाएगी सब की तरह।"

"आपके पास भेज दूँगी। पढ़ा दीजिएगा न?" छम्मी का छोड़ा तीर नजमा फूफी के माथे को बिगाड़ गया, "अच्छा फिर बातें होगी। अभी तो मैं थकी हुई हूँ।" वह खट-खट करती जीने पर चढने लगी।

"कुछ शकील की भी खबर लगी।" छम्मी ने फुसफुसा कर पूछा।

"नही छम्मी।" आलिया ने चुपके से जवाब दिया।

"और हमारे अब्बा ने भी कभी खत लिखा?"

आलिया ने कोई जवाब न दिया, बच्ची का गाल सहलाती रही। छम्मी जवाब न पाकर इधर-उधर देखने लगी।

सब को पूछा मगर जमील भैया को भूल गई। इस मुहब्बत में कोई हकीकत नही होती। आलिया को अजीब सा महसूस हो रहा था। रात आसमान इस कदर साफ था कि चाँदनी दूध मे नहाई हुई मालूम हो रही थी। आँगन मे बराबर से बिछे हुए पलँगो में आज एक नन्हे से खटोले की वृद्धि हो गयी थी और उस खटोले पर पड़ी हुई एक नन्ही सी बच्ची की गूँ, गाँ रात को और भी खूबसूरत बना रही थी। कल की मूसलाधार बारिश ने आज की रात को हल्का सा सर्द कर दिया था। आज तो आलिया ने भी छत पर सोने के बजाए आँगन मे छम्मी के बराबर अपना बिस्तर लगा लिया था। सब एक जगह जमा थे। बातें हो रही थी और छम्मी की बिटिया बराबर गूँ, गाँ किये जा रही थी। बस एक नजमा फूफी थी जो आज भी अलग-थलग अनपढ़ों की सोहबत से दूर छत पर अकेली पड़ी थी। हाँ बड़े चचा ने भी छम्मी से मिलने के बाद फिर घर मे कदम न रखा था। बैठक मे खाना खाया और बाहर चबूतरे पर बिस्तर लगवा कर लेटे जाने किससे बातें कर रहे थे।

"करीमन बुआ एक अच्छी सी कहानी सुना दो।" छम्मी ने फर्माइश की। वह इस वक्त जरा सी बच्ची लग रही थी।

"अब तो याद भी नहीं आती, छम्मी बिटिया।" करीमन बुआ सोचने लगी।

"कोई भी कहानी सुना डालो करीमन बुआ कि हाय कितने मजे की बातें होती हैं यह कहानियाँ भी।" आलिया भी ज़िद करने लगी। किताबो की दुनिया से

वह थक चुकी थी। इस वक्त तो उसका दिल चाह रहा था कि कोई मासूम सी कहानी सुने।

"अरे वही कहानी सुना दो करीमन बुआ कि एक बादशाह था, उसकी सात बेटियाँ थीं। एक दिन बादशाह ने अपनी सात बेटियों को बुलाकर पूछा कि तुम किसकी किस्मत का खाती हो तो सबने कहा कि आपकी किस्मत का। मगर सबसे छोटी ने कहा कि मैं अपनी किस्मत का खाती हूँ और बादशाह ने उसे जगल में डलवा दिया कि अपनी किस्मत का खाओ और फिर वह लडकी जगल मे अकेली बैठी रो रही थी कि एक देव आया और उसने लडकी के लिए महल बना दिया और बस। वही सी कहानी सुना दो करीमन बुआ। इतनी बहुत सी तो मैंने याद दिला दी।" छम्मी उठकर बैठ गई।

"अच्छा तो फिर सुनो। एक था बादशाह। हमारा-तुम्हारा खुदा बादशाह। हाँ तो उस बादशाह की सात लडकियाँ थीं। एक दिन बादशाह ने उन सातों को बुलाकर पूछा...।"

करीमन बुआ कहानी कहे जा रही थीं मगर आलिया ने एक लफ्ज न सुना। वह तो सोचने लगी कि आखिर छम्मी को यही कहानी क्यो याद आई। क्या छम्मी को अपनी किस्मत से कोई उम्मीद थी। वह तो कितनी मुद्दत से अपनी बदनसीबी के जगल में भटक रही थी मगर अब तक कोई देव नही आया। अरे छम्मी यह जो लोग कुछ न पा सकने की हसरत मे मासूम कहानियो से जी बहलाते हैं उनमे कोई हकीकत नही होती।

कहानी खत्म भी न होने पाई थी कि छम्मी को नींद की परी ले उडी। जाने किस महल मे ले गई होगी। जाने किस शहजादे के पहलू में बिठा आई होगी।

सुबह छम्मी चली गई मगर स्कूल जाते हुए आलिया को महसूस हो रहा था कि वह रजीदा है। आज वह स्कूल मे जी से न पढा सकेगी। कुछ दिन के लिए छम्मी रुक ही जाती तो क्या था।

बयालिस

नागासाकी पर बम गिरते ही जंग खत्म हो गई थी। जापान ने हथियार डाल दिए थे। दिल्ली से जमील भैया का खत आया था कि अब वह जल्द आ जाएँगे। अब उनका काम खत्म हो गया और

आज जब चार बजे वह सोकर उठी तो उसने देखा कि सचमुच जमील भैया आ गए हैं। उसकी समझ मे न आया कि क्या करे। फौरन नीचे चली जाए या यहीं बैठी रहे। मगर इस तरह तो शायद बड़ी चची बुरा महसूस करें। और आखिर वह यहां बैठी ही क्यों रहे। वह नीचे उतर गई। अम्मा और बड़ी चची जमील को घेरे बैठी थीं। करीमन बुआ चाय का सामान तैयार कर रही थी। कितनी मुद्दत बाद बड़ी चची का चेहरा खिला हुआ नजर आ रहा था।

"मगर आप लोग डरती क्यो थी ? मैं तो दिल्ली मे बैठकर अपनी कलम से जग लड रहा था। मेरा मोरचे पर क्या काम था।" जमील भैया हंस-हंसकर कह रहे थे।

"बस मैं डर रही थी कि कहीं तुम भी लडने के लिए न भेज दिए जाओ। जब कोई बात होती तो मैं तडप जाती। तुम खत भी तो न लिखते जल्दी। जब देर होती तो मैं समझती कि तुम भी जग पर चढने न भेज दिए गए हो।" बडी चची अपनी बेवकूफी पर शरमा रही थीं, "फिर तुम कभी आए भी तो नहीं। अरे दिल्ली इतनी दूर तो न थी।"

"और हमारे अब्बा ने भी कभी न समझाया कि हमारा काम क्या है ? मैं कहां-कहां जा सकता हूं। ख्वामख्वाह आप परेशान रहीं।" जमील भैया बडी चची से लिपटे जाते, "इतने दिन न आया तो क्या हुआ, अब तो आ गया।" उन्होंने मुड़कर देखा, "ओह आलिया बीबी...। अच्छी तो हो ? अब तो तुम बड़ी आदमी हो गई हो। हम तो यूंही अनपढ रह गए, मुझे पढाओगी कि नहीं ?"

"यह छोटे-बडे का क्या जिक्र ले बैठे आप। सुनाइये कैसे रहे ?" आलिया ने उनकी आंखो में आंखें डालकर बात करने की कोशिश की मगर जल्दी ही नजरें झुक गई। फौजी वर्दी में जमील भैया खासे खूबसूरत लग रहे थे।

"जंचती है न यह वर्दी। लगता हूं न बेवकूफ या फिर खूबसूरत ?" जमील भैया शायद उसे छेड रहे थे।

"जग की कोई भी निशानी खूबसूरत हो सकती है ?" उसने बडी गभीरता से जवाब दिया।

"अरे भई अम्मा जल्दी कीजिए मैं अपनी वर्दी उतार दूं ताकि कुछ तो खूबसूरत लगूं। मेरे बक्स कहां हैं ? आप कपडे निकाल दीजिए।" जमील भैया जोर से हंसे, "मैं घर आकर कितना खुश हूं। कितनी मुद्दत बाद सब को देखा है।" उन्होंने बडी गहरी नजरों से आलिया की तरफ देखा। दूर रहकर इंसान कितना कृतज्ञ बन जाता है। वह एकदम सजीदा हो गए, "भई तुमने भी मुझे याद किया था ?" उन्होंने आलिया से पूछा।

"हाँ, जब बड़ी चची आपको याद करके रोती थी तो आप याद आ जाते थे।" उसने बड़ी बेतल्लुफी से जवाब दिया।

"तुम बिल्कुल नही बदली। बिल्कुल वैसी हो।"

"आप अपने सिलसिले मे कुछ बताइये।"

"अपने लिए क्या बताऊँ। नौकरी से छुट्टी लेकर आया हूँ अब फिर वही बेकारी होगी और हम।" उन्होने बुझी आवाज मे कहा।

"तो आप नौकरी छोड़ क्यो आए जमील भैया। अब जाहिर है कि बेकारी का मुँह देखना ही पड़ेगा। पहले आपने इस नौकरी को कैसे कुबूल कर लिया था। बड़े चचा की ज़िद में?"

"ओह! मैं उनसे क्या ज़िद करूँगा।" उनके लहजे मे सख्ती थी, "मेरा मकसद पूरा हो गया तो नौकरी भी गई। कोई ज़रूरी था कि जो किया था उस पर कायम रहूँ? अब तो आज़ाद होने के बाद ही नौकरी करूँगा।"

"देखो जमील मियाँ यह बातें मत करो। अब तो तुमने देख ही लिया कि अंग्रेज से लड़कर बड़े-बड़े मुल्कों को भी कितना भुगतना पड़ा। इसलिए आज़ादी के ख्वाब देखना छोड़ दो।" अम्मा ने जमील भैया को समझाया।

"ठीक कहती हैं आप। मैं तो सब कुछ छोड़ चुका हूँ। वह बड़ी शालीनता से सिर घुमा कर बैठ गए।

"तुम शकील से मिले थे?" बड़ी चची ने जमील भैया को कपड़े देते हुए सवाल किया।

"मिला था अम्मा। मगर उसने तो मुँह फेर लिया। वह बड़ा आदमी हो गया है। वह हम लोगो से कोई वास्ता नही रखना चाहता। आप उस नालायक को मत पूछा कीजिए।"

"जाओ नहा लो।" बड़ी चची ने ठण्डी साँस भरी।

"अम्मा हमारे अब्बा कहाँ हैं?"

"सुबह से कहीं गए हैं। बस अब आते ही होगे।" बड़ी चची ने बताया।

"कभी बड़े चचा भी आपको याद आते थे।" आलिया ने हँसकर पूछा।

"अब्बा कभी मुझको याद करते थे?" उन्होने भी हँसकर पूछा, "और तुम तो मुझे याद करती ही नही थी।"

"इन यादो वगैरह से मुझे कोई दिलचस्पी नही।" उसने नजरें घुमा ली।

वह चुप हो गए। कुछ मिनट तक कुछ सोचते रहे और फिर करीमन बुआ से लिपट कर खड़े हो गए, "मेरी करीमन बुआ तुम तो मुझे याद करती थी न। तुम आज मेरे लिए क्या पका रही हो?"

"मैंने तो तड़प कर दिन गुज़ारे हैं। आपका नमक खाती हूँ जमील मियाँ।"

करीमन बुआ ने उनकी बलाएँ ले ली, "अपने जमील मियाँ के लिए पुलाव पका रही हूँ।"

जमील भैया ने कनखियों से उसकी तरफ देखा तो उसने मुँह फेर लिया। काश आज उसकी छुट्टी न होती, आज भी वह स्कूल में लड़कियों से सिर खपा रही होती।

"अरे हाँ, वह हमारी नजमा फूफी कहाँ हैं अम्मा।" जमील ने पूछा।

"वह तो अब इस घर से सख्त बेज़ार रहती हैं। इसलिए अपनी एक सहेली के घर जा बैठती हैं। वह भी उनके कालेज में पढ़ाती हैं।" बड़ी चची ने जवाब दिया।

"फिर तो यकीनन वह इंगलिश में एम० ए० होगी। वैसे दोस्ती कैसे हो सकती है?" जमील भैया ने एक कहकहा लगाया और कपड़े उठा कर गुसलखाने में चले गए।

बड़ी चची बहुत व्यस्त थी। जमील भैया के बक्स ठीक हो रहे थे। अम्मा तख्त पर दस्तरख्वान बिछा रही थी। आलिया सिर न्योड़ाए सोचे जा रही थी कि अब इस घर में कैसे गुज़ारा होगा। जमील भैया तो जंग खत्म कर आए मगर उसके ज़ेहन में जो जंग होगी उसे कौन सा एटम बम खत्म करेगा।

"जमील आ गया है तो घर कैसा अच्छा लग रहा है।" बड़ी चची ने अम्मा की तरफ देखा।

"घर का मालिक जो है। उसी के दम से रौनक है बड़ी भाभी।" अम्मा निहाल होकर बोलीं।

"इसके मालिक बड़े चचा हैं।" आलिया ख्वाहमख्वाह बीच में कूद पड़ी।

अम्मा ने उसे कोई जवाब न दिया। जब से वह कमाने-कजाने के लायक हुई थी अम्मा उसकी सारी बातों को पी जाया करती।

आलिया बड़े चचा के लिए हुड़कने लगी। जाने सुबह से कहाँ मारे-मारे फिर रहे हैं। न वक्त पर खाना है न आराम। कितने कमज़ोर हो गए हैं। और अब तो जमील भैया आ गए हैं। हर वक्त का मुकाबला होगा। इतने दिन से बिछड़े हुए यह बाप बेटे जाने किस तरह मिलेंगे।

जमील भैया नहा कर निकल आए। अम्मा उन्हें अपनी जागीर की तरह पहलू में बिठाने की कोशिश कर रही थी। आलिया की जान सुलग उठी। वह अपनी अम्मा की इस मुहब्बत की जिम्मेदार नहीं। वह उन्हें जमील भैया जैसा शानदार दामाद देने से कतई मजबूर है।

जमील भैया अम्मा के पास दो चार मिनट बैठने के बाद उठ कर टहलने

लगे और जब टहलते हुए उसके पास से गुजरे तो उसने सूचना दी, "छम्मी आई थी।"

"अच्छा।" जमील भैया मुंह लटकाए आगे बढ़ गए और जब दूसरे चक्कर में उसके पास से गुजरे तो वह फिर भी चुप न रह सकी, "उसने आप को जरा भी याद न किया। उसकी एक प्यारी सी बिटिया है।"

"बहुत खूब! मगर मैंने कब कहा है कि तुम सारी कथा सुना डालो। मैंने कब चाहा था कि वह मुझे याद करे।" वह भुनभुनाते हुए अम्मा के पास जा बैठे।

जमील भय्या को सताकर उसे बड़ी खुशी महसूस हो रही थी। उसने उनके टहलने और उसे छूकर निकल जाने का सारा मजा किरकिरा कर दिया था।

"करीमन बुआ जल्दी से खाना तैयार कर लो। खा-पीकर बाहर निकलूं। कुछ देखूं-भालूं।" जमील भय्या सख्त बदमजा हो रहे थे।

"लो इतनी जल्दी पड़ गई बाहर निकलने की।" बड़ी चची ने प्यार भरे गुस्से से उनकी तरफ देखा।

"कारोबार जो देखना हुआ बडी चची।" आलिया ने व्यंग किया मगर सब इस कदर मूड में थे कि कुछ समझे ही नहीं और हँसना शुरू कर दिया। जमील भय्या उसे अँधेरी-अँधेरी आँखों से देख रहे थे।

खाने के बाद जमील भय्या बाहर चले गए और आलिया ऊपर कमरे में आ गई। रात बदल गई थी। अब दिन में बस मामूली सी गर्मी होती फिर भी उसे महसूस हो रहा था कि आज बड़े जोर से गर्मी पड़ रही है। उसका सारा जिस्म जल रहा है। वह आराम नहीं कर सकती। सारी दोपहर बिस्तर पर करवटें बदल कर गुजर गई। वह अपने सम्बन्ध में सोच-सोच कर थक चुकी थी।

शाम को जब आलिया चाय पीने के लिए नीचे उतरी तो जमील भय्या अपनी लोहे की कुर्सी पर बैठे शायद चाय का इन्तजार कर रहे थे, "आलिया बीबी!" उन्होंने धीरे से पुकारा।

"जी।" वह आगे बढते-बढते रुक गई।

"यहाँ आकर अजीब सा एहसास हो रहा है। दूरी भी कितनी अच्छी चीज होती है। फासले बहुत कुछ मिटा देते हैं।" उन्होंने लम्बी साँस ली।

"ठीक है जमील भैया।" उसने नजरें झुकाए हुए जवाब दिया और जल्दी से बरामदे में चली गई।

अम्मा अभी तक कमरे से न निकली थीं और बडी चची जाने किन इन्तजामों में जुटी हुई थीं। करीमन बुआ ने चायदानी तिपाई पर रख दी तो उस वक्त बड़े चचा शेरवानी के बटन खोलते हुए घर में दाखिल हुए।

आलिया प्यालियो मे चाय बना रही थी कि सब छोड छाडकर घबरा कर खडी हो गई।

"अस्सलाम आलेकुम।" जमील भय्या ने खडे होकर कहा।

"बडे चचा ने जैसे चौंककर जमील भय्या को देखा, "आलेकुम सलाम।" वह मुंह हाथ धोने के लिए चौकी पर बैठ गए, ' सब खैरियत है ?"

"सब खैरियत है।" जमील भैया चाय की प्याली उठा कर फिर कुर्सी पर बैठ गए।

आलिया चाय बनाने लगी। या अल्लाह ये बाप बेटे हैं! इतनी मुद्दत बाद ये इसी तरह मिल सकते थे ? दृष्टिकोण की खाई दोनो के बीच मे हायल है। दोनों में से कोई भी उसे फलांगने पर तैयार नही था। यही मुश्किल है कि छम्मी की तरह जमील भय्या ने मुंह नही फेरा।

मुंह हाथ धोकर बडे चचा बैठक में चले गए और करीमन बुआ ने वही चाय पहुँचा दी।

"जिन्दगी कठिन भी है और आसान भी। यह सब कुछ इन्सान के अपने हाथ में है कि वह अपनी जिन्दगी से किस तरह का बरताव करना चाहता है। क्या ख्याल है तुम्हारा ?" उन्होने चाय की प्याली उसकी तरफ बढा दी, "एक प्याली और बना दो आलिया बीबी ?" जमील भैय्या उस वक्त बहुत रजीदा नज़र आ रहे थे।

"मेरा भी यही ख्याल है। मगर आप चाहें तो अपनी जिन्दगी को आसान बना सकते हैं।" आलिया ने उनकी तरफ प्याली बढाई, "लीजिए, लीजिए।" वह प्याली पकडा कर उठ खडी हुई और इस नाजुक बहस से बचने के लिए अपने कमरे की तरफ भागी। अम्मा और बडी चची चाय पीने के लिए आ रही थी।

शाम की उदासी हर तरफ रची हुई थी। सूरज पीपल के घने पेडो के पीछे डूब रहा था। वह धीरे धीरे छत पर टहलने लगी। करीब के घरो से धुंआ उठ उठ कर वातावरण को बोझिल बना रहा था। मसालो और बघार की खुशबू हवा मे बसी हुई थी।

टहलते-टहलते वह थककर कमरे की चौखट पर बैठ गई। सूरज डूबते ही हवा सर्द हो गई थी। उसे अपने हाथो मे ठण्डक दौडती महसूस हो रही थी। जमील भय्या ने आते ही उसे परेशान कर दिया था। उसकी शांति ध्वस्त-व्यस्त हो रही थी। वह सोचने लगी कि जमील भय्या जब दुनिया मे किसी रिश्ते-नाते को नहीं मानते तो मुहब्बत पर किस तरह ईमान ले आए। यह हज़रत इन्सान भी खूब चीज होते हैं। नही मानते तो खुदा को भी हरफ ग़लत समझने लगते हैं और जब मानने पर आते हैं तो पैरों की चौखट पर उसका जलवा देखने लगते हैं। 'जमील भय्या तुमने मुझे

किस मुसीबत में फंसा दिया है।' वह सोचते-सोचते बड़बड़ाने लगी।

जीने पर खटर-पटर हुई और नजमा फूफी आकर आराम-कुर्सी पर आसीन हो गईं। सारा दिन अपनी दोस्त को भुगत कर आई थी इसलिए काफी थकी-थकी नजर आ रही थीं। आलिया उनके कमरे की चौखट से उठने ही वाली थी, कि नजमा फूफी ने खंखार कर उसे आवाज दी, "इधर आओ आलिया।"

उसने चौंक कर नजमा फूफी की तरफ देखा। मारे हैरत के उससे उठा न जाता था। नजमा फूफी पहली बार उसे अपने पास बुला रही थीं।

"कहिए।" वह मसहरी पर उनके पास टिक गई।

"इस घर में कोई इस लायक नहीं कि उससे बात की जाए। घर में कम से कम सही लेकिन तुमने थोड़ा-बहुत पढ़ा तो है। शायद तुम मुझे सलाह दे सको।" नजमा फूफी ने ग़ौर से उसकी तरफ देखा।

"सलाह देने की काबिलियत तो नहीं फिर भी शायद कुछ सोच सकूं।" उसने अपने गुस्से को काबू में रखते हुए जवाब दिया।

"शादी के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है। मेरे साथ की सारी लेक्चरारें शादियां कर रही हैं।"

"आप भी कर लीजिए। मेरा ख्याल है कि शादी अच्छी चीज है, खास तौर से आप के लिए।" उसने बेहद गंभीरता से कहा।

"यानी सिर्फ मेरे लिए? कितनी फिजूल सी बात कर रही हो। क्या तुम शादी नहीं करोगी?" वह ज़रा सा बफर गईं, "खैर तुम्हारी शादी तो घर ही में जमील मियां के साथ हो सकती है। तुमको इससे ज्यादा क्या मिल सकता है। मगर मेरे लिए मेरे बराबर का आदमी मिलना मुश्किल है।"

आलिया का जी चाहा कि नजमा फूफी के मुंह पर थूक दे मगर वह जब्त से काम ले गई। थूकने के बाद तो बात खत्म हो जाती थी। और उसका जी चाह रहा था कि बात खत्म न हो। वह खूब खरी-खरी सुना ले, "देखिए नजमा फूफी, जहां तक जमील भैया की काबिलियत का सवाल है तो इस घर में कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता, वैसे मैं उनको बहैसियत इन्सान पसन्द नहीं करती। वह मेरे चचेरे भाई हैं और बस। इसलिए आप दूसरे रिश्ते मत सोचिए। अपनी बात कीजिए। मेरा ख्याल है कि इतने बड़े इस मुल्क में किसी न किसी शख्स ने अंग्रेज़ी में एम० ए० ज़रूर किया होगा और वह आपका शौहर बन सकेगा। इस काम के लिए आप ढिंढोरा पिटवा दीजिए।"

"यह क्या बकवास कर रही हो। इस घर में सब जाहिल हैं। मैं किससे बात करूं खुदाया।"

"आप इतनी महान डिग्री रखने के बाद भी किसी से सलाह की जरूरत समझती हैं ?" आलिया उठकर छत पर आ गई। नजमा फूफी क्या कहती रह गईं उसने कुछ भी न सुना।

'सब लोग खाना खा लो।" नीचे आँगन मे खडी हुई करीमन बुआ पुकार रही थी।

तैंतालीस

इस घर में वक्त कठिन है। जिन्दगी पुलसरात[1] पर गुजरने का नाम है। कितना अच्छा होता कि वह यहाँ से भाग सकती। जमील भैया से पीछा छुडा सकती। मगर यह सब कुछ कितना असभव था। अगर वह चली जाए तो बडे चचा क्या कहेंगे ? यही न कि जब अपने पैरो पर खडी हो गई तो आँखें फेर ली। अब तो घर की हालत भी पहली जैसी हो गई थी। जमील भैया नौकरी से अलग होकर जो बैठे तो आज तक बेकार थे। बडी चची ने जो थोडी बहुत रकम जमा की थी वह उस बेकारी के जमाने मे खत्म हो चुकी थी। आलिया ने कितना चाहा कि बडी चची को अम्मा से छिपाकर कुछ दे दिया करे मगर उन्होने बडे प्यार से इन्कार कर दिया। शायद वह अम्मा से डरती थी। जब से वह नौकर हुई थी अम्मा के ताने कितने खौफनाक हो गए थे। उन्हें इस घर से कितनी सख्त नफरत हो गई थी।

एक एक दिन बीमार की रात की तरह गुजर रहा था। दिसम्बर की सख्त सर्दी पूरे उठान पर थी। सुबह नौ-दस बजे तक कुहरे की वजह से अँधेरा छाया था। बरामदे के पर्दे आँधियो, बारिशो और धूप में पहले ही अपनी सारी हकीकत खो चुके। अबकी सर्दी मे तो हवा इन पर्दों से यूँ गुजर जाती जैसे मैदान मे फर्राटे भर रही हो। करीमन बुआ की कमजोर हड्डियाँ सर्दियों मे कडकडाती रहती और वह चूल्हे की कोख में घुस कर बीते हुए जमाने की याद मे बिलकने लगतीं—

"हाय वह भी कैसा जमाना था जब दालानो के पर्दे हर दूसरे साल बदल दिए जाते। पर अब वह जमाना कहाँ आएगा।" आलिया ने करीमन बुआ को अपना एक पुराना स्वेटर दे दिया था, जिसे इतनी सर्दी मे पहनने के बजाए उन्होंने सुरक्षित

---

१. मुस्लिम पुराणो के अनुसार स्वर्ग और नरक के बीच तलवार की धार जैसा दुर्लंघ्य पुल, जिसे केवल पुण्यात्मा ही पार करके स्वर्ग मे पहुँच पाते हैं।

कर रखा था, 'अगर यह स्वेटरपहन डाला था तो अगली सर्दी मे क्या पहनूंगी।' करीमन बुआ ने अपने हिसाव बड़ी समझदारी का सबूत दिया था।

बड़े चचा कई दिन पहले दिल्ली गए थे और इसरार मियाँ को दो-तीन दिन से बुखार आ रहा था। पता नहीं बैठक मे वह किस आलम मे पड़े रहते होगे और उनका इलाज वगैरह कौन करता। जमील भैया को जलसे-जलूसो से फ़ुर्सत न मिलती थी। घर आवे तो जालिम पेट मे आग लगी होती। अब वह इस आग को बुझाते या इसरार मियाँ के फनकते हुए जिस्म पर दवाओं से छींटे मारने बैठ जाते।

आलिया का फ़िक्र से बुरा हाल था। वह हर वक़्त सोचती रहती कि पता नही उनकी तबियत कैसी होगी जो न चाय माँगने की आवाज़ आती है और न खाना लेने के लिए हाथ फैलाते हैं। करीमन बुआ अपने-आप से बड़बड़ा उठती और बैठक में जाकर खाना-पानी डाल आतीं। वह खैरियत पूछती तो सख्त नागवारी से बताती कि सब ठीक है,·"बुखार हो गया है। कोई बडी बिमारी तो नही।"

खुदा न करे उनको बड़ी बीमारी हो। आलिया अपना कलेजा मसोस कर रह जाती। कैसा जी चाहता कि इसरार मियाँ के सिरहाने जा बैठे। उनका सिर दवाए। उन्हें अपने हाथो दवा पिलाए। मगर अम्मा की कड़ी नजरो के सामने वह इनकी इतनी पुरानी परम्पराओं को कैसे तोड देती। इस खान्दान मे तो कोई भी इन हरामी औलादों के सामने न आता था। नजमा फूफी बेपर्दा थी। इसके बावजूद कभी इसरार मियाँ का सामना न किया। कालेज से ताँगा आता तो वह खुद ही हट जाते। राह चलते देखते तो मुँह फेर लेते। एक बार आलिया बैठक मे गई तो इसरार मियाँ बैठे थे। वह उनकी सूरत भी न देख सकी थी कि उठ कर भागे, "पर्दा है बेटा।" और वह हक्का-बक्का खड़ी रह गई। अब ऐसी हालत मे वह इसरार मियाँ की तीमारदारी करती भी कैसे। क्या पता वह इस हालत मे भी, "पर्दा है बेटा," कहते बाहर भाग जाएँ। और फिर उसकी इस हरकत से अम्मा के दिल पर क्या गुज़रेगी। वह क्या कहेंगी। अब तो अम्मा ने उसकी खातिर इस मकान और जमील भैया दोनो से हाथ उठा लिया था। उन्होने बड़ी बेवसी के साथ उसके सामने सिर झुका दिया था। सब कुछ खोकर सिर्फ़ उसको अपना सहारा बना लिया था। फिर क्या फायदा था कि उनका जी दुखाया जाए। उनकी इतनी पुरानी परम्पराओ को ठोकरें मारी जाएँ। आखिर कही तो उसे भी झुकना होगा।

रात जब जमील भैया खाना खाने घर आए तो घिरे हुए बादल इतनी जोर से गरज रहे थे कि जी दहला जाता।

'शायद ओले पड़ेंगे।" करीमन बुआ बार-बार कह रही थी।

"किसने सिर मुँडवाया है करीमन बुआ जो ओले जरूर पड़ेंगे।" जमील भैया

ने हँस कर पूछा।

आज बहुत दिनो बाद हंसने-बोलने के मूड में नज़र आ रहे थे वरना इधर तो कुछ दिनो से इतने खामोश रहने लगे थे कि मुँह मे जबान न रही हो।

"अरे मियाँ सिर किसे मुँडाना है। मेरा ही झोटा मुंड रहा है। जरा इसरार मियाँ की खबर लो। बुखार आ रहा है। खाना-पीना सब बैठक मे पहुँचाना पडता है।" करीमन बुआ सख्त बेज़ार नज़र आ रही थी।

"क्या हो गया इसरार मियाँ को।" जमील भैया चौक पडे।

"कहा जो था कि बुखार आ रहा है। बड मियाँ दिल्ली गए हैं वरना आप ही दवा-दारू कर लेते। हमे क्या पडी थी जो बीच मे दखल देते। अब अगर इसरार मियाँ को कुछ हो गया तो वह आकर नाराज़ होंगे।

'मैं उन्हें देख लूंगा करीमन बुआ। वैसे कितनी सख्त नफरत है मुझे इस आदमी से।"

"इसलिए कि वह बेचारे हममे से एक नही हैं?" आलिया ने तडप कर सवाल किया।

"यही बात नही आलिया बीबी। मुझे उनसे सिर्फ इसलिए नफरत है कि वह अब्बा के साथ रह कर उन्ही जैसे बन गए हैं और मुझे यह भी मालूम है कि अब्बा के साथ बैठ कर मुझ पर नुक्ताचीनी भी करते हैं। बस अब तो इतनी कसर रह गई कि यह दोनो महाशय अपने माथे पर तिलक लगा लें।" वह सख्त नफरत भरी हँसी हँसे, "वैसे तुम इत्मीनान रखो आलिया बीबी कि मुझे उनके नाजायज होने का ज़रा भी ख्याल नही।"

"खैर वह तुम्हारे अपने चचा के बराबर सही मगर इस बेकार बहस से क्या फायदा।" अम्मा ने बेज़ार हो कर कहा।

"खुदा न करे नसीब दुश्मनाँ। भला इसरार मियाँ चचा के बराबर हो सकते हैं।" करीमन बुआ अम्मा के व्यंग को न समझती हुई एक दम बफर गईं, "ज़माने, ज़माने की बात है कि आज महलो की रानियाँ उसे चचा बना डाले।" करीमन बुआ ज़िन्दगी मे पहली बार गुस्ताखी कर रही थीं।

अम्मा, बडी चची और जमील भैया उनकी समझ पर हँसने लगे तो करीमन बुआ बौखला कर रोटी बेलने लगीं। जमील भैया बैठक मे चले गए।

बादल बडे ज़ोर से गरजे और इस तरह बिजली चमकी कि सबने सहम कर कानो मे उँगलियाँ दे ली, "जल तू जलाल तू, आई बला को टाल तू।" करीमन बुआ ज़ोर-ज़ोर से पढने लगीं।

"कही बिजली गिरी है।" बडी चची ने सहमी हुई आवाज़ से कहा।

तेज हवा से पर्दे उडे जा रहे थे। जमील भैया बैठक से निकल कर अभी बीच आंगन मे थे कि एक बार फिर जोर से बिजली तडपी और आलिया जैसे चीख पडी, "जल्दी से अन्दर भाग आइए जमील भैया।"

जमील भैया हँसते हुए अन्दर आ गए, "ओले पड रहे हैं मगर तुम क्यो डर गई आलिया बीबी ?"

"डरी तो नहीं थी। मैं तो आपको बता रही थी कि बिजली कडक रही है।" आलिया ने बेवकूफो की तरह बात बना दी। वह शर्मिन्दा हो रही थी कि भला चीखी ही क्यो थी। कौन सी बिजली गिर रही थी जमील भैया पर।

"यह हज़रत इन्सान को समझना भी कितना मुश्किल काम है। जब ये रोशन होते हैं तो अपने आपको अँधेरा साबित कर देते हैं और जब अँधेरा तो रोशन नज़र आने की बात करते हैं।" जमील भैया ने आलिया को प्यार से देखते हुए कहा। इस वक्त वह कितने खुश और आश्वस्त नज़र आ रहे थे।

"ठीक है जमील भैया। जिस तरह इन्सान को समझना मुश्किल है उसी तरह यह भी समझना मुश्किल होता है कि बाज वक्त इन्सान का व्यवहार उसके ख्याल से जुदा क्यो होता है। यूँही निरुद्देश्य जाने क्या कर गुजरता है।" उसने आँखों मे आँखे डालकर जवाब दिया। उसे पता था कि उसकी चीख के साथ जमील भैया उसके दिल से भागे चोर को पकड कर सामने लाना चाहते हैं।

"यह भी ठीक है आलिया बीबी।" वह एकदम बुझ से गए और फिर ज़रा देर के लिए खामोशी छा गई।

"बडे चचा इस वक्त कहाँ होगे और क्या कर रहे होगे। ध्यान भटकाने के लिए आलिया ने सोचना शुरू कर दिया।

खाना खत्म हुआ तो सब लोग सर्दी के डर से अपने अपने बिस्तरो की तरफ लपके मगर आलिया अपनी जगह से न उठी। उसे ऊपर अपने कमरे मे जाना था और बारिश थमने के बावजूद अब तक बिजली चमक रही थी। इस हालत मे वह आंगन कैसे पार करती। गरज, चमक उसे हमेशा से डराती रहती थी। परदा सरका कर उसने बाहर देखा। अँधेरे और काले बादलो के सिवा कुछ नज़र न आया। वह हिम्मत करके आंगन मे आ गई।

"चलो मैं तुमको ऊपर छोड आऊँ।" जमील भैया उसके पीछे निकल आए, "बिजली से डरती हो ?" ज़ीने तै करते हुए उन्होने पूछा। वह खामोशी से ज़ीने तय करती रही। शायरी से बिजली की बात छेडना सख्त खतरनाक बात होती है। नजमा फूफी लिहाफ मे मुँह छिपाए सो रही थी। वह दबे कदमो अपने कमरे मे आ गई। जमील भैया दरवाज़े के बीच मे खडे रहे।

"अच्छा रात खैर से बीते ! आप भी अपने कमरे मे जाकर सो रहिए।" वह धीरे से बोली।

'मैं थोडी देर तुम्हारे पास बैठ जाऊँ ? क्या पता फिर बिजली कडकने लगे। अकेले मे तुम जरूर डर जाओगी।" वह आगे बढ आए।

'मैं कतई नही डरती। आप जाकर सो रहिए।" उसने बेरुखी से कहा और अपने लिहाफ में दुबक गई। जमील भैया ने कोई जवाब न दिया। उसी तरह खडे जाने क्या सोचते रहे और वह लिहाफ के अन्दर कांपती रही। जाने अब क्या कहेंगे। पन्द्रह-बीस मिनट सदियो की तरह गुजर गए। फिर वह एकदम चले गए। उन्होने कुछ न कहा।

सदियो को गुजार कर जब उसने इत्मीनान की सांस ली तो फिर ख्याल आया कि जमील भैया थोडी देर यहां और बैठ लेते, कुछ बातें कर लेते तो क्या बुरा था। इस सिर-फिरे ख्याल से बचने के लिए आलिया को इसरार मियाँ याद आ गए। जाने अब उनकी क्या हालत होगी। क्या बीमारी मे उन्हे किसी की जरूरत न महसूस होती होगी। बुखार से सिर फट रहा होगा और उनका कैसा जी चाहता होगा कि कोई उनके पास बैठे, कोई उन्हें पूछे। इस वक्त तो कोई मुहब्बत से देखे। पर उनका कोई नहीं। वह तो तन-तन्हा आसमान से टपक पडे। आज इस बीमारी और अकेलेपन मे वह अपने बारे में जाने क्या सोच रहे होगे। इसरार मियाँ के लिए आहे भरते-भरते वह गहरी नीद मे सो गई।

सुबह आसमान बिल्कुल साफ था। सूरज बडा चमकीला हो रहा था और जब वह स्कूल जाने की तैयारी कर रही थी तो तीन दिन बाद उसे इसरार मियाँ की कॉपती हुई आवाज सुनाई दे गई, "करीमन बुआ अगर सब लोग चाय पी चुके हों तो मुझे भी दे दो। कमजोरी लग रही है।"

चौवालीस

सुबह होती है, शाम होती है और बहार ने दिनो को फलांग कर फूल खिला दिये हैं। एक-डेढ महीने पहले करीमन बुआ ने क्यारी का कूडा साफ करके उसे घुटने तक गोडा था और फिर बीज बोकर इत्मीनान की सांस ली थी। अब खिले हुए फूल देखकर वह खुश हो रही थी। मगर बडी चची ने तो यह भी न होना कि वह फूल तोडकर गर्द से भरे इस फूलदान को

साफ करके सजा दें। उनके दिल मे बहार का गुजर न था, फूलो मे कोई दिलकशी न थी। शकील उनके दिल मे सदा पतझड का बीज बो गया था। जमील भैया इस बीज को सींच रहे थे और बड़े चचा के लिए उसे कोई बात न सोचना चाहिए। वह अपने आपको मलामत करती।

घर की हालत बहुत खराब हो गई थी। जमील भैया ने नौकरी की कोशिश ही न की। सारा दिन मुस्लिमलीग के दफ्तर मे काम करते। थोड़ा सा मेहनताना मिल जाता। बड़ी चची को वह यह मेहनताना देकर सारे महीने के लिए बेखबर हो जाते और सारा महीना बड़ी चची से बदला ले-लेकर गुजर जाता।

उन दिनो बड़े चचा के पैरो मे सनीचर हो गया था। आज यहाँ, कल वहाँ। इंग्लिस्तान के मजदूर-मन्त्रिमण्डल ने हिन्दुस्तान को आजाद करने का फैसला कर लिया था और अम्मा ने यह खबर इस तरह सुनी थी जैसे चण्डूखाने से उड़ाई गई हो।

इधर आजादी के फैसले से बाप-बेटे ने एक दूसरे के चेहरे से बेजार हो गए थे। पाकिस्तान बनेगा, पाकिस्तान न बनेगा। और इस कशमकश के आलम में उसे छम्मी बुरी तरह याद आ रही थी। अगर आज को वह भी इस घर मे बैठी रहती तो जाने क्या होता। आजादी मिलने से पहले ही सब अपना सिर फोड़-फोड़ कर खुदा के प्यारे हो गए थे।

आज पन्द्रह-बीस दिन बाद बड़े चचा घर मे दाखिल हुए थे और बरामदे मे बिछे हुए पलँग पर शान्ति से लेटे अपना सिर सहला रहे थे। इतने दिन बाद उन्हें घर मे लेटे देखकर आलिया चाय की प्याली लेकर उनके पास जा बैठी। बड़े चचा उठकर चाय पीने लगे।

"अंग्रेज कहते हैं कि अब हिन्दुस्तान आजाद हो जाएगा।" बड़ी चची भी हँसती हुई आ गईं।

"हाँ, उन्हें आजाद करना ही होगा। बस थोड़े दिन और गड़बड़ करेंगे। बेईमान कौम है।" बड़े चचा जोश में आ गए।

"फिर जब आजादी मिल जाएगी तो तुम अपनी दूकानो पर बैठोगे।" बड़ी चची ने पूछा। उनकी आँखो से चाहत टपक रही थी।

"बैठूंगा क्यो नही। तुम देखना कि इसके बाद दुकानें कैसे चलती हैं। अपनी हुकूमत से तो दुकानो को चलाने के लिए मदद भी मिल जाएगी।"

"अच्छा अपनी हुकूमत मदद भी कर देगी? हाय कितना अच्छा होगा।" बड़ी चची की आँखें चमक रही थीं।

"बड़े चचा आज आप घर मे लेटे कितने अच्छे लग रहे हैं। जब आप होते

हैं तो मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे . ।" आलिया कुछ न कह सकी । उसकी आवाज भर्रा रही थी ।

"और मैं तुम्हारा बाप नहीं तो फिर क्या हूँ पगली ।" बड़े चचा ने उसका सिर अपने सीने से लगा लिया, 'और जब आज़ादी मिल जाएगी तो मैं अपनी बेटी को दुल्हन बनाऊँगा । और बहुत शानदार पढ़ा-लिखा दूल्हा लाऊँगा । है न ?" उन्होंने बड़ी चची की तरफ देखा और दोनों हँसने लगे । मगर आलिया बड़े चचा के सीने में मुहब्बत की गर्मी महसूस कर धीरे-धीरे रो रही थी । वह दिल ही दिल में दुआ कर रही थी कि अल्लाह इस मुल्क को जल्दी ही आज़ाद कर दे । बड़े चचा अपने घर वापस आ जाएँ और फिर शाम को इसी घर में लेट कर चची से बातें करें, छम्मी की खैरियत पूछें, साजिदा आपा को मैके आने के लिए खत लिखें, जमील भैया के लिए दुल्हन तलाश करें और शकील को ढूंढ कर घर ले आएँ ।

"अरी पगली रो रही है ।' बड़े चचा ने अपने खद्दर के कुरते के आर पार नमी महसूस की थी, "मत रो मेरी बेटी ।"

"करीमन बुआ बड़े भैया से कहो कि हकीम साहब और हरदयाल बाबू आए हैं ।" इसरार मियाँ की आवाज आई तो बड़े चचा एक दम उठ पड़े । वह उसे चुप कराना भी भूल गए । आलिया ने अपने ही आप आँसू पोंछ डाले । कैसा जी उमड रहा था । अभी तो वह रोना चाहती थी ।

रात जब सब लोग खाना खा रहे थे तो जमील भैया बड़े जोशोखरोश से बोलते जा रहे थे, "पाकिस्तान की माँग एक ऐसी हकीकत है जैसे हम, आप बैठे हैं ! कांग्रेसी लाखों रोड़े अटकाएँ मगर कुछ नहीं कर सकते । दस करोड़ मुसलमानों की इस माँग को कौन रोक सकता है ।"

"तो क्या सारे मुसलमान पाकिस्तान जाकर रहेंगे । ?" बड़ी चची ने पूछा ।

"वाह इसकी क्या ज़रूरत पड़ेगी । जो जहाँ है वहाँ रहेगा ।"

"मगर हिन्दू हमें रहने क्यों देंगे । वह नहीं कहेंगे कि अपने मुल्क जाओ ।"

"उनके हिन्दू जो पाकिस्तान में रहेंगे, हम उनसे कब कहेंगे कि जाओ ।"

जमील भैया की दलील बड़ी चची की समझ में आ गई । उन्होंने इत्मीनान की साँस ली ।

"हाँ जमील यह जाने वाने की बात बुरी है । मैं भी यह घर नहीं छोड़ सकती ।" करीमन बुआ भी आखिर बोल ही पड़ी ।

"और मैं कब छोड़ रहा हूँ अपना घर । बस इसरार मियाँ को भेज दूँगा पाकिस्तान ।" जमील भैया मज़े में आकर हँसे और करीमन बुआ ने खिसिया कर बर्तन उठाने शुरू कर दिए ।

"फिर तुम अपनी एक दुकान तो सँभाल ही लेना। तुम्हारे अब्बा अब थक चुके हैं और फिर तुम उनका अदब भी करोगे न...?"

"मैं सब कुछ करूँगा अम्मा। जो कुछ आप कहेंगी वही होगा। बस पाकिस्तान बन जाने दीजिए।" जमील भैया बातें करते हुए बार-बार आलिया की तरफ देखे जा रहे थे। वह बेताल्लुक सी बैठी खाना खाए जा रही थी। जाने आजकल इतनी भूख क्यों लगती है?

"हद है! हर वक्त यही बातें। खाना-पीना हराम हो गया है।" अम्मा बातें सुन-सुन कर एकदम झल्ला उठी, "बस अब तो अकलमन्द तुम्हारे मुल्क के लोग रह गए हैं। अंग्रेज तो बेचारे निरे बेवकूफ हैं कि आजादी बाँटी और चुपके से अपने मुल्क लौट गए। अरे अभी तो बरसो झख मारो जब भी आजादी नही मिलती।"

"उन्हें कौन काफिर बेवकूफ समझता है। मगर अब वक़्त उन्हें बेवकूफ बनने पर मजबूर कर रहा है। अगर न गए तो निकाल दिये जाएँगे।" जमील भैया जोश मे आ गए।

"खुदा की शान है क्या बढ़-बढ़ कर बातें मार रहे हो।," अम्मा बिगड़ कर उठ गई, "करीमन बुआ मेरा खाना कमरे मे पहुँचा दो।" अम्मा जाने लगी तो जमील भैया ने पकड़ लिया, "चलिए छोड़िये छोटी चची। अब अगर आजादी का नाम भी लूँ तो जो चोर की सजा वह मेरी।" बात मजाक में टल गई मगर अम्मा का मूड ठीक न हुआ। खाना खाते ही अपने कमरे मे चली गईं।

सर्दी का जोर घटते ही सब बरामदे मे सोने लगे थे। फटे हुए पर्दे लपेट कर कब के बाँध दिए गए थे। इस वक़्त चाँदनी बरामदे मे दाखिल होकर बिस्तरो पर लोट रही थी।

जमील भैया इतनी बहुत सी बातें करने के बाद अब आँगन में टहल रहे थे और आलिया बड़ी चची के पास बैठी छालिया काट रही थी। अम्मा सबसे रूठ कर अपने कमरे मे न जाने क्या कर रही थी।

"बड़े भैया कहाँ हैं।" नजमा फूफी इधर से आकर बड़ी चची के पास टिक गईं। वह कुछ फिक्रमन्द-सी नजर आ रही थी।

"बैठक मे होंगे। बुलवालो।" बड़ी चची ने जवाब दिया।

"देखो करीमन बुआ अगर कोई न हो तो बुलवा लो।" नजमा फूफी ने उकता कर कहा।

बड़े चचा के आते ही जमील भैया अपने कमरे मे चले गए। आलिया की समझ मे न आ रहा था कि आज नजमा फूफी क्या बात करना चाहती हैं जो इस क़दर फ़िक्रमन्द हो रही हैं।

"बड़े भैया वह बात यह है कि मैंने अपने लिए जिन्दगी का साथी तलाश कर लिया है। बस आपको इत्तिला देना था।" उन्होंने बड़ी ढिठाई से कहा।

सब हैरान होकर उनका मुँह तकने लगे। बड़े चचा आँखें झुकाए खामोश बैठे थे। क्या इंगलिश मे एम०ए० करके इन्सान अपनी तहज़ीब पर लात मार देता है। नजमा फूफी यही कुछ बड़ी चची के ज़रिए भी कहला सकती थी। आलिया ने नफरत से बड़ी चची की तरफ देखा।

"तो फिर ज़रूर करो शादी। हमसे कहो, फौरन इन्तज़ाम कर देंगे।" बड़ी चची खिसिया कर हँसने लगी।

"क्या इन्तज़ाम करेंगे आप! क्या मैं छम्मी हूँ जिसकी शादी में मीरासिनें बुलाई जायेंगी, ढोल पीटी जाएगी और मेरा जहेज सिलेगा। मैं खुद जहेज हूँ।' नजमा फूफी सख्त मगरूर हो रही थी।

"तुम जब कहोगी मैं शरीक हो जाऊँगा।" बड़े चचा उठ कर बाहर चले गए।

"बस गर्मियों की छुट्टी मे निकाह हो जाएगा। फिर हम लोग शिमले चले जाएँगे।" नजमा फूफी ने बड़ी चची को सूचना दी और खुद भी उठ खड़ी हुई।

"वह हैं कौन साहब?" बड़ी चची से बगैर पूछे न रहा गया।

"हमारे कालेज के लेक्चरार के भाई हैं। उन्होंने भी इंगलिश मे एम० ए० किया है। बहुत जबरदस्त व्यवसायी हैं।" वह खट-पट करती जीने पर हो ली।

ज़रा देर सब चुप रहे। कोई किसी से न बोला। जैसे ही जमील भैया फिर से आकर टहलने लगे तो बड़ी चची ने धीरे से इत्तिला कर दी, "तुम्हारी नजमा फूफी शादी कर रही हैं।"

'अच्छा तो इस वक्त वह यही कुछ बताने आई थी?"

'हूँ।" बड़ी चची सिर झुका कर पान बनाने लगी।

"ढोल न बाजे, दुल्हन न बनी, यह भी कोई शादी हुई। ज़माने बदल गए। सवा-सवा महीने तक लड़की को मांझे बिठाते थे। बाप, भाइयों का साया तक न देखती थी लड़की। काज़ी से कहना कि निकाह भी अंग्रेज़ी मे पढ़ाए।" जमील भैया ज़ोर से हँसे, "वाकई इस खानदान की बदनसीबी थी कि लड़कियों को तालीम न दिलाई गई। अब हमारी नजमा फूफी खानदान की पहली लड़की थी जिन्होंने ऊँची तालीम हासिल की। ज़ाहिर है कि इन्हें मारे गुरूर के यही कुछ बनना था। दूसरी तालीम-याफ्ता खातून हमारी आलिया बीबी हैं। कुछ फितूर तो इनमे भी है।" उन्होंने प्रशंसा चाहती नज़रों से देखा।

आलिया समझ गई यह किस फितूर की तरफ इशारा हो रहा था। उसकी

जान जल कर रह गई, "जी हाँ अगर औरत कठपुतली से आगे बढ़ने की कोशिश करेगी तो जाहिर है कि दिमागी फितूर समझा जाएगा। मर्द औरत को बेवकूफ देख कर ही सच्ची खुशी महसूस करता है। नजमा फूफी का तरीका गलत है। मगर उन्हें यह हक पहुँचता है कि अपनी शादी करें।"

"कौन कर रहा है शादी ?" अम्मा ने कमरे से निकल कर पूछा।

"नजमा फूफी ?" आलिया ने जवाब दिया।

"कहाँ इन्तजाम कर दिया बड़े भैया ने ?"

"बड़े भैया ने नहीं। उन्होंने खुद इन्तजाम किया है।" बड़ी चची ने बताया।

"हद है भई। इनकी बड़ी बहन साहिबा ने भी तो खुद अपनी मर्जी से शादी की थी और आज उनका शानदार बेटा सफदर दुनिया की छाती पर दनदनाता फिरता है।" अम्मा का गुस्सा पूरे जोश पर था।

सब चुप रहे। किसी ने कोई जवाब न दिया। आलिया को अफसोस हो रहा था कि अम्मा इतनी तल्ख बातें क्यों करती हैं।

अम्मा अपने कमरे मे चली गई। जमील भैया उठ कर टहलने और गुनगुनाने लगे—

बहला न दिल न तीरगी शामे ग़म गई
यह जानता तो आग लगाता न घर को मैं

ठीक है इसी लिए मेरे दिमाग़ के फितूर का रोना रोया जा रहा था। वह उनका दिल न बहला सकी। वह उनकी शामों को रंगीन न बना सकी। इससे बढ़ कर और क्या फितूर होगा।

"मैं जरा बाहर जा रहा हूँ अम्मा। जरूरी काम है। देर से आऊँगा। दरवाजा बन्द कर लीजिएगा।" जमील भैया ने कहा और फिर दरवाजे की तरफ बढ़ गए।

"बड़े भैया बात यह है कि मैंने अपने लिए ज़िन्दगी का साथी तलाश कर लिया है। बस आपको इत्तिला देना था।" उन्होंने बड़ी ढिठाई से कहा।

सब हैरान होकर उनका मुँह तकने लगे। बड़े चचा आँखें झुकाए ख़ामोश बैठे थे। क्या इंगलिश में एम०ए० करके इन्सान अपनी तहज़ीब पर लात मार देता है। नजमा फूफी यही कुछ बड़ी चची के ज़रिए भी कहला सकती थीं। आलिया ने नफ़रत से बड़ी चची की तरफ देखा।

"तो फिर ज़रूर करो शादी। हमसे कहो, फ़ौरन इन्तज़ाम कर देंगे।" बड़ी चची खिसिया कर हँसने लगीं।

"क्या इन्तज़ाम करेंगे आप! क्या मैं छम्मी हूँ जिसकी शादी में मीरासिनें बुलाई जायेंगी, ढोल पीटी जाएगी और मेरा जहेज़ सिलेगा। मैं ख़ुद जहेज़ हूँ।" नजमा फूफी सख़्त मग़रूर हो रही थीं।

"तुम जब कहोगी मैं शरीक हो जाऊँगा।" बड़े चचा उठ कर बाहर चले गए।

"इन गर्मियों की छुट्टी में निकाह हो जाएगा। फिर हम लोग शिमले चले जाएँगे।" नजमा फूफी ने बड़ी चची को सूचना दी और ख़ुद भी उठ खड़ी हुईं।

"वह हैं कौन साहब?" बड़ी चची से बग़ैर पूछे न रहा गया।

"हमारे कालेज के लेक्चरार के भाई हैं। उन्होंने भी इंगलिश में एम० ए० है। बहुत ज़बरदस्त व्यवसायी हैं।" वह खट-पट करती ज़ीने पर हो लीं।

ज़रा देर सब चुप रहे। कोई किसी से न बोला। जैसे ही जमील भैया फिर आकर टहलने लगे तो बड़ी चची ने धीरे से इत्तिला कर दी, "तुम्हारी नजमा फूफी शादी कर रही हैं।"

'अच्छा तो इस वक़्त वह यही कुछ बताने आई थीं?"

"हूँ।" बड़ी चची सिर झुका कर पान बनाने लगीं।

"ढोल न बाजे, दुल्हन न बनीं, यह भी कोई शादी हुई। ज़माने बदल गए। सवा-सवा महीने तक लड़की को माँझे बिठाते थे। यार, आदमियों का साया तक न देखती थी लड़की। क़ाज़ी से कहना कि निकाह भी अंग्रेज़ी में पढ़ाए।" जमील भैया ज़ोर से हँसे, "वाक़ई इस ख़ानदान की बदनसीबी थी कि लड़कियों को तालीम न दिलाई गई। अब हमारी नजमा फूफी ख़ानदान की पहली लड़की थीं जिन्होंने ऊँची तालीम हासिल की। ज़ाहिर है कि इन्हें मारे गुरूर के यही कुछ करना था। दूसरी तालीम-याफ़्ता ख़ातून हमारी आलिया बीबी हैं। कुछ ज़िक्र तो इनमें भी है।" उन्होंने अपना बाहरी नज़रों से देखा।

आलिया समझ गई यह किस ज़िक्र की तरफ इशारा हो रहा था। उन्हीं

जान जल कर रह गई, "जी हाँ अगर औरत कठपुतली से आगे बढ़ने की कोशिश करेगी तो ज़ाहिर है कि दिमाग़ी फ़ितूर समझा जाएगा। मर्द औरत को बेवकूफ़ देख कर ही सच्ची खुशी महसूस करता है। नजमा फूफी का तरीका गलत है। मगर उन्हें यह हक पहुँचता है कि अपनी शादी करें।"

"कौन कर रहा है शादी ?" अम्मा ने कमरे से निकल कर पूछा।

"नजमा फूफी ?" आलिया ने जवाब दिया।

"कहाँ इन्तज़ाम कर दिया बड़े भैया ने ?"

"बड़े भैया ने नहीं। उन्होंने खुद इन्तज़ाम किया है।" बड़ी चची ने बताया।

"हद है भई। इनकी बड़ी बहन साहिबा ने भी तो खुद अपनी मर्ज़ी से शादी की थी और आज उनका शानदार बेटा सफदर दुनिया की छाती पर दनदनाता फिरता है।" अम्मा का ग़ुस्सा पूरे जोश पर था।

सब चुप रहे। किसी ने कोई जवाब न दिया। आलिया को अफसोस हो रहा था कि अम्मा इतनी तल्ख बातें क्यों करती हैं।

अम्मा अपने कमरे में चली गईं। जमील भैया उठ कर टहलने और गुनगुनाने लगे—

बहला न दिल न तीरगी शामे ग़म गई

यह जानता तो आग लगाता न घर को मैं

ठीक है इसी लिए मेरे दिमाग़ के फ़ितूर का रोना रोया जा रहा था। वह उनका दिल न बहला सकी। वह उनकी शामों को रंगीन न बना सकी। इससे बढ़ कर और क्या फ़ितूर होगा।

"मैं ज़रा बाहर जा रहा हूँ अम्मा। ज़रूरी काम है। देर से आऊँगा। दरवाज़ा बन्द कर लीजिएगा।" जमील भैया ने कहा और फिर दरवाज़े की तरफ बढ़ गए।

"बहला न दिल न तीरगी शामे ग़म गई।" दरवाज़े से निकलते हुए भी वह धीमे धीमे गा रहे थे।

धूम धाम से छिटकी हुई चाँदनी में इसरार मियाँ की अँधेरी आवाज़ उभरी, "करीमन बुआ अगर सब लोग खाना खा चुके हों तो ..।" आलिया अपने कमरे में जाने के लिए ज़ीने पर हो ली।

पैंतालीस

सख्त गर्मी पड़ रही थी। नजमा फूफी अपने ताजिर मियाँ के साथ शिमले जा चुकी थीं। उनकी शादी पर न तो ढोल बजी, न मीरासिनों ने गाने गाए। करीमन बुआ का मारे दुख के कलेजा फट गया था।

यह जमाने कमबख्त ने उनको क्या-क्या दिखाया। अम्मा को उनकी शादी के बाद से सलमा फूफी हर वक्त याद आने लगी थी और सफदर भाई के लिए मौत की दुआएँ दिल से निकलने लगी थी। इधर मुल्क मे हडबोग मची थी। कैबिनेट मिशन हल्ला मचा कर वापस हो गया था। बडे चचा का बस चलता तो जमील भैया की सूरत न देखते। वह उन्हें आस्तीन मे पला हुआ सांप समझ रहे थे। अगर किसी वक्त सामना होता तो एक दूसरे पर छींटे कसने लगते। "सारे मुस्लिम लीगी अंग्रेज़ो के पिट्ठू हैं।" बडे चचा बफर कर कहते।

"इसमे क्या शक है। मगर यह हज़रत नेहरू और माउन्ट बेटेन की दोस्ती कब से चली है। और यह उनकी लेडी साहिबा स इतना अपनापा क्यों दिखाते हैं।" जमील भैया कब चूकते।

"तुम्हारी जहालत ऐसे ही बात करेगी।"

"ए जमील भैया क्या आप बहस करके नही थकते।" आलिया बीच मे कूद पडती तो जमील भैया अपने बाप के मुकाबले में बेबस होकर रह जाते।

"ओफफोह ! एक-एक मुसलमान जो दगो मे मारा जाता है उसका खून मुस्लिमलीगियो की गर्दन पर है।" बडे चचा ठण्डी सांस भरते।

जमील भैया आलिया की तरफ देख कर खामोश रहते। जवाब देने के लिए उनका जी तो घुटता होगा मगर कुछ न कर पाते।

बडी चची को शकील की पडी थी, "अल्लाह जाने कहां होगा। हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं।"

सरे शाम जोर से आंधी आई। करीमन बुआ लालटेन जला रही थी। सारी की सारी एक ही झोके से बुझ गई, "नास जाए इन आंधियो का।" लालटेन को समेट कर वह बडबडाती हुई कमरे मे चली गई।

"हार मोतियो, चमेली के।" गली मे हार बेचने वाला आवाज लगाता चला जा रहा था।

ज़रा देर में आंधी रुक गई। बारिश के दो छींटे पड कर जमीन की सोधी-सोधी खुशबू उडा गए थे। मुहल्ले की छतो से ग्रामोफोन रेकर्ड बजने की आवाज आ रही थी।

बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाए।

"सब लोग खाना खा लो। पता नहीं फिर बारिश होने लगे। बादल घिरे खड़े हैं।" करीमन बुआ ने कहा और फिर बर्तनों से आंधी की धूल साफ करने लगी, "जाने यह नास पडी आंधियां क्यों आने लगी हैं।" उन्होंने जैसे अपने-आप से पूछा।

"पहले जमाने मे तो इतनी आँधियाँ आती न होगी करीमन बुआ।" जमील भैया ने हँस कर पूछा।

"यह आँधियाँ तो हमेशा से आती हैं जमील मियाँ। जाने क्या कुछ उडा ले गईं।" करीमन बुआ उनका मजाक न समझ कर गभीरता से बोली, "एक बार तो मेरा जार्जेट का नया दुपट्टा उडा कर ले गई। धोकर अलगनी पर फैलाया था।" करीमन बुआ अपने लिए जैसे दुपट्टे को सिर पर ठीक से ओढने लगी, "नास जाए इन आँधियो का।" वह प्लेटें उठा कर दालान मे चली गईं।

"शायद रात भी बारिश हो।" जमील भैया ने आलिया की तरफ देखा।

"अल्लाह करे हो। गर्मी से छुटकारा मिले।"

खाने के बाद अम्मा और वडी चची ने पानदान खोल लिया। करीमन बुआ इसरार मियाँ के लिए प्लेटो से बचा हुआ सामान एक प्याले मे जमा कर रही थी। जमील भैया अब फिर अपनी कुर्सी पर जा बैठे थे।

बडे चचा कहाँ हैं। यह ठण्डा खाना उनकी सेहत को और भी तबाह कर देगा। कम से कम रात को जल्दी से घर आ जाया करे। आलिया ऊपर जाते हुए सोच रही थी।

रात रोई हुई आँखो की तरह भीगी हुई थी। छत पर अपना बिस्तर लगाने के बाद वह धीरे-धीरे टहलने लगी, 'वक्त नहीं गुजरता अल्लाह!' वह बडबडा रही थी। ग्रामोफोन रेकर्ड बराबर बजे जा रहे थे।

मुफ्त हुए बदनाम सँवरिया तेरे लिए

"इधर तो वडे मजे की हवा चल रही है।" जमील भैया भी आकर उसके सामने टहलने लगे।

वह चुप रही। रात, एकान्त, उमडे हुए बादल और फिर जमील भैया। वह एक तूफान मे घिर कर रह गई। उसका जी बैठन लगा। कैसी अजीब सी कैफियत हो रही थी। बस यही जी चाहता कि जमील भैया को उठा कर नीचे गली मे फेक दे।

वह मुंडेर से झुक कर नीचे गली मे झाँकने लगी जहाँ गँडेरियो वाला आवाज लगाता चला जा रहा था।

"आलिया!" जमील भैया ने भारी आवाज से पुकारा।

"क्या बात है!" वह बिफर कर पलटी।

"बहुत सी बातें हैं। मगर तुम तो मेरे लिए बहरी बन गई हो।"

और क्या रह गया है कहने को। आप सब कुछ तो कह चुके हैं और मैं सुन चुकी हूँ। आप थकते क्यो नही कह-कह कर।"

जमील भैया उसके पास खडे हो गए और अँधेरे मे झुक कर उसे देखने लगे।

वह इतने करीब थे कि उसे उनकी साँसें अपने चेहरे पर महसूस हो रही थी और उसे ऐसा लग रहा था कि जून की लू से उसका चेहरा फुंका जा रहा है।

वह हट कर अपने बिस्तर पर बैठ गई और दोनो हाथो से चेहरा रगड डाला।

"तुम मेरे सिलसिले मे इतनी बेदर्द क्यो हो ?" वह भी करीब आ गए। कौन सा कोसो का फासला था जो तय न हो सकता था।

वह झुक कर उसकी आँखो मे झाँक रहे थे। आलिया ने देखा उन आँखो मे तो बादलो से ज्यादा अँधेरा छाया था मगर इन बादलो के बावजूद लू चल रही थी। आलिया का दिल जैसे पिघलने लगा।

"बैठ जाइये।" वह एक तरफ सरक गई।

"तुम्हारे बिस्तर पर बैठ जाऊँ ? तुम्हारे बिस्तर पर तो मुझे कुछ ऐसा महसूस होगा जैसे . ।"

आलिया को ऐसा महसूस हुआ जैसे बहुत सी भिडे उसके जिस्म से लिपट गई हैं, "जमील साहब आप मेरे मामले मे सिर्फ जिद्दिया गए हैं। आप ख्वाहमख्वाह यह साबित करना चाहते हैं कि अगर मैं न मिली तो आप मर जाएँगे, तबाह हो जाएँगे। अब मुझसे ज्यादा शानदार लडकी इस जमाने मे कही नही मिलेगी। मगर मैं जानती हूँ कि अगर आज मैं आपकी नजरो से दूर हो जाऊँ तो आपको कोई और मिल जाएगा कभी आपने छम्मी के लिए भी यही कुछ महसूस किया होगा और... ।" उसकी आवाज भर्रा गई। और वह घुटनो मे सिर छिपा कर रोने लगी। उस वक्त वह सख्त कमजोरी महसूस कर रही थी।

"अरे तो तुम क्या मुझसे इतनी बेजार हो, मत रो आलिया।" जमील भैया ने घबराकर उसके कधो पर हाथ रख दिए, "तुम इत्मीनान रखो अब मैं कुछ न कहूँगा। मैं तुमको जिन्दगी भर हँसाना चाहता हूँ रुलाना नही चाहता।" उन्होंने कधो पर से हाथ हटा लिए, "अब मैं तुमसे कोई माँग न करूंगा। मुझे हक ही क्या है। मैं वादा करता हूँ कि अब तुम मेरी वजह से परेशान न होगी। अब तुम खुश हो न ?" वह भला कहती क्या ? यूँही घुट घुट कर रोती रही।

"मत रो आलिया बीबी।" वह मुजरिमो की तरह दूर खडे रहे, "तुम मेरी जिन्दगी की साथी नही बनना चाहती हो न सही। यूँ भी जिन्दगी गुजर ही जाएगी। कितने लोग हैं जो खुशियो से भरपूर जिन्दगी गुजारते हैं। खैर, मगर अब तुम चुप हो जाओ। मैं अब तुमसे कुछ न कहूँगा।" उनकी आवाज काँप रही थी। कुछ मिनट वह खामोश खडे रहे और फिर तेजी मे नीचे चले गए।

"करीमन बुआ बडे भैया रात बारह बजे तक आएँगे। अगर सब लोग खाना

खा चुके हो तो मुझे भी दे दो।" इसरार मियाँ की आवाज़ सन्नाटे को चीर गई।

आलिया आँसू पोंछ कर बेसुध सी लेट गई। बहुत अँधेरा है। बादल किस बुरी तरह घिरे हैं। क्या आज इतनी बारिश होगी कि तूफान आ जाएगा? आज वह जरूर डूब जाएगी। उसने तो अपनी हिफाजत के लिए कोई कश्ती भी नहीं बनाई। उसने आँखें मूंद लीं।

छियालीस

पाकिस्तान बन गया। लीगी नेता कराची राजधानी जा चुके थे। पंजाब में खून की होली खेली जा रही थी। बड़े चचा इस सदमे से जैसे निढाल हो गए। बैठक में बीमारों की तरह वह हर एक से पूछा करते, "यह क्या हो रहा है? यह क्या हो गया? यह हिन्दू, मुसलमान एकदम एक दूसरे के लिए ऐसे जानी दुश्मन कैसे हो गए? इन्हें किसने सिखाया है? इनके दिल से किसने मुहब्बत छीन ली?"

जब वह यह सब आलिया से पूछते तो वह उनका सिर सहलाने लगती, "बड़े चचा आप आराम कीजिए। आप थक गए हैं।" बड़े चचा इस तरह आँखें बन्द कर लेते जैसे खून की नदी उनकी आँखों के सामने बह रही हो।

"ज़माने-ज़माने की बात है। वह भी ज़माना था जब हिन्दू अपने गाँव के मुसलमानों पर आँच आते देखते तो सिर-धड़ की बाज़ी लगा देते और मुसलमान हिन्दू की इज्ज़त बचाने के लिए अपनी जान निछावर कर देता। ऐसा भाई-चारा था कि लगता एक माँ के पेट से पैदा हुए हैं। पर अब क्या रह गया। दोनों के हाथों में खंजर आ गया है। करीमन बुआ दंगे की खबर सुन-सुन कर ठण्डी आहें भरा करती। अपने शहर में दंगा तो न हुआ था मगर सबकी जानों पर बनी रहती। पता नहीं कब क्या हो जाए।

"कहाँ होगा मेरा शकील।" बम्बई में दंगे की खबर सुन कर बड़ी चची बिलखने लगी, "तुम्हारा पाकिस्तान बन गया जमील। तुम्हारे अब्बा का मुल्क भी आज़ाद हो गया पर मेरे शकील को अब कौन ले आएगा?"

"सब ठीक हो जाएगा अम्मा। वह खैरियत से होगा। यह दंगे-वंगे तो चार दिन में खत्म हो जाएंगे।" जमील भैया उनको समझाते मगर उनका चेहरा फक् रहता।

शाम सब लोग बैठे चाय पी रहे थे कि मामूँ का खत आ गया। उन्होने अम्मा को लिखा था कि उन्होने अपनी सेवाएँ पाकिस्तान के लिए अर्पित कर दी हैं और वह जल्दी ही जा रहे हैं, अगर आप लोगो को चलना हो तो फौरन जवाब दीजिए और तैयार रहिए।

"बस अभी तार दे दो जमील मियाँ। हमारी तैयारी मे क्या लगेगा। हम तो बस तैयार बैठे हैं। अपना भाई है। भला हम अकेला छोड कर जा सकता है ?" मारे खुशी के अम्मा का मुँह लाल हो रहा था।

जमील भैया ने इस तरह घबरा कर सब लोगो की तरफ देखा जैसे दगाई उनके दरवाजे पर पहुँच गए हो, 'मगर आप क्यो जाएँ छोटी चची ? आप यहाँ हिफाजत से हैं। मैं आपके लिए अपनी जान दे दूँगा।" उन्होने आज बडी मुद्दत के बाद *आलिया की तरफ देखा। कैसी सिफारिशी नजरें थी मगर आलिया ने अपनी नजरें* झुका ली।

"मैं न जाऊँ तो क्या हिन्दुओ के नगर मे रहूँ। पाकिस्तान मे तो अपनो की तो हुकूमत होगी। फिर मैं अपने भाई को छोड कर एक मिनट भी जिन्दा नही रह सकती, वाह।" मारे खुशी के अम्मा से निचला न बैठा जा रहा था।

"*आलिया जाने पर राजी न होगी बडी चची। वह नही जाएगी। वह जा ही* नही सकती।" जमील भैया ने जैसे अर्ध विक्षिप्तता मे कहा।

"तुम अच्छे हकदार आ गए। कौन नही जाएगा ?" अम्मा एक दम बिफर उठी, "तुम होते कौन हो रोकने वाले ?"

"जरूर जाइये छोटी चची।" जमील भैया ने सिर झुका दिया और आलिया *को ऐसा महसूस हुआ कि वह नही जा सकती। सदियाँ गुजर जाएँगी मगर वह यहाँ* से हिल भी न सकेगी।

"मैं अभी तार दिए देता हूँ कि सब तैयार हैं।" जमील भैया उठ कर बाहर चले गए।

आलिया का जी चाहा कि वह चीख चीख कर एलान करे कि वह नहीं जाएगी। वह नही जा सकती। उसे कोई नही ले जा सकता। मगर उसके गले मे तो सैकडो कांटे चुभ रहे थे। वह एक लफ्ज भी न बोल सकी। उसने हर तरफ देखा और फिर नजरें झुका ली। मगर वह क्यो रुके, किसके लिए रुके। उसने सोचा और फिर जैसे बडी शान्ति से छालिया काटने लगी। आलिया बेगम अगर तुम रह गई .. तो हमेशा के लिए दलदल में फँस जाओगी।

"करीमन बुआ अगर सब लोग चाय पी चुके हो. .।" इसरार मियाँ ने बैठक से आवाज लगाई और करीमन बुआ आज तो डाइनो की तरह चीखने लगी, "अरे

कोई तो इसरार मियाँ को भी पाकिस्तान भेज दो। सब चले गए। सब चले जाएँगे मगर यह कही नही जाता।"

"क्या तुम सचमुच चली जाओगी छोटी दुल्हन ?" बडी देर तक चुप रहने के बाद बडी चची ने पूछा।

"ज़ाहिर है चली जाऊँगी।" अम्मा ने रुखाई से जवाब दिया।

"यह घर तुम्हारा है छोटी दुल्हन। मुझे अकेले न छोडो।" बडी चची ने डबडबाई हुई आँखें बन्द कर ली। शायद वह अकेलेपन के भूत से डर रही थी।

आलिया जैसे पनाह ढूँढने के लिए ऊपर भाग गई। धूप पीली पड कर सामने के मकान की ऊँची दीवार पर चढ गई थी। हाई स्कूल की इमारत पर बसेरा लेने वाले पछी बराबर शोर मचा रहे थे। खुले वातावरण मे आकर उसने इत्मीनान की साँस ली और मुसाफिरो की तरह टहल टहल कर सोचने लगी कि अब आगे क्या होगा। शायद अच्छा ही हो। वह यहाँ से जाकर जरूर खुश रहेगी।

जब वह नीचे उतरी तो सब अपने-अपने खयालो मे मगन थे। सिर्फ करीमन बुआ जाने किस बात पर बडबडा रही थी और रोटियाँ पकाती जा रही थी।

जमील भैया कहाँ गए और अब तक वापस क्यों नही आए। आलिया ने सूनी कुर्सी की तरफ देखा। जाने यह सिर फिरा आदमी उसे याद करेगा या भूल जाएगा। उसने अपने आप से पूछा।

लालटेन की बत्ती खराब थी इस लिए उसमे से दो लवें उठ रही थी और एक तरफ से चिमनी काली हो गई थी। मद्धिम रोशनी मे अम्मा, बडी चची और करीमन बुआ के चेहरे बिगडे बिगडे लग रहे थे।

जमील भैया घर मे दाखिल हुए और अपनी कुर्सी पर बैठ गए, "मैं तार कर आया छोटी चची।" उन्होने धीरे से कहा।

"तुम इतनी देर तक बाहर न रहा करो। शाम से घर आ जाया करो। जाने कब यहाँ भी गडबड हो जाए।" बडी चची ने कहा।

"रहना तो पडता है। मुसलमान डरे हुए हैं। उन्हे समझाना है कि वह यहाँ डट कर रहे और यहाँ की फिज़ा को शांति रखें। घर मे तो बैठ कर काम न चलेगा।"

"तोबा, अब मुल्क आज़ाद हो गया तो यह काम शुरू हो गए। खैर मुझे क्या। तुमने तार पर पता ठीक लिखा था न ?" अम्मा ने पूछा।

"आप इत्मीनान रखें पता ठीक था।"

"खैर हम तो पाकिस्तान जा रहे हैं मगर अब तुम अपने घर की फिक्र करो जमील मियाँ। क्या बुरी हालत हो चुकी है। अपनी माँ की तरफ भी देखो।"

अम्मा ने हमदर्दी से बड़ी चची की ओर देखा ।

"कौन जा रहा है पाकिस्तान ?" बड़े चचा ने आंगन मे कदम रखते ही बौखला कर पूछा । उन्होंने अम्मा की बातें सुन ली थी ।

"मैं और आलिया जाएंगे और किसे जाना है ।" अम्मा ने तड़ाख से जवाब दिया ।

"कोई नही जा सकता । मेरी इजाजत के बगैर कोई कदम नही निकाल सकता । किस लिए जाओगे पाकिस्तान ? यह हमारा मुल्क है । हमने कुर्बानियाँ दी हैं और अब हम इसे छोड कर चले जाएं ? अब तो हमारे ऐश करने का वक़्त आ रहा है ।" बड़े चचा सख्त जोश मे थे ।

"इन्शा अल्लाह आप बड़े हकदार बन कर आ गए । न खिलाने के न पिलाने के । कौन सा दुख था जो यहाँ आकर नही झेला । मेरे शौहर को भी आप ही ने छीन लिया । आप ही ने उसे मार डाला । मेरी लड़की को अनाथ कर दिया और अब हक जता रहे हैं ।" मारे गुस्से के अम्मा की आवाज कांप रही थी ।

"करीमन बुआ मेरा खाना बैठक मे भिजवा दो ।" बड़े चचा सिर झुकाकर बैठक में चले गए ।

"क्या आप चलने से पहले बड़े चचा को यही बदलादेना चाहती हैं ? बड़े चचा ने किसी को तबाह नही किया । बड़े चचा ने किसी को दावत नही दी थी कि आओ मेरे साथ रहो । आप आज अच्छी तरह सुन लें कि बड़े चचा से मुझे इतनी ही मुहब्बत है जितनी अब्बा से थी ।"

आलिया ने खाना छोड दिया और हाथ धोकर बैठक मे चली गई । अम्मा क्या कहती रह गईं, उसने ज़रा भी न सुना ।

"क्या तुम सचमुच जा रही हो बेटी ?"

"हाँ बड़े चचा, अम्मा जो तैयार हैं ।" उसने बड़ी बेबसी से जवाब दिया ।

"यह अंग्रेज जाते-जाते भी चाल चल गया । लोगो को घर से बेघर कर गया, लेकिन तुम मत जाओ बेटी, अपनी अम्मा को समझा लो । अब तुम्हारे सुख का ज़माना आ गया है ।"

"बड़े चचा मैं तो अम्मा का अकेला सहारा हूं । मैं उन्हें किस तरह छोड़ दूं । वह ज़रूर जाएंगी । मगर आपको नही मालूम कि यह घर छोड़ कर मैं किस तरह तड़पूंगी—आप—आप तो...।" वह दोनों हाथों में मुंह छिपाकर सिसकने लगी ।

"छोटी दुल्हन को मुझसे सख्त नफरत है, ठीक है, मैंने तुम लोगों के लिए कुछ न किया । मगर अब वक़्त आया था कि इस घर मे पहली सी खुशहाली लौट आती । मुझे बहुत अच्छी नौकरी दी जा रही है । फिर दूकानो को चलाने के लिए

दस-पन्द्रह हजार रुपये की मदद भी मिलने की उम्मीद है। मैं छोटी दुल्हन की शिकायतें दूर कर दूँगा।" उन्होंने आलिया को प्यार से थपका, "क्या घर मे तेल खत्म हो गया है। लालटेन की लौ मद्धिम होती जा रही है। अब इन्शा अल्लाह थोडे दिनो मे बिजली का कनेक्शन बहाल करा लूँगा और अब तुम एम० ए० मे दाखिला क्यो न ले लो। मेरा ख्याल है कि तुमको अगले साल जरूर दाखिल करा दूँगा।"

आलिया का कलेजा कांप रहा था। आंसू पोछकर वह खामोश रही। जी ही जी मे घुट रही थी मगर एक लफ्ज भी न बोल सकी। खुदा आपको सुख दे बड़े चचा। खुदा आपके सारे सुहाने सपने पूरे करे—वह दिल ही दिल मे दुआ मांग रही थी। वह बडे चचा से किस तरह कहती कि वह तो यहां से खुद भाग जाना चाहती है। इसरार मियां बैठक मे दाखिल होने के लिए पट खोल रहे थे। आलिया उठकर आंगन मे आ गई।

अम्मा और बडी चची जाने क्या बातें कर रही थीं। जमील भैया अब तक कुर्सी पर बैठे उँगलियां मरोड रहे थे। वह एक लम्हे तक आंगन मे खडी रही और फिर ऊपर चली गई।

ओस से भीगी हुई रात बडी रोशन हो रही थी। चांद जैसे बीच आसमान पर चमक रहा था और रोज की तरह आज भी क़रीब की किसी छत पर ग्रामोफ़ोन रेकर्ड बज रहा था।

गठरी मे लागा चोर मुसाफिर जाग जरा।

वह आहिस्ता आहिस्ता टहलने लगी। कैसी अजीब सी हालत हो रही थी जैसे सोचने की सारी ताकत किसी ने छीन ली हो। क्या यह मैं हूँ? उसने अपने आप से पूछा और फिर अपनी आवाज सुनकर हैरान रह गई। हद है दीवानगी की। वह किससे पूछ रही थी।

टहलते-टहलते वह एक बार मुडी तो जमील भैया मूर्ति की तरह स्तब्ध-निश्चल खडे थे। वह और तेजी से टहलने लगी। अब यह क्या कहने आए हैं। उन्होंने अपना वादा भुला दिया।

"क्या सचमुच तुमने जाने का फैसला कर लिया है?" उन्होंने धीरे से पूछा।

"हां।" उसने टहलते हुए जवाब दिया।

"तुम यहां से जाकर गलती करोगी। तुमने एक बार कहा था न कि दूर रह कर यादें बहुत तकलीफदेह हो जाती हैं। मेरा खयाल है कि तुम वहां खुश न रहोगी।"

"मैं हर जगह खुश रहूँगी। मगर आपने तो वादा किया था कि आप मुझसे कभी कुछ न कहेंगे।"

"मैं क्या कह रहा हूँ ?"

"कुछ नहीं।"

"तुम मेरी कर्जदार हो। याद रखना कि तुमको यह कर्ज चुकाना होगा।" वह जाने के लिए मुड़े, "तुम वहाँ खुश रहोगी न ?"

"वह चुप रही। जमील भैया थोड़ी देर खड़े रहे और फिर चले गए। उसने महसूस किया कि उस वक्त वह सब कुछ खो बैठी है। बड़ी देर तक यूँ ही टहलने के बाद जब वह थक गई तो छम्मी को खत लिखने बैठ गई। उसे यहाँ से जाने की सूचना देनी थी।

सैतालीस

यह रात पहाड़ों का बोझ उठाए हुए है। कोई इसे गुजार दे। कोई सुबह होने का पैगाम सुना दे। उसे सुबह का इन्तजार है। सुबह वह चली जाएगी और इस पीड़ा से मुक्ति पा जाएगी।

सब बोल रहे हैं। बातें कर रहे हैं। फिर भी कैसा सन्नाटा छाया हुआ है। चाँद की कौन सी तारीख है। अब तक चाँद नहीं निकला।

छालिया काटते काटते आलिया ने सबकी तरफ देखा। जमील भैया सबकी बातों से उदासीन अपनी कुर्सी पर बैठे एक शेर गुनगुनाए जा रहे थे—

मुझे और जिन्दगी दे कि है दास्तां अधूरी
मेरे मौत से न होगी मेरे ग़म की तरजुमानी

जमील भैया आज सारा दिन बाहर नहीं निकले थे। आज उनको फुर्सत ही फुर्सत थी। जैसे सारे काम खत्म हो गए और अब उन्हें कुछ भी नहीं करना है।

"बड़ी भाभी मैं तो जा रही हूँ। मगर आप मेरी एक बात याद रखिएगा। अगर आपने बड़े भैया और जमील मियाँ को काबू में न रखा तो आपकी सारी उमर यूँ ही गुजर जाएगी। अब तो आजादी मिल गई। अब कौन सा बहाना रह गया है जो यूँ ही सारा दिन दोनों बाप-बेटे आवारा फिरते हैं।" अम्मा बड़ी चची को समझा रही थी। जमील भैया इसी एक शेर को रटे जा रहे थे—

मुझे और जिन्दगी दे कि है दास्ता अधूरी—कि है दास्ता अधूरी।

इस शेर को बार-बार पढ़कर वह क्या जताना चाहते हैं। वह इससे क्या कह

रहे हैं ? आलिया का सरौता बड़ी तेजी से छालिया काटने लगा। अल्लाह मियाँ अगर इस वक्त उसे बहरा कर दें तो फिर कितना अच्छा हो।

"छोटी दुल्हन ऐसा जान पड़ता है कि कलेजा मुँह को आया जाता है। भरा-पूरा घर था। देखते-देखते सब तिड़ी-बिड़ी हो गए।

जमाने जमाने की बात है। कोई कुछ नही कर सकता। अपने मुसलमानों की हुकूमत हो गई। पर हम अकेले रह गए। करीमन बुआ जुदाई के सदमे से निढाल हो रही थी।

'तुम भी चलो करीमन बुआ।" अम्मा ने बड़ी हार्दिकता से कहा।

'अब तो यही दुआ करें दुल्हन कि इस घर से मेरी लाश निकले। आज यहाँ से चली जाऊँ तो मरने के बाद स्वर्गीया मालकिन को क्या मुँह दिखाऊँगी। वह अपने जीते-जी जहाँ बिठा गई वहाँ से क्योंकर पाँव निकालूँ।

सीता ने राम की खींची हुई लकीर से बाहर कदम रखा था तो रावन उठा ले गया था। सीता ने जीते-जागते राम की हुक्म-उदूली की थी। मगर तुम करीमन बुआ मरी हुई मालकिन का हुक्म नही टाल सकती। फिर भी सीता सीता रही, तुम करीमन बुआ रहोगी। तुमको कौन जानेगा, तुम्हारा किस्सा कौन लिखेगा।"

आलिया ने डबडबाई आँखों से करीमन बुआ को देखा। लालटेन की मद्धिम ललछौंह रोशनी मे जुदाइयों के दुख कितने उजागर हो रहे थे।

"छोटी दुल्हन अब भी अपना फैसला बदल दो। मत जाओ छोटी दुल्हन।" बड़ी चची की आवाज भारी हो रही थी।

"मुझे और जिन्दगी दे कि है दास्ताँ अधूरी—जमील भैया सारी बातो से उदासीन होकर जैसे इस एक शेर की कैफियत मे डूबकर रह गए थे।

अल्लाह कोई तो इस रात को गुजार दे। वरना वह अपनी जान से गुजर जाएगी। आलिया ने सरौता रख कर इधर-उधर देखा। चाँद निकल रहा था। आसमान रोशन होता जा रहा था।

"छम्मी का खत आया था। उसने क्या लिखा था आलिया ?" बड़ी चची ने पूछा।

"उसने लिखा है कि पाकिस्तान जाना मुबारक हो, जरूर जाइये। पाक सर-जमीन को मेरी तरफ से चूमिएगा और यहाँ की थोड़ी सी मिट्टी भेज दीजिएगा। मैं उसे अपनी माँग मे लगाऊँगी। मैं बदनसीब तो वहाँ भी नही जा सकती। और सबको सलाम-दुआ लिखा है।" आलिया को जितना याद था सब सुना दिया।

"और भी कुछ लिखा है ?" बड़ी चची ने पूछा।

"बस यही सलाम-दुआ खत ऊपर रखा है।"

"मेरी मौत से न होगी मेरे गम की तरजुमानी।" जमील भैया अब भी सबसे उदासीन थे।

"जाने हमारे मुसलमानो का मुल्क कैसा होगा। मकान भी मिल जाएगा जल्दी से कि नही। होटल मे न ठहरना छोटी दुल्हन, सेहत खराब हो जाएगी वहाँ के खाने से।" करीमन बुआ को अब आगे की फिकर सता रही थी।

"तुम परेशान न हो करीमन बुआ। मैं जाते ही खत लिख दूँगी।" अम्मा ने कहा।

रात के बारह बज रहे थे। रात सर्द होती जा रही थी मगर सब लोग बैठे थे। आलिया का जी चाह रहा था कि बस अब किसी तरह ऊपर भाग जाए।

"अच्छा। भई अब सोने को चल दें, खुदा हाफिज।" जमील भैया कुर्सी से उठ पड़े।

"मुझे और जिन्दगी दे—।" वह कमरे मे चले गए।

बैठक के दरवाजे खुले और बन्द हो गए। बड़े चचा एक जरा देर को भी अन्दर न आए। आलिया इन्तजार करती रह गई।

गली मे आवारा कुत्ते भौंककर रो रहे थे। काश नींद आ जाए। उसकी आँखों मे मिर्चें सी लग रही थी। एक दिन जब वह यहाँ आई थी और पहली रात इस कमरे मे गुजारी थी तो सारी रात सो न सकी थी और आज अब वह यहाँ से जा रही है तो फिर नींद ने साथ छोड दिया था। कितनी बहुत सी बातें उसका कलेजा नोच रही थी। जमील भैया ने उससे एक बात भी न की। क्या जाते जाते वह अब उससे कुछ न कहेंगे। क्या अब कुछ कहने को बाकी नही रह गया। अल्लाह! बड़े चचा क्या सोच रहे होगे। वह बड़े चचा को छोड़कर जा रही है और छम्मी, खुदा करे उसको पाकिस्तान आना नसीब हो।

जागते जागते सुबह हो गई। निचले मंजिल से बर्तनो में खड़कन और बातें करने की आवाज आ रही थी। वह नीचे आ गई। नाश्ता तैयार था। वह अम्मा और बड़ी चची के साथ बैठ गई। कमरे के खुले दरवाजों से उसने देखा कि जमील भैया अब तक चादर ताने सो रहे हैं।

हद हो गई बेमुरव्वती की। वह जा रही है और इनकी आँख भी नही खुलती। जैसे मौत की नींद आ गई है। आलिया को कैसी ठेस लग रही थी उनके यूँ ठाठ से सोने पर। वह चली जाती तो फिर सो लेते।

नाश्ते के बाद अम्मा ने सारे सामान का जायजा लेना शुरू कर दिया। कपड़ो और हल्के फुल्के दो कम्बलों के अलावा सारा सामान छम्मी के कमरे में भर दिया गया था कि जब अच्छा वक्त आएगा तो फिर आकर सब कुछ ले जाएँगे।

"तांगे आ गए हैं।" इसरार मियाँ ने बाहर से आवाज़ लगाई तो वह जल्दी से बैठक की तरफ भागी, "क्या आज बड़े चचा भी सोते रहेंगे ?"

"तुम्हारे बड़े चचा तो तड़के ही कहीं चले गए। कहते थे कि काम है और यह भी कहते थे कि मैं सबको जाते न देख सकूँगा।" करीमन बुआ ने बड़े दर्द से बताया।

"यह कहो न करीमन बुआ कि वक्त नहीं था जो रुखसत करने बैठे रहते।" अम्मा ने बुरा सा मुँह बनाया, 'बड़ी भाभी, मेरा सामान हिफाजत से रखियेगा। इस कमरे में ताला लगा दीजिएगा।" अम्मा ने एक बार फिर हिदायत दी।

अल्लाह आज की सीटें रिज़र्व न होतीं। आज वह रुक सकती। बड़े चचा से मिले बगैर वह किस तरह जा सकती है। वह जैसे थककर बैठ गई।

"उठ जाओ जमील। तुम्हारी बहन और चची जा रही हैं। उन्हें रुखसत तो करो।" बड़ी चची ने तीसरी बार जमील भैया को आवाज दी मगर वह टस से मस न हुए।

"जल्दी करो करीमन बुआ। हवाई जहाज किसी का इन्तजार नहीं करता। वक्त पर उड़ जाएगा।" इसरार मियाँ ने फिर आवाज़ लगाई।

"खुदा न करे। मेरा भाई आज लाहौर के हवाई अड्डे पर इन्तज़ार करेगा। जो हम लोगों को न पाया तो कलेजा फट जाएगा।" अम्मा ने बौखला कर बुर्का ओढ़ लिया, 'अब तुम भी जल्दी करो न।" उन्होंने झल्लाकर आलिया की तरफ देखा, जो अब तक बेसुध सी बैठी थी।

"बहुत वक्त हो रहा है। पहले से पहुँचना अच्छा होता है।" इसरार मियाँ की आवाज़ रुकती ही न थी।

"अरे कोई इस इसरार मियाँ को भी पाकिस्तान भेज दो।" करीमन बुआ कलेजा फाड़ कर रोईं।

करीमन बुआ और बड़ी चची अम्मा से मिल मिलकर रो रही थीं। मगर वह अपने आप में डूबी सी खड़ी रही। उसे तो रोना भी नहीं आ रहा था।

"अगर वहाँ शकील मिले तो जरूर खत लिखना।" बड़ी चची आलिया को लिपटा कर फुसफुसायीं, "मुझे याद रखना। जाओ खुदा को सौंपा।" उनकी आवाज काँप रही थी, "अरे ए जमील। अब तो उठ जा।" बड़ी चची ने ज़ोर से पुकारा।

"मैं जा रही हूँ। खुद मिल लूँगी।" आलिया ने कहा।

"क्यों मिल लोगी। वह तो मारे नफरत के मिलना नहीं चाहता।" अम्मा ने त्योरियों पर बल डाल लिए, "बस अब जल्दी चलो।"

"मैं जा रही हूँ, खुदा हाफिज।" आलिया ने जमील भैया के मुँह पर से चादर खींच ली और फिर झिझक कर एक कदम पीछे हट गई। भीगी और सूजी हुई आँखों में एक दास्तान दम तोड़ रही थी। उसने घबराकर आँखें बन्द कर ली। फिर भी वह आँखें तो उसकी आँखों में घुसी जा रही थीं।

"तुम जाती क्यों नहीं बेवकूफ लड़की? क्या यही देखने के लिए मुझे जगाने आई थी। खुदा हाफिज।" उन्होंने मुँह छिपा लिया।

"जल्दी चलो आलिया।" अम्मा की आवाज आई तब उसे जाने का ख्याल आया। बाहर ताँगा खड़ा है पर उसके पाँव क्यों नहीं उठते। अब वह जाती क्यों नहीं, और यह कमरे में इतना अँधेरा क्यों छाया हुआ है।

"करीमन बुआ जल्दी करो। बहुत देर हो रही है। और छोटी दुल्हन से और आलिया बीवी से मेरी दुआ कह दो।" इसरार मियाँ की आवाज रुँध गई।

"खुदा करे तुम्हारी आवाज रुक जाए इसरार मियाँ।" करीमन बुआ ने तड़पकर दुआ माँगी।

आलिया सब कुछ सुन रही थी मगर उसके पाँव नहीं उठ रहे थे। अरे कोई उसे खींचकर ही ले जाए। वह इस कमरे से तो निकल जाए।

"तुम इसलिए देर कर रही हो कि हवाई जहाज हमको छोड़कर उड़ जाए, मेरे भाई के टिकटों के दाम डूब ही जाएँ और वह हमें इस जहाज में न पाकर पागल हो जाए...।" अम्मा जाने क्या-क्या कहती कि आलिया वहशियों की तरह भागती हुई कमरे से बाहर निकल गई।

"आपके भाई और भावज से इतना भी न हुआ कि चार-पाँच दिन हमारी वजह से ठहर जाते, हमारे साथ सफर कर लेते, और अब हमारे लिए पागल हो जाएँगे ओफ्फोह!" आलिया जोर से बोली और फिर बड़ी चची से लिपट कर सिसकने लगी।

अड़तालीस

लाहौर आकर तीन-चार दिन मामूँ के साथ उनकी सरकारी कोठी में गुजारने पड़े। वह भी इस तरह कि सारा दिन एक छोटे से कमरे में बन्द पड़ी रहती। वह हर वक्त यह सोचती रहती कि इस बेजार कर डालने वाले माहौल में किस तरह जिन्दगी गुजारेगी। हाँ अम्मा बहुत खुश थीं। भाई

और अंग्रेज भावज के साथ रहने की बडी पुरानी साध अब पूरी हो रही थी। उन्होंने जिन्दगी भर साथ रहने के प्रोग्राम बना लिए थे और आलिया से खफा थीं कि वह सबसे अलग थलग पडी रहती है। और कुछ नही तो अपनी मुमानी से फराफर अंग्रेजी बोलने की मश्क ही कर ले मगर उसने तो इन चार दिनो मे सिर्फ एक ही काम किया था कि बडी चची और बडे चचा को कई पन्नो के खत लिखे थे। - -

पाँचवें दिन मामूं ने एक छोटी सी कोठी का ताला तुडवाकर अम्मा को उनके घर जाने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने अम्मा को चुपके-चुपके समझाया कि अंग्रेज औरतें तो अपनी माँ के साथ भी रहना पसद नही करती। अम्मा ने आलिया से यह बातें छिपानी चाहीं मगर जब वह अपने नए घर जा रही थी तो ममानी ने टूटी फूटी उर्दू मे समझा ही दिया कि सबका अलग अलग रहना ठीक होता है। साथ रहने पर बहुत गडबड होती है।

कोठी पर एक एक चीज अपनी जगह पर मौजूद थी। खाने की मेज पर बर्तन करीने से लगे हुए थे और बर्तनो के नक्श व निगार धूल ने छिपा दिए थे। ऐसा महसूस होता था कि बस अभी पर्दे के पीछे से निकल कर कोई आएगा और खाने के लिए बैठ जाएगा। बावर्चीखाने मे पीतल के बर्तन अलमारी मे लगे थे और कुछ बर्तन जमीन पर लुढके पडे थे। ड्राइंग-रूम के कालीन और सोफे सब पर धूल ही धूल थी और फूलदान म लगे हुए फूल झडकर मेज पर बिखरे हुए थे। सिर्फ काली काली, सूखी शाखें अब तक फूलदान मे ठुंसी हुई थी। सोने के कमरे मे बिस्तरो पर पलँग पोश बिछे हुए थे और सिरहाने तिपाई पर रखा हुआ लैम्प औंधा पडा था। इस कमरे के साथ छोटे से कमरे म आतिशदान पर कृष्ण जी की मूर्ति रखी हुई थी। माला के फूल झडकर आस-पास बिखरे हुए थे और गले मे सिर्फ पीला डोरा लटका रह गया था। -

"भई इसे तो यहाँ से हटाओ। बाहर बच्चो को दे दो खेलेंगे।" जब से अम्मा यहाँ आई थी कई बार कहा था। आलिया ने अम्मा को कोई जवाब न दिया। मूर्ति कई दिन तक यूँही रखी रही। फिर जब इस कमरे को इस्तेमाल किए बगैर अम्मा का गुजारा नामुमकिन हो गया तो आलिया ने मूर्ति को उठाकर अपने बक्स मे छिपा लिया। -

दिन बडी नीरसता से बीत रहे थ। बेकार बैठे बैठे वह उकता गई थी। उसके खतो के जवाब भी न आए थे। कौन कहता है कि दूर रहकर यादें बहुत तकलीफदेह हो जाती हैं। उसे तो सब भूल गए। यादें तो सिर्फ उसके लिए तकलीफ-देह हो रही हैं। शामे अभिशाप की तरह कटती। मदद कमेटियाँ घर घर चक्कर लगाती फिरती। शरणार्थी भाइयो की मदद करो। काफिले आ रहे हैं। मदद करो।

श्रौर श्रम्मा बड़े दर्द से बताती कि हम तो खुद शरणार्थी है। लोग चले जाते मगर श्रालिया का दिल चाहता कि वह श्रम्मा की श्रांखो मे धूल झोंक कर सब कुछ उन्हे दे दे।

मामूं श्रौर उनकी बेगम कभी कभी शाम को श्रा निकलते तो श्रालिया की समझ में न श्राता कि वह कौन से चुहिया के बिल मे जा छिपे। श्रम्मा बौखला जातीं श्रौर उनकी समझ मे न श्राता कि भाभी को किस तरह सिर श्रांखो पर बिठा लें। कुछ दिन खामोश बैठे रहन के बाद उसने एक हाई स्कूल मे नौकरी की दरख्वास्त दे दी जो जल्दी ही मजूर हो गई श्रौर व्यस्तता ने उसे बहुत सी बिपदाश्रो श्रौर दुखो से बचा लिया,' फिर भी जब वह स्कूल से वापस श्राती तो बड़े चचा श्रौर बड़ी चची के खत के लिए पूछती। श्रम्मा उसके रोज रोज़ के पूछने से तग श्रा चुकी थी। वह हमेशा झुंझलाकर जवाब देती।

एक दिन मामूं श्रकेले श्राए तो उन्होने बताया कि कोठी श्रम्मा के नाम श्रलाट करा दी है। श्रब किसी भी सूरत मे छोडना नही। फिर उन्होन फरनीचर वगैरह की कुछ रसीदें दी कि श्रगर कोई पूछे तो यह दिखा देना कि हमने यहां श्राकर खरीदा है। इस कोठी मे तो बस कबाड भरा था।"

श्रम्मा श्रपने भाई के कारनामो से खुश हो बोली, "भाई हो तो ऐसा। मेरे श्राराम के लिए उसने क्या नही किया। श्रब श्रग्रेज़ो मे यह कायदा नही कि सब हर वक्त सिर पर सवार रहे। श्रगर हमारे यहां जैसा कायदा होता तो भाई एक मिनट को जुदा न करता।"

श्रालिया चुपचाप सब कुछ सुनती रही। उसकी समझ मे न श्रा रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। किसका हक कौन उडाए लिए जा रहा है। यह रसीदें कहां से श्रा गई यह कोठी उनकी किस तरह हो गई। मगर श्रालिया यह सब किससे पूछती। श्रम्मा सिर्फ श्रम्मा थी। उसकी तनख्वाह मिलने श्रौर कोठी की मालिक बनने के बाद पहले जैसी मगरूर श्रौर खुद पसन्द।

वक्त घुट घुटकर गुजर रहा था। स्कूल से श्राकर वह परेशान फिरा करती। श्रास पास की कोठियों म भी किसी से मिलना जुलना न था। जाने कहां से लोग श्राकर बस रहे हैं। किसी को किसी की खबर न थी।

श्रम्मा को इतनी फुर्सत ही न मिलती कि उसकी तरफ भी देख लेती। सारा दिन कोठी की देख भाल म गुजर जाता। दस रुपये महीने पर रखी हुई माई श्रगर किसी चीज़ को जरा ज़ोर से रख देती तो श्रम्मा का कलेजा दुख जाता—"यह इतनी मेंहगी चीज़ें खरीदी हैं श्रौर तुम श्रापे म नही रहती। जरा होश से काम किया करो।"

बहुत दिन नही गुजरे थे कि मामूँ की बदली करांची हो गयी। जब वह रुखसत हो रहे थे तो अम्मा का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। उनकी भाभी इस बेकरारी को देखकर मुस्कराती रही, "हमारा तो बच्चा लोग भी बहुत दूर-दूर चला जाना है मगर कोई नही रोटा।"

आलिया को उनके जाने का न सदमा हुआ न खुशी। चले गए तो चले गए। उसका उन लोगो से वास्ता ही क्या था। यहाँ आने के बाद मामूँ ने कई बार कहा भी था कि आलिया अपने बाप की तरह दिल से उन्हे नापसन्द करती है।

वह यह सब कुछ सुनकर हँस दी। इस वक्त उसे अब्बा कितनी शिद्दत से याद आते थे। मगर अब तो वह उनकी कब्र तक को दूसरे मुल्क मे छोड आई थी। वहाँ से नाता टूट गया था। किसी ने उसके खत का जवाब तक न दिया था।

उन्चास

दंगे खत्म हो गए थे। बस कही इक्का-दुक्का वारदात की खबर पढने मे आ जाती थी। अब दोनो मुल्क भाई-चारा कायम करने पर जोर दे रहे थे। आलिया को उन खबरों से जरा भी दिलचस्पी न होती। भला ऐसी भी मासूमियत किस काम की।

मामूँ के जाने के बाद आलिया ने परदा छोड दिया था। यहाँ उसे कौन जानता था जो अपनी पुरानी रीत को पकडे बैठी रहती। खाली वक्त गुजारने के लिए उसने वाल्टन कैम्प जाना शुरू कर दिया था। स्कूल से आकर वह थोडी देर आराम करती फिर बस से चली जाती। वहाँ बच्चों को मुफ्त मे पढाकर उसे अजीब सी शांति मिलती। व्यस्तता की धूल ने पिछली यादो को धुँधला दिया था।

अम्मा उसके वाल्टन कैम्प जाने की वजह से सख्त उखडी-उखडी रहती। जब भी वह वहाँ से वापस आती कोई न कोई नाखुशगवार बात हो जाती। ऐसे मौके पर वह चुप रहती। वह अपनी तरफ से बात न बढाना चाहती थी।

आज छ बजे शाम जब वह वापस आई तो अम्मा उजाड लान मे कुर्सी पर बैठी जैसे उसका इन्तजार कर रही थी, "तुम वहाँ किस लिए जाती हो? तुमको इस बेकार काम मे क्या मिल जाता है?" उन्होंने सख्ती से सवाल किया।

"शांति मिलती है।" उसने बडी नर्मी से जवाब दिया।

"वही बाप और चचा वाली बातें। क्या अब तुम मुझे तबाह करना

चाहती हो ?"

"बच्चो को पढाने से अगर आप तबाह होती हैं तो मैं मजबूर हूँ।" उसने तग आकर जवाब दिया।

"तुम मजबूर हो ?" अम्मा ने गुस्से से पूछा।

"हाँ मैं मजबूर हूँ।" वह उठकर अन्दर चली गई। उसने पलट कर भी न देखा कि अम्मा पल्लू में मुँह छिपाकर रो रहीं थी। कमरे मे अकेली पडकर वह देर तक सोचती रहीं कि वह क्या करे। वह अम्मा को खुश नही रख सकती। उन्हे खुश रखने के लिए उसे पराए घर मे पडा रहना होगा। अकेलेपन और बेकारी में जो भावनाएं उसे सताएँगी उनसे किस तरह पीछा छुडाएगी और जो यादो के भूत उसके गिर्द मँडलाने लगते हैं उनसे बचकर वह कहाँ भागेगी। वक्त यूँ नही गुज़र सकता। उन्हे सहारे की ज़रूरत है। और फिर इस ख्याल के साथ ही जाने कैसे उसको वाल्टन कैम्प के डाक्टर का ख्याल आ गया। अच्छा आदमी है बेचारा।

रात अम्मा ने अकेले खाना खाया। उसने भी शिकायत न की।

आज जब वह स्कूल से वापस आई तो उदास थी। आप ही आप उसे महसूस होता कि जी बैठा जा रहा है। सर्दियाँ दम तोड रही थी फिर भी उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि उसे सख्त सर्दी लग रही है। उसने सोचा कि आज वह आराम करेगी। आज कही न जाएगी।

खाने के बाद कमरा बन्द करके वह सोने के लिए लेट गई। कितने देर तक वह करवटें बदलती रही मगर नीद न आना था न आई। उकता कर उसने अखबार उठा लिया। आज तो जाने से पहले उसने सरसरी तौर पर भी अखबार न देखा था। जी ही न चाहा।

दो-तीन मोटी-मोटी सुर्खियां देखने के बाद एक खबर पर उसकी नज़रें जमकर रह गई–। मुसलमान कांग्रेसी लीडर को किसी ने मार दिया। नेहरू द्वारा अफसोस का इज़हार। मृतक के खानदान के लिए तीन हज़ार रुपये का अनुदान। हिन्दू-मुसलमान साम्प्रदायिकता की घोर निंदा।"

बडे चचा का नाम पढकर उसने दोनो हाथो से मुँह छिपा लिया। वह पागलो की तरह उठी और फिर अपने बिस्तर पर गिर पडी। उसे अपने दिल मे दर्द सा उठता महसूस हो रहा था। और वह तो बडे चचा से मिलकर भी न आई थी और वह हमेशा के लिए रुखसत हो गए। वह अपनी पलँग की पट्टी से सिर पटक-पटक कर बडी देर तक रोती रही। अब वह बडे चचा से कभी न मिल सकेगी। इस एहसास ने उसे इस तरह तडपाया कि इसके आगे वह कुछ न सोच सकती थी।

शाम हो गयी। कमरे मे अंधेरा फैल गया। रोते रोते वह थक चुकी थी।

अम्मा कई बार दरवाज़ा खटखटा कर लौट चुकी थीं। उसने सूजी हुई आँखों को बमुश्किल खोला और कमरे में बिखरे हुए अख़बार के पन्नों को रौंदते बाहर निकल गई।

"अरे तुमको क्या हुआ?" अम्मा उसके लाल चेहरे और सूजी हुई आँखों को देखकर घबरा गई थीं।

"बड़े चचा को किसी हिन्दू ने चुपके से मार दिया।" उसने बड़ी शांति से कहा। इतना रो चुकने के बाद उन सब का रुदा था।

"हम, हम, सारी ज़िन्दगी हिन्दू की गुलामी करने के बाद यह बदला मिला?" अम्मा की आवाज़ भर्रा रही थी। उन्होंने पल्लू में आँसू सुड़क कर लिए, 'हमारी बड़ी नानी का क्या हाल होगा। उन्होंने तो हम लोगों को इत्तिला तक न दी।'

– आलिया अम्मा को उनके हाल पर छोड़कर बाहर लान में चली आई। हाय बड़े चचा! इतनी शानदार ज़िन्दगी का यही अन्जाम होता है? तीन हज़ार रुपये और मातिया और इज़हार अफ़सोस? पता नहीं कपड़ों की दुकानों के लिए बीस पच्चीस हज़ार रुपये मिले थे या नहीं? बिजली का कनेक्शन बहाल हुआ था या नहीं? क्या उसी लालटन की पीली पीली रोशनी में बड़े चचा की लाश रख कर सब रोते रहे होंगे? पता नहीं जमील भैया का क्या हाल होगा? मौत ने सारे भेदभाव मिटा दिए होंगे कि नहीं?

– रात लैम्प की रोशनी में मेज पर झुकी वह बड़ी देर तक बड़ी चची को खत लिखती रही और अम्मा बातें करती रहीं—

"जाने क्या हाल होगा बड़ी भाभी का। बड़े भैया ने ज़िन्दगी भर खुद चैन न लिया न दूसरों को लेने दिया। भरे पूरे घर को तबाह कर दिया। क्या मिल गया उन्हें? जिनका साथ दिया, उन्होंने ही परदेस में मौत की नींद सुला दिया। हाय चले ही आते उन काफ़िरों के मुल्क से। भला क्या ज़रूरत थी वहाँ रहने की। और अब वह जमील मियाँ हैं, वह भी वैसे ही शानदार निकले।

खत खत्म करके उसने लिफ़ाफ़े में बन्द कर दिया।

'सो जाइये अम्मा।" वह लैम्प बुझा कर अपने बिस्तर पर लेट गई। थोड़ा देर बाद अम्मा के खर्राटे लेने की आवाज़ आने लगी मगर वह आँखें खोले इस अँधेरे में क्या कुछ नहीं देख रही थी। यह बड़े चचा की दफ़नाई हुई लाश यहाँ इतनी दूर लाकर कौन रख गया है। इसरार मियाँ तुम बड़े चचा को हाथ मत लगाना। करीमन बुआ नाराज़ हो जाएँगी। करीमन बुआ इतनी ज़ोर से कुरान शरीफ़ न पढ़ो। मौत का एहसास और भी गहरा हो जाता है। ऐसा महसूस होता है कि बड़े चचा नहीं मरे एक दुनिया मर गई। चुपके-चुपके पढ़ो करीमन बुआ। उसने घबरा कर आँखें बन्द कर ली मगर वह आवाज़ कानों को बेहाल कर रही।

इतनी दूर से बड़े चचा के मुल्क से करीमन बुग्रा के कुरान शरीफ पढ़न की आवाज़ बराबर आए जा रही थी और बड़ी चची के बैन की आवाज़ उसके कान के पर्दे फाड़े डाल रही थी।

"ऐ अल्लाह इस रात को गुज़ार दे।" वह उठकर बैठ गई। कहते हैं कि सूली पर भी नीद आ जाती है। फिर आखिर उसे नीद क्यो नही आ रही है। कैसी-कैसी गलत कहावतें मशहूर हो गई और आज तक किसी ने सही न की।

सुबह जब वह उठी तो थकन और सदमे से निढाल हो रही थी। बरामदे मे धूप आ गई थी और अम्मा भाई के साथ नाश्ते की तैयारी मे व्यस्त थी।

वह हस्ब-मामूल स्कूल जाने की तैयारी मे मशगूल होने लगी। अम्मा ने उसकी तरफ इस तरह देखा जैसे कह रही हो कि भला इतने सदमे की क्या ज़रूरत है। वह अम्मा और भाई के बेहद आग्रह के बावजूद नाश्ता किये वगैर स्कूल चली गई।

एक बजे वह स्कूल से वापस आई तो धूप मे पडी हुई आराम-कुर्सी पर खुद को जैसे गिरा दिया और जब माई ने उसके सामने खाना रख दिया तो वह इस तरह खाने लगी जैसे कड़ुई रोटी निगल रही हो। अम्मा अब तक अपने काम में व्यस्त थी।

"ओफ्फोह सारा दिन गुज़र जाता है मगर काम खत्म नही होता। कोठियो मे कितना काम होता है। माई बरामदे मे रखे हुए गमलो मे पानी डाल दो, सूखे जा रहे हैं।" अम्मा बराबर बोले जा रही थी, "माई तुमने कमरे मे मेज़ पर खाना क्यों नही लगाया। मेज-कुर्सी हो तो आदमी क्या मजे से खाना खाता है। अपने यहाँ का भी कैसा बुरा रिवाज था कि तख्त पर बैठे खा रहे हैं।"

आज मरे कल दूसरा दिन। मरने वाले के लिए कौन रोता है। आज अम्मा पर अपने यहां के रिवाजो के ऐबो का इन्शाफ हो रहा था। अगर यह कोठी न मिलती तो फिर यह इतने बहुत से राज़ कैसे खुलते?

खाना खाकर वह वाल्टन कैम्प जाने के लिए उठ कर खडी हुई। अम्मा ने उसे मुड़ कर देखा और कोई एतराज किए वगैर फिर काम मे लग हो गई।

शाम जब वह वाल्टन कैम्प से वापस आई तो किस कदर शांति-मग्न थी। वाल्टन कैम्प मे डाक्टर ने उसे कितने मद्धिम और प्यारे लहजे मे समझाया था। उसे तसल्ली दी थी। उसे वहाँ से जल्दी चले जाने पर मजबूर किया था और फिर नीद की दो गोलियां देकर हिदायत की थी कि रात को ज़रूर खा ले, उसे नीद की सख्त जरूरत है। वह अच्छा और मेहरबान आदमी है। रात सोने से पहले आलिया ने नींद की गोलियाँ खाते हुए सोचा।

पचास

स्कूल से आने के बाद उसने देखा कि बिस्तर पर लिफ़ाफ़ा पड़ा है। कितने दिन बाद बड़ी चची ने जवाब दिया था। वह तो निराश हो चुकी थी। लिफ़ाफ़ा खोल कर वह जल्दी-जल्दी पढ़ने लगी—प्यारी आलिया ! तुम्हारा खत मिला। दिल काबू मे न था जो तुमको जवाब दे सकती। तुमने देखा तुम्हारे बड़े चचा कितने बेमुरब्वत निकले। मैंने जिन्दगी भर उनका साथ दिया और वह मुझे अकेले छोड़कर चले गए। तुमको कैसे बताऊँ कि यह सब कुछ कैसे हुआ। मैं तुम्हारे बड़े चचा को बराबर मना कर रही थी कि दिल्ली मत जाओ। क्या पता कि अभी क्या आलम हो। वह नही माने और नेहरू से मिलने चले गए। वहाँ किसी हिन्दू ने चुपके से शहीद कर कर दिया। हँसते-बोलते गए थे और जब आए तो होठों पर ताला पड़ चुका था। वह तो शुक्र है कि वहाँ के जानने वालो ने लाश पहचान ली और इज्जत के साथ घर ले आए वरना आखिरी दीदार को भी तरसती रह जाती। बेटी खुदा से दुआ करो कि अब वह तुम्हारी चची की लाज रख ले और जल्दी से उठा ले।

नेहरू ने तीन हज़ार रुपया देने का एलान किया था मगर तुम्हारे जमील भैया ने यह मदद लेने से इन्कार कर दिया। तुम्हारे जमील भैया बहुत दिन तक बेकार रहे। नौकरी ढूँढे न मिली। घर मे फाके पड़ने लगे। वह खुदा भला करे तुम्हारे बड़े चचा के कांग्रेसी दोस्तो का जिन्होने तुम्हारे जमील भैया को जबरदस्ती असिस्टेंट जेलर करा दिया। बड़ी सिफारस से यह नौकरी हाथ लगी और वह भी तुम्हारे चचा की ख़िदमत के बदले मे मिल गई है। खुदा उनके दोस्तो को लम्बी उमर दे।

कितने दिन हो गए तुम्हारे चचा को सिधारे। मगर अब भी ऐसा महसूस होता है कि बैठक से निकले चले आ रहे हैं। करीमन बुआ तुमको और दुल्हन को बहुत याद करती हैं। बहुत लट गई हैं। तुम्हारे बड़े चचा के मरने की खबर सुनते ही उन्होने इसरार मियाँ को धक्के देकर निकाल दिया था। पता नही कहाँ चले गए। आज तक न लौटे।

अगर शकील कही मिले तो माँ के कलेजे का हाल सुना देना। अब कितने दिन और जिऊँगी आलिया। एक बार तो उसकी सूरत देख लेती।

हैदराबाद दकन पर हिन्दुस्तान का कब्ज़ा होते ही तुम्हारे जफ़र चचा कराची चले गए। उनका खत आया है कि अभी बैठने का ठिकाना भी नही मिला। अल्लाह अपना रहम करे। तुम्हारी नजमा फूफी अपने घर खुश नही हैं। तलाक लेने की सोच रही हैं। बहुत समझाया मगर नही मानती। कहती हैं कि उनका मियाँ जाहिल है, अंग्रेजी एक लफ़्ज सही नही बोल सकता। उन्हें सख्त शर्म आती है कि उनका शौहर ऐसा हो। उनकी सहेली ने धोखे से शादी करा दी। नजमा के शौहर तो सिर्फ बारह

जमातें पढे, हैं। छोटी दुल्हन को बहुत-बहुत दुआ कहना। बस अब जीती हूँ। यह दुनिया जालिम नहीं छूटती वरना तुम्हारे बडे चचा के साथ ही लाश उठती। ख़त लिखती रहा करो।

—तुम्हारी बडी चची

ख़त पढकर उसने कुर्सी की पीठ से सिर टेक दिया। बडे चचा इसरार मियाँ को भी अपने साथ दिल्ली ले गए होते, शायद किसी को रहम आ जाता और एक तेज छुरा उनकी गर्दन पर भी फेर देता।

अम्मा से आँसू छिपाने के लिए उसने आँखें बन्द कर ली।

"किसका ख़त है ?"

"बडी चची का। आपको दुआ लिखा है।"

"हद कर दी। इतने दिन बाद जवाब दिया है। वह हमे अपना समझती कब हैं। सुनाओ क्या लिखा है ?"

"खुद पढ लीजिए अम्मा। बहुत थक गई हूँ।" उसने आँख खोले बगैर जवाब दिया।

अम्मा ने ख़त पढ कर रख दिया और ठण्डी साँस भरी, कैसी बेवकूफी की कि तीन हजार रुपये वापस कर दिए। एक दुकान मे लगा देते तो चल निकलती।"

'अब तुम कहाँ होगे इसरार मियाँ।' आलिया दिल ही दिल मे पूछ रही थी।

"खैर करीमन बुआ ने यह काम खूब किया कि इसरार मुस्तडे को घर से निकाल दिया। मुफ्तखोर किसी काम का भी न था। खा गया मनहूस सब को।"

"अम्मा।" आलिया ने लाल लाल आँखें खोलकर अम्मा को पुकारा।

'क्या है ?"

"कुछ नहीं।" उसने फिर आँखें बन्द कर ली। उसका जी चाह रहा था कि वह अपने घर की तबाही के लिए पूछे कि वह कौन लाया था। वहाँ कौन से इसरार मियाँ थे। अब्बा को खुशी के लिए कौन तरसाता रहा। मगर वह यह सब कुछ न पूछ सकी। आखिर वह उसकी माँ हैं।

वह पडे-पडे ठण्डी साँसें भरती रही। अम्मा लोटों से भर-भर कर क्यारियों मे पानी डालने लगी।

जमील भैया क्या भूल गए। उसके ख़त का जवाब भी न दिया। मगर अब वह अपेक्षा क्यो करती है। ठीक है जवाब नहीं दिया। याद नही आती होगी। दूरी सब कुछ भुला देती है। कोई जज़्बा उसके कलेजे को नोचने लगा।

अम्मा की आवाज़ पर वह खाना खाने के लिए उठ गई। बडी चची ने छम्मो के लिए कुछ लिखा ही नही था। जाने उसका क्या हाल होगा। उसकी चिट्ठियाँ तो

अब मजे से बैठने लगी होगी ।

खाना खाकर वह वाल्टन कैम्प जाने की तैयारी करने लगी । अल्लाह जाने जफ़र चचा हैदराबाद की जन्नत से निकलकर किस हाल मे होगे ।

"मैं कहती हूँ कि किसी दिन घर मे बैठो । आखिर यह बेहूदा सिलसिला कब तक चलता रहेगा ।" अम्मा एक दम बिगड उठी ।

"यह बेहूदा सिलसिला यूँ ही चलता रहेगा । इससे मुझे शाति मिलती है ।" उसने बडी सख्ती से जवाब दिया। अम्मा हर वक्त अपने हाल मे मगन रहती हैं । यह तक नही देखती कि आज बडी चची का खत आया है । आज उसके दिल पर छुरियाँ चल रही हैं ।

'शान्ति? तुमको कौन शाति मिलती है ? वह तुमको क्या दे देते हैं जो इस तरह मारी मारी फिर रही हो ।" मारे गुस्से के अम्मा का मुँह लाल हो रहा था ।

"मुझे उनसे कुछ नही चाहिए । वह लुटे हुए गरीब मुझे क्या दे देंगे । उनकी सेवा करके मुझे खुशी होती है । उस वक्त तो मैं सारी दुनिया को भूल जाती हूँ ।" आलिया ने जैसे भरपूर पुलक से आँखें मूंद ली । उसे उस वक्त वह बच्ची याद आ रही थी जिसकी किताबें अमृतसर में रह गई थी और उन किताबो को याद करके वह अब भी रोती है। उसके बदले मे उसको कई किताबे दी मगर वह उन किताबो को नहीं भूलती।

"हूँ, तुम्हारे बाप भी यही कहा करते थे कि मुझे फलाँ काम मे खुशी होती है, मुझे शाति मिलती है और तुम्हारा चचा भी यही कहता था ।" अम्मा उसे घूर रही थीं।

'मैं अब्बा नही हूँ और न मैं बडे चचा की तरह बन सकती हूँ । आप उनका नाम न लिया करें तो बेहतर होगा । आप तो मुझे सिर्फ अपनी बेटी समझिए और बस ।" वह तेजी से बाहर निकलने लगी तो अम्मा ने फिर से लोटा उठा लिया ।

बहार ने मुर्झाए हुए पौदो मे जान डाल दी थी । नन्ही नन्ही कोपलें फूट रही थी और गुलाब के पौधे मे दो बडे-बडे फूल झूल रहे थे । आलिया को एक दम याद आ गया कि एक बार उसने क्यारी से एक फूल तोड कर अपने बालो में लगा लिया था मगर जब जमील भैया ने उसे बडी चाहत से देखा था तो उसने अपने बालों से फूल खसोटकर क्यारी म फेंक दिया था । फाटक से बाहर जाते-जाते उसने एक फूल तोड कर बालों म लगा लिया ।

शाम जब वाल्टन कैम्प से बाहर आई तो कपडे बदल कर लान मे आ बैठी । अम्मा तो सख्त नाराज थी । उन्होने उसे देखते ही मुँह फेर लिया । फाटक के उस पार सडक पर कारें और तांगे शोर मचाते गुजर रहे थे फिर

भी आलिया को ऐसा महसूस हो रहा था कि हर तरफ सन्नाटा तारी है। वह घबड़ा कर टहलने लगी। पतझड़ में झड़े हुए सूखे पत्ते अब तक घास पर पड़े थे जो उसके चप्पलों के नीचे आकर पतझड़ की याद दिला रहे थे।

"क्या आज यहीं बैठी रहोगी ?" जब अँधेरा छाने लगा तो अम्मा ने बरामदे में आकर कहा और फिर उलटे पैरों वापस चली गई।

अब अम्मा का मूड ठीक हो रहा है। वह भिरकन्डों की पुरानी कुर्सी पर थक कर बैठ गई। अब खासा अँधेरा छा गया था। फिर भी उसने उठने का नाम न लिया। अब यह खत व किताबत का सिलसिला भी खतम होना चाहिए। क्या फायदा कि लगातार दुख सहती रहे। यादें सबसे ज्यादा जालिम होती हैं और—अचानक फाटक ज़ोर से खुला और कोई बेतहाशा भागता हुआ अन्दर आ गया।

"कौन ?" उसने घबराकर पूछा।

भागने वाला एक पल को रुक गया, "आप मेरी माँ हैं, मेरी बहन हैं। मुझे छिप जाने दीजिए, मैं गरीब शरणार्थी हूँ। वह जालिम पुलिस मुझे ख्वाहमख्वाह पकड़ रही है। मैं अभी चला जाऊँगा। आदमी दौड़ कर मेज़ के पीछे छिप गया। आलिया खौफ के मारे कुर्सी में जम कर रह गई। उसने अम्मा को आवाज़ देना चाहा मगर सारी जान का ज़ोर लगाने के बाद भी वह 'हूँ' तक न कर सकी। उसी वक्त अम्मा ने आकर बरामदे का बल्ब जला दिया, "खाना खा लो आकर।" अम्मा के लहजे में अब तक सख्ती थी।

रोशनी में उसने हर तरफ देखा मगर उससे कुछ न बोला गया। अम्मा चली गईं और वह हाथ बढ़ा कर रह गई। उसने उठ कर अन्दर भागना चाहा तो पैरों ने जवाब दे दिया।

बेंच के पीछे बिल्कुल खामोशी थी। आलिया का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। पता नहीं कौन सा डाकू आ छिपा हो। वह बड़ी मुश्किल से उठी और अन्दर जाना चाहती थी कि एक दम खड़बड़ हुई और वह आदमी निकल आया। वह बाहर भागने वाला था कि आलिया से उसकी आँखें चार हुईं, "अरे आलिया क्या आप हैं ?" शकील ने अपनी नगी-नगी लाल आँखें झुका लीं, "उन्होंने मुझे गरीब जानकर गिरहकट समझ लिया। मैं ऐसा नहीं हूँ बजिया।"

"अब मैं जाता हूँ बजिया। कहीं वह मुझको तलाश करते अन्दर न आ जाएँ।"

"तुम कहाँ जाओगे शकील मेरे भय्या।" आलिया बेकरार होकर उससे लिपट गई और फिर उसे अपनी कुर्सी पर बिठा कर जल्दी से बरामदे की बत्ती बुझा आई, "अब तुम कहीं न जाओ। कहीं वह जालिम तुम्हें पकड़ न लें। तुम मेरे कमरे में

चलो।" वह उसे खींचती हुई अपने कमरे मे ले आई और बरामदे मे खुलने वाला दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया।

"मुझे जाने दीजिए बजिया।" वह अब तक घबराया हुआ था।

"मैं तुमको कहीं न जाने दूँगी। यह तुमने अपनी क्या हालत बना रखी है, मेरे भैया।" वह शकील के फटे कपड़ो और धूल भरे चेहरे को देखकर जैसे बिलखी जा रही हो, "तुम यहाँ इस हालत मे फिर रहे हो और वहाँ बड़ी चची तुम्हारे लिए अधमरी हो गई।" उसने शकील को पलँग पर बिठा दिया।

"अच्छा अम्मा मुझे याद करती थी? मुझे और कौन-कौन याद करता था? अब्बा तो मुझे खाक याद करते होगे। वह तो किसी से मतलब ही न रखते थे और चची और जमील भैया वह तो मेरी खूब बुराइयाँ करते होंगे।" उसकी आँखो मे ममत्व था, "मैं सख्त भूखा हूँ बजिया। कल से मैंने कुछ नही खाया।"

"बड़े चचा तुमको याद करते होगे, ठीक है शकील मेरे भैया," आलिया का गला हाँफने लगा, "चलो तुमको खाना खिलाऊँ फिर बातें होगी।" उसने शकील का हाथ पकड़ लिया।

"आप यहाँ कब आईं बजिया?" साथ चलते हुए शकील ने पूछा।

"पाकिस्तान बनने के थोड़े दिन बाद आ गई थी।"

वह उसे खाने के कमरे मे ले गई जहाँ अम्मा रूठ कर अकेली बैठी नजाकत से खाना खा रही थी और माई आँखें फाड़-फाड़ कर शकील को देख रही थी। अम्मा ने नजरें भी न उठाईं।

"अम्मा शकील आया है।"

"कौन शकील?" अम्मा ने नजरें उठाई, "अरे तुम कब आए पाकिस्तान मे?" अम्मा ने खुश होकर उसकी तरफ देखा।

"थोड़े दिन हुए छोटी चची और वह सब गलत है। वह वाहियात लोग यूँ ही परदेशी जानकर. ।" शकील अम्मा के सामने भी अपनी सफाई पेश कर रहा था। शायद उसे ख्याल होगा कि आलिया जरूर सब कुछ बता देगी मगर आलिया ने तो जल्दी से उसकी बात काट दी, "अम्मा शकील बेचारा काफिलो के साथ आया है इधर। दूर शहर के अन्दर कहीं ठहरा है। अभी तो बेचारे को कुछ पता नहीं इसलिए इधर-उधर मेहनत-मजदूरी करके पेट भर रहा है। अपना कोई न हो तो फिर यही हालत हो जाती है।" उसने शकील के लिए कुर्सी खींच दी।

"अब अगर हमारे पास जगह होती तो दे देते। इत्ती सी कोठी है।" अम्मा ने छः कमरों की कोठी को इतना सा बना दिया। उनके लहजे मे सख्त बेरुखी थी। वह शकील को उपेक्षा भरी नजरों से देख रही थी।

"अब यह काफी अर्से यहीं मेरे पास ठहरेगा।" आलिया ने सख्त और फैसला देने वाले लहजे में कहा।

अम्मा ने घूर कर आलिया को देखा और बेताल्लुकी से खाना खाने लगीं। शकील मरभुक्कों की तरह जल्दी जल्दी खा रहा था। वह रोटी इस तरह उठाता जैसे झपट रहा हो, "बहुत दिनों बाद घर का खाना मिला है, मज़ा आ गया बजिया।"

अम्मा सबसे पहले उठ कर चली गईं। जाते हुए उन्होंने शकील और आलिया की तरफ देखना भी गवारा न किया।

आलिया बैठी शकील को खाते देखती रही और यह सोच-सोच कर दहलती रही कि अगर इस वक्त पुलिस उसे पकड़ ही लेती तो क्या होता। खाने के बाद वह शकील को अपने कमरे में ले आई।

"दरवाज़ा बन्द कर लीजिए बजिया। मुझे डर लगता है।" शकील बड़े आराम से आलिया के बिस्तर पर लेट गया।

"यह तुम्हारा कमरा है। ठीक रहेगा न ?" उसने पूछा।

"अब तो अब्बा का मुल्क आज़ाद हो गया। अब वह क्या करते हैं। नेहरू ने उनको कौन सी जागीर दे दी है ?" शकील ने पूछा। उसकी आँखों में कितनी नफरत थी।

"बड़े चचा।" आलिया की आवाज़ काँप गई, "वह तो इस दुनिया से सिधार गए शकील। मेरे भैया, उन्हे तो किसी हिन्दू ने दंगे में शहीद कर दिया।"

"क्या ?" उसने तकिए में मुँह छिपा लिया और उसका सारा जिस्म हौले-हौले काँपने लगा। थोड़ी देर बाद आलिया ने अपने आँसू पोंछ कर उसका सिर उठाया तो सारा तकिया भीगा हुआ था।

"मुझे इस वक्त अम्मा याद आ रही है बजिया।" वह दो साल के बच्चों की तरह मिनमिनाया।

"अब तुम उनके पास चले जाओ शकील। उनकी ज़िन्दगी में बहार आ जाएगी। बड़े चचा की मौत ने उन्हें कहीं का न रखा। तुम्हें देख कर वह थोड़े दिन और जी लेंगी।"

"अब्बा का मर जाना ही ठीक हुआ बजिया। उन्होंने किसी के लिए कुछ न किया। अब मैं घर जाकर क्या करूँ। जमील भैया मुझे ताने दे देकर ज़िन्दगी हराम कर देंगे। मेरे लिए तो अब भी उस घर में कुछ न होगा। यहीं खा-कमा लूँगा।" उसने ठण्डी साँस भरी।

मगर इस तरह तो न कमाओ कि पुलिस तुम्हारे पीछे पीछे फिरे। तुम बहुत

बेरहम हो शकील मेरे भैया।"

"मैं कुछ नहीं करता बजिया। पुलिस बहुत बेरहम है। वह गरीबों को जीने नहीं देती। मुझे ग्रम्मा याद ग्रा रही है।"

"ग्रगर तुम बडी चची के पास नही जाते तो मेरे पास रहना होगा। मैं तुमको ग्रब कहीं न जाने दूँगी। ग्रब मैं नौकर हो गई हूँ। मैं तुमको भी स्कूल मे दाखिल करा दूँगी। तुम ग्राराम से पढो। इस तरह जिन्दगी बन जाएगी। मैं कल ही बडी चची को लिख दूँगी कि शकील मेरे पास है। हम भाई-बहन बडे मजे से रहते हैं।"

"ग्रब क्या पढूँगा बजिया। जो पढा था वह भी भुला दिया। ग्रौर बजिया हमारे घर के सामने वाला स्कूल तो उसी तरह था न ?"

"हाँ उसी तरह था। जब पढना शुरू करोगे तो सब याद ग्रा जाएगा।"

"ग्रब सुबह बातें होंगी बजिया। मुझे नीद ग्रा रही है।" वह फिर लेट गया। "बस ग्रब ग्राप उठ जाइये। मैं ग्रन्दर से दरवाजा बन्द कर लूँ।"

"दरवाजा बन्द कर लोगे तो गर्मी नही लगेगी ?"

"नही बजिया मैं दरवाजा बन्द करूँगा। मुझे डर लगता है।"

ग्रालिया बरामदे मे ग्राकर लेट गई। पास के पलँग पर ग्रम्मा बडी बेखबर सो रही थीं। उसे उन पर रहम ग्राने लगा। ख्वामख्वाह ग्राज उनसे बदजबानी की। वह बडी देर तक यूँ ही लेटी रही। ग्रँधेरे में इधर-उधर देखती रहती। शकील के भाग कर ग्राने ग्रौर छिपने के दृश्य ने उसकी नीद को लूट लिया था। वह सब समझ गई थी। उसने फैसला कर लिया था कि ग्रब किसी भी सूरत मे शकील को न जाने देगी। चाहे इस सिलसिले मे ग्रम्मा से कितनी ही दुश्मनी मोल लेनी पडे।

रात गए वह सो गई ग्रौर जब सुबह उठी तो शकील के कमरे का दरवाजा खुला हुग्रा था, "क्या शकील गुसलखाने में है ?" उसने ग्रम्मा से पूछा।

"मैंने तो सुबह उठकर उसे देखा नही। शायद चला ही गया। काम जो करता हुग्रा। मजदूर ग्रादमी ठहरा।" ग्रम्मा ने बडे इत्मीनान से जवाब दिया। सब झूठ है। सुबह उसने जाने को कहा होगा ग्रौर ग्रम्मा ने उसे इजाजत दे दी होगी, "उसने ग्रापसे जाने को कहा होगा ग्रौर ग्राप ने खुश होकर इजाजत दे दी होगी।" ग्रालिया ने गुस्से से कहा।

"तुम बौला गई हो। मुझसे बात मत करो वरना ग्रपना सिर फोड लूँगी।" ग्रम्मा बावर्चीखाने मे चली गई।

पता नहीं ग्रब कब ग्राएगा। ग्रम्मा की इजाजत मे कितना निराश होकर गया होगा। ग्रम्मा ने कैसा जुल्म किया। उनके सीने मे दिल नही पत्थर है। वह थोडी

देर तक पलँग से पाँव लटकाए गुमसुम बैठी रही।

मुँह-हाथ धोकर जब वह अपने कमरे मे गई तो कपड़े बदलने के लिए उसे अलमारी का ताला खोलने की जरूरत न पडी। टूटा हुआ ताला छूते ही खुल गया। पर्स खुला हुआ था और उसकी जमा-जथा से पचास रुपये गायब थे।

शकील मेरे भइया तुमसे अब कभी मुलाकात न होगी। अब तुम सदा के लिए खो गए। अब तुमको कौन पा सकता है?

इक्यावन

बडी चची का खत सामने पड़ा था और वह नई दुर्घटना पर सन्तप्त बैठी थी। उसकी समझ मे न आ रहा था कि अब छम्मी की जिन्दगी का क्या बनेगा। आखिर उसने अपनी सास और शौहर के साथ पाकिस्तान आने से इन्कार क्यो किया। आखिर उसे यह क्या सूझी थी। जिस पाकिस्तान के लिए वह हाथो उछल-उछल कर नारे लगाती थी उस पाकिस्तान मे वह क्यो न आई?

उसने एक बार फिर खत उठा लिया और उस हिस्से को पढने लगी जिसमे छम्मी के सम्बन्ध मे लिखा था। छम्मी ने अपने मियाँ के साथ पाकिस्तान जाने से इन्कार कर दिया और जब उससे जिद की तो लडाई पर आमादा हो गई। झगडा यहाँ तक बढा कि छम्मी ने अपनी सास को बाल पकड़ कर खूब मारा और उसकी सास न उसी दम तलाक दिलवा कर मय लडकी के, यहाँ भिजवा दिया। उन्होने जाने से पहले मुझे पैगाम भिजवाया था कि अब अपनी इस बेलगाम लड़की का किसी भगी से निकाह कर दो। हमारे बेटे को तो कराँची मे चाँद जैसी दुल्हन मिल जाएगी। अब छम्मी जब से यहाँ है बिल्कुल चुप है। अपनी बच्ची को सीने से लगाये अपने-आप मे गुम पडी रहती है।

इस छम्मी ने हमेशा अपने साथ दुश्मनी की। समझ मे नही आता कि क्या नतीजा होगा। मैं उसे देखती हूँ तो कलेजा मुँह को आता है।

"अम्मा, छम्मी को तलाक देकर उसके मियाँ कराँची आ गए।" अम्मा को करीब आते देखकर आलिया ने सूचना दी।

"ए!" अम्मा ने हैरत से आलिया की तरफ देखा और फिर खत उठा कर पढने लगी।

अब बेचारी छम्मी क्या करेगी।—आलिया सोच रही थी।

"ठीक ही किया उन लोगों ने। भला ऐसी लडकी से कोई निकाह कर सकता।

था। गज़ब ख़ुदा का, और सास-मियाँ दोनो को पीटकर रख दिया।" अम्मा ने ख़त मेज़ पर डाल दिया और कमरे का सामान ठीक करने लगी।

"हूँ!" आलिया कमरे से बाहर निकल आई। वाल्टन कैम्प से आकर उसने कपडे भी न बदले थे। माई ने उसके हाथ म चाय की प्याली पकडा दी तो वह खडे-खडे पीने लगी। उसे क्या हो गया है। कमरे की हर चीज़ बिखेर देती है और अम्मा ठीक करती फिरती हैं। इतनी लापरवाही भी किस काम की। अम्मा क्या सोचती होगी।

चाय की ख़ाली प्याली माई को थमा कर वह लान में आ गई। जून की शाम भी किस तरह तप रही थी। ऊँचे-ऊँचे दरख़्त बिल्कुल चुप खडे थे। एक पत्ता तक न हिल रहा था। वह धीरे-धीरे सूखी घास पर टहलने लगी। अब तो अकेलेपन और उदासी का गहरा एहसास हर वक़्त सताने लगा था। वह अपनी उस लगी बँधी ज़िन्दगी से किस तरह आजिज़ आ गई थी। इस वक़्त भी जब वह छम्मी की बर्बाद ज़िन्दगी का मातम कर चुकी थी तो फिर अपनी बर्बाद ज़िन्दगी के लिए सोचने लगी थी। अब वह क्या करे? ज़िन्दगी किस तरह कटे। सोचते-सोचते उसे कुछ पलो के लिए डाक्टर की याद आ गई। आलिया ने उसकी आज की बातो का याद करने की कोशिश की और फिर इस तरह जी उचाट हो गया जैसे कोई अजीब सी हरकत करने जा रही हो। वह बातें ही क्या करता है। ठीक है वह अच्छा आदमी है। मगर उसे बातें करनी ही कब आती हैं। कोठी, कार और प्रैक्टिस का हाल और बस। कोठी तो मामूँ ने उसे भी दिला दी और रही कार तो वह रोज़ बस पर जाती है। बस यही फ़र्क़ है न कि वह कार से बडी होती है और किसी एक शख़्स की मिलकियत नहीं होती।

"अब खाना खा लो। यहाँ अँधेरे मे बैठी क्या कर रही हो?" अम्मा उसके पास खडी हुई तो उसे एहसास हुआ कि वाकई अँधेरा फैल गया है। वह अम्मा के साथ हो ली।

"तुम हर वक़्त चुप रहती हो। मैंने तो तुम्हारे मामूँ को लिख दिया है कि।" अम्मा ने चलते हुए कहा, "अब तुम्हारी शादी का बन्दोबस्त कर दें।"

'अच्छा मुझे आज मालूम हुआ कि मैं इसलिए उदास रहती हूँ।" वह इस सच्चाई पर झल्ला गई, "मगर आपने मामूँ को यह हक़ कब से दे दिया? मैं तो उनको मामूँ भी नही मानती। मुझे उनसे कोई मतलब नही। मैं शादी नही करूँगी।"

अम्मा ने उसे मलामत भरी नज़रो से देखा मगर चुप रही। इधर कुछ दिनों से उन्होंने आलिया को डाँटना डपटना और उससे लडना छोड दिया था। दोनो ख़ामोशी से खाना खाती रही। आलिया का जी भर रहा था फिर भी वह ज़ब्त किए बैठी खाती रही और अम्मा जाने क्या सोचती रहीं।

बावन

स्कूल से वापसी पर उसने देखा कि मेज़ पर छम्मी का खत पड़ा है जिसे अम्मा खोल कर पढ़ चुकी थी। खत का एक पन्ना कमरे के फर्श पर पड़ा था। उसे ज़रा सा गुस्सा आया और फिर जल्दी जल्दी खत पढ़ने लगी।

प्यारी बजिया, तस्लीम ! आपको गए एक साल होने को आ रहा है मगर आपने कभी मुझे याद न किया। ठीक है मैंने आपको खत न लिखा। मगर मैं आपको कभी न भूली। मैंने तो आपको हर दुख और खुशी मे याद किया और जब मैं बहुत खुश हूँ, मेरी ज़िन्दगी मे बहार आ गई, तब भी मैं आपको याद कर रही हूँ बजिया। काश आप यहां होती तो देखती कि मैं कितनी खुश हूँ। आपके जमील भैया ने मुझे अपना बना लिया है। मुझे अब तक यकीन नही आता कि मैं इनकी बन गई हूँ। तलाक के बाद जब मैं इस घर में आकर पड़ गई तो ऐसी बात सोच भी न सकती थी। बहुत दिन पहले जब इन्होने मुझसे आंखे फेर ली थीं तो मुझे अपनी बदनसीबी का यकीन हो गया था। बजिया अब आपको यह भी बता दूँ कि मैं इसीलिए पाकिस्तान नही गई थी। वह मुझे इतनी दूर ले जा रहे थे जहां से पलट कर मैं जमील को न देख सकती। वह ज़ालिम लोग मुझसे सब कुछ छीने ले रहे थे।

बजिया मज़े की बात तो यह है कि बड़ी चची जमील के लिए रिश्ता तलाश कर रही थी। जब मैंने सोच लिया कि जमील की दुल्हन की खिदमत करके ज़िन्दगी गुज़ार लूंगी। कभी तो जमील को एहसास होगा। वह पछताएँगे, उन्हे अफसोस होगा उस वक्त मैं समझूंगी कि मुझे मुहब्बत मे कामयाबी हो गई, मैंने उन्हे पा लिया। मगर उसकी नौबत न आई बजिया और उस दिन जब बड़ी चची लड़की के घर आखिरी जवाब लेने जा रही थी तो रात को जमील भैया मेरे पास आ बैठे और मेरी बिटिया को गोद मे लेकर खिलाने लगे। मैं चुप बैठी रही। जब से तलाक लेकर आई थी उन्होने मुझसे बात न की थी। मै क्या मुँह लेकर उनसे बात करती। आप ही पूछने लगे कि तुम पाकिस्तान क्यो नही गई ? बजिया मैं उन्हें क्या जवाब देती। मारे दुख के कलेजा फट रहा था कि जिसकी खातिर इतना सब कुछ किया वह यह भी नही जानता। मैं रोने लगी तो वह एकदम बेचैन हो गए और मुझे लिपटा लिया और मेरी बिटिया से पूछने लगे कि तेरा बाप बन जाऊँ ? फिर मुझसे बोले छम्मी तुम्हारी मुहब्बत मुझ पर कर्ज़ है। अब उस कर्ज़ से छुटकारा पा लूंगा। वह मेरे आंसू पोछ कर नीचे चले गए। और दूसरे दिन बड़ी चची ने मेरे हाथो मे मेहदी लगा मुझे दुल्हन बना दिया।

अब मैं बहुत खुश हूँ बजिया। जमील मेरी फिक्र रखते हैं, मेरी बिटिया को बहुत चाहते हैं। बजिया आपको एक बात बताऊँ। जब बिटिया हुई थी तो मैंने यह

सोचा ही न था कि यह जमील की बेटी नहीं है।

बड़ी चची बहुत खुश हैं। मैं उनकी खूब खिदमत करती हूँ। करीमन बुआ भी बहुत खुश हैं। कहती हैं कि अपना खून अपनो मे आ गया। हरदम बिटिया को लिपटाए फिरती हैं। आपको बहुत याद करती हैं। अब घर की हालत बड़ी अच्छी है। बस बड़ी चची को शकील बहुत याद आता है। अच्छा बजिया अब रुखसत होती हूँ। अल्लाह करे मेरी बजिया को भी चाँद जैसा दूल्हा मिले। बजिया आप भी जल्दी से शादी कर लीजिए। छोटी चची को आदाब कहिए।

—आपकी प्यारी छम्मी

खत खत्म करके वह इधर-उधर देखने लगी। वह इस वक्त कितनी खाली और वीरान हो रही थी, "बड़ा अच्छा हुआ छम्मी की जिन्दगी बन गई।" उसने ऐसी आवाज मे कहा जो उसकी अपनी नहीं थी।

"और क्या मिलता जमील मियाँ को। बरती हुई छम्मी ही मिलनी थी।" अम्मा ने बड़े इत्मीनान से कहा।

आलिया खामोशी से अपने कमरे मे जाकर लेट गई और यूँ ही निरुद्देश्य इधर-उधर देखने लगी, फिर थोड़ी देर बाद उठकर वाल्टन कैम्प जाने के लिए तैयार होने लगी।

हुए नजर आ रहे थे। बिल्कुल पहले जैसे सफदर भाई। उसे याद आया कि जब वह घर के लडाई झगडो से निराश हो कर मुंह बिसूरती फिरती तो यही सफदर भाई उसको खुशियो की राह दिखाते और उसकी खातिर अम्मा की तेज घूरती नजरो के तीर अपने कलेजे मे पार कर लेते। उसने फिर उनकी तरफ देखा तो वह बड प्यार से उसकी तरफ तक रहे थे। ऐसी अजीब सी नजरें कि वह बौखला कर रह गई और सफदर भाई झेंप गए। "आलिया बीबी मुझे आज भी तहमीना से उसी तरह मुहब्बत है। आज जब यहाँ बैठा हूँ तो जाने क्या-क्या याद आ रहा है। तुम त बडी होकर बिल्कुल तहमीना जैसी लगने लगी हो, हू-बहू तहमीना। तुम्हें देख कर ख्याल ही नही आता कि वह मर गई।"

वह कोई जवाब न दे सकी। बादलो से लदी ऊँदी शाम उदास लग रही थी। उसने सफदर भाई को गौर से देखा जिनकी आँखो से दो आँसू लुढक कर गालो पर बह रहे थे। क्या सचमुच सफदर भाई आज तक तहमीना को उसी तरह चाहते हैं? और क्या इसीलिए उनकी जिन्दगी मे कोई औरत न आ सकी? और आज वह उसको सिर्फ इसलिए इतने प्यार से देख रहे हैं कि वह तहमीना जैसी दिखाई देती है? आलिया को याद आया कि सफदर भाई तहमीना को ऐसी नजरो से चोरी-छिपे देखा करते थे। क्या मुहब्बत इतने दिनो तक जिन्दा रहती है? अब सफदर भाई कितने थक चुके हैं। कितने बहुत से बाल सफेद हो चुके हैं। शायद उन्होने कभी सुख की साँस न ली हो।

"सफदर भाई क्या मैं सचमुच तहमीना आपा जैसी लगती हूँ?" उसने अचानक सवाल किया और फिर अपने सवाल पर खुद ही घबरा गई।

'हाँ बिल्कुल उसी जैसी।' वह फिर उसे अजीब नजरो से देखने लगे, "मैं बार बार भूल जाता हूँ कि तुम वह नही हो। अगर तुम तहमीना होती तो मुझे अपने दिल मे छिपा लेतीं मुझे जिन्दगी की खुशियाँ दे देतीं।" वह जैसे सपने मे बोलने लगे, "तुम तहमीना बन जाओ आलिया। तुम मेरी बन जाओ। मैं थक गया हूँ।' वह उठ कर उस पर झुक गए, "तुम मेरा साथ दे दो। तहमीना कहती थी कि मैं जो कुछ भी करूँगा वह मेरा साथ देगी और क्या कुछ कहती थी।" वह जैसे होश मे आकर बैठ गए।

आलिया ने आँखें मूंद ली। वह कुछ ऐसी कैफियत मे डूबी हुई थी जैसे किसी दुल्हन को पहली बार उसके दूल्हा के कमरे मे ले जाया जा रहा हो। उसके कानो मे आंधियो जैसी सांय-सांय हो रही थी। पता नही सफदर भाई कुर्सी पर बैठने के बाद और क्या कहते रहे, उसने सुना ही नही, वह बिल्कुल बहरी हो रही थी।

"क्या आज उठने का इरादा नही।" अम्मा बरामदे मे आकर कह रही थीं

"अरे यह कौन बठा है ?" वह पास आ गईं।

आलिया ने होश मे आकर उनकी तरफ देखा। वह सफदर भाई को पहचानने की कोशिश कर रही थी।

"अस्सलाम आलेकुम चची !" सफ़दर भाई मिनमिनाए। उनके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थी।

"तुम ?" अम्मा पहचान कर जोर से हाथ झटकाने लगी, "तुम यहां किस लिए आए हो। इस घर का पीछा नही छोडोगे कभी ? सब कुछ तबाह हो गया। तुमने अब क्या छोड़ा है ?"

"मैं....मैं मिलने आया हूं। आप लोगो को देखने का जी चाह रहा था। अभी चला जाऊंगा चची।" उन्होने आलिया को अलविदाई नज़रों से देखा तो उसे अपना कलेजा फटता हुआ महसूस होने लगा।

"यह नही जाएंगे अम्मा। मैंने फैसला कर लिया है कि यह हमेशा मेरे पास रहेगे। आप हम दोनो को एक कर दीजिए।" आलिया ने नज़रें झुका कर बडे सकल्प से कहा।

"ओफ्फोह ! तुम यहां इतनी देर से बैठे आलिया को कौन सी पट्टी पढा रहे हो।" मारे गुस्से के अम्मा की आंखे उबली पड रही थी, "तुम अभी यहां से निकल जाओ।"

"मैं तहमीना आपा की तरह गूंगी नही हूं अम्मा। यह नही जाएंगे।" आलिया को अपने गले मे कांटे चुभते लग रहे थे। अम्मा ने फटी-फटी नज़रो से आलिया की तरफ देखा, "क्या तुमने इसी दिन के लिए लिखा-पढा था ?"

"मैं कोई बुरा काम नही कर रही हूं।" उसने बड़े इत्मीनान से जवाब दिया। उसके सामने सफदर भाई बेबसी की तस्वीर बने बैठे थे। आलिया ने प्यार से उनकी तरफ देखा। सारी जिन्दगी दुनिया के लिए भेंट कर रखी मगर उनका कोई न बना। किसी ने साथ न दिया। अब वह ज़रूर साथ देगी।

"तुम ज़रूर शादी करो। मेरी तरफ से इजाज़त है। मैं कल अपने भाई के घर चली जाऊंगी। मैं मरते हुए तुमको दूध न बख्शूंगी। मुझे उस वक्त बडी खुशी होगी कि तुम मेरी जिन्दगी मे सलमा की तरह तबाह हो जाओ। यह शख्स जेलो मे जिन्दगी गुज़ारे और तुम घर मे पडी तडपो।"

"मैं इनका इन्तज़ार किया करूंगी अम्मा। मैं तड़पूंगी नही। मैं सलमा फूफी की तरह नही मरूंगी।" उसने धीरे से जवाब दिया। अम्मा ने साडी का आंचल अपनी आंखों पर रख लिया। उनका जिस्म थरथरा रहा था।

"चची आप कही नही जाएंगी।" सफदर भाई ने इल्तिजा की, "मैं आपकी

खिदमत करूंगा ? मैंने अपनी ज़िन्दगी की डगर को बदल दिया है। दुनिया तबाह होती है तो हो जाए। मुझे कोई मतलब नहीं। मैं अब सिर्फ दौलत कमाऊँगा, ऐश करूँगा। मैं अब कार, कोठी के ख्वाब पूरे करूँगा। मैं अब जेल नहीं जा सकता। मैं अब इम्पोर्ट, एक्सपोर्ट का लाइसेन्स लेने की कोशिश करूँगा। बहुत जल्दी मिल जाएगा। चची मैं बड़ा आदमी बन जाऊँगा। आप मुझे कुबूल कर लीजिए।"

"ऐं।" आलिया ने अजनबियों की तरह सफदर भाई की तरफ देखा। अरे बस आपकी ज़िन्दगी का यही मक्सद रह गया है। बस इतनी सी बात। आलिया को ऐसा महसूस हुआ कि वह बहुत दूर से रेतीले मैदानों में से चलकर आ रही है। थकन से निढाल, जनम-जनम की प्यासी। अरे कोई तो उसके हलक़ में एक कतरा पानी का टपकाए।

"पहले कुछ बन कर दिखाओ फिर मैं आलिया की ख्वाहिश पूरी करूँगी।" अम्मा ने बड़ी चालाकी से मामले को टालने के लिए कहा।

"मैं शादी नहीं करूँगी अम्मा। आप भी सुन लीजिए सफदर भाई। मैं शादी नहीं करूँगी।" वह कुर्सी से उठी, "अब जब आप यहाँ आएँ तो सोच लीजिएगा कि मुझे तहमीना आपा याद आती हैं। मैं उस याद से छुटकारा चाहती हूँ।" वह तेज-तेज कदमों से अपने कमरे की तरफ भागने लगी, "खुदा हाफिज।"

जब वह अपने कमरे में बेसुध पड़ी थी तो उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि छम्मी उसके सीने पर धम-धम करती गुजर गई, "मैंने आपको हरा दिया अजिया!"

उसने दोनों हाथ ज़ोर से अपने सीने पर बाँध लिए!

● ● ●